

धी सूर्यपकाश प्रिन्टिंग प्रेसमां मुळचंदभाइ त्रीकमलाले छाप्यु काळपुर टंकशाळ अमदाबाद. (कन्याशाळानी नजीकमां.)

प्रस्तावना.

आम्ळप्रेथ मागधी गायावंघ हे, तेनी संन्यानुं ममाण पग कर्नाए ५४० नुं बन वेन्द्रे हे, उपरांत आनिर्वादासम्म अने भिथ्यादृष्कृत स्वक वे गायाओ मांते अने पी वे गायाओं मध्यमां कोड पण न्यळे क्षेपक हे, एकंदर ५४४ गायाओं नुं ममाण थयेन्द्री

भा मकरण कही के ग्रंथ कही, तेना कची भगवंत श्रीमहाबीर स्वामीना हम्तर

सित शिष्प श्रीयमें इस गणि त्रण सानना धारक हता. तेमणे मयम तो जो के पाता पुत्रना हित माटे आ ग्रंप यनाव्यों हतो, परंतु ते अनेक भव्य जीवोना हित माटे या छे. आ ग्रंपमां एटला वधा हितनां वात्रमों समावेलां छे के तेमूं पृष्यक पृथक वर्ण करवा पेसीए तो पार आवे तेम नथी. उपदेशना विषयती पृष्यकता पताववा म अनुक्रमणिका करनां छुटा जुटा २५० विषयो पताववामां आव्या छे; परंतु बुदी छु वियक्षा करना वेसीए तो तेथी विशेष विषयो पत्र उपलभ्य पर छके तेर्नु हो. अनुः मणिकामां विषय संस्था ३२३ नी आपेली छे, परंतु तेमां मयमना श्रम विषय अने मध्य आवेली ७० कथाओं सुनक ७० अंक बाद करनां विषयसंस्था २९० नो रहे छे.

आ ग्रंथना फर्ना शीमान धर्मदाम गणिभगवंतना हम्तदीक्षित निष्य हता के फेर ए संवेधमां फेटलाएक बंका उदावे छे. परंतु मधम हिए आ ग्रंपमां आवेला उपदेश गीरतना. भीदता, गंभीन्ता, विशासना निर्मेर लोगां बांचनार वंशुभीने म्यतः एव जब आवे तेर् छे के एमां खेश पण ग्रंका उदायवा लेग्ने निया के आवी गीम्बला पावयम्चना भगवेतना मदयना ग्रंथकर्गाने माटेन घटनान हो.

बीज प्रवल फारण ए से के आ उपदेशनानानी उपर मेन्यावंध दीराओं यदे से, जेबा फर्ना एवा पराष्ट्रन्यों, नत्यपनायण अने पृद्धियातुर्वमां अदिनीय वंदिनों के जेबन अंग्रनात्र पण जंका पदी होत को नेपा निदम्पने पोनानी दीहानां है स्पन क्यों दिवास ग्रेनिन नहीं.

चीतुं कारण ए पन स्वत्र है वे १० इंपना नारंपमां आहे परिश्व गरि मांमारिक पुत्र रणसिंट दमारनुं रहांत में उनी दीकाओंनी विस्तार्गी आहेन्द्र है को इदिव रोग ने तदन असंगतित दे.

कीर्य पाला ए हैं के रांता उत्राक्ताओं मूक्य मुद्दीयांच्या वाशासादण छेठण एक परन्द्रदानी पुरस्तां रहीते या र्ययर्थ भारतामें प्राप्त है ने स्थार प्रसित्त का द्वीय नेषु क्यांदे हैं है है है प्रमें में सहस्य सम्मर्थन पाय है, वेयर क्यविकाम निजा विषयी होवाथी एवां दर्शतो जाणवानी तेमनी ज्ञक्ति होय छे, एटले तेवां दर्शतो आपी शके छे. किंद ते ते दर्शतो साथे आपेला क्रियापदोने माटे एम कहेवामां आवे के तेमां भविष्यत् काल वापरवामां आवेल नथी; परंतु सिद्धांतमां पण एवा घणा पुरावा मली शके छे के जेमां भविष्यत् कालनी हकीकतने माटे पण क्रियापद् वर्तमान:कालना वपरायेला छे.

पांचंध्र अने छेल्छं कारण ए छे के वर्तमान समयमां वर्तता सर्व ग्रानि महाराजाओं आ संबंधमां तहन एकन मत धरावे छे, तेमां कोइनो मत जुदो पडतो नथी. जेमणे अनेक सिद्धांतो, पंचांगीओ, ग्रंथो, मकरणो अने कथानको वांचेळां छे एवा वहुश्रतो ह्यारे एमां शंकानो अवकाश गणता नथी त्यारे आपणे पण तेमना विचारनेज अर्ड सरवुं ए आपणी फरज छे. ' महाजनो येन गतः स पंथाः ' ए सृत्र अहीं खास स्मरणमां राखवा योग्य छे.

आ प्रकरण उपरनी अनेक टीकाओ पैकी आ भाषांतर श्रारामिवजय गणिनी करेली टीकानुं करवामां आन्धुं छे. एना कर्चाए टीकाने छेढे पोतानुं नाम पण सुचन्धुं नथी, मिश्चस्त पण लखी नथी, तेमज संवत विगेरं पण जणान्धुं नथी; तेथी वीजो विशेष निर्णय वतावी श्रकीए तेषुं नथी, तोपण एटलुं जणावीए छीए के आ टीकाना कर्जा श्रीद्दीरिवजय सूरि महाराजनी परंपरामां थयेला छे, तेमना गुरुनुं नाम श्रीसुमित विजयानी छे, अने तेओ उपाध्यायजी श्रीमद्यशोविजयजीना समयमांज थया १ छे. एओ ज्याख्यानकलामां बहु मवीण हता. एमनी मशंसा सांभळीने एक वखत श्रीमद्यशोविजयजी पण एमनुं ज्याख्यान सांभळवा गया हता, अने सांभळीने बहुज प्रसन्न थया एना एम करेवाय छे. एमणे श्राशांतिनाथजीनो रास सवत १७८५ मां बनान्यो छे, तद्परांत योशुं शुं शुं बनान्युं छे ते चोक्कस जाणवामां नथी. एक पंच कल्याणकनुं स्त. वन एमनुं करेलुं मिद्ध छे. आ ग्रंथना टीकाकार तरीके एओ छेला थयेला जणाय छे.

आ भाषांतरना कार्य माटे परयासनी श्री गंभीरविजयनीए आपेळी टीकानी प्रत, परवागनी आपंद मागरनीनी टीकानी प्रत तथा एक बहु पाचीन मूळ गाथाओ परना टबानी प्रत. अपनावादमां छपायेळ उपदेशवाळानो वाळाववीध इत्यादिनी सहाय छेबामां आवी छे, अने तेने अनुमरीने टरेक गाथाना पाठांतरो नोटमां जणाव्या छे मागर्थीनी मम्हत छाया जाणवाना अभिळाषीने माटे केटळाएक अपरिचित मागथी इस्टोर्स मंग्कत अर्थ टीका अनुमार नोटमां आपवामां आव्यो छे, तेमन गाथा उपस्थी क्ष्री स्वता से स्वता पर्वा मादे अन्ययना अको पण गाथाओमां मुक्तामां आव्या छे, केले धर्मी केटन विदेशपर्य कें.मधं आपवामां आवेळ छे. जेम पने तेम विदेश उपन

१ र टचे हर गत साठे तुला दार्तिना वजीना गामनी प्रांत भाग.

पोगी यह पढे तेम करवा माटे वनतु कर्यु है. चणी माध्वीओ अने आविकाओ आ उपदेशमाळा भारती फंठे करे है, तेमने अब बारवा सवळ पट नेवो दरेक पपल कर-बार्मा आन्यो छे.

आ मकरणनी टीकामां मारंभमां आपेली रणसिंहकृपारनी दिस्तृत कथा उपरांद बीनी ७० प्रयामी खुदा खुदा प्रसंगने लड्ने आपवामां आवी हे. गायामीनी अंदर तो तेथी वपारे नामो छभ्य याप छे, परंतु ने शिवायनां नामोनी कषाओ उपरनी

कपामां अंतर्गत यह जवाना कार्णयो, भयम आत्री गयेल होवाना कारणयी, अपना विशेष मिसव होवाना कारणयी आपवामां आवी नहीं होय एम जणाय छे. ७० कथा-मो पैकी ६५ कयात्रों नो २८३ गाया सुधीमां त्राची जाय हे, एटके पाछली गायाजी २६१ मां मात्र पांचन कथाओं है, परंतु एकली उपदेवन मरेलों है के ने उपदेवनुं

मृत्य पर शके नेम नधी. आ टीकानी अंदर १ चंटनवाळा, २ संवाधन राजा, ३ भरत धनी, ४ प्रसन्त-भंद्र रात्रपि, ५ बाहुबल्टि, ६ सनन्कुमार, चक्री, ७ ब्रह्मदत्त चक्री, ८ ब्रह्मयिनुपमारक,

९ जामा सासा. १० मृगावती साध्वी, ११ जंबस्तामी, १२ चिलाती पुत्र, १३ दंडण कुमार, १४ म्कंट्फ मूरिना जिल्यो, १५ इतिकेशी मुनि, १६ पत्र मृनि, १७ पमुदेवना त्रीव नंदिर्पण, १८ गममुखमान्द्र, १९ म्यून्टपद्र, २० सिंहगुक्तावामी मृति, २१ पीठ

महापीड मुनि, २२ तापिल नापम, २३ शालिपड, २४ अवैनिस्कृपाल, २५ मेनार्य सनि, २६ वसस्यापी, २७ देश मृति, २८ सुनसत्र सृति, २९ पण्देशी राजा, ३० काळिकाचार्य, ३१ महाबीर म्वामीना पूर्वभयो. ३२ चळभद्र मुनि, मग अने रपकारक, ३३ पूरण तापम, ३४ वरदत्त मृति, ३५ चंद्रावतंतक राजा, ३६ मागरचंद्र कृपार, ३७

कामदेव श्रावक, ३८ द्रुपक, ३९ एडमहारी, ४० सहस्रपट, ४१ क्कंड् हुमार, ४२ पूरणी राणी, ४३ फनफहेतु मना, ४४ कीणिश गत्रा. ४५ पारास्प, ४६ पास-राम ने मुभूग चकी, ४० आर्च महागिरि, ४८ मेप हुवार, ४९ मन्यको विद्यापर, ५० कृत्या. ५२ चंदरहाचार्य ने तेनो शिष्य, ५२ भेगारनर्दशाचार्य, ५३ पुष्यम्या, ५४ क्रणिकापुत्र आचार्य, ५६ मध्देचा याता, ५६ पुतुमालिका. ५७ मंग्र मृति, ५८

भिनिध्या ने पुष्पधूर, ५९ सेल्पावार्ष ने पंषय क्षित्य, ६० इछ दहने मनियोषनार मंतिषेण, ६१ वंदारिक ने पुंदरीक, ६२ व्यविमन गणा, ६३ विषमक पुलिद,६४ श्रेतिक रामा में पिधावाना चंदाल, ६५ जिल्ही, ६६ कचरपा नवस्ती, ६७वई गंक देश, ६८६ जम

इ॰, सनामि धने ७० रर्धनी पाण मरी मिनेर रणामी चारेनी ^{के}टे. तेनों वेरलीर से å nalattendatet det dettet eitet eilet gene oga allan tilane en gat

स्वीहारण सीची स्वाय देश थे.

तंत्रस्वामीनी कथा जेवी वह विस्तारवाळी छे, अने उपदेशवहे तो तमाम कथाओ भरपूर छे.

आ एंथन उपदेशनी मालारूप होवाथी तेमां अमुक उपदेश विशेष ग्राह्य है एक कहेवा जेवुं नधी, तोषण खास ध्यान खेंचवा लायक स्थलो आ नीचे दर्शाच्या है, ते उपर व्यार ध्यान आपवं.

१ माना, पिना, वंधु, खी, पित्र अने स्वजनो पण स्वार्थने माटे पाणात करें ज्ञारनार याय है, ने विषे पृष्ट २०० थी २१८. दरेक संबंधपर कथा साथे.

र जीवने मामान्य उपदेश गाया २०३ थी २१७.

इ पामध्यादिनुं म्बरूप-तेना लक्षण विगेरे. गाथा २०२ थी २०९ ने ३५४थी३८२.

श्रावक केवा होग ? तेनी करणी-कर्त्तव्य विगेगे, गाया २३० थी २४६.

चारे गतिना दृ:ख. गाया २७९ थी २८७.

६ सर्वतार मणित तिमेरेमां मन्त करता संतंशी तथा कपाय गारतादि तजता

चित्र ते तरफ दोंर्यु, जेपी श्राविकाशोगांथी श्रा ग्रंथ माटे एक सारी रहम उत्यन्न फर्र नामां आवी, जेनुं लीस्ट शा ग्रंथना मांने आपवामां आव्युं है. ते मरापने ल्डाने शा ग्रंथनुं भाषांतर कराववानुं अने ल्यावजा विगेरेनुं काम दाय यरवामां आव्युं है. अने तेनुं परिणाम पण तेमना लाममांत्र लाववामां आव्युं है. अर्थात् मदायक बहेनोतें. अन्य उत्तम श्राविकाशोने तेमन साध्यीममृतायने श्रा युक्त भेट तायल आपवानुं निर्माण करवामां आव्युं है अन्य शहरेनी श्राविकाशोण तेमन श्रीमंत गृहस्थनी श्रीशोण करवामां आव्युं है अन्य शहरेनी श्राविकाशोण तेमन श्रीमंत गृहस्थनी श्रीशोण करवामां वर्णो कर्म बीडवा माटे ज्ञाननो एढार अने ज्ञाननुं तान करवा रूप आकार्य अनुकरण करवा योग्य है.

आ ग्यनुं भाषांतर तपास्या छतां तेगां मितदोष रिष्टिशेषादि सारणयी फांट एण भूक थर होय तो तेने माटे मिन्छादुफडनी यानना छे.

आ परम उत्हृष्ट, सिद्धांतनी सर्ग्यामणीमां मुक्त्यालायक भने नेज मकारनी योग्यता घरावनारी ग्रंथ छे, तेथीज काळवेळाए आ पंथतुं पठन पाठन परणानुं निषेष्ठेलुं छे, माटे झानाचारना मध्य भित्वारने ध्यानमां राखीने तेतुं गांग्य अवसदेन पठन पाठन परणुं अने आ ग्रंथने विनय पूर्वक लेखो. मुक्तवों ने पांचयों, के जेथी नेमां रहेळों अमृन्य उपदेश हृद्यपर भूमतेमज हृद असर करें अने से ममाणे वर्षन करवाणी भट्य आस्मानुं कल्याण धाम.

मस्तावनानुं वधारे छेवाण न फरनां अनुक्रमणिका तस्क रिष्ट परवानी-नेते मा-रांत वांची जोनानी भटामण पर्शे समाप्त करनामां आवे छे. ते मापे आशा राजपानां आवे छे के जो अनुक्रपणिका मार्थन बेनाशे की आ ग्रंप वांन्या दिवाय रहेवाडोज नहीं प्री अपने सामों छे. इत्यर्ल विस्तरेश.



निवेदन.

उपरनी हकीकतथी जणायुं हरों के-आ उपदेशमाळा नामनो ग्रंथ भावनगर श्री जैन धर्ममसारक सभा तरफथी १९६६ नी सालमां वहार पड़यो हतो. तेने आज लांबो वखत थइ गयो छे-अत्र अमदावादमां रहेता जैन श्वेतांबर ज्ञाते वीसापोरवाह शेंडजी पसिद्ध नाना मागेकना कुडुंवमां थइ गयेला महीम शेठ वाडीलाल लहलुभाइनी विध्वा ब्हेन चंचल ब्हेन अति धर्मचुस्त छे. जे शेटजीना जीवन चरित्रथी जणाशे. तेमने साधुसाध्वी तेमज तेमनी सोवतमां वेसनारी श्रावीका वर्गमांथी उपदेश मल्यो के-उपरेशमाळा नामनुं पुस्तक अती उपयोगी छे. अने अत्यारे ते मलतुं नथी. ते माटे तमो द्रव्यनो सद्उपयोग करी आ पूस्तक जरुर छपात्री भेट तरीके आपो तो बहुज लाभ थरों ते सीनी प्रेरणाथी तेमनी इच्छा यह अने प्रसारक सभानी छपावेली नकल मने मेळत्री आपी. जेना संयोगे करी. आ उपदेश माळा नामनो ग्रंथ अत्र अमदावादधी वहार पाडवामां आच्यो छे. जो के आ पूस्तक प्रथम सभानी वंतथी अने मुंवाइना छापखानामां छपावेलुं जेथी परम शुद्ध अने सुंदर छपायेलुं हे. परंतु:आ आहत्ति ती अमदावादमां कोपी इ कोपी भगाणेज छपावेल छे छतां पण मेसो साधारण होवायी थुद्री तरफ संपूर्ण कालजी राख्या छतां पण काना, मात्रा, विलंटीओं विगेरेनी अथ्रिदनो संभव है तो ते वांचनार वर्ग सुधारीने वांचशे. एम भलामण पूर्वक तेमज आ ग्रंप नैयार फरनार श्री जैन धर्म पसारक सभानो तेमज आ ग्रंथ पोतानां नाणां गर्मामं वापरी शानने उत्तेजन आपनार महुम वाडीलाल लल्खभाइनी सद्गुणी विध्वा के जेओनी इन्छाथी आ ग्रंथमां पोताना स्वामीनुं नाम जालवी राखवा तेओ साहेवनुं फोटा महित दुंकुं जीवनचित्र तथा देव गुरुभक्ति नीमीत्ते महात्माओं के जे अत्यारे अम-टावाटमांज विचरे हे श्रीमान विजयनेमी सुन्धिरजी तेमज श्रीमान विजयसीद्धी गुरिश्वरिता फोटा तथा तेषनुं दुंकुं जीवनचरित्र प्रसिद्ध करावी पोताना आत्मानुं रित इच्छनार छन चंचल छननो आभार मानी अशुद्धि के जीनाहा विरुद्ध छखाण आदिमां दोषों ग्या होय तो तेनी क्षमा याची मिन्छादुःष्कृत दर अते विसमुं छुं. एक गृहभू चींबहना.

र्नं शान्तः शान्तः शान्तः

ली। मिराद कर्ता.

40年年 1476 年 東京本家 田²東 4 田 田 10世代(昭 コーティロ

मारतर उमेचंद रायचंद.

टेकाणे पांजगपोत्र-अमदाबा

શ્રી વિજય દેવગાંગ ગાંગ ગાંન ભાંદાર લું શ્રી ૧૯૧૩ જેન્દ્ર આ દર શ્રી વિજયવાનન પાક, જંબઇન્સ स्वपरसमयपार/वारपारीण-शासनसम्राट-तीर्थरक्षाप्रवण-परोपकार-कार्पितकरण-तपोगच्छाधिराज स्रिचकचकवर्ति-



अत्यायं श्रीविजयतेसिस्रीडाः इ.स. १९२० दीता स. १९४० सम्बद्धां १९६० इ.स. १९४८ व्याप्त क्षातिक हुट्या ३ सामज्ञत् शु ६ व्याप्त स. १९४४-व्यक स्पू

तपागच्छ।धिपति तीर्धरक्षक शासन प्रभावक प्रचपाद आचार्य महाराज श्री विजयनेमिन्सी वर्जीनं टंक जीवन्द्रतांत.

श्रा महापुरूपनी जन्म काठीश्रावादमां आवेला प्रसिद्ध महुवा नामे गाममां थयो तो. महुवानी भूमी उत्तम विद्रानीनी उत्पति माटे श्रीममान प्रस्ते हे, तेमके त्यांना नेवासी वणाक प्रसिद्ध वक्ताश्रो अने लेखकोनां नामो वास्तार मांभव्यामां आव्यां है.

आपणा त्रा पृत्य म्रीन्यरनी पण प्रस्तृत्व कटा अने उपदेश छटा प्रति वधी भो रसीक अने असरकारक छै के जे मां बळतां पापाण पण पाणीरप थर काय तो छी कोमळ दिलना मानशीत्रा नेमनी अमृत वाणीयी पोनाना आत्मानो उद्धार करी एके तैमां नो फडेवानुंज थुं.

तेमना चारित्रनी उत्तमता अने रहता अर्शनीय है. चार वर्षनी नानी प्रयमांधी गोते चारित्र लह अयापी सुची नीरावाच नीएकलंक पाळपुं है, अने हेन्नु पण वेचीन तिते निर्माटनाधी तेने पालन करे है.

नेमना अग्बंद बाळ ब्रह्मचानिक्यानी प्रताप एटको बरो नो मचंद है के, शासन दोही भुरहो नेमनो पालक भन्ने चीचीआरीको करे. परंत नेमनी सामे नो हिए सरसी पण करी दोहे नेम नथी.

ं ब्रह्मचर्यनी शेष्ट्रना अने पवित्रतानी बनाप एटलो प्रशे नी मभारशाली है के, दरेफ दर्शनप्रालाओं बगर भानाफानीए तेनी एकांत स्वीकार को है, तो वेनी एक जायामां रहेनार माणम भा लोकमां उज्यल यह अने परलोकमां आत्मपरन्याणनी माप्ति करे तेनां नो हुं भावर्षः

पूज्यम्हीभरनीनी स्वित्वान तथा परदर्शनना न्यायादि हास्तीमां अहंद नीक्ष्य पृद्धि माटे तो कोड दे परे चालनारना दिलंबाद हेन निंद वनी आ पुल्य मूरीभरे बादीआबाद गुजरात, मारवाद, मेचाद, मारवा विगेरे पना देवांमां गाणांगाम मी-चरी पोतानी-इवदेह एटार्था जनसमुदायना मन प्रता क्या यो हरी सीधा है के, बासन देवा अने पदाब्रहीननो शीराय दरेक नग पोताना क्या अंतरप्रणणी नेवन् पनीयान हरेलां नाया परे है.

भागा माथू ममुदायमां अन्यति दानानद्रोदी कंद्रतीने निर्मृत कावानी स्मी क्षेत्रण, स्मी कीर्त पण माथू मुनियाने धमाधी होत्र को मै आत औरम्हित्य ने निर्मृतिकार्यने है. यने केने महने नेवा प्रवेदेशियों पने तेना सामका बन्यनायोग एक मायान्य स्पतिने पण न परे नेवा नृत्य भागेको नेननो उत्त प्रसी काव कर्णों है। प्रोह किय स्येनो उदय थतां नीशाचर घुवडीआ उदी जाय तेवीज रीते आ सुनीश्वर तर्फ्यी स्त्र सिद्धांतनो 'खरेखरो खुलासो यतां अने सत्यासत्यनो प्रकाश पडता, अत्यारे एक पण धर्मद्रोही जाहेरमां देखवामां आवतो नथी.

समाजना अगर ज्ञासनना नेत्ता पुरुषोने घणी वस्तते तुच्छ लोको तरफथी अण घटती मुक्केलीओ भोगवनी पडे छे, तथाषी तेनी उन्नति एज जेनुं साध्य विंदु है एवं अग्रगण्य पुरुषो तेवा दुर्वीनीत मनुष्यो तरफ जरा पण लक्ष आपता नथी।

अत्यारे आ महापुरूप अमदावाद राजनगरनी भ्रमी उपर विचरे छे, के उयां आ गळ श्रोताओ घणी मोटी संख्यामां भेगा मळी तेमना उपदेशामृतनुं पान करी आनंद पामे छे, अने अन्यदर्शन वाळाओ पण तेमनी वाणीनुं रहस्य विचारता थका छक्ष थड़ जाय छे.

. पूज्यस्रीश्वरजी महाराजना श्री सिद्धिगिरि-गिर्नारजी समेतिशिखरजी-अंतरी फजी-नारंगाजी विगेरे आपणा परम पवित्र तीर्थ रक्षण माटे कराता सतत प्रयासी श्री कापरहाजी-कोरीसाजी-कलोल-श्री स्तंभतीर्थ विगेरे तीर्थ भूमीयोनो उद्धार तथा प्रतिष्ठाओ-मेवाड विगेरेमां तेरापंथ विगेरे पाखंड मतोमां भली गयेला श्रावक भाइओनी धार्भिक जीवननो पुनरुद्धार विगेरे विगेरे असीम उपकारना कार्योनो आभार सम्प्र जैन कोमथी आ चन्द्रदिवाकर पण भ्रली शकाय तेम छेज नहि ?

राजनगरमां आ महा पुरुषना भक्तोमां जैन आगेवान धनाहची घणा सेवको हैं। के जेनुं वचन अलंधनीय एटले जरा पण आनाकानी कर्या वगर जैन शासनना गर्मे तैया काम-करवाने तेयार गर्ह है. अने ते केम पार उत्तरे तेवुं खंतथी ध्यान आपता आध्या है अने हाल पण आपे हैं आ महापुरुष मारा पण घणाज उपकारी हैं के तेमना वहें हुं पण यन किंचित् ज्ञानादि धर्म सारी रीते पामी शक्यो हुं, आ पुरतक भाट करावनार बाद चंचल ब्हेननी पण संपूर्ण पूज्यश्री तरफ भक्ति होवाथी तेओं साहंदना फोटा महित तेमनुं जीवनचरित्र अत्र मकट करवामां आब्धुं है. आवा शासन रक्षर परोपनारी महापुरुपना जेटला गीतमान करू तेटला ओहा है. कारणके लाखो लियाधी जेना गुण गणी शकाय नहीं त्यां माग जेवा पामर प्राणीनी एक जीभयी देशने एए शी रीते जगावी शकाय. दुंकामां अत्यारे आ महापुरुष जैन शासन माटे हरार उत्तरारी है. अन्त.

राज्यां पा अतेक शासन्यनावनाना कार्यो अहर्निश करी स्था छे अने तेन इस्मो रायन प्रभावनाना कार्यो करवा माटे विस्काल जयभेता वर्ती.

ली मिनदक्ती.





मर्हुम डोट वाडीलाल ठल्लुभाइनुं दुंक जीवन वृत्तांत.

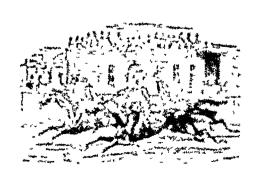
आ नरस्तनो जन्म मंबत १८९८ ना महा सुद्र १६ में अपरायादमां ठेराणुं लुर्सींगनी पोलमां श्री जैन भेवाम्बर आम्नायमां ज्ञावे त्रीसापोरवादमां यणा सुव-द्ध एवा नाना माणेकना कुटुंचमां थयो हतो. वान्यावस्या वित्य बाद केटवणी ामां केटलीक बख़न गया पछी शेटजीनी उपर आगरे (२०) चीम मनी पत्रा आवर्ता तेमना पिताश्री देवलोड पामी गया के जैवी पर विगैरेनो योजी ना शीर उपर आपी पढ़यो, तेओं साहेबने मराफीनो येंगे हतो. पोताना यंगाना रे मंप्रण कार्चेल हता तैना भवापे सापारण लक्षी पण सारी संशहन करी हती रे ते कश्मीयरे शेटनी मादेव वणी उदारता तथा परोवपारना काम पण ईमेझा र्गा परता हुना, इतेफ वर्षे तीर्थपात्रा—रेवटर्शन ग्रामिन्स्मा तत्पर गरेना हुना, अने जा बारुवानाहि सांभकवानी रुचीयात्य होवाधी जीवत्या तरफ तेमनो संपूर्व देव ो पेथी अपटा ग्रहमां आदेला ग्वोहा दोरना पांजगनो वर्गवट पण गेठजी माहेप फरना ा बली तेखो साहेवे खोदादोरना पांतरामां पोतानी तरण पण वाहर परीके आवेटी है. तो साहेब गरीय काचार पाणसो नेपनी पाने भावना हो हैयने योग्य केहाने पाटवा। नया ानी पदद पण परवा शुक्ता नहोता. देवनी गारंप काने इवाट मरन स्वमानी (वंदी अने माँ मागे इसीमधीने पालगाता हता. मेजो मार्चि भोगवीकी क्षीर्यमां । महीनापत्री महाराजनी बठिष्टा फरमामां पोते अब यान कीयां हमें सिंगे दरेश ोना काममों मारो भाग सेवा हता. देवती माहंबनी वेमनी दींटवीमां चार कीवी ह पूरी एवं भोती है. मंगनी पीक परिणी पान मांबा करत हाथ भी। शोरी ती अपनित केंद्र पना संवर्ती रपाल नयी. रेलिमी सहदेव देवनी हेल्ली एटले फोधी मि अक्षरे २२ सोनी नानी नगरमां दिल्या हुनीने मेगर १५६२ ना पीत हुन १३ आतरे ६१ वर्षनी उमरे देवलोक परोच्या है. के ये कियाहं माम धेपन क्षेत्र है ÷

शैठजी साहेवनो तेमना उपर संपूर्ण पेम अने विश्वास होवाथी पोतानी सर्वे मीलकत त्रिश्वों तथा कुटुंवीओ विगेरेने नहीं सोंपता पोतानी स्त्रीनेज सोंपी गया छै. आ चंचल व्हेन पण तेमना सहवासमां आव्या त्यारथी धर्म उपर संपूर्ण प्रीतीवाला हती जेना परीणामे पोतानी २१ वरसनी नानी उपरे वैधव्यपणुं आव्या छनां पण आवाह धर्म ध्यान आदि सारा संस्कारोमां जोडायेला होवाथी आजे तेमनी उपर लगभग ४० वरसनी थवा आवी छे छतां पण कोइ जातनुं कलंक के कहेवत विना तेमने धर्म मय जींदगी गुजारी छे. वैधव्यपणुं थया पछी लगभग एकाद वर्षमांज अते सुप्रसिद्ध नगर शेठना मामानी दीकरी व्हेन सीता व्हेननी तेमने सोवन थइ हती तेओ धर्मशील अने बुद्धीशाली होवाथी आ व्हेनने धर्म मार्गमां जोडवामां सारी सहाय करेलो छै.

रोटजी साहेब गुजरी गया पछी आ व्हेने-त्रीजेज वर्षे एटले १९६३ नी शालमां सारी धापधुम साथे उजमणुं माडयुं हतुं. तेमां हंमेशा पूजा प्रभावना विगेरे अट्टाई ओच्छव तया स्वामीवत्सल विगेरे पण करवामां आव्युं हतुं. वली आ व्हेन पालीताणी जर चोमास पण करी आवेला हे ते चोमासामां त्यां अटइनी तपस्या करी रवामीव-नगल पण कर्यु इतं. वली शे जयगीरीनो नवाणुं जावापण करी हती. वली अमदावा-द्ना टोसीयाटानी पोलना विद्याशाळाना वहीयट करनार शेठ जेशीँगभाइ हठीसँ^{गै} शेष्ट्रंजय मीर्थनो मंत्र छरीपालना काटेलो तेमां पण छरीपालता शेर्ब्रजयगीरीनी जात्रा पण परैली है, विगेरे, हंमेडां धर्मकीयाओं करवामां तत्पर रहे है जेना मतापे महात्मा प्रसोना याग्यानादि सांभळ्या बनी शक्ति तपस्या तेमज पोसह प्रतिक्रमणादि दरेक आबादक क्रीयाओं ययामिक करवामां जैमनुं मन लागेलुंज रहे छे दरेक वर्षे तीर्थ-एक्काओं बनी को देवी स्वामीयिक गुरुयिक आदि दरेक धर्मना काममाँ अग्र भाग है है, देन परिणापे तेथी जैनोंना दरेक तीथी जेवा के बाबूजय, गीरनार, आवजी, करंगार्क, केर्नाराजार्क, संदेवधीयार्का, अवर्गकती आदि नाना मोटा दरेक तीर्थनी ज्याना को में हैं। अने हुए पण वर्षमां एकते बयत तो तीर्थयाताओं करेन है अने प्रवाहीन दार्गीटर परे पहारता वार्य पण क्योंत करे हैं. वळी हमणां चारपांच इंड राज्य गुणीर्ट स्टान्ट के संभासकी मीनी विषयाओं संपासी नी तैननी रहार क्या है जार ने का सामें संब भवेलों है, हैंने शो ज्ञानाप्रणी कमें तोह-

वामां ज्ञानतुं आरायन अने तेनी भक्ति नेनं उत्तेजन फरवायीज याय छे तेवी उपदेश-प्रसंगोपान नेपने पन्यान करतो हतो. नेवा संयोगोवां आ उपदेशपाळा नापनं पुस्तर भावनगर श्री र्वन धर्मगसारक सभाए मसिद्ध करेल्ड्रं पण ने चुको पुरी पवाधी कों। टेहा में मलती न होती. अने यणा सायसाध्यीओं तेमन श्रावीकाशीनी मानणी हती. जेथी तेमनी पासे रहेला मीनाव्हेन तथा साध्वीजी श्री चंपानरीजी तथा प्रभा-सरीजी आदिनी मेरणाधी आ प्रम्तक छपाववानी तेपनी उच्छा धड अने संयद १९६६ मां छपायेली उपदेशमालानी नकल मने बनाबी, पड़ी तेना खर्च विगेरेनी अंदात करी नक्तलो ११०० छपारवाचं नकी करी आ सई बुको मेट वरीके सापू साध्वी अने तेना खरी जीवोने आपरानं, नहीं यवार्था आ उफ आ चंचल ब्हेननी संपूर्ण आर्यीक सहायतायीज बहार पादवामां आवी है. साथे तंमना महेम पति होड बाढीलाल लल्ह्माइनं नाग जाल्यी राख्या माटे तेथी साहेबनी फीटो नया पमनं जी रतचरित्र नेमन देवगुरू भिक्त नीमीचे कंसरीयाची दादानी वेमन जैन धामनना स्पंभाप आचापे महाराम श्री विजयनेवीय्रीधरमी महारामनी फीटो तथा तेपनु दंक जीवनर नांत पण आ पुस्तरमां दालक फरवामां आव्युं हे. एन. अ शांतिः शांतिः शांतिः

ही. मिसद् कर्नाः



अनुक्रमणिका.

65×4	गाः	αr	,	38 .
चिषय.	4115	41.		ິ່•{
१ टीका करवानो हेतु	•			8
२ उपदेशमाळाना कर्त्ताना पुत्र रणासहनुं चमन्कारिक चरित्र	•			२ ५
३ उपदेशमाळाः।पारंभ-टीकाकारनुं मंगळाचरण- 💎 🙃	•		_	ر. عز
४ ग्रंथकत्तींनुं मंगळाचरण	•	?- -	در	५ ७
५ विनयनी प्राधान्यता		€,-		ર્ ડ
६ गुरुनुं महत्त्व-गुरुनुं स्वरूपः		6-		-
. ७ साध्वीने विनयनो उपदेश-पुरुपनी पाधान्यता	?	3	१४	30
८ चंदनवाळानी कथा. (१)	••			₹ **
९ साध्वी करतां साधुनी श्रेष्टता	?	4-	१६	,3 ^Q
१० संवाधन राजानुं दृष्टांत. (२)	?	9-	१८	३ ५
११ पुत्रने अभावे द्रव्यनुं राजग्राह्मपणुं	,আ	९		, 3 6
१२ आत्मसाक्षीए धर्म	२	.0		३८
१३ भरतचक्रीनुं दर्धांन (३)	••			કૃષ્ટ
१४ प्रसन्नचंद्र राजिंपनुं दृष्टांत. (४)	••			જે રે
१५ एकला वेपनी अमामाण्यता-वेप पण धर्मनो हेतु छे.	२	: سع	२२	180
१६ आ मसाक्षीए धर्म-प्राणामानुसार कर्मवंध		₹3—	२४	૪૮
१७ अभिमान बडे धर्म थवा नथी	?	4		86
१८ वाह्यलिनुं दृष्टांन (५)	•••			૪९
१९ परचुरण उपदेश	:	१६ —	२८	५७
२० सनत्रुपार चक्रीनुं दृष्टांत. (६)	• • •	•		46
२१ आयुप्यनी अनि <i>न्</i> यता .	:	२०,	30	६१
२२ गुरुनो उपदेश भारेकर्पीने लागतो नथी	•••	₹ १		६१
२३ ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा। (७)	•••			६२
२४ उदायी नृपने मारनारने दृष्टांत. (८)	••••			৩१
२५ उपरमा दर्शनम् उपनयः ु 🕛 🗀		३२		૭ર
 ३६ केटठाएक राणीनां पापकार्यो मगट कहेवातां पण न 	थी.	33		હ ર
२७ जामा मामा हे होते. (१)				৩३
२८ के ताना दोपनी क्षमापनाथी निरायरणपणु प्राप्त थाय	छे.	şγ		৩५

	अनुक्रम	पिएका.			१५
विषय.				गाया.	ZH.
२९ मृगावतीनुं द्यानः (१०)	***		•••		હક્
.३० सराग संयमीमां सर्वया अक				30,	ওই
३१ प्रयायनां कडवां फळ.	***		***	इद	ণ্ডত
३२. भोग नजवानां अनेक कारण	Î	***		છક	ঙঙ
३३ तंबूस्वामीनुं द्धांतः (मासं	गेक १६	द्धांन युवन) (११)		৩৩
३४ रोद्रध्यानी जीवो पण धर्मना				36	0,8
३५ चिलानी ग्रुप्तनी क्या (१२)	***			દ્રષ્ટ
३६ अलाभ परिमह सहन फर्गा		***	•••	30	०,७
३७ इंडणकुमारनी फथा. (१३)	-	****	• • • •		१७
३८ मुनिपणानु स्वरूप	****	** *	* * * *	80- A3	0,0
३९ संदंभ शिष्योतुं एतंत. (१)	8)	4044	***		300
४० दृष्टोनो फरेलो उपद्रव सहन	करना न	मृनिनो धा	ल हैं.	83	₹03
४१ धर्मममां गुज्जु मधानवणुं न	पी	***	***	48	\$c3
४२ इस्किंधि मुनिनी कया. (१९	۷.)	***	•••		tok
४३ कुळाभिषान न फरवानां फ	ारणी.	***	***	४५- ४७	100
४४ मापुष निर्लीभी ुभनुं	****	***	***	४८	११८
४५ यसमुनिनुं छांत- (१६)	****	***	y##1		\$\$\$
४६ पानित्र इच्छतुं नी पारशह सन	ग्रे-नारि	ने परिप्रहर्नु	निगेधी	जु.४०- ५२	214
,४७ तप ने सद्तुष्टाननुं पत्र	***	**	****	43- 48	- ११६
४८ वसुदेन धरेला नंदियेणनी क	या. (१८	e)	***		150
.४९ मुनिष् उत्तर्ध समा पारण	कर्मी+	***	•••	فيالم	121
५० गनगुरुवाटनी फया. (१८	:)	***	****		१ २३
५१ मुनियोग्य उपदेश		* * *	* # *	45- 45	15.4
५२ मीव पतुर्ध वन पारण परवा	तिं।	****	***	<u> ક</u> હ્	\$5.A
५३ स्पृत्यहर्ती ह्याः (१९)		* * 4	** *	_	१२८
५४ मुनिए तप्यन्यां बगवुं.		4.4 %	सक् इ	£0	\$32
५० गुर्ना भागनी अनाहर ग		44 ¥	***	६१	133
५६ विराप्तासनी मुनिनुं स्ट्रांन	. (२०))	4.		\$ 3.2
		9 47 5- 264_		£2. £4	-
५८ मुन्दि पागुन्ते मस्त परस	—स्मार	पर्या.		E { E <	17£

7						
निगम				इंग्रेग्स् हैं		77
५९ पीठ अने महापीठ मृनि (बा	भी मंदरीना न	ोननी मंगा) (=?)			\$30
६० आत्मस्तुति-परनिंदा न प			•	7.0,-	ec.	\$33
६२ शिष्य केवा होय ?		• • •		124-	0%	334
६२ मुनि केयुं वोले ?	•••	•••		(90,-		5,80
६३ अज्ञान तपनुं अल्प फल.	•••	•••	•••	1.3		१४०
६४ तामिल तापसनी कथा (•••	,		१४१
६५ ज्ञानयुक्त तप करवा विगे	•	•••	• • •	62-	CH	१४१
६६ हज मारे माथे पण वीजो				66		383
६७ शास्त्रिभद्रनुं दृष्टांत (२३		••••	••			१४२
६८ शाळिभद्रना चरित्र उपरा	_	•••	•• •	८६	/ \9	
६९ सांभळतां पणरोमो कंप थ	-	····				१४६
७० जीव अन्य ने शरीर अन्य-						68 9
७१ एक दिवसना चारित्रनुं				८९ ९०		१४८
७२ प्राणांत उपसर्ग करनार				98		286
७३ मेतार्थ मुनिनी कया. (२			•••	11		१४८
७४ मुनि भक्ति ने अभक्ति	•			05		१५३
७५ गुरुना वचनपर श्रद्धा	_		ອ	९२		१८४
७६ वज्र स्वामीनुं दृष्टांत. (१		••••	••••	९३		१५४
७७ गुरुना वचननुं वहुमान-	-		•••	•		
७८ गुरुनो पराभव करवाथी				९४–	46	•
७८ गुरुना परामन करवाया ७९ दत्त मुनिनी कथा (२७	•	•••	••••	९९		१ ५६
८० गुरुडपर भक्तिराग केवो			••••	300		१५६ १८७
८२ सुनक्षत्र मुनिनुं दृत्तांत (•••	१००		१५७
८२ गुरुने देवनी जेम सेववा			•••	303	ສ	१५८
८३ केशि गणधर ने पदेशी			••••	१०१ —	२	१६०
८४ आचार्यनो प्रभाव-तेमः		(~ ~)	••••	9 . 3		१६०
८६ प्राणांत कष्टना संभवमां	-	 स्राची	••••	१०३−	8	१६५
८६ कालिकाचार्यनी कथा		···3····	•	१०५		१६५
८७ ययास्थित सत्य न बोल	्र्र्ग्याः वाथी बोधिकाः	 जो जिल्ला	٠٠٠			१६५
८८ महावीर स्वामीना पूर्व	ागा गापलाप अयोनी क्रेंग्रंग	गा।वनाश्चर ८२०४	વાવ છે.	१०६		१६८
~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~	रात्या सम्भूक	(75)	••••			१६८

अनुत्रमणिका.			१७
विगय.		गाया.	An.
८९ प्राणाते पण मुनि पोताना नियम विराधना नयाः	****	१०७	१७१
९० करण करावणने अनुमोदननुं समान फळ	****	१०८	१७१
९१ वर्ळदेव, रथकार ने मृगनी फया. (३२)	* * * *		ioi
०२ दयारहित अज्ञानतपुर्ने तुन्छ पळः	****	१०९	१७४
९३ पूर्ण नापसनु हत्तांत. (३३)	****		१७४
९४ नित्यवासी थवुं पडे त्यारे मुनिए केवी रीते रहेवुं ?	****	360-358	308
९५ उपाश्रयने घर न मानवुं	****	११२	१७५
९६ गृहस्थनो अन्य प्रसंग पण गुनिने हानि करे हैं.	****	£\$\$	१७५
९७ यरदत्त मुनिनुं दृष्टांन (३४)			१७६
९८ सीनो परिचय तप, शील ने प्रवादिनो नाग करे है	***	११४	100
९९ मुनिए नजरा योग्य कार्यः		११६- १ ६७	300
१०० माणांने पण गृहिन् अभिग्रह न तजरो	3984	288	288
१०१ चंद्रायनंसक राजानुं दर्शन (३५)	•••		350
१०२ मुनिए परिसही गहेपा-नेज वेनी धर्म हे	16**	440	\$2\$
१०३ गृहस्य पण बनमां हर होय छे तो मुनि नेम न होय ?		१२०	\$48
१०४ सागरचंद्र गुमारनुं द्यांत. (३६)	, .		101
१०५ देवरून उपनगयी श्रावयः पण चळवा नयी.	***	358	100
१०६ फामदेन थानरातुं छातिः (३७)	*1**		YS
१०७ भीगने भोगन्या निना इन्छा पात्रथी दुर्गति पामे है	****	* ==	326
१०८ दूमरत्ते दर्शन. (३८)	****		100
१०९ जिन पचनना आगधनमां ममाठ न फायोः	***	523	\$ 20.
११० रागद्देशनुं स्थाज्यपणुं-नेनां यह प्रज्ञ	****	\$= X-\$ 50	476
१११ गुविष्य पारितनं निष्पान गरे है	+***	130	150
११२ मोपनुं स्थाय्यणुं-नेनां परु प्रद्य	. 4 4 4	\$ = 1 - 132	10,2
११३ मनावृत्ते त्याञ्यपर्यु-वैनां पक	* 64	१ ३५	14.5
		135	\$7.3
११५ र इयरार्ग नुं हुनांत्र (३९) 🛼	*155		***
रिदे मृति अपकारी मन्त्रे पण अपकार करता नधी.	4+4	253	なな
रिंश् महत्रमानी एगा. (४०)	-475		१६८
२१८ स्निनी समा अने महनहीलता.		\$38-180	1+2
			美电台

१		भनुक्रमणि	মা-			
•	विषय	.5	•		गार्था.	षुष्ठ. १९ ७
१	२० स्कंदकुमारनुं दृष्टांत. (४१)					
	२१ वंधुवर्गना स्नेहनुं त्याज्यपणुं			••••	१४२-१४३	866
	२२ माता पिता विगेरै संवंधीओं अ	n भवमां ^अ	ानेक दुःख [ः]	आपे छे.	१४४	२००
	२३ माता पण पुत्रनुं अहित करे			••••	१४५	200
8	२४ चुलणी राणीनु दृष्टांत. (४२	:)	••••			२००
	२५ पिता पण पुत्रनं अश्रेय करे		••••		१४६	२०१
9	१२६ कनककेतु राजानी कथा (४३	ફ) <i></i>				२०४
	रिश्व भाई पण भाईने हणे छे.	••••	••••		१४७	२०६
	रिस्ट स्त्री पण पतिने विप आपे छै			••••	388	२ ०६
	१२९ पुत्र पण पिताने दुःख आपे				१४९	२०७
	१३० कोणिक राजानुं देशांत. (१	8 <i>8</i>)	••••	••••		२०७
	१३१ मित्र पण मित्रने हणे छे.	••••	••••	••••	१५०	₹0 <i>6'</i>
	१३२ चाणाक्यनुं रुत्तांत (४५)		••••			₹0\$
	१३३ स्वजनो पण स्वजनोनुं अनि			••••	१५१	२१ ३'
	१३४ परश्रराम ने सुभूम चक्रीनी	कथा (४	६)		٠	ર १४
	१ ३५ श्रेष्ठ मुनिओ अनिश्राएन वि		•••		१५२	२१८
	१३६ आर्थ महागिरि प्रवंधः (४	<u>৩)</u>	••••	••••		२१८
	१३७ सांसारिक गुंद्रतामां मुनि			••••	१५३	२१९
	१३८ कुळवान मुनिओ मुनिजनो		खमे छे.	••••	१५४	२१९
	१३९ मेयकुमारनुं दृष्टांत. (४८))	••••	••••		२२०
	१४० मुनिए गुरकुळमांज वसबुं-	∙एकाकी र्	वेचरयुं नहीं	••••	१५५-१६१	
	१४१ तजवा योग्य स्त्रीओ	••••			१६२-१६३	,
	१४२ विषयरागना परवशपणार्थ		तारमां भमे	छे	१६४	२२४
	१४३ मन्यकी विद्याधरनी कथा					358.
	१४४ मुनिगननी सेवामकियी	अशुभ कमे	शियिल था	य छे.	१६५	२२७
	१४२ श्रीकृष्ण मन्य (५०)			• • • •	_	२२७'
	१४६ मार् प्रत्ये बरेला बंदना ना	पस्कारादिथ	। पापकमन	। क्षय थाय	- •	२२८
	१४७ मुहिल्यो मृत्नी श्रद्धाने । १४८ चडम्डाचाय ने तेना ग्रि	पण इंट क प्राक्ति	₹ ₹		१६७	રંગ્ડ
	्रवट चडरकाचाय गामा जि १७६ मध्यामार्थि सम्बद्धीर सम्ब	न्यना कथा च	· (५१)			556
	१४५ सृद्धियोधी पायोळी हुस् ११० अलार महेराबावैनी कर	५~गजपुत्र प्राट्य	। प् करायन्द्र त \	ानु पाचन	. १६८-१६९	
e 5 1	्रास्त्र च्या १ लाइन्ड्रन्स्वर्गी स र	सा- (५५)	••••		२३०
	,					

अनुक्रमणिकाः.

१८

अनुजयाणिका.

घिषय -	गाया.	20.
५१ स्वममां पण नंसार्रियात जोवायी जीव वोच पाने छैं	१५०	335
५२ प्रृष्यचृत्रानी क्या. (६३)		२३२
५३ अनावस्थाए पण जे धर्म फरै छे ने आत्महिन माचे छै.	१७१	२३५
२४ अर्णिकापुत्र प्रचंत्र (५४)		२३५
५५ फर्मनी लघुना होय नोज भोगो नजी शकाय है	१७२-१७३	एइंड
५६ माणांत यह आपनार उपर पण मुनी द्वेप चितवना नथी.	३७४−३७६	र् ३७
५७ क्यादिक पापक्रमेनो जयन्य ने उन्कृष्ट उद्य केटचो धाय है १	१७७-१७८	२३८
५८ मन्देवा मानानुं अवलंबन ग्रहण करना योग्य नधी	१७९	536
५९ पम्देवा मानानी कथा. (५५)		२३९
६० मन्त्रेकपुद्धनुं अवलंबन पण ग्रहण करवा योग्य नथी	\$25-628	5,80
६१ अस्थितेष रहे तो पण विषयनो विश्वाम फरवी नहीं	१८२	२४०
६२ मुकुमालिकाभी कथा- (५६)		588
६२ नीरेकुम भाग्या वश कराती नधी-भात्यद्यननी भावस्यकता	335-834	5,45
६४ वीषपमुखना सेवनयी हुमी धनी नधी	150-190	२५४
६५ रचयुद्ध प्राणी परीणाम दुःख पाम हे	797	સ્યુધ
६६ मंगृद्धरीनी क्या. (५७)		२५५
६७ आतेगपीनाप	१९२-१९६	7,30
६८ तीवे ग्रहण प्रतिने मृतेलां धारीसदी-तद्वास उपरेत.	१९७-२ ६९	388
६९ जीवने उपदेश	203-210	र्र, ≎
७८ अद्वारहीन धर्माचरण मोधने सापनार धनु नधी	255-258	કંત્રણ
-७१ गेना यती औष यस्मानन पर्न्यु कहेनाव है	न् न् ७	34.8
१७२ उन्मुष भाषरणानुं पात्र	२२१	746
ाण्ड पामध्यादीना संग न पाना	77,7,-77,6	208
🕬 शीलवीपलने पर्ववा ने शीलमें डिपनी पर्व. 👚 👑	३ १७	ic e
्रथ्र निरिश्वक अने ब्रुटाशानी क्या. (५८)		2013
ुंॐ६ परमार्थना जाण पामध्या सुर्वितित साहुने चौडवा देवा हार्यी	ATT.	246
ंध्य स्विद्धि एनि पाने पेटन प्रमारनार पासाभाने पत्रं पट.	4.25	245
अह भारक देवा रोच ? तेनी परकी-रेन्चू पर्यन्य विषेते.	\$30m\$45	泉林木
्र इनम दिएमें बनाईं। मुस्ते पन रेताने मार्ग है।	345	563
ंदर मेर प्राचार्य ने पेगर दिन्यनी प्रया. (५६)		25.2
ेरः निराणीत क्येंनी भीग भगी क्रवान है .	#. S. C.	:65
्रेंबर १४ राज्य स्थितियां संशित्यं क्षा. (६०) 🔑		21.7

`	.5				
विषय.				शासी	78
१८३ कमेना वशवर्त्तिपणाध	ी जीव जाणतो	छतो मोह पारे	छे.	२४९–२५०	२७०
१८४ अंते थता अशुभ शुभ				२५१-२५२	२७१
१८५ कंडरीक ने पुंडरीक	_				२७२
१८६ चारीत्रने वीराधनार	•	•	t	२५३–२५४	२७३
१८७ चक्रवर्ती छ खंडनी				• • •	
येल शीथीलपणुं त				२५५	२७४
१८८ मनुष्यभवमां सुखलं		ोल पश्चात्ताप		२५६	ર્૭૪
१८९ श्रशीप्रभ राजानी व			••••	• • •	રહ્ય
१९० सुरमभदेवे शशिमभन	•	े रेतेन रहस्य.	••••	२५७-२५८	२७५
१९१ संयम योगमां करेल		. 113 1911		२५९	२७६
१९२ शोक करवा लायक		?	••••	२६०	२७६
१९३ उत्तम उपदेश.		••••		२६१–२६४	२७६
१९४ ज्ञानदाता गुरुने शुं		••••		२६५	૨૭૭
१९५ शिवभक्त पुलिंद (२७८
१९६ विद्याना इच्छके गुः			•••	२६६	२७१
१९७ श्रेणिकने विद्या अ	•	• •	••••		२७९
१९८ विद्यागुरुनो अपला		द्य थाय छे.	••••	२६७	२८३
१९९ त्रिदंडीनी कथा. (२८३
२०० एक जीवने ्वोध			मारि	55.4	5
पटह वगडावे छे.		····	••••	२६८	२८४
२०१ समिकत दाता गुर				२६९	५८४
२०२ समकितनुं फळ. २०३ ममादथी समकित		••••	••••	२७०-२७२ २७३	
२०४ सो वर्षना आयुष्य					२८५
२०६ धर्ममां प्रमादीने है			पहपण	.२७ <i>६</i> –२७५ २७७	२८५
२०६ देवताना सुख सुर		•	••••	•	२८५
२०७ नरम गतिनां दुः	ख			२७८ २७९– २ ८०	
२०८ तिर्यंच गतिनां	दुःसः	•••		२८१	
२०९ मनुष्य गतिनां व	ः व			२८२ –२८ ४	
११० देव गतिनां दुःख	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •			201 200	211
्रु २११ स्वामीपणुं स्वायी	न छनां दामपणुं	कोण स्वीकारे	?	२८८	२८९

विषय.				गाधाः	पृष्ट.
१२ आमन्नसिक्ट जीवोनुं र	सण	****	****	२८९-२९०	
१३ धर्म परवानी आवस्यकताः	****	****	,	201-202	३९०
्१४ यननानी आवश्यकता—ने			****	565-560	564
्रें पांच समितिनुं पालन केवी	रिने याव	? (भयम	हार).	२९६-३००	२९३
्रे६ क्रोधादि दश् केशरूप है.	(द्विीय हा	र)		इंदर्	२०३
. १७ कोचना पर्यायो	****	*4 *	****	305-203	504
	****	••••	•••	३०४-३०६	568
		.,	••••	३०६–३०७	566
(२० स्त्रोभना पर्यायोः		+4#7		३०८-३०९	200
ः २१ कपायो चजवा संवयी उप	देश	••••	****	330-384	366
ा२२ शस्यादि पटकने नमवा सं			4427	३१६-३२१	388
१२३ फर्मने पराधीन ध्येल जीव		*		३२्४	\$ co
ः २४ अनुभव रहित बहुश्रुन् मी		।।रायक धरो	। नधी.	३२३	300
८२५ त्रणे गारव तनवा विषे (₹)	****	****	३२४-३२६	\$00
The second secon	****	***	****	३२७-३२९	301
२२७ मद त्याच्य द्वारः (५)	** *	1000	4344	335-333	हर
२२८ ब्रह्मचर्य गुप्ति द्वार- (६)		****	****	२३४–३३७	६०३
२२९ स्वाध्याय हार. (७)	****	44.	4 **	इइ८-३४०	3,o¥
		****	****	\$x\$-\$x5	
२३१ तप द्वार. (९)	_		4 * 4	385-388	३०६
२३२ सुनिष रोगोन्पनि मगरे के					
नी फरवी १ (शक्ति न ग		ति ६० में इ	(F.)	३४५-३४४	
३३३ लिगुवारीनुं स्वस्य विषेते		E+2	# # Y-#	284-343	ই০ড
२३४ पार्यम्यादिक्तां स्थणो.		***	****	308-393	
२३५ आ पाटे तीई मापूर्णा न		ों भंगनुं नि	नाग्प	इंटर्-इंटर	
२३६ मापाबीनुं म्नस्य-नेनुं परि		****	***	३८६-३८६	1,0
दश्य पुपरसाय नपावीनी एपा-	(\$ \ \ \	* * *	4 * *		376
		347			E & C.
६३५ आग्रपातुं स्तरप				326	320
२४= एक माने नेवा सनि गरे	7	***	***	384-161	
रिपर गर्भानुका के सर्व निर्मेष (मन इंद्रयन	मा न्यी		34,7	
रथर पर्धसं मारानी, अरकात	त नपी.	∞1 *	** *	161-168	338

* *	~					
विषय				गाया,		पृष्ठ.
२४३ लामालामनो विचार् करनारै	वस्तुने अं	ोळखबी.		३९५		३२२
-	••••	•••	••••	३९६-३	९७	३२२
२४२ अगीनार्य गन्छने प्रवर्गावनी	अनंत से	यारी घाय.		३९८		३२३
२४३ घिष्टे पुरुष्टे तेनुं कारण	-1.44 (4)		****	566		\$ 5:
२४७ गृत्महाराजनी उत्तर-अगीत	धि आगाः	 किथड शक	तो नर्थ	1800-	४११	३ २:
-४८ धवर्ष्ट्रव(अन्यस्तुत)पण मोक्ष	 गारीयाँ स	१५ मार समाक्षी द्वार	ਨਹੀ ਜਹੰ	ֈ ؉ ኔ∌~.	388	३२१
२४६ रम्पर्केटसपीज विद्या प्राप्त ।	ाताप्या यः तारा हो		14741 - 1 - 4	४१९	•	3 2.
२०२ राजित जिल्लामा वरावर प्रत २०२ राजित जिल्लामा वरावर प्रत	पाप छ क्षि शके है	••••	••••	850		32
),	•••	४२१	いかだ	37)
२५१ इप्त गर्ये जियानी आवश्य २५२ चरित्रचे चेरे वित्रिय स्परेट	1791.	•••	••••	४२७-		330
	({	•••	•••		07 1	333
२४४ स्मार्टिक्ट यात्रेबर स्पाँध हेरे. २५४ स्मारता सेन्यारी सीम्स् सुम्म		***	***	४३६ ४३७		33 3
		•••	****	•		333
३५ - इत्तर जनपुरूषरे करेर सूच्या प	त्या न	भी		858		441
三、三、一一一一个八十五十四十五十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二			रे शष्ट			
्र १३१ राज्य समामे स्थाप		कारक छै		N36		\$ \$ X
the see that (e						338
A SUNDAN				• >		13
3 4 7 2 5 3 4			१५ है.	प्रभव	888	•
* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	" \$, F ₹?	तरी।		344		3%;
** **/			e.			31,5
n y y t				13.38		
* * s v & y	₹	:	## { · 5.	325.7 325.7	770 743	_
A Company of the Comp	,	. *		•		384
A 4		• • •		17.50	19.7	•
·				; '* '*,		3 /
4 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·				ye.		3 (1
				<i>* • •</i>	; *	3 ; ² , ₂ t
* '	-					-
,	*	• •		,* +		37.
		*		* * *		<i>: •</i>

भनुक्रमणिकाः			S, E
विगय.		गाधा.	प्रम.
२७२ केटलाएक नटनी जेम मात्र उपदेश करनारत होयछे	•	४७३-५७४	34.3
२७३ आन्महित फरनारना विचार		7.5%	548
२७४ ममादीनुं मंयम केतृं होय ?		४७६–४७७	34,4
२७६ पापीना जीविनने धिकार है		૪૭૮	344
२७६ थमपुक्त व्यतिन योला दिवसादियम लेखे है।		439-8C0	इष्द
२७७ अनेक युक्ति द्यांनायी उपदेश आप्या छतां मनियोप			
न पाम नो नेनी भविनव्यनाज एवी समजवी		828	344
२७८ शिथिल पया पछी उपन अगरप है माटे गिथिल पर्यु नहीं	f.	४८२	348
२७९ योगने उन्मार्गे नवर्तवा देवा नहीं		828-328	इक्ट
२८० कृर्प (फानवा) नी कया (७०)			* PE
२८१ सायु केवी भाषा न बोले	••	४८५	30,0
२८२ मन्ने स्थिर करवुं		^{भूट} ६	346
२८३ भारेकर्मीनां न्यसण	• •	800-80¢	326
२८४ जाणनां छनां प्रपादी थाय नेने कोण उपदेश आपे १०	• •	Ão'¢	30,0
२८५ भगपंते वे मार्गज फहेला हे <i>.</i>	• •	803	240
२८६ भावप्रजायी सह थाय नेते इत्य पृतामां उपनी धर्नु-	« »	Ac2-803	34.5
	• •	868	7 E, c
२८८ रोडुनने आपेला घीषतुं दर्षांत ने उपनय	**	Bornson	350
२८९ चारित्र यजनारे पण भृषिनो त्याग करवो	* *	६०१	365
२९० मापूषशे पारी दकाय नहीं नी आवक यह नहुं प	म		
	• •	407	35.
	* 4	たのまーちのか	李克克
•	• •	Sol.	353
२९६ प्रतिस्थी भृष्ट एया एता रेपमास्यी आसीविका प	٠١٠	_	
े पे छे ते अनेत संमार्ग याप हो.	٠.	*,0%	363
२९४ तीशा नाने भगन्य मीना नहीं.		Mrs-hon	
्र देश: सामना प्रवान गत्रान अस्य नवाह पर धान गुरू ।			15%
े २९६ पामध्यादिनं स्वस्य नार्याने मध्यस्य एतुंः 📄 .		ં ૧ છ	431
२९७ मुनियेर मान भाजारमन गतो नृषी १	. 4 5	5.23	核學
कर्ट सिवाय मारे कार्रिकमार्थ प्रश्नपूर्ण मह माणु है, रन्या	C17		br
many of marker secrets the first and		M. T.	364

विषय.

अनुक्रमणिका.

२९९ कोण कोण शृद्ध याय छे. ५१३

पृष्ठ.

३६५

गाथा.

र्दर कार्य नात्र अस्त्र नात्र । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	• • •	• • •	a 3.
३०० संवित पक्षीनां लक्षण	•••	५१४–५१६	इह्द
३०१ पोते शियिळ छतां बीजाने दीक्षा आपे छे ते शुं फरे ह	3?	420	३६६
३०२ उत्सुत्र महपक शुंकरे छे ?	•••	५१८	३६६
३०३ वर्ण प्रकारना मोलमार्ग ने वर्ण प्रकारना संसारमार्गः		५१९-५२०	३६६
३०४ द्रव्यत्रिंगयी अर्थमिदि यती नयी	•••	५२१	३६७
३०५ देवना आग्रहीए संविज्ञ पक्षी यर्बु		५ २२	३६७
	•••	५२३	३६७
३०७ संविद्य परानुं दर्शभपणुं	• • • •	474 478	356
३०७ सार्क पातु कृत्यासुर ३०८ पारण्याची हिनवचनयी वाग्र हो	•••	५२७ ५२५	३६८
	•••	५२६ ५२६	३६८
	• • •	• -	358
्रेट रीतार्थ होंने ताभ तोरानो विचार करें। १९२ व्यक्ति प्रोती प्रत्या प्रमाण हो।	• • •	५२७	३५ <i>५</i> ३६९
	• •	५२८	•
उर्देश के क्लांक के कर के मार्थ हैं।		५२०-५३३	३६९
ा । १९ १ वर्ष के स्थिति यम ने भगेषी उसमी सती क			3.07
• • • •	•••	458	∌ ⊘?
. १८१४ १८१ एका अस्याम्याची असी.		434	३७१
कर कर कर के शहर के भी	• • •	1438	३७१
	•	430	3/9?
* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	•	53%	∌′∂5
* - · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•	430	31858
カー・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・		14,300	354
		1.30	3 97
•		د چر دا د د د د	3 93
		1433	393
The second of th		633	2 93
•			3.5%
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·			3 1/4
**	• 4,		37
- 4			
•			at ~

2 x 1 4

श्री आत्मरवा नवकारमंत्र.

क परमेष्टिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकं। आत्मरक्षाकरं वत्त-पंजराय स्मरान्यदं॥
॥ १॥ क नमो अरिइंनाणं, शिरम्कं शिरित स्थितं। क नमो सविनद्धाणं, मुर्गे
सुलपटांवर्॥ २॥ क नमो आयरियाणं, अंगरक्षािक्षाियती। क नमो उपलायाणं,
आयुं इस्तयो ईंदं॥ ३॥ क नमो लोए सवसाह्णं, मोचके पाद्योः शुने। एगो
पंचनमुक्तरों, शिलायत्वमयी तले॥ ४॥ सवपावप्पणामणों, वर्गे वत्तमयो पहिः।
मंगलाणं च सवेसिं, खादिरंगार्यातका॥ ५॥ न्यादांतं च पदं होयं, पद्भं द्वद मंगलं।
परमेष्टिपदोद्भृता। कथिता पूर्वमृतिभिः॥ ७॥ यथैनं-मुल्ले रक्षां, परमेष्टिपदेः सदा।
तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधियापि पद्मुचन् ॥ ८॥

श्री नवकार मंत्रनो छंद. ॥ दुरा॥

यंस्तित पूरे विविधपरे, श्री जिनहासनेसार; निधे श्री नवकार नित्य, जपमं जय-जयकार ॥ १ ॥ अटसट अक्षर अधिरायन्त्र, नवपट नवेनियान, योनराग न्ययं मुख बहे, पंचपरगेष्टि प्रयान ॥ २ ॥ एकनशहर एकविन, समर्या मेपनि याय; मंचिन मागर साननां, वानक द्र पलाय ॥ ३ ॥ सकलमंत्रधिर मुगुटपणि, सद्गुरुभापितनारः मौभान वियां पनशृद्ध्यं, नित्य जवीचे नाकार ॥ ४ ॥ छंद्-नाकार यक्ती श्रीपाट नरेदा, पान्या राज्य मन्तिद्रः ध्यशान शिं शिलाह कुमरने, नोवनश्रामोरितदः नाजाय जपंता नरकतिवारे, पापे भवनो पार; मौभवियां भक्त चौरके निचे, निख नवीयं नव-कार ॥ ५ ॥ चांभी चटलाला जिंह पेती. टेटक बूंट हुनान; नम्बतने पंचनपथ्यों. उटयों ने प्राकाध; निधि मैने बदनां विषयर विष टाने, टाने प्रमृत्यार मो० ॥६॥ पीनोरा पाएण संयमदायन, व्येतरदृष्ट्यिगेष: जेने नवनारे हत्या टारी, पास्की यस मित्रोप: नवराय तथेतां भाषे निवस, उपयो है अधिकार गोट ॥ ३॥ वर्डीविड शिल्यो मनिवर पामे. मलवेड पन शृद्धः परभव ने राजनित प्राप्तीवित, पान्यी परि-गल दिन, ए पंतपको अमरापूर पहेती, बारला मृतिवार मो ।। ८॥ मन्दानी काणी हुए मार्नेतो. पंजादि परवारे: दोशे भी पामतुन्ती कहार. चारक्की है राहे. मेमलाको भी नरमार मार्गन्य, ईन्तुबन कालार, मीर ॥९॥ मन ग्रंड ज्याती सम्मान्दरी, पानं पीपर्वणेम् र ने रवान मनी क्यू दन्दी वेचकी करिक्सो मेह-निषेत्रे स्वतं नवन्ति भारं, पर्ववन्ते भारतः सौर ॥ १० ५ पान्ती कृत्य हुई-गयान्यां, फार्श्वयापारः स्वेशियम् साम्यते, ब्राह्म दांशे विरूपम, वर्ष्

लावतिए (कलावतिए) पिंगलकीधो, पापतणोपरिहार, सो० ॥ ११ ॥ गयणां गण-जाति राखीयहीने, पाडी वाण महारः पट्पंच सुणंतां पांडपति घर, ते थइ कुंता नारः ए मंत्र अमुलखमहिमामंदिर, भवदुःखं भंजणहार. सो० ॥ १२ ॥ कंवल संवले कादव काढ्या, शकट पांचर्शे मानः दीये नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी मंपत्ति वसुधा लही, विलसे जैनविहार, सो० ॥ १३॥ आगे चोवीशी हर अनंती, होशेवार अनंत; नवकारतणी कोइ आदि न जाणे, एम भाखे अरिहत, पूर्व टिशि चार आदि पपचे, समर्या संपत्ति सार. सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पान. जे कृतकर्म कठोर: पुंडरगिरि उपर पित्यक्ष पेखो, मणिधर ने एक मोर: सहग्रह गन्युत्व विचित्रं समर्गता, सफळ जनम संसार, सो० ॥ १५ ॥ शुलिकारोपण तस्कर र्पाणं. लोहत्वरो पर्भिद्धः तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रिद्धिः शे टने घर पानी विद्य निवारयां, सुरे करी मनोहार, सो० ॥ १६॥ पंचपरमेष्ठि ज्ञानन वंतर, वंतरात नारियः पंत्र सालाय महाजनपंत्तह, पंत्रसमिति समिकतः पंत्रभार १३५५ चटो दंवर, पालो पंचायार गो० ॥ १७॥ कलश-छप्य ॥ नित्य जपीये क्यार, पर कार्ट सरकायक; सिवर्षत ए शायनो, एम जेवे श्री जगनायक; श्री ीकर है है है कर नहार अपी है। श्री उत्ताव सुराष्ट्र, पंच परमेष्टियुणी जै: . — र १८८६ एक के कार राज सामक को; एक निर्मे आसायतां, त्रिविधसी**दि**

धी धर्मदासगणि विरचित.

શ્રી ઉપેદરામાળા માપાંતર.

श्रेय करवायाला, इन्छित यन्तुने आपयायाला अने जेण कर्ममहरने जीत्यों है एवा बीरभगवानने मक्भीने उपदेशमाला नग्ममा ग्रंथमां नायेत्य पदोना अर्थमान्नने स्कुट करवा बर्ट तिवित मान तेत्तुं विवरण रण् छं, जीके आ ग्रंथनी अनेक टीकाओं हे नीपण जन्तुने क्ये नदमा मकाक्षमान यथे सने छं परने विथे दीयों करवामां भ्रान्तों नगी ? जावे हो, रेवी गीते हुं आ ग्रंथनी अनिय एयी टीका पर्ग छं, श्री फंट्राममणीए कोनाना पुरने कोच आपया त्रच न्येत्र जनोने उपकार करनारों नगा भहानीकोना पन्यास रूप आ हुत्वे कोच थाव नेवो ग्रंथ रच्यों है, मार्थमां पर्मदानाविना हुत्र 'स्थानिदनुं, पर्मने क्य परनारं ग्रंथ परिष्ठ कर्तुंहं,

नंपदीपने निर्पे भरतक्षेत्रमां नम्डियान 'तिनयपुर' नामनुं नगर है. त्यां 'विभवनेन' नादरो राजा राज्य पार्तो एतोः नेने 'अनया' ने 'विजया' नामनी ये राणीओं हती. एमां विजया राणों नुपने अवि पहला रवी. से म्यप्तिसाये विषय हम्बनो आनंद ऐसी मनी मर्भानी यह सेने मर्भानी यथेशी जोहने ऐसी शीक कत्रगाने विनार भवा के-' मारे पृत्र नथी, गेथी भी विजयाने पुत्र धने ते। ते राज्याधियति धरो. ' पूर्व विचारी तेषे देवशी 'भवतिसारिकानं पोलापी इष्टल पन जार्भने पर्म पे- 'स्यारे विजयाने पुत्र धाम स्वारे पोड एत पुत्रने मारीने रैने बनावना अने में पूर पने आपना. ' ए प्रमाण में भें प्रमुखिमारियानी नार्द विचारमवेष क्यों, स्मारं पड़ी दिल्या सहीने पूर्व मासे दूव म्हम्यों, व सहवे थापी गुवालीय कोई मन बालकमें साबीने नेमें बनाव्यों, अने देना पुक्ते हैनी होत अनवाने लापीन वधी, गैणे वय दासीने बालाबीने पर के-' वाजवने यनने दिने कीर अंत हुनामां नांकी भाष. दानी में बालको मह यननां यह धने रेश महीद थानी, एटों हेने दिनार थयी में:-'यने दृष्ट वर्ष परन हीने विकास रे के प्रभाव, रक्षे गरी मोलवान का पर रे. या कीर बार है, जा राज्याती मने भी बार कर्य अभी तींस धार्मी एको बार पूजनी करवादि गरिकी सुकी भार भव ५ वर्ष मेर्नावाहीर हेर भार्त हैंदलहरी बनामे बाने दामकारी मनाबाह ने सावमाने र् भग्रहरूरे.

मूकी दहने ते पाछी आवी, अने अजया राणीने जणाव्युं के 'में ते बाठकने क्वामी नांखी दीथो.' पोतानी शोकना पुत्रने मारी नंखाववाथी अजयाने घणो हर्ष धर्यो.

नासा दोधा. 'पाताना शाकना पुत्रन मारा नसावचाथा अजयान येणा है कि ते अवसरे सुंदर नामनो एक कोंडुंविक घास छेवाने माटे ते वनेमां आव्यो त्यां तेने पेळा रोता वाळकने जोड़ने दया आवी, तेथी घणा हर्पथी घरे लाबी ते वाळक पोतानी मियाने आपीने कहां के—'हे सुंदर छोचनवाळी स्त्री! वनहें वताए आपणने आ मनोहर वाळक अर्थण करेछ छे, तेथी तारे तेनुं पुत्रवत् रक्षण करने ने पाछणपोपण करने. 'ते पण तेनुं सम्यक प्रकारे पाछणपोपण करने छागी अने रणने विषे माछम पडवाथी तेणे ते वाळकनुं नाम 'रणसंह' पाड्युं, ते दिनमतिदिन वीजना चंद्रनी जेम दृद्धि पामवा छाग्यो. हवे केटछाक दिवस पछी कोइए विजयसेन राजाने तेना पुत्रने मारी नंसा

चवानुं सर्व हत्तांत किंछुं; तेथी तेने घणुं दुःख उत्पन्न थयुं. ते विचारवा लागी कें—'जेणे मारा पुत्ररत्नने मारी नंखाच्यो ते दुए राणीने धिकार छे! आ संसा रस्यरपने पण धिकार छे के जेनी अंदर रागद्वेपथी पराभव पामेला माणीओं म्यार्थहिंचने यम थहने आवां दुए कर्म आचरे छे, तेथी एवा संसारमां रहेंचुं तेते अपिटन छे. आ लक्ष्मी चिलत छे, माण पण चळ छे, आ रहवास पण अस्थिर ने पात्र रप छे; तेथी ममाद छोडीने धर्मने विषे उद्यम करवो जोइए. कर्तुं छे के 'मपदा महाना मोजाना जेवी चपळ छे, योवन त्रण चार दिवसनुं छे, आयुद्ध करेते.' यत्री 'एती कोट कळा नयी, एवुं कोड आपध नथी, अने एवं कोइ विद्वान करेते.' यत्री 'एती कोट कळा नयी, एवं कोड आपध नथी, अने एवं कोइ विद्वान होते के तेथी पात्रमर्थ रावानी एवी आ कायानुं रक्षण करी शकाय !' आ ममाणे विराद्धान प्रवेश विद्वान होते वंशान राजाण पोतानो पिया विजया तथा 'मुजय' नामना वेता पार महित पोताना कोट वंशानने राज्य मोपीने वीरमगवाननी पासे चारित्र

रेक्ट के क्षेत्र असे तेना साठा गुजयनुं नाम 'निनदासगणि' राखवामां आव्युं अस्तर स्वाहर्त अक्ट का लड़ने वह सायुओयी परवंग्ला नेओ पृथ्वीने विषे अस्तर स्वाहर्त अक्ट लड़ने वह सायुओयी परवंग्ला नेओ पृथ्वीने विषे अस्तर के होते के अस्तर स्वाहर विदार करना लाखा.

ेरी, बार क्या, भरावने स्वितिमाने सोपी दीधा, अनुक्रमे विजयसेन नामना नवदीक्षित क्रीन रिज्यातना के ययने करीने महाजानी थया, तेमनु 'धर्मदासगणि' एवं नाम

रो देने राष्ट्रिंग नारे बाजर बाज्यासभाषां पण राजकीता करतो सरी देन्द्राच्या शामार अने लुदरने बरे स्त्रीते तेना क्षेत्र सर्वती कारी करवा लागी देन्द्राच्या स्वर्ध के विकास के बाहरी अधिकृत धरेन्द्रं श्री पार्शनाथजीनुं सेय आ

Francisco Treat,

वेन्द्र है. त्यां विजयपुरना घणा छोको आवींने हमेगां अझा पूर्वक पूजा स्नान आदि करे हे अने नेओनां मनोबांहिन ने यस पूरा पाउँ है.

एक बख़त केतिक तावान अर्थ रणितः पण त्यां गया. त्यां मितमाना दर्भन प्रस्तो छमो हतो नेवामां चारणकृषिको त्यां बंदना करवाने आव्या. रणितः पण तेथोने बंदन प्रतिने नेमनी पासे घेटो. सुनिए पण 'आ घोग्य हैं' एवं जाणीने नेने धर्मनो उपदेश दीधो. ते जा ममाणे-

"आ संसारमां प्रथम में महुत्योंने वालपणामां दीनो हिसने विषे दुःच है, स्यारपछी वान्यापस्थामां पण शरीर मलधी सरदायेलं रहे है. नेमन मीतुं स्ननपान फर्मु पहे है. ने पण दुःच है. तरणवयमां विरह्मी उत्यन्न ययेलं दुःच मोगवतु पहे है अने छुड़ावस्था नो तहन सुत्यरित्तन है. नेगो है महुत्यों! मंतारमां यं इ पण सुख होय नो फहो. ''आ प्रमाण मांपठीने गणितंह फर्म् के—'आप पशुं ने मत्य है. 'साभूण गणितंह पर्म उपर रुचिवालों जाणीने पृत्यं के—'हे बन्स! तुं हमेशां आ मानादने विषे पूना यर्था आवे हें '' त्यार नेण नया आप्यों के—'हं अहीं अविने रोज पूना फर्म एवं मार्थ मान्य मयांगी?' गापूण पर्म के—'' जिनपूत्रात्रं मोर्च पत्र पर्म कर एवं मार्थ मान्य मयांगी?' गापूण पर्म के—'' जिनपूत्रात्रं मोर्च पत्र पर्म होते के—' गोगणं प्रमुनी मतिमाने मयांने फर्म स्वामां पुष्ण है. हमार्ग प्रतिमाने पर्मानं पर्म स्वामां पुष्ण है. हमार्ग प्रतिमाने पर्मानं पर्म पर्म मान्य स्वामां प्रण्य है जने गोन् यार्निमानं पर्म पर्म मान्य स्वामां प्रणाने ज्याने के हो नो देवदर्शन पर्मा पर्म मान्य संमानं स्वाम पर्म एवं भिष्म प्रमाणे अभिग्रह लीचे। अने चारपान्य पत्र भागां भागां संमानं कि रुच्यों गया। हथे स्वामें अभिग्रह लीचे। अने चारपान्य पत्र भागां मार्ह भागां स्वामें हमार्ग हो से स्वामें प्राप्त हो हमें स्वामें स्वामें प्राप्त स्वामें हमें स्वामें स्वामें स्वामें मार्य सेवल का है हमार्ग हमें सेवल का हमें सेवल सेवले सेवल स्वामें सेवले सेव

यड, तेथी नदीमां पूर आववाने छीथे त्रण दिवस सुधी घरेथी भात पण आयों निह. चोचे दिवसे भात आव्यो, एटछे जिनगृहे जह नैवेद्य धरी जिनदर्शन के रीने पोताना क्षेत्रे आवी विचार करवा लाग्यों के 'जो कोइ अतिथि आवे, ते तेने भावपूर्वक कांडक आपीने पछी पारण करुं.' एवो विचार करे छे, तेवाले वे मुनिओ भाग्यवशात तथां आवी चड्या. ते तेओने पगे लाग्यों अने गृद अन्त न बहोराच्युं. तेना मनमां घणों आनंद थयों, तेमज पोताने धन्य मानवा लाग्यों के 'अहो! आवे अवसरे मने साधुनां दर्शन थयां अने तेमनी भिक्त पण यड़ 'अहो! आवे अवसरे मने साधुनां दर्शन थयां अने तेमनी भिक्त पण यड़ मत्यक्ष थयों ने बोल्यों के 'हे वत्त! कार्य मान मां हं मंत्रह थयों छे माटे तुं वरदान माग.' रणसिंहे कर्णुं के 'हे क्लारे गुन्य मां हं गंत्रह थयों हो माटे तुं वरदान माग.' रणसिंहे कर्णुं के 'हे क्लारे गुन्य मां हं गंत्रह ययों तथीं मने तो नव निधि मान थड़ छे, जेशी मने

कां रहरता नहीं, 'स्वारं यसे कतुं के-' देवदर्भन मिख्या थतुं नथी, तेथी प्रकृत की राम, कारे देशे को के-'मने साज्य आयो.' यही कहा के-" कार है कार कि कि के को कार्यानि थने। पण सारे कनकपुर नगरने वि य- गणार राजको राणी कनकमालानी त्वी यनकवतीनो स्वयन्र थहो त्यो गरर हरू हर कर कर पर पर किस होता से में जो जे. बळी हो पत्नी जन्म पर्यंत र 🔭 🐣 🔻 हो. हे बार्च स्थाल फर्म, " भा भगाणे कही गर्न ं रह रहा राष्ट्र हा नाना वाद्यां रहे माही, नेना उपर वेसीने े 💎 राज्यामा अवधा भवेल हता. उपसिद्ध प्रमा ा १० तम भागमण साम्य कर्या है। जसे हाली र पर १ के को हो अवस्थित समाह असी पत्री र हार सामित्र रामाने व इ.स. १ तमा महत्त्व । तमा करने पर १५ । । । । । । वस्त स्पा. र १ र र र रेशक्ती भर नाग उन्हा ार स्टालंड न महाराष्ट्र र प्राप्त स्थानिक स्था

रीज मारा कुळर्ना परीक्षा थंद्रो**ं ए प्रमान मांमळीने मर्न** एद परनाने मज वया. रणसिंह पण हळ उपाठीने माने घस्यो. परस्वर गुद्ध धर्वे सने देवप्रमाय-बटे दळना प्रशस्थी सर्व राजाओं जर्जरोधन यहने नासी नया. ने जोहने चम-न्यार पापेचा कनकरोरारे रणिंत कुमारने विक्राप्त करी के-' हे स्वामित ! आपे मोद्र आधर्ष वराष्युं हे तो हवे नमार रूप पण प्रकाशित करो े ने बराउ यक्षे प्रत्यक्ष थर्डने रणसिंह कुमारेने मर्ज चरित्र कही संभवाच्यं, ने सांभवीने फनम्झेन्सर अति हर्षित थयो अने वणी घामधमधी पोतानी प्रश्नीनो विराह फर्चो. बीजा सर्व राजा-शोर्त १ण पहेरामशी आपवावट सन्धान यहुँ, पूजी तुंशो पान्धोतान देश ग्या. यनुप्रशासर पूज देशन राज्य जमाइने अपण कृष्, पूज्य ग्यां रहीने त

कनकवर्तानी साथे विषयगुर्विनो अनुभव करवा प्रान्योः पठी मृदर रोहनने यो-

लायी तेने योग्य राज्यकार्यमां अधिकारी कवीं.

ए अदमरे मोमा नामनी मोटी नगरीने विषे, प्रस्थानय नामे शता राज्य यस्तो हतो. नेने सन्तरती नामनी एत्री हती. ने प्रनप्रनेत्वर पातानी धेननी प्रती (भाषेत्र) भनी हतो. तेषो रानरात्वीमा पाणिप्रस्त्रमा मर्व हतांत जान्यो. रंभी में रणसिंद गुमारनी उपर प्रत्यायाळी थर, अने रंजे रणसिंह विना अन्य पर महि परवानी नियम लीपों, मु प्रमानी पीतानी पृथीभी उनला जाणीने. युरुषोत्रार राजाए पोनाना मधानपुरुषोने रणसिर एरामने पोलाका मोहन्ता. त्यां जहने रेक्षोण नामंत्रण वर्ष, जहने रहानिहे जसार नात्यों के 'प सपड़े फनफरोक्टर नाणे, के फोर जायाने नथी. ' महने मधान प्रापीए समस्टेस्सने विधित प्रमुं त्यारं गेलं विचार्य के 'सानि साणेड्नो विचार प्रमी झाउने ए मने जीवन है. 'ए ममाण चिनवी रणानींद दुनारने योजानीने प्रदु के 'नमे रामविश्वीमा परिवार मार्थे साओं । रेपो में बच्चे पर्य, परी मोटा परिवार मार्थे रामविश्वीमें परप्या मार्चे जर्भा मार्गमां पाटणीर्थेंट नगरमां संभीवना उपरासां विश्वामीन पक्षमा देन पामें में जार्गो, करणे याधितमां जर्भे हें पे पत्ते पनाम प्रयों, त्यों मेरी जरको व्यंत काली, करते में दन्यों निस्तान करमा कार्यो के 'अर्थ को प्रानी देला पत्रे, 'वे मधके वार्योक्ट नगरायीन पराप्तेत शतानी राजी पर्यावसीनी वसिने विषे उत्यव धर्मेणी परावसी साम्बी १वरी गर्वाची परादेवी तथा हुन निवेद बुनाबी बनाओ गाने, गुणेवात मुस्सी महिन में पामना देखिला। असी, त्या स्थानीर मुखानी जीहन ने साम-विदाय था गार. द्यान यह रोने जोएने धोरिन यथी. वेजी धेने नेजर्भ पान यह मार्ची हिमान, स्कीरकरे जनस्मे मान्नेर मोर्चा क्रो को को रही, यही स्टब्स यभेर पार्टी पूजा वेशीय क्षेत्रे काल्या चर्च ये ने प्रशासित ! कवारी क्यारी या स्वयं वर्षे कर्षे कर्षे, कवा दर्शनी हे सेवा राज्यारी स्वर्णी स्वर्णी,

असी फोड़ काम है, नमें भाग र लागो, ह तमारी गाउड करतेथी अहि हैं ए ममाये कृमारनी उत्तर सांभरीते तथा गोगाप्रीय प्रवासम राजा समीत गया अने पुमार पाछक भावे हैं। एम करो, हवे स्पाधित कमार वो कमल स्वीम रूपयी मोहित थरने त्यांत रहेको हैं। ते जनगरे एक भीव राजाना पुत्र वृष कन्यस्व राजानी सेवा करे छे, ते कमळवतीचे उप जोरते तेना पर मेहि ययों छे: परंतु कष्टवनी रोने जरा पण उक्तानी नथी. एक नगत कमळाती यक्षपूजाने अथ गयेली जाणीने ने भीमपुत्र नेनी पळवाने गया. नेण भाष के 'ज्यारे ने यक्षमासादमांथी वढार नीफळके, त्यारे हं मारा मननी सर्व अर्थि ळापा तेने जणाबीश. 'ए पमाणे विचार फरतो सती ते द्वारमांत उनी र^{ता} कमलवतीए पण तेने जोयो, एटले तेण सुमंगला दासीने कतुं के-' आ पुरा जे द्वारने विषे उभो छे ते जो अंदर आवे तो तेने तारे रोकवा. ' ए प्रमार्ट कहीने ते गंदिरनी अंदर गट अने दासीने द्वार पासे उभी राखी. पछी एकाँ जड एक जड़ी कान उपर बांधवायी पुरुपर पे थड़ने ने मासादना द्वार पं आबी. त्यारे छुमारे तेने पूछछु के-'हे देवपूजक! कमछवती हजु कम वहा आबी नहि ? 'त्यारे तेणे कहुं के-' में तो आ दासीने एकलीनेज पासाह' विषे जोड़ छे, बीजी कोइ पण स्त्री अंदर नथी. 'ए प्रमाण कहीने ते पोताने थे आवी. पछी कर्ण उपरथी जटिकाने दुर करी एटछे मूळरूपे थड गड़. पाई भीमपुत्रे पासादनी अंदर घणी तपास करी, पण कमल्वेतीने नहि जोवाधी खिन्न थड्ने पोताने स्थाने गयो. सुमंगला दासी पण घर आवी. त्यां कमह वतीने तेणे पूछयुं के-' हे स्वामिनी ! तमे अहीं केवी रीते आव्यां ? में वहार नीकळतां तो जोया नहि. 'त्यारे तेणे जटिकानु सर्व स्वरूप कही वताव्यु ते वखते दासीए कर्षुं के-' हे स्वामिनी! एवी जटिका तमने वयांथी मळी ! कमलवतीए कहुं के-" सांभळ, पूर्वे हुं एक वखत यक्षने मंदिरे गइ हती. वे

वानने त्यां एक विद्याघर ने विद्याघरीनुं जोहं आच्युं हतुं, मने जोहने विद्याघरी मनमां चिन्नवा लागी के 'जो आ अद्भुत रूपवाली गीने मारो पित नोटो नो ते नेना रूपथी मोहिन यह जद्ये, एवं घारीने हु न जालु तेम तेले मारा फण उपर एक निद्या वांधी दीधी, एं यहानी पूना परवाने माटे गह त्यां मारा पुरुपवेपने जोटने हुं विस्मित घट, अने सर्व द्यारिन अवलोकतां एक महिला फणीउपर जोवामां आबी, ते जिल्हा दूर करी एटले हुं मृतरूपमां आधी, त्यार्पयां पृत्यो प्रहण करीने में मारी पास राहते हैं, तेना प्रभागयी पुरुपवेप धारण करीने हु आज यहामाहाहमांथी वहार निक्ती हती, ए प्रमाण कराने हांगीने दासीने जहिलानुं स्वरूप निवेदन पर्युः

हवें भीय राजाना गुत्रे नेने माटे पणा उपायों पर्या, परंतु एर पण उपाय कामें कार्यों निहे. त्यारे तेणे कमकार्शनी माताने दोतानी अभिमाय जनात्यों तेणे विचार पर्वे हे. ' आ परान राजपुत्र हे को आनी साथे सामी पुजीना एय थाय तो ते उस छे 'ए पमाणे विचारीने तेणे पोताना स्वासीने के हरी-कत निवेदन करो. तेले का ये कपुल वर्ष वीजे दिवसेत्र लग खीपां. ज्यारं यमन्त्रविष् ते वान जाणी, स्थारे नेन वर्ण दृश्य जनस्म ययुः गेथी ने त्यानी नथी, मृती पण नथी, पोलवी नथी अने इसनी पण नथी, वे मननां विचार वरे रें के ' ने बहनी पामेत जहने नेने उपासंघ दाने नेनीन भाषय लई, में हि-वाय मारी दोकों नित नथी. ' भा मनालें दिवारीने सारिए गुप्त रीने नीवर्जी यसर्वेटियमां भाषीने मेने ओलंबो भाष्या लागी के "है यह ! यमारा हैना मृत्य देवोन् यचन अन्यथा नीवरे ए पहित ग्याय मृति, शास्त्रके एन्युर्व्याने तो एकत जीन होन है. वर्ष है के ' सन् प्रकोने प्रक्र सरीने दें. प्रकोहिने पार, पश्चिमें सात कार्लिक फिलिने ए. रावणने दश, शेषनायने रे हमार प्रते दशने,ना स्पारी हमारी ने लागी सीम क्षेत्र से भेफिए प्रस्ति हैं। स्वारी काली प्रस्ता सेंदरी, परंद्र शक्ते श्रीप की प्राप्त अगर्न हैं. " ल प्रमाण वर्गाने रक्षिए इस्तरना मुगाननी धाने पर मंतरा हाने किए गौलांपा चोषीते को ती के - ' हे बंदरेवाल थो ! कार्र बच्च कांग्रजी; के स्थानित व्यासने संबद्धानी प्रमाणी का दिस्ताकृष्टि गतन वर्ष स्थि आकारम वर्ष, केंद्रे कां द्यत एत कार्य तरेंद्र पान्य नहिः, नेधी हु भारत्यात वर्ग ए. की जा वर्षत हैंकी के शहर हुन्हें के रामह रहे पहल्या राजां, हैंने के बारत बार में सामहि, " स महारों क्षेत्रं द्वार पर्म कर्ति वनको कोकी करियों कार्यी हती. वैदार्क मुखे-क्षा है है है है के दे करते हैं कि क्षा कि है है है है कि स्थान की दें से स्थान है है है केंग्रे केंद्रकार करी मुख्यें, ने कोनर्टीने क्लिंग कुमार पीत्राम, करिय विक

सहित त्यां सत्वर आच्यो. दासीए गलानो फांसो छेदी नांस्यो, एटले कमलवर्गी वेशुद्ध अवस्थामां नीचे पटी. शीत पवन विगेरेना उपनास्थी ते स्वस्य भी त्यारे कुमारे पूछमुं के-' हे मुंद्री ! तुं कोण छे ? तं शा माटे गळे फांसी नाख्यो हतो ? तें आ साहस ज्ञा हेतुए कर्यु ? ' सुगंगलाए उत्तर आप्यो क " स्वामिन ! शुं हज आपे आने न ओळखी ? तमारामां जनुं नित्त लीन थयुं है एवीं आ राजपुत्री कमळवती छे. तेना पिताए तेने भीम नृपना पुत्रने आपवायी ते आत्मघात करीने मरण पामवा उच्छती हती, तेनुं मं गळाफांसो कापी नांसी रक्षण कर्युं छे. " ते सांभळीने रणसिंह कुमार अति हर्पित थयो. त्यारपछी स्रमित्र वोल्यो के-' हे मित्र! कयो शुधातुर माणस मिष्ट अन्न खावातु गळते सते विलंब करे ? ते माटे आ वाळातुं पाणित्रहण करीने तेनो मःमथसमुद्रमांगी उदार करो.' ए भमाणेसु मित्रसुं कथन सांधळीने रणसिंहे तेज बखते तेनी सार्थे गांघर्व लग्न कर्यु. करालवती पण मनमां अति आनदित थइ. पछी कमळवती राशि एन गुमित्रनी साथे पोताने चेर आबी. ते समये निवाहकार्यना अति हर्पमां पोताना इंडवपरिवारल मन व्यंत्र हे, एवं जाणीने कमलवतीए पातानो मीचेप स्मित्र^न पहेराच्यो, अने पोते पुरुषवेष धारण करीने रणसिंह कुमारनी समीपे गइ. कुधार पण तेने स्नेहदृष्टिथी में हरतबढ़े गाह आर्छिंगन करोने पोतानी पासे मेसाडी.

इवे लग्न वस्ते भीमपुत्र हाथी उपर स्वारी करीने मोटा आडवरथी परणवा आव्यो; अने महोत्सव पूर्वक कमळवतीनो वेप जेणे धारण क्यों छे एवा सुमित्रनी साथे पाणिग्रहणकरी तेने लग्ने पोतानेस्थाने आव्यो.पछी कामना आवेश्यी कोम अलागपूर्वक नतीन वधुने पुनःपुनः वोलाववा लाग्यो; पण ते जरा पण बोलती नथी; तृप थटने पेसी रही छे. अति कायना आवेश्यां तेणे हस्त बहे तेना अंगनो स्पर्ण कर्यों. ते स्पर्श्यों ते तो पुरुष छे पुत्रं जाणीने तेणे पूछ्युं के—'तुं कोण?' तेणे उत्तर आप्यों के—'तुं तो पुरुष छे त्यारे वधुनों वेप धारण करनारे सुमित्रे जवाव आप्यों के—'हे माणनाथ! आ छं लगे छो? ये तेम तथाक चेष्टित पकट करो छो? विवाहना उत्सवथो परणेली एवी मने चेटकविद्याथी पुरुषक्ष करों छो; तथी हुं हमणां मारा पिता पासे जटने कहोश के— हु कुमारना क्ष्मावथी पुत्रोपणाने तजी दहने पुत्र थह छ' प प्रमाण वोल्वाथी 'आ केम वन्यु ?' एम विचारतो भीमपुत्र व्यम्न चित्तवाली थ्यों. ते अपने क्रिये पारण करनार मुद्रित रण्यांह कुमार पासे आव्यां, अने गित्रनुं सर्व हुनांत करें. ते कीतुक संनार मुद्रित रण्यांह कुमार पासे आव्यां, अने गित्रनुं सर्व हुनांत करें. ते कीतुक संवारे होने तेशो सर्व हम्तताली हुटने हसवा लाग्या

पहीं भीमपुत्र कनकमन राजा पामे आयोने कय के-भारी साथ तमारो जे जीना एम थया ने तो पुत्र देखाय है.'ने सीमळाने नेना साम्र ससराए कय के-'शं आ तमार गोंदाथर गया है के आ ममाण लवे हैं? अथवा शं भृतथी आवेशवान ययो है में जेनो आ भ्रमाणे अनंगंध यो छे हैं एरज भवने विषे नीव सीपशं नती हरने पुरुषत्य भ्राप्त ग्रें एवा भ्रमान्ती भ्रित कोड हिवस थर नभी अने यदो पण निर्दे नेमज एगी यात सांधळवामां पण भावी नथी. तेम आ तमाइ पण भाव श्राप्त पोछे में माहे ए पुरुषो ने फोड भूनं देखादछे. "ए भ्रमाणे फती राजाए फमल्यवीनी सर्वप्र द्याप प्रश्वी एक तेनो देनो पोड जन्याए म्ळ्यो निर्दे त्यारे राजा भित्र प्राप्त ग्रे ग्रेंच प्रश्वी पाती एक पुत्रीना मोरने लीचे रदन फरनी मती नेवको पर्वे वहेंचा कामी के 'के पोड माने पुत्रीने लावी भावो हेनी प्रभिलापा है पूर्ण परिवर्ग नेभी के प्रयो प्रणा माल भ्रमा, प्रजु पत्री न लागवायी रिक्त पटने पाता प्राप्ता प्राप्त

मानाकाले पनो केलवेला कोई पुरो फनफ्सेन रामा पासे आतिने करी कि—'हे स्वामिन! में प्रमुक्तिने एक्रोपमां स्थासित हुमारना स्थामे किया पत्नी लोड छे.' ने सांभाकीने ब्रोधधी देनां ने तो लालवोळ पड गयां हो एदो प्रनातनी मान के का क्रिया सिक्ति मान सिक्ति के स्थापित कर्मा मान के स्थापित कर्मा मान पुद्ध आरंक्ष्य र्वापित का निवास मान कर्म सिक्ति क्राप्ती मान पुद्ध आरंक्ष्य र्वापित का निवास मान पहित प्रमुक्ति स्थापित प्रमुक्ति का स्थापित प्रमुक्ति का स्थापित क्राप्ती सिक्ति क्राप्ती सीम पुद्ध का स्थापित स्थापित प्रमुक्ति का स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप

ताने ए बात जणावी. तेणे पण 'तारी इच्छातुसार कर ' एवी रजा आपी.पड़ी त्यां एक दुष्ट 'गंधम्थिका' नामनी कामण तथा वशीकरण विगेरेमां जुझल एकी स्त्री रहेती हती. तेने वोलावीने रत्नवतीए कहुं के-' हे माता। तुमारं एक कार्य कर, ते कार्य ए छे के रणसिंह कुमार कमलवतीना उपर अति लब्ध धयेला है। तेयी पर्छ फरो के जेथी तेने कलंकथी द्पित मानीने क्रमार घरमांथी काढी मुके ते सांभळीने परित्राजिकाए ते बात फब्छ करी अने बोछी के-'एमां ते गृं मोद्धं फाम छे ? ते हु अल्प फालमां करीका. ' ए प्रमाणे वचन आपीने ते योडा दिवसमां रणसिंह सुमार इता ते नगरमां आधी. त्यां ते अंतः पुरमां कनकवतीन मंदिरमां गइ, अने तेने रत्नवतीना छुशल समाचार विगेरे निवेटन कर्युं.रत्नवती ना तरफ्यी समाचार कावेळी होवायी यनफवतीए तेने सन्मान आखं. पछी ते हमेजां अतः पुरमां ज्या छागी. अने कुतृहरू विनोद विगेरे वार्ता करवा लागी। षमप्रवनीनी सामे विशेष वातचित करनी हती, अने जेम कमलवतीनो तेना प प्यारे विध्याम उत्पन्न थाय तेम करती हती. टररोज जवा आववालं करतां तेणे एक दिवस पृट विद्याशी कमलवतीना मंदिरने विषे परपुरुपने आवतो कुमारने वर्ती म्यो पत्र नेना मनमं अराए आच्छं निहः ते तो विचार करवा लाग्यो के गरमनीम दीज गरेमा निकलित हो.' ए ममाणे वणीवार परप्रमपने आवती टोंबाधी बनारे विवांते के 'श्रे कामलवनी शीक्षशी खटित यह हुने? के जैसी है र्रांगो चेना महिल्लां प्रमुख्यने आपनी वानी मन्यश को उन्हें, 'तेणे कमलबतीने पूछा है - 'ह रहेशां शाम महिन्ते विषे परपुरुषने आवती जीउ छ तेन शे कारणी रिकोटको यह छाउँ विकास किन्दी है प्राणनीय ! हा कह पण जाणती नथी. ज्यारे रहे सर्वक्षण स्वाचन कार्य पूछी छी स्वारे में मार्ग पर्मनी दीप है. उमी करे हर है है है होने के रूपत महतायानी छ, मारे जो जा पत्नी मार्ग जापै, के देश दिने मात्र कार के हैं है है। एवं अश्राप वान गीवलां न पहे. ' अ ६६ हे १५ र राज्ये हे रहत हि धर करवा स्थापी के विकास सब आदिने रें के के के के किया किया में होट पण महान्ती करें छ। जणाती संबीत सोकें र देश २ १ - हा री में है हारावा राष्ट्रा की तम करतात फानीने परमा मनमें भोतित इते दे के के कहा है हुन के का मान के भी भी सब में ? ने भी पण विद्यार के ने कार्य के कि कि कि कार महिल्ला के असल सुम्युनी असिलापी इ. १८ के इ. १ के इ. व इ. व इ. व. हे पह करता श्री समाने में सूच करा के का उने का दारा स्था केशी और भीत सी पाणी-इते देन वर्ग का पर है। र पोने अनु विस्ते सेना उपानी विस्ति भा कें है कि में बार कर, मेर पानि सार्

ामनना अपाये करी मंत्रचृणीदिनो योग करीने तेणे कुमारनुं मन विरक्त कर्युः पारनुं मन जे पूर्वे कवलबतीना उपर गाढ प्यारमां लग्न रतुं तेने मंत्रपूर्णांदिना ययोगधी तेना भरवे इक्टायमान कर्य, कुमार लोकापबादयी दरीने विचार रवा लाखों के ' आ फमलातीने तेना पिताने यरे मोकली दृहं, प्रधी राखवा गयक नधी. ' ए प्रमाणे विचारीने तेणे सेवकोने वोटावी आहा करी के 'तमे मलनतीने रयमां पेसारीने तेना पिताने पेर मृकी आयो. ए मगाणे सांमळीने विको विचार फरवा लाग्या फे-' बा आउँ अपटिन केम करे छे? पण भारणने ो स्यामीन पारव इङ्घन न युर मके तेतुं है. ए प्रमाणे विचारीने नेशो क-लनतीनी पासे आबी पोल्या फे-' हे म्यामिनी ! नमारा पित पाटिकाने विषे येळा है ने वनने त्यां बोळावे है. माटे स्थमां देनीने धीन चालो.' ए ममाणे ।सत्य बोन्टीने नेओए नेने रामां वेसारी. ने बल्लने फरास्वतीनी जपणी आंख त्सी, तेथी ने विचारवा छानी के- अत्यारे शु अशुन परे ? पण स्वामी ने घोलां हे मारे जरूर जर्र. जे वनवानुं दोय ने बनो. ' ए प्रमाणे निवासी यप्र वित्ते ने स्थमां देठी. सेवरोण् रथने सत्वर घलाच्योः कमलपतीए पूछपुं k-' मारा स्वामीयी अलंकन ययेल् उपनन येडलूं दूर हो ?' स्पारे नेयके उत्तर साप्यों के- ' तन तथां अने तमारो स्वाबी पन वयां है तुमारे तमारा विकाने ार नवने मुक्ती आवनानी अपने आहा आणी है.' पमलक्षीए पर्ष के-" बछे, यारे पूजारे आनुं पमरिनान् सेमह पर्मना कर्या विनान् पाय पर्नु हो मी पत-तारेथी नेने पणी पक्षाताप पत्ने, बाकी मारे नो के फर्म उदयमां आयी पदधुने रोगवांत बोहर, कर से के ' फरेला क्योंनो सब फरोड़ी वर्ष करीने दश पत्री रंगी. शुप वा वश्य के पर्य पर्य होया ने अवस्य भीगवर्ष्ट्र परे हो. "पर्य है नेत्पराधी मन्ये आ मं आपर्ये ?" मा ममाने विचारने। ने योदा दिनगर्या पाट-रीवंडपुर सभीने प्राची परीनी. एडण्डे बस्डवरी बोली फे-' हे मारयो ! तु महिंगीम रचने दातो चार. स्वे अभि सर्व पंत्र पाद सभी, भा स्थानकी में परि-णित है. प्रशिषांधी सन्तृतार बादणिक्यपुरन् त्यान देखाद थे, वैधी हुँ देखी एरेबी इन्दर्भ ए मधाले गांवती साहसी सन्तार करीने शांत्यमां हुए एर्सी के न्यों के - " हे स्वादिनी ! तमें कातातु तीए क्यी भूपत्ने धारण करनाता णानी लो. ने हे अवा पादाने। परनाताने। परेपेदान ई. के केवी स्वते करनायर है गाउँ मुंदे हों, पुन क्षेत्र कामाप क्षा करें किया है ! " क्षा कार्य कार्य है। बोरा में स्पार्थ होते कार कार्य के के के समुद्र कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य हैं केंद्रक के के के के कर्र कार्ती हैं। उन्हें कार्ति करूक थे, वह के श्रीकार वर्षक कर्

एक ज़ब कहेन के ' शुला कर्ण लोगिया अलो लोग मांगा बाद नमलातीने बह भरती नीने मार्गने नागी। मार्गने गांगे बाणी, पत्री एकाः, कपलवती रोती ने विलाप करनो वालवा लागा के-'' हे तिपाता हैं। आ अति कुर कार्य शुं आच्युं ? अकाले वत्त पडवा रूप मियना वियोगगी उत्तर न थतुं दुःख ते मने शामाटे आप्युं ? में तारों को अपराप करें। उती ! अ दुःख तो सर्व सहन थड् शके तेम है, परंतु अगत्य कलंक नडारोने भनीए मने घरमांथी काढी मुक्ती छे: तेथी मने महद् दु:म्न शाय छे. ए शुं कर्म ? नयां नारं हे माता ! अहीं आवीने दुःखदावाप्रियी बळती नारी पुत्रीनुं रक्षण कर. अयत्र तुं आवती नहि, कारण के मार्क दुःख जोड़ने तार्क हटय फाटी जरो. हुं मंदभा ग्यवती छुं. कारण के हुं कुमारावस्थामां पिताने वर शोधवानी विवानुं कारण यइ हती. पाणिग्रहण वखते पिताने वंधन विगेरेनुं कप्ट माप्त कराच्युं हतुं. अत्यारे पण आ सांभळीने ते पण दुःखी यशे. " आ प्रमाणे अनेक रीते विलाप करती सती मनने विषे विचार करवा छागी के-' प्रथम मारा स्वामीए मारा शीलनी सारी रीते परीक्षा करी हती. परंतु एवं जणाय छे के कोड़ निष्कारण वैरीए अथवा भूतराक्षस विगेरेए इंद्रजाळनुं स्वरूप वतावीने मारा स्वामिहं मन व्यु द्याहित करो नांख्युं छे. तेथी हमणा कलंकयुक्त मारे पिताने घर जबुं सवया युक्त नथी. हमणां तो जटिकाना मभावथी पुरुष रूप धारण करीने रहुं.कारण के पाका बदरी फळना जेवा स्त्रीशरीरने जोइने कोण भोगववानी इच्छा न करे कहं छे के " तळावतुं पाणी पीवाने, तांवृळ खावाने अने यौवनावस्थामां स्त्रीना शरीरने जोवाने कोण उत्सुक न याय ? " मारे तो माणत्यागथी पण शील हुं रक्षण करतुं ते श्रेष्ट छे. कारण के आ संसारमां शील शिवाय बीजो परम परित्र अने निष्कारण मित्र नथी. कहुं छे के-''शील ए निर्धनतुं धन छे, अलंकाररहिनई आभ्रपण छे,विदेशने विषे परम मित्र छे,अने आ भवमां तथा परभवमां सुख आप-नारं छे." वळी शीलना मभावर्था मञ्चलित अग्नि शांत यह लाय छे अने सर्पआदिनो भय नाश पामी जायछे. आगुममां पण कहाँ छे के-" देव टानव, गंधर्व,यक्ष राक्षस अने किन्नर विगेरे त्रसचारीने नमस्कार करे छे, कारणके ते दुष्कर कार्यना कर-नार छे." वळी "कोड कोडोगमें सोनैयातुं दान दे अथवा सोनातुं जिनभुवन करावे तो पण जेटलुं पुण्य ब्रह्मवत धारण करनारने थाय छे तेटलुं तेने यतुं नथी."

आ प्रमाणे विचार करीने न जटिकाना प्रभावथी ब्राह्मणनो वेष धारण करीने णड्छीरंबडपुरथी पश्चिम दिशाए आवेल 'चक्रधर' नामना गामनी समीपे चक्रधर विनाम कंदिरमां पूजारीपण रही, अने सुखं काळ निर्मयन करवा लागी.

हो सार्गीण ग्यासिंह तुमार पासे जड़ने फमलबनी संबंधी सर्व हतांत कहुं, ते सांश्कीने 'आ सर्व नंधम्पिकाना संप्रादितुं माहारस्य हैं पृष्ठं जाणी तृसार अन्यंत प्रभागाप परिया लाखों के—''में अपसे इक्रने अनुचित पृष्ठं आ श्रं आ-नर्ष ? के जिथी निर्देषण पर्वा माणिविधाने फलक पढ़ाव्युं, ने मारी माणिव्या फमलाकी फमलबनी श्रं फरती हवां ?हं श्रं करं? तेना बिना सर्व शृन्य लागे है.

। छकां, अपि छनां तथा नाना प्रकारना मणि छनां एक ने मुगाधी विना ना मुं चंचुं अंपकारमय लागे छे.' पोण नाणे ने मारी चड़भा हवे मने वपारे में ?अधन्य एवी हुं लोकोने मुख कीरीने बनावी छक्ती मने पिकार छे ! जे मने विषे एको माटो निचार आब्बो छे मार्ग हद्य इटी केम गर्यं निक्षि ? अने मी जीभ शनखंड केम यह गह निह, के जेंगे नेने चनमां मुकी आवधानी रहा शि आपमाणेंनुं अकार्य करनां मारा माया उपर अव्यांट केम हटी पटचुं निक्ष ? ! वगर्यवनारे फरेलुं कार्य गहा अन्यंने माटेन याम हो, नीनिमादुमां पच छे के "कोड पण कार्य महाना करनुं निक्क पास हो, नीनिमादुमां पच छे के "कोड पण कार्य महाना करनुं निक्क पास हो, नीनिमादुमां पच हेन्य माणीओ स्नायमेव संप्रधान पास छे, अने जिनाधी यन् शि ए प्रमाणे तर गहना नेले गंधम्पिका करी रहाना स्वयं सांगलया, एटडे ' रहांस्वर कार्य शेलिन फरेलुं छे ' एम नाभाग प्रीक्त विनास्ता स्वयं.

रंद गंवणिकाण मोणाव्यी जाने रन्त , एसे व्यापन् गर्ण स्वरूप नवा रासीनुं पण न्यरूप करी प्रयान्तं, रन्तानी इपेर्ट्स पार पत्रों तेने वीदाना । पूर्णालय सालाने पर्यु जे-'रे स्वापन रे एर्क्स प्रमाने नेराको, प्रयोग्ने सेर्थस सालाग् गण एमारी कालावाले पन्तकुर प्रमानेता सालाने, पर्यो ताला नेर्थि मोरान्या, रेप्पंयु नो राने पहें ते-'रे प्रयानित ! स्वर्तक पर काणीने प्रतिवादस पर्यो दान स्वतेशीन प्रता क्लाण पर्यु प्रमृतित हो, नेर्थे प्रतिवादस पर्यो दान स्वतेशीन प्रता क्लाण पर्यु प्रमृतित हो, नेर्थे प्रतिवादस पर्यो दान स्वतेशीन प्रता क्लाण पर्यु प्रमृतित हो, नेर्थे प्रतान स्वतित वर्षो सेत् स्वत्वानी हो तेयान विते इप्रतिवाद होत्र स्वर्थ हो, नेर्थे को देन प्रतिवाद पर्यक्षित विशापनी प्रवास काली, काला-हेर्थ विश्वास कोले होते स्वत्वान स्वत्व होत्य विश्वास प्रवास होते कहार । स्वर्थि प्रतान होते हेर्थ साला, युव पहले होत्य काला प्रवास होते कहार होते सहस्य । स्वर्थि प्रतान, क्राप्टे विश्वासी होता प्रतान काली प्रकार प्रवर्ण कालाई (स्वर्थ प्रतान प्रवर्ध, रहेर्थ विश्वासी होता प्रतान होता प्रवर्थ स्वर्थ होता प्रवर्थ काला प्रवर्थ पूजा करवा चाल्या, ते वखते तेमनी जमणी चक्ष फरकी, तथी ते विचारता काग्योके-'आज कोइ इष्टनो संयोग थशे, परंतु कमलवती विना मने वी कं इष्ट नथी; तेथी जो ते मळी आवे, तो खरो इष्ट लाभ माप्त ययो मानुं.' ए प्रमाणे विचारे छे, तेवामां पुष्पवदुक रूपधारक कमळवतीए पुष्प लावीने कुमारना हस्तमां मून्यां. कुमारे तेने योग्य मूळ आप्युं. पछी पुष्पवडुके विचार्यु के-'आ रणसिंह कुमार रत्नवतीना पाणिग्रहणार्थे जता जणाय छे.' कमळवती कुमारने जी अति इपित थइ. कुमार पण पुष्पवहुक रूप धरनारी कमळवतीने पुनः पुनः जोती सतो विचार करवा छाग्यो के-'आ मारी पाणवछभा कमछवतीना जेवो देखाप छे. एने जोईने मारुं मन अति मफुछितथायछे.' ए ममाणे चिन्तन करती विस यथी तेने पुनः पुनः जोतां पण दम थयो नहि. कमलवती पण स्नेह करीने पोताना िषयने निरखवा छागी. पछी कुमार वहुकने साथे छइने पोताना ग्रुकामे आव्यो अने भोजन विगेरेथी भक्तिपूर्वक तेतुं वहु सन्मान करीने तेने पोतानी पासे वेसी डयो. पछी कुमार तेने कहेवा छाग्यो कै-'हे बहुक! तारुं अंग फरीफरीने जी छतां मने दिप्ति थती नथी. तारुं दर्शन मने अतिशय इष्ट लागे छे.' बहुक बोल्य के-'हे स्वामिन् ! ए सत्य छे. जेम चंद्रनी कांतिना दर्शनथी चांद्रोत्पलमां^{धीर} अमृत स्रवे छे, बीनामांथी स्रवतुं नथी, तेम आ संसारमां पण जे जेनो वहाँ होय छे, तेने जोवायी तृप्ति यतीज नथी ' कुमारे कृष्टं के-'मारे आगळ जवाह खास फारण छे, परंतु तारा मेमनी जूंखलाथी वंधायेल मारुं मन एक पगलें प आग्र भर्वाने उत्साहित थतुं नथी; तेथी कृपा क्री तं मारी साथे वाल. पार्वे हं तने अहीं अवश्य लाबीश. ए ममाणे सांभळीने वहुक वोल्यो के-'मारे अं इमेशां चक्रयर देवनी पूजा करवानी छे, तेथी माराथी केम आवी शकाय?वर्ट इंभरहित व्रत धारण करनार मने त्यां आववानुं मयोजन पण शुं छे ?' कुमा क्युं के-'जोके तारे कंड् पण कार्य नथी तोपण मारा उपर कृपा करीने ता आववुं जोइए.' इमारना आप्रहयी तेणे ते कबुल कर्युं, अने तेनी साथे आर्ग चान्यो. मार्गमां जतां कुमार्ने बहुक्नी साथे घणी मीति वंघाणी. एक क्षण प् ने तेनो मंग छोडतो नथी. तेनी सायेज वेसवुं, उठवुं, चालवुं ने सुवुं विगेरे क छे. शरीरनी छायानी जेम तेओ वन्ने एक क्षण पण नोखा पडतां नथी. दूध ने अबनी जेवी ने बोने मेबी थर छे. करों छे के-"द्ये पोतानी साये मिश्रित् यरे जरने पोताना मर्न ग्रण आप्या. पछी द्वयने ताप उपर चडावेछं जोइने जह दोतानी भारते अधिमां नांगी, अधीत् पोते बळवा मांड्युं; ते बखते पोतान् नियमें आपितां जोटने द्य उछळीने अग्निमां पडवा तैयार थयुं. तेने पार

तेमा मित्र साथे मेळल्युं अर्थात् पाणी छांट्युं त्यारे ते झांत धवुं, सारा माण-सोनी मेत्री एवा मकारनी दोव छे. "

एकदा गृगार बहुकने फहेबा लाग्यों के-'हे मिन ! मारं मन मारी पासे नथी.' हेणे पृछ्युं के-' ने बर्ण गयुं हो, ?' इमारे क्युं के-' ने मारी बहुमा कमछवतीनी साथे गयुं हो.' नेणे पृछ्युं के-' कपछवती क्यां गह हो ?' कुमारे क्युं फे-' मारा जेवा मंदभाग्यवाळाना धरने निये एवं सीरत्न वर्णांथी रहे ! देंगयी जेतुं मन नष्ट थ्येत्ं हे एवा में ने निरंपराधी बाळाने काडी मुक्ती. ने वर्ण गड़ हो !' बहुक क्युं के-' जेने मार तुं आहलो क्यों सेट करेंग्रे ने केवी क्यों !' कुमार नेलगां अधू महित कहेवा लाग्यों के-' हे मिन्न! नेना गृणों एक

भयी गणपाने फेबी रीते शिनातान प्याय ? सर्ग गणने भाजन ने सी हुनी।
तेना विना सर्व संमार शृन्य लागे हो. परंतु गारा द्यंत्रथी मने आनंद्र
परन थाय हो.' न्यारे बहुके वर्षु छे-' हे हुद्द ! आहलो वर्षो प्रधानाप
तो अचित नथी, पारणके विधिष निर्माण परंत्र पार्य नियारानि कोण
नेत्रान हो? यथु हो के-'विधि अपिटन पटनाने पटावे हो ने हुप्पटित यटनाने
रिभिन कर हो; जेने माटे मनुष्यज्ञातने विचार पर आबी परनो नयी त्रेबी
ना विधि पटावे हो.' तो आ प्रमाणे वह दोच परवायी हो लाम हो :'

लियो पाने नहिं, "

आ मगाणेनां कुमारनां वयन गांभणीने रत्नाती रोपणी केती के विक्री फ्रुं ? ते दुए सीने केवी जिसा आपी 'अहांशी गंगमुणिकाने फोरानी, ने गूर् मेंज कर्युं इतुं. जेबी ते तमारी इष्ट हती, तेत् म कर्यः ते हते तमे भ रोतानी के तेना गुणो वारंवार गाया करोलो "ए प्रमाण सांभित्रीने क्मार कालातीते तदन निष्फलंक मानी, कोषथी लालचील थर, रत्नवनीने हस्तथी पकडी, वा मारी, तिरस्कार करीने बोल्यो के-"हे मलिन कर्म करवावाली! नने विमा छे ! तें आज्ञा आपीने कुकर्ग कराव्युं, पण तेथी तें तारा गोताना जीननेज दुःतः समुद्रमां नांख्यो छे. तारा जेवी जीना करतां कृतरी पण नधारे सारी है, के है भसती होय पण अन आपकार्था वश थाय हो ने भसती नथी. परंतु वहमानित्र पूर्वी पण मानिनी (स्त्री) कदि पण पोतानी थती नथी.?" ए ममाण कहीने पत्री विचारवा लाग्यो के-'अरे! तथा कलंकितामां पटेली मारी भिया फगलवर्ती जरुर मृत्युवश थइ हशे, तो हवे मारा आ जीवनधी सर्थे !' ए पमाणे विचा करी तेण पोताना सेवकोने आज्ञा करी के-'तमे मारा आवासनी पासे पूर् मोटी चिता रचो, के जेथी कमलवतीना विरह्मी दुःखी थयेलो हं तेमां प^{डीते} मरण पासं.' ए प्रमाणे कही पराणे चिता कराची, अने सर्व जणाए वार्या छन्। वळी मरवा चाल्यो. अहीं पुरुपोत्तम राजाए ते वात सांभळी, एटळे प्रथम ते कुडकपटनी पेटी, मिध्या कलक चडावनारी, अकार्य करनारी अने नरकगित्री जनारी एवी गंधमृषिकाने घणी कदर्थना करावी, भानरहित करी, अपमार् अपावी रासभ उपरे वेसाडीने नगरनी वहार काढी मूकी; स्रीजाति होवाथी मार्ग नखावी निह. पछी ते कुमार पासे आव्यो. त्यां तेणे तथा सार्थवाह आदि जनी क्रमारने वह पकारे वार्यो छतां ते चिता समीप आव्यो राजा आदि जन विचार करवा लाग्या के-' मोटो अनर्थ थहो, एक स्त्रीना वियोगथी आबु पुर परत्न मृत्यु पामशे.' आ प्रमाणे विचारी कुमारने चितामां पडवाने तैयार थये जोइने प्रस्पोत्तम राजा वहुक समीपे जइ कहेवा लाग्यो के- हे आर्थ! कुमार तारुं वाक्य उछंघन करता नथी, तथी एवी विक्रप्ति कर के जेथी ते अ पांपकार्यथी पाठा फरे.' पछी बडुक कुमार मत्ये वोल्यो के-''हे भद्र! उत्तम कुळा उत्पन्न थया छतां आवुं नीच कुळने उचिन कर्म केम करो छो ? तमारा जेव सटाचारी पुरुपने ए घटित नथी.अग्निनवेश आदिना मृत्युथी अनंत संसारनी हरि थाय छे. तेमां पण मोहातुर थड़ने मरतुं ते तो अति दुःखदायी छे. वळी हे मि

तमे मने मथम करंगुं हतुं के 'हुं तने चक्रधर गामनी समीपे पाछो पहोंचाडीश' ते तमा

बचन अन्यथा थाय छे.तेमज मृत्यु पामेलो कमलवतीनी पाछळ मरवाने इच्छो छो, पण व्यर्थ है.

फारण के जीव पोताना कर गीज परम्यके निषे जाप छ. जीरोनी चोराजो खाब योनि है, तेथी ने जोदी गति एक नगी: पर्दने अनुमरीने जीवनी गति भाष है. पंडिय पृत्ते सारं अपना रूपार कार्य दल पालना परिणामने। विचार वारीनेन वरमूं भीटण, रश्मद्विष फोल तथा दगर विशावे फोलूं कार्य भागळ उपर शन्मनी जेवं दाखदायक नीवते हैं। वंगी जा मारम प्रमुखी पाउ। प्रमेशकारन के 'की को कर हैं इसे भद्रने एए छे.' क्ली की एवं गारी बात सांभन्नीने नवारा माणसं रक्षण परणो, तो पदाचित तथने अवज्ञानीना संयोग पन माप्त परो: षण की मुद्राणाने कीये प्राप्तत्याम प्रत्योग नी तेनी संगय दुर्वभन है. " आ मगाएँ नी बद्धनी वाणी सांध्योने गमण्यनीने मल्यानी सिनिन् अभिटापा जेना बद्यमां इद्भवी हे एके हुमार यहेगा लाग्यों के-' हे मित्र ! शुं में मारी विवान ने जोड़ हैं ? प्रथमा में ने जीये है पर्यु फोड़फ् नने पर्यु हैं। अपमा हानुना गरणी तुं जाले है के ने मज़ने के नहि ? तुं मने अग्निमां पहेती अदरारे है ते हुं यान्य भू छे ? ते पहें, ' बहुद गोन्यों के-' हे बुबार ! तमारी दिया एक्टबवी विभागानी वासे है एम है शनधी जाये है. तेथी जी नमें परी ती मारा भा माने विचाता-भी पासे कोकरीने कमरवनीने अहीं एड आहं. 'सारे कुमारे पह के-' को ए भर्व मत्य होग तो तेमां जरा पण विजय कर निर्दे स्यारे हूं यमस्वतीने लोहा स्यारे मारो आ जन्म मुत्रार्थ मानीछ. 'न्यारे सहुर, बोन्दो के-' हे हंडर ! द-िरणा विना मंत्रविषा आदि वेची रीते सिद्ध पा सके 🖰 नारं रमारे फ्यु कें- 'हे सिन्न! मणम में नने हारं इन जरंग घरेग है, हवे मारा माल पन नारें भाषीन है: वो परे ही नंगी पणारे पीती भी दिल्ला आई ! वर्के पर्ध के-'डीवीय गानी, यह है ज्यारे जे कोई तथारी जाने साथूं के स्वारे आवर पटने. केमोरे मह में-' हे तने पर आहु हू है है पार्टीक, देह परेवाधी थे ! परंतु न क्षे हार्श क्षिप बाजाने हत्या गाव, 'स् बहारी वर्षश्रदे कारे संसी-विभी सामनी क्षी गर्वने पनावी. पती में प्रकारी पंतर प्यान परती हैते. क्राम पत्र की रिवेंग यहां लागों, गृहा विकें दर करमवर्षने होराने चन्मारित भना, मनी वेद्यान चाहेनी, बहरवरी पाची आदरी ही ही। प्राप्तदे भने, या विव से होने प्राप्ते क्याय है के प्रवान केंग्री प्राप्त सरकार का-रहार्य आगाप करता जनमा के बार्च पहुंचे केली सही बनेती है। देन सहके बरामकर्षे भर गर्, कर्म के बरमायोग का मा व्यक्ति, युग्ने केन 🦟 क्षेत्री अहें, भन्ने ने विकास भाग्न प्रहार दिया महातको ने रे सम कहा, रेन्स् matig einter forg nach bit; matthem up gente pit na mind

the titre of the second of the At the month of the second of कास्त्रीनीकादेवलिक भवति । ११०११ १ । ११० ॥ १४४ । मसदा नमाने का लाकि लाहा के में हैं। के हैं के लिए हैं फ़िंदीने नेणेश्वनीवडीनं सर्व उत्तरि निरेशन इस् हे हैं। ने स्वाह भी है थयो. यमछवतीण विचाय के भंजा व व कर्व में वे वाव मा व माना प्रवास नधी, तेना तरफ ते अस्तेत निक्षतेती होत्या के प्रण विद्या गाहित परिवार वोखाय. नोके नेणे अपराध कर्मा हे तो पण कारे ने विषे निवार करती गीन नथी. फारणके उपकारीना प्रति प्रन्युपकार करतो छ्यां कां। जात्रमें नथी, वी अपकार फरवावाळानी उपर उपकार करवी एज शतपुरुषोनं लक्षण है. " की छे के-" उपकार करवाळा उपर वा कत्सर जिनाना मनुष्य उपर दया ननावा मां आवे तेमां विशेषपणुं शु छे ! पण जे शहित करनार पनि हेमन गरमा अपराध करनार मत्ये दया वताचे तेज स्तुप्रसोमां अग्रणी छे." ए प्रमाणे वि चार फरी कमलवतीए छुमार पासे वरदान माग्यं. कुमारे कलं के-' जे नारी इच्छा होय ते मागी ले. 'कालवती बोली के-' जो तमे उन्छित बस्तुने अर्पण करता हो तो मारी उपर जेवा स्नेहवाळा छो नेवा रत्नवती वित स्नेहवंत थाओ जोके तेणे अपराध कर्यों छे तो पण ते क्षमा करवा योग्ग छे. कारणके तो उत्तम कुळमां उत्पन्न थया छो अने कुळवात प्रम्पाने चिरकाळ मुधी क्रोध राखवी घटतो नथी. कहाँ छे के " कुळवान पुरुपने क्रोध धतो नथी, कटाच थाय तो तै लांबा काळ सुधी रहेतो नथी, जो कहाच लांबो काळ सधी रहे तो ते फळतो नथी. तेथी सत्पुरुपोनो फोप नीच जनोना स्नेह जेवो हो."वळी सीओव हृदय पार्च निर्दय होय हो. कहुं हो के-'असन्य, साहम, माया, मूर्वत्व, अतिलोभ, अस्वच्छता अने निर्दयपणुं ए स्त्रीओना स्वाभाविक दोषो हो. पोताना स्वार्थ साध वाने माटे ते नीच आचरण आचरे छे." आ प्रमाणे कमळवतीना कहेवाथी कुमारे रत्नवतीनुं पण सन्मान कर्युं पछी केटलाक दिवस त्यां रहीने पुरुपोत्तम राजानी आंता लड़ कुमारे कनकपुर तरफ मयाण कर्युः पिताए रत्नवतीने घणा दास,दासी,

The same and a same a same

A STATE OF THE STA

भलंकार, ह्रव्य विनेरे जापीने विदाय करी अने सुधारने पण पणा हायो. अन्त. रथ, पायदळ, सुदर्भ, भोदी निरेरे अपण दर्मा.

रणमिटे रन्दरीने लाने प्रकटारी भटित गुम दिवसे प्रवाण बर्खे, अनुसमे पारलीवंदपुर समीदे आला. न्यां केले पंतानी पूर्णने सर्व क्वांत सारणे हे प्यो यमळमेन राजा मनमूद आणी महान्तर पूर्वेर नमारने पाताना करे छ। गयो. क्रमळवतीने ६प दह सम्मान आप्यूं, नगम्य लोकोष् येनी पणी मशंपा करी. वेनी माताम् पण मनेडवो वेने आलियन इयं, पाती पाया दिवसी ह्यां रहीने हुमार फनकपूर नरमा चाल्या. पचकरोलार राजा पण कुमारन् जागमन गांभजीने धानंद नहित समारा आर्यो. विमायप्रों र मन्यों अने प्रमारने नमस्यों प्रवेश व राज्ये. ने समये बना प्रस्टोक्ते तया बीजो नेमने जोगाने भाव्या, नेजो पास्पर क्षानंड मिटन बोल्या स्वस्या के-"त्रा वयनातीने हुनी के जैपीताना जीतना मभाव-भी यम सभीप कर तेना मुख्यां पुरु नान्तीने पन पाको भार्चा, वर्गी वेना गृत्यो रेनित थरेलो स्वर्षित उपार पर्ग हैनी पाहरू सर्पने अस्तिमन देश नत्य यथी. ए सजीयां समय एवी क्रान्यतीने पत्त से !" के दर स्मेनी दशका सांध-जना गुमा पोलाना आयमे जाया। अने प्रते मंदरी नेनी माटे दोनंदर क्यमी क्षेत्र जिन्द्राप्त को हर्या लाग्यो। एक्स कुराने किटलक मनस्मी नर्माने जानेका को कार्य भटना संजाहरों अहाति नेत्य प्राप्ती के वसके विनामीन यह मन्द्र पहले प्रत हैं—ि इस ! पहेंगी नहीं तहा विवाद राज मंगव." म् समाने दक्षम् वाप्य गोर्का वे मोरा मेन्य महिला विकास भाषा है। से दस्यो wir val getratente lingt antelatitet angewich and nicht mirk till eine aufget in mit ben begetrate mit mit ge-وهو يكوه المراه المراع المراه المراع المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه पक्षी रेजे बताको, के मेनारे, कोल्से सन्त मोग काल मधक रेने साली धारेर ीं रे भारे विश्वहर्त्या महेरा पर्येत सरहा का गर्भ प्राप्त मार स्थान प्रश्नीत र्राप्ते मुक्तरमें नेमा निष्क दिस्परेन्या प्रथमें स्वारित हती. क्यांक्ट स्कर विषेत्र के बहर क्षार वर्ष परिनी कारण १४१७ के इन्तर के स्वतिकीत्वर के नेवार अपनेते के हैं। केस्पन रहसेकुको सहस्य अहिनेकाम भाग प्रतिकार करणार्क् वहैरणाले अवस्ति स्टीर

् बर्च रेरम्बद्ध के जा है प्रवासकार देवा का कार्य प्रतिवृत्त है से अपकार के के कार्य प्रवृत्त कार्य प्रतास पर्वतिक को अर्थ के के कार्य कार्य के सम्बद्ध कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के कि कार्य के कार्य कार्य देवा कार्य के कार्य अहीं तहीं फरता हता तेओना जोवामां आत्यों. नेओम तेने पूल्यं के-'तारी केढे आ शुं बांध्युं छे ?' तेणे उत्तर आप्यो के -'नीभदं हो.' राजसैनकीए तपास तां मस्तक दीठ एटले तेने चोर धारी बांधीने प्रधान समीपे लड गया. प्रधाने क्षं के-'अरे तने धिकार छे! ते दुर्गनिना कारणम्य वालकने मारवानुं क्ष्म शा माटे कर्छी?' तेणे कतुं के-'स्पामिन! हं कंड जाणतो नथी. ' आटलं कहेना उपरांत घडइ घडइति एटलुं ते वोल्यो. तथी तेने राजानी समीपे लइ जवामी आव्यो. राजाए पूछयुं के-'अरे! आ कार्य तें क्षामाटे कर्युं ?' त्यारे तेणे ' वड्ड घडइति' एटलोन उत्तर आप्यो. रानाए कलं के-' अरे मूर्ख ! वारंवार ' वडा घडइत्ति ' ए शन्दो केम बोले हे ? तेनो परमार्थ कहे. " अर्जुन बोल्यो के 'हे स्वामी! आ स्थितिमां हुं तेनो परमार्थ कहीश तोपण ते कोण सत्य मानशे वळी कोण जाणे हज पण मारा कमेथी पुनः शुं वनशे ? माटे हुं कांइ परमार्थ जाणतो नथी. 'ते सांभळी दुर्गपाळना पुरुषोए कर्युं के " आ कोइ घृष्ट जणाय छे, केमके अमे तेनी पासेयीज साक्षात् मस्तक कढाली छे छतां ते सत्य वोलतो नथो ने 'घडइ घडइत्ति' एवो उत्तर आपे छे "राजार पण क्रोधथी ' तेने शूलीये चढावो ' एवी आज्ञा आपी. सेवको तेने लहने शुली पासे आव्या ते समये कोइ एक विकराल रुपधारी पुरुष आवीने कहेंबा लाग्यों के-'हे गाणसो! जो तमे आने हणशो तो हुतमने सर्वने हणी नाखीश. ए प्रमाणे कहेवाथी तेनी साथे राजपुरुपोने युद्ध थयुं. तेणे सर्वने हांकी काढ्या तेओ नासीने राजा पासे आव्या. तेओनी पासेथी वनेछ वृत्तांत सांभवी राजा पोते युद्ध करवा नीकळ्यो. ते वखते तेने एक कोस प्रमाण पोताई शरीर विकुर्यु. ते जोड़ राजाए विवास क्यों के-' आ कोड़ मनुष्य नथी। आ तो कोइ यक्ष के राक्षस होय एम जणाय छे; पछी धूप उद्देववा विगेरथी तेनी पूजा करीने कहुं के-' नमें अमारा अपराधने क्षमा करो. ' एडळे ते मत्यक्ष यह पातानु शरीर नानु करीने बोल्यो के-'हे राजन् ! सांशण मारुं नाम द्रपमकाळ छे. लोको मने कलि एम कहे हे हमणा भरतक्षेत्रने विषे मार्च राज्य प्रवर्ते छे. महावीर स्वामीना निर्नाण पछी जण वर्षने साडा आठ महिना बीत्या वाड मार्क राज्य मूर्वते छे. मारा राज्यमां आ खेटते आवो अन्याय केंग कर्षों ? कारणके तेणे शृत्य क्षेत्रमां वगणुं मृत्य मृकीने एक चीभदं शा माटे छी थुं ? तेथी ते मारो चोर छै। एटले चीभड़ाने बदले मस्तक बताबीने में प्रत्यक्ष एने निक्षा आपो छे. इवे पछी कोइ पण एवो अन्याय करको तो तेने ह संकटमां नांग्नीय "पछी श्रेष्ठीपुत्र पण जीवतो थयो, अने ते राजानी

समीप आव्यां. राजाए तेने पोताना खोलामां बेमाडयां. अन्तनं यण यण् मन्यान यर्थुं। पती पिलए राजाने पोतानं मर्य माराज्य परीने छेवटे पर्य के-'हे राजन! मारा राजमां रामचंद्र राजानी जैम न्यायपर्भनं पालन केम करे छे! हवे पत्री जो देम करीछ तो ते न्यायपर्माचरणना निमिनेज हुं नने दुःखी मनीय. 'जा ममाणे पदीने तेणे राजाने छल्यो. पत्री पत्नि अद्देश गयों. सर्व पोत्रपोताना स्थाने गया. अर्जुन पन पोताने स्थाने गयों.

त्यांथी रणविंद राजा मन्यस अनीति नोहने न्यायपर्य ननी अन्याय भावरणमां तत्वर मयो. छोफोए विचापं के-'रामाने थं पणुं से के जेगी न शायो अन्याय आवरे छे । मेने बारवाने फोड समर्थ नयी. ' ने सम्ये तेनी सिर-तेमां आनी पढेला पोनामा भाषात रणिंत सुमान्ने मनिरोध आपराने गारे वी जिनदास गणि ने नगरना उपयनने विषे प्रवादी. राजा पन परिवार गरित न्द्रने बहिया गयो. विनय पूर्वय नहरहार पानी वे हाथ मोडीने ने भागत देहा. हण् पण सक्त पहेदानो नाम परनारी देशना आषी, नेपा ए ए फे-'हे सप्रत ! लिने रुप मोहने वार्त मन मिलन था । ए हैं, परंतु या प्रमार मंगारने रिपं त्य पापना निभिन्नभीत एक दुश्य मात गता है, कर्त से फे-" कर्मना उदय-वि अन्य सबनों गीत याच है, भरमी छोत हमीनी उत्पत्ति पाप है, छनीह-विषयित हिंद्योग दिएको उद्योग है। वे हेटिकोल विषयित सेन द्वार सब गाय है, माला विवर्ध यांच का महारने में तो महीन भा नीव निर्धात एकांथी रेपाव है औं बदवासका के से दिया आदि आधरने हास वस पूर्व क्यांकी होता दे परो ने के-ए नहसीकी मुहत्त्वपूर्ण सीमें हैं, नेपारी हा क्षेत्रे हे, मुलिन स्टान कोटे हे, प्रश्नेत की होटे ने, स्वापी सहय ींचे हैं, बारची भी वाज है, बराजनमें मना देवचे हैं, निर्नावीजनामी बादा होने हें, भगुतानी इन लोडे ने, निरंद्यणानी विचा करने हें, निरंद्यणानी की होते हैं, अने द्वामी पर्ट होने हैं। लीही हीने पर्ट होन्से नहीं, " ह वारणारी भाषा भवती हें। हे अने गार निर्देशने भगावारण कराना से गया विद्यार के, केरण कार रे काम ! जाने महत्त्व स्वयास पति पुरस्का समर्था هُمَّا عُمَّا مُعْمِدُ مِنْ مُمِّدُ مِنْ مُمَّا مُمَّ مُمَّا مُمَّالًا مُمَّالًا مُمَّالًا مُمَّالًا مُعْمَلًا क्षारण स्थाने विते प्रकारण स्थाने, व्यक्ति सर्वता स्थाने परने सार्थ, केन हैं जेरे समय है अर्थ में मेरी की स महिता, चून हैं जिसे अप कर मार्थ हैं कि जेरे रिनोरें कार्र और." माँत पुरस्ता करेंगली है कार्की नहीं में में में , काल



्चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणा–श्चलं चंचलयोवनं । चलाचलेस्मिन्संसारे, धर्म एको हि निश्चलः॥

" ळक्ष्मी चपळ छे, प्राण चपळ छे,चंचळ एवं गौवन पण चपळ छे; एवा ·चळाचळ संसारमां धर्म एफज नियळ छे. ''

आ प्रमाणे विचारी घरे आवीने रणार्सिंह राजा न्याय अने धर्मनी प्रतिपाल-ना करचा लाग्यो पछी केटलेक काले कमलभ्तीना पुत्रने राज्ये स्थापन करीने श्रीमिनचंद्र म्री पासे रणसिंह राजाए चारित्र ग्रहण कर्यु; अने विशुद्धचारित्र मुं आगाधन करी कालधर्म पामीने टेवलोकमां टेवपणे उन्पन्न थया.

क्मळदनीना पुत्रे पण आ उपदेशयाळा कठे करी अने सर्व लोकोए पण तेनुं पटन पाटन पर्यु. ए प्रमाणे अनुक्रमे प्टन पाटक्ना क्रममां चालती आ उपदेशपाळा अग्रापि विजय पामे छे.

् आ उपदेशमाळामकरण पोताना पुत्रने प्रतिबोध पगाडवा माटे श्रोधर्मदास गणिण रचेलुं छे;तेतुं रहस्य अन्य बुद्धिमान जनोए सम्यण् प्रकारे धारण करबुं. शुंभा प्रमाणे ब्रद्धोक्त संपदाय वताव्योः हवे ते उपदेशमाणानी गाथाओनो अर्थ श्विगेरे कहेवामां आवशे.



चला लक्मीश्रलाः प्राणा-श्रलं चंचलयौवनं । चलाचलेस्मिन्संसारे, धर्म एको हि निश्रलः ॥

" जल्मी चपळ छे. प्राण चपल छे,चंचळ एवं यीवन पण चपळ छे; एवा बळाचळ संसारमां धर्म एकज निथळ छे.''

आ प्रमाणे विचारी घरे शावीने रणसिंह राजा न्याय अने धर्मनी प्रतिपाल-ना करवा लाग्यो पली केटलेक काळे कमळवतीना पुत्रने राज्ये स्थापन करीने श्रीमुनिचंद्र मरी पासे रणसिंह राजाए चारित्र ग्रहण कर्युः अने विशुद्धचारित्र हुं आराधन करी काळधर्म पामीने देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थया.

क्रमळवतीना एत्रे पण आ उपदेशमाळा करे करी अने सर्व लोकीए पण तेतुं पटन पाटन वर्यु. ए प्रमाणे अनुक्षमे प्टन पाटक्ना जममां चालतो आ उपदेशमाळा अयापि विजय पामे छे.

आ उपदेशमाळाप्रकरण पोताना पुत्रने प्रतिशोध प्रमाडवा माटे श्रोधर्मदास गणिए रचेलुं छे:तेतुं रहस्य अन्य चुद्धिमान जनोए सम्यग् प्रकारे धारण करवुं. आ प्रमाणे हृद्धोक्त संपदाय वतान्योः हवे ते उपदेशमाणानी गाथाओनो अर्थ विगेरे कहेवामां आवशे.

्र इत्युपदेश्वमालायां भथम रणीसदनुपस्यम् लसंबंधः। क्रि





उपदेशमाळा भाषांतर पारंभ.

(टीकाकारनुं संगळाचरण)

नत्वा विज्ञं सकलकामितद्दानद्दामः । शंग्वेश्वरं जिनवरं जनतासुपक्षमः ॥ कुर्वे सुद्योधितपद्दासुपटेशमालामः । वालाववाधकरणक्षमटीप्पनेन ॥ १॥

" मकळ उच्छित दान आपवामां कुशल तथा सुपक्षने उत्पन्न फरनार (बताव-वार) एवा निनेश्वर श्री संदोश्वर प्रशुने नमस्कार फरीने वाळनोबोने योध भर शके (सरल) टीप्पन (टीका) वर्ट उपदेशमाळा सुखे वोध थाय तैवा पदवाळी करंछं." मळ गाया.

निमंज्ञण जिणवीरेदे, इंदर्निरंदिशण तिलोळेगुरू॥ जवपसमील मिणमो, बुच्छामि गुरूवपसेणं॥ १॥

शब्दार्थ-" देवेन्द्रो ने नरेन्द्रोए पूजेला अने त्रिलोकना गुरु एवा जिनवरे-ने नगस्कार करीने तीर्थंकर अने गणधर आदि गुरुओना उपदेशथी हुं आ जिमाळा कहुं छुं. "१.

भावार्थ-आ गाथामां प्रथम पदे करीने श्री जिनेश्वरने नमस्कार करवा का लानग्ण कर्य हो. बीजा पदमां जिनेश्वरनां थिजेपणो कथां हो. त्रीजा पदमां विषय वतावेल हो, अने चौथा पदमां अह ना अध्याहारवढे आ ग्रंथनी पी। आत करे हे एम बताव्युं हो. तेमां अहं एटले हुं धर्मदासगणि धमाश्रमण आ खामाळा रचुं हुं एम समजवुं. ते पण पोतानी चुद्धिए निह पण तीर्धकर ग-गदिना चपटेच इटे कह हुं. आम कहेवावडे ग्रंथनी आसता बताबी हो. बोजी गाथामां पण गंगळाचरण करे हो ते आ प्रमाणे-

नगच्चामणिज्ञां, उसजी वींगे तिळाळसिरितित्यां ॥ रगो लोगाइचो एगा चर्म्यू तिहुळणस्त ॥ २ ॥ शब्दार्थ-" जगतमां मृतुष्माणि सत्य शी तत्यगंत तथा चिठोकता महाहै तिलक समान श्री वीरभगवंत ले. तेमां एक लोकमां मर्भ समान ते अने ए विभ्रवनना चक्षभूत है. " २.

भावार्थ-आ अनसर्पिणना नीजा आगने होते पर्मना प्रथम उपरेशक होनाणी श्री ऋषभदेवने जगतना मुकुटमणि तृन्य वामा हो तथा जासदा उपकारी एवा चोवीशमा तीर्थकर श्री वीरपरमात्माने तिलकत्नी उपमा जापी हो. तिलक्ष्में जेम मुख शोभे तेम श्री वीरभगवंतथी आ जगत वधुं शोभे हो. वली सकल मा गैना देखाइनारा होवाथी प्रथम तीर्थकरने आदित्यनी उपमा आपी हो, अने जा तजीवोने हाननेशना दाता होवाथी घरम तीर्थकरने चक्षुनी उपमा आपी हो.

इवे ते वे प्रभुनां चरित्रवडे तप करवानो उपदेश आपे छे-

संबच्छेर मुसन्न जिला, वर्मासा वर्द्धमाण जिल्वंदो ॥ इंद्र विहरिया निरसर्णा, जइन्जए वर्षमाणेणं ॥ ३ ॥

शब्दार्थ-" ऋषभदेष एक वर्ष सुधी अने वर्षमान स्वामी छ मास सुधी- । भमाणे आहारपाणी रहित विचर्या छे. ते दृष्टांते करीने (वीजाओए पण) ति कर्ममां मवर्तवुं-जद्यम करवो. " ३.

भावार्थ-आ गाथामां सर्व गुणवडे प्रधान होवाथी श्री वर्धमान स्वामीने किं नचंद्रनी उपमा आपी छे. श्री ऋषभदेव ने महावीर स्वामीए करेला उत्कृष्ट तर्ण हृष्टांत आपीने गुरुशिष्यने उपदेश आपे छे के एवा तीर्थकर भगवंते पण आवि उत्कृष्ट तप कर्यों छे, तो तमारे पण तप करवामां यथाशक्ति जरुर उद्यम कर्यों केंमके उत्तम पुरुपना दृष्टांतवडे वीजाओए प्रवर्तनुं योग्य छे.

्हेंचे वीरपरमात्माना दृष्टांतवटे क्षमा राखवानो उपदेश आपे हे-जड़ ता तिलोळानाहो, विसह इ वहुआई असरिस जाणस्स । इंद्य जीयंतकराई, एस खमा सञ्चसाहूणं ॥ ४ ॥

द्यार्थ-" जो मथम त्रण लोकना नाथ तीर्थकरोए असदृश जनोना-तीर्ष जनोना जीवितनो अंत करे एवा घणा (दुष्ट चेष्ठितो) सहन कर्या तो तेवी क्षण कर्व साधुओए पण करवी." ४.

गाथा ३-छ मासे. आंयमाणेण.

भावार्थ—संगमादि देवोने करेला तेमज बीजा गोपादिना करेला प्राणांत करे तेवा उपसगों भगवंत श्री महावीर स्वामीए अनंत शक्तिमान छतां सहन कर्या अमा राखी—तेना पर क्रोप कर्यों निह. ए प्रकारनी क्षमा सर्व मुनिओए पण पारण करवी, एडले भगवंतनुं अनुष्ठान हृदयमां पारण करीने पाकृत जनोना करेला ताडन नर्जनादि मुनिओए पण सहन करवा. इत्युपदेशः

भगवंतनी दहता संवधं कहे छे-

न चूँइज्जइ चांलंडं, महुइ महूा वक्रमाण जिणचंदो ॥ जवसम्म सहस्सेहिंवि, मेरु जहा वायग्रंजाहिं॥ ४॥

भव्दार्थ—" मेरु पर्वत जेम गुंजारव करता प्रवल वायुथी चलायमान न थाय तेम महइ एटले मोक्षने विषेज करी छे मित जेमणे एवा महान वर्द्रमान जिनचंद्र हजारो उपसमवडे पण चलावो शकाया नहिः" ५.

भावार्थ—मेरु पर्वतनी जेम देवमनुष्यना करेला हजारो उपसर्गथो पण वीरमभ्र चलायमान थया निहः कारण के तेमने ध्यानयी चलाववाने-धोभ पमाडवाने कोड पण शक्तिवान नथी. तेथीज तेमने माम देवोए 'बीर' पत्नं पाडशुं छे. आ दृष्टांत ध्यानमां राखीने अन्य साधुओए पण माणांतकारी उपसर्ग थया छवां ध्यानथी चळवं निह. इत्युपदेशः

्र इवे विनय गुणनी प्राधान्यता वताववा माटे कहे छे— भहो विणीयविण्ळो, पढमगणहरो समत्तसुअनाणी. जाणतोवि तमथ्यं, विम्हिळहिळळो सुणइ सर्व ॥ ६॥

शब्दार्थ-" भद्र अने विशेष विनयवान प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी समस्ते श्रुतज्ञानी एवा ते अर्थने जाणतां छतां प्रभु ज्यारे कहे त्यारे ते सर्वे विस्मित हृदयबाळा थड्ने सांभळ छे. " ६.

भावार्थ—भद्र एटडे कल्याणकारी-मंगळल्प अने अत्यंत विनयी गैतिम स्वामी श्रुतज्ञानना पारगामी-श्रुतकेवली छतां एटले सर्व भावने जाणनारा छतां मथम पूछायेला अर्थने फरीने पण भगवंत ज्यारे कहे त्यारे कौतुकवडे मफुछित लोचनवाला यहने सांभळे छे. आ ममाणे बीजा शिष्योए पण विनय. पूर्वक गुरुने पूछ्युं ने ते जे कहे ते सांभळवुं. इत्युपदेशः

गाया ५-सहस्सेहिष वायुगुंजाई । मोक्षे कृतमिनः महितः । विद्योपेण नीतः प्राप्तो विनयो येन

विनय उपर हो। किन् इट्रांत आपे हे-जं आणवेद राया, पगद्यो तं राश्य इन्हेंति॥

इस्र गुरुजामुहन्निण्छां, कथंजिलिलकेहिं सीयववं ॥७॥ शब्दार्थ- 'राभा जे आज्ञा करे छे ने तेनुं प्रकृतिमंडळ-सेवक वर्ग मस्तर्भ करीने इच्छे छे; ते प्रमाण गुरुजनना मुखयी कहेवायलुं (शिट्योण) हाथ जोडीने सांभळवुं " ७.

भावार्थ-सप्तांग स्वामी राजा जे कहे छे ते तेनो सेवकवर्ग माये हार्य जोडीने ममाण करे छे ते प्रमाणे गुरुमहाराज शास्त्रोपदेशादि जे कहे ते भिक्त वढे फरकमळ जोडीने विनय पूर्वक शिष्यवर्गे सांभळवुं. आम कहेवावढे शिष्यां विनयनीज प्राधान्यता छे एम उपदेश आप्यो छे.

गुरुना महत्वने वतावे छे-

जह सुरगणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जह य पयाण निरंदो, गणस्सिव ग्रेरु तहा एंदो ॥ उ॥ भव्दार्थ-" देवताओना समृहमां जेम इंद्र ग्रहगण ने ताराओना अस्हम जेम चंद्र अने मजामां जेम राजा श्रेष्ठ छे तेम गण (साधुसमृह) मां आनंद माँ गुरु श्रेष्ठ छे " ८.

भावार्थ-देवताओ, ज्योतिषीओ अने मनुष्योमां जेम इंद्र, चंद्र ने नर्हे भाक्षानो अमल थाय छे तेम गन्छमां गुरुनी आक्षानो अमल थवो जोइए; तेह देवता विगेरेने जेम इंद्रादि आहाद उत्पन्न करनारा छे तेमज गन्छमां गृह महागज पण आनंद उपजावनारा होय छे.

बाळवयना गुरुने माटे कहे छे-

वाक्षित्त महीपाला, न प्या पित्रवेष्ट्र एस गुरु उनमा। वे वा पुरेष्ट्रों कार्च, विदर्गनि सुणी तहा सोवि॥ए॥ व्याप्टर्शन अग वालक हे एवी वृद्धिए जेम राजाने प्रजा पराभ

करती न्यी ते उपमा गुरने पण जापती; अने जेम गोतार्थने आगळ करीने श्री विचर छे तेम बाठ एवा गुरने पण मानवा. " ९.

[्]रे स्थामी अमान्य, सुर्त भटार, देहा किरला असे लहका ए राज्यसी सी भग हो ने राजमेगलादि ८८ही हे ताराओं बीटापादनी संस्थायाला है, साथा है परिश्वार, पुरान

भावार्थ-वय अने दीक्षा पर्यायवहे हीन छतां पण ज्ञानवहे श्रेष्ठ एवा गुरुपणे ।पेला वाळवयना आचार्यनी आज्ञामांत्र ग्रुनिओए वर्तवुं. कारण के ते गीतार्थ ।।थी गच्छमां दीपक तुल्य छे. आने माटे लौकिक हष्टांत आपे छे के-कोइ ।त राजा वाळक होय तोपण प्रजा 'आ वाळक छे' एम कही तेनुं अपमान ती नधी पण तेनी आज्ञामां वर्ते छे. ते प्रमाणे गच्छने माटे पण समजवुं.

हवे गुरुनुं स्वरूप कहे छे. गुरु केवा होय ?

पिसस्वो तेयस्सी, जुगप्पहाणागमो सहुरवको ॥
गंभीरो धीसंतो, जवएसपरो छा छायरिछो ॥ १० ॥
अपिरसावी सोमो, संगहसीलो छाभिग्गहमईय ॥
छाविकंथणो छाचवलो, पसंतिहियछो गुरू होइ ॥ ११ ॥
शब्दार्थ-" तीर्थकरादिना प्रतिविंव जेवा तेजस्वी, गुगप्धानागम, मधुर
हा, गंभीर, घृतिमान, उपदेश देवामां तत्पर-एवा आचार्य होय. १०. वळी।
तिथ्रावी, सौम्य सग्रहशील, अभिग्रह करवानी बुद्धिवाळा, वहु निह बोलनारा,
पर स्वभाववाळा ने मशांन हृदयवाळा गुरु होय. " ११

भावार्थ-आचार्य भगवंत आकृतिमां तीर्थंकर गणधरादि जेवा अति सुंद्र र, कांतिमान होय, वर्तमानकाळ वर्तता समप्र शास्त्रना पारगामी होय अथवा य लोकनी अपेक्षाए सर्वथी विशेष ज्ञानवान होय, जेतुं वचन मधुर लागे त होय, अतुच्छ हृद्यवाळा होय क जेथी पर तेना हृद्यने जाणी न शके, धेर्यता-ठ्ञा-संतोषयाळा-निष्मकंष चित्तवाळा होय, भव्य जीवोने उपदेश देवामां र होय एटले सह्चनोवडे मार्गमां मवर्तावनारा होय. १०. निश्चिह शेल जननी जेम अमृतिश्रावी होय एटले लिह्नविनाना पत्थरना भाजनमां नांखेलं ह जेम नीचे गळ निह तेम कोइए कहेल पोतानुं गुद्ध रूपजळ जेना हृद्यमांथी रतं नथी अर्थात् अभ्यनी पासे प्रज्ञाशता नथी, सोम्य एटले देखवा मात्रवडेज कादकारी होय-बोलवाथो तो विशेष आह्वाट करे तेमां नवाइज शुं! शिष्या-कने माटे वस पात्र पुस्तकादिनो संग्रह करवामां तत्पर होण ते मात्रथी एम चारे कारना अभिग्रहो करवानी चुद्धिवाळा होय, कारण के अभिग्रह पण तप ।ज छे; वळी वहुवोला न होय-पोतानी मशंसा तो किट पण न करे, स्थिर

धीमंती-घृतिमान. गाथा ११-अपरिस्ताविअ

स्वभाववाळा होय-चंचळ परिणामताळा न रोयः प्रशंत रहेवताळा होग प्रहे क्रोधादिकथी रहित चित्तवाळा-शावम्ति होय-आवा ग्रना गुणे करीने शेष्ण गुरु होयः एवा गुरु विशेषे करीने गानवा योग्य आणाः ११ः

हवे आचार्यवडे शासन प्रवर्त हे ने कहे हे-

कड्यां वि जिएवरिंदा, पत्ता अयरोमरं पहें दाउँ॥ आयरिएहिं पवयणं. धारिज्जइ संपर्यं सयलं॥ रूप॥

शब्दार्थ-" कोइ काळे जिनवरेंद्र मार्ग (भन्य जीवोने) आपीने अनराह स्थानने पाम्या छे. सांहत काळे सकळ प्रवचन आचार्याथी घारण कराव है अर्थात् आचार्य धारण करे छे."

भावार्थ-कोइ काळ एटले पोतपोताना आयुष्यने अंते तीर्थकर भावार्य ज्ञान दर्शन चारित्र रूप मार्ग भव्य जीवोने आपीने - बताबीने - उपदेशीने मोस्ति के ज्यां जन्म, जरा के मृत्यु नथी तेने पाम्या छे. तेमने विरहे संमिति कि चतुर्विष्ठ संघ रूप तीर्थ-मवंचन अथवा द्वादशांगी रूप मवचन आचार्योथीज धार कराय छे, अर्थात् आचार्योज शासननी रक्षा करे छे. तेथी नीर्थकरने ि आचार्य भगवंत तेमनी समान माननीय-पूजनीय छे. इत्युपदेश:

हवे साध्वीने विनयनो उपदेश आपे छे.

अणुगम्मई भगवई, रायसु ऋँडजा सहर्रसविदेहिं॥ तहवि न करेंद्र माणं, परियच्डिट् ते तही मूर्णं॥ १३॥

भन्दार्थ-"भगवती राजपुत्री आर्या चंद्रनवाळा हजारोना हंदोए परवरेळी । ते अभिमान करती नथी। कारण के ते निश्चये तेने (तेना कारणने) जाणे छे."११

भावार्थ-टिधवाहन राजानी पुत्री साध्वी चंदनवाळा हजारो लोकोना कर्म परवरेली रहे छे, अर्थात हजारो लोको तेनी सेवा माटे तेनी पाळळ भूमें नथापि ते किंचित् पण गर्व-अहंकार करती नथी, ए आश्चर्य छे. पण ते वरावर चोक्रम जाणे छे के आ महात्म्य मारुं नथी पण ज्ञान दर्शन-चारित्रादि गुणीहं महात्म्य छे तथी ते गर्व करती नथी. ते ममाणे अन्य साध्वीओए पण लेका माननीयपना विगेरेथी गर्व करवो नहि. इत्युपदेश: ैविनवतुं स्वरुप-पुरुवनी गृथान्यता-द्रिणदिख्यिक्स प्रमग्रस्स, अनिमुहा अज्ञचंदणाअज्ञा ॥ नेच्छइ आसणगहणं सो विण्ञो सव्वत्रज्ञाणं ॥ १४ ॥

शन्दार्थ-" एक दिवसना दीक्षित भिक्षक साधुनी सन्मुख आर्य चंदनवाळा गध्वी उठवा अने आसन ग्रहण करवाने इच्छयुं नहिः आवो विनय सर्व सा-

बीओने माट कवा छे." १४.

भावार्थ-तेज दिवसना टीं सित अने ते पण भिक्षक छतां साधुनो वेप हण करीने पोतानी समीपे आवतां जोड सर्व साध्वीमां मुख्य वहेरा चंदनवाळा गध्वी डभा थया, सन्मुख गया अने ते साधु डभा रह्या त्यां सुधी पोते आसन ।पर वेसवानी इच्छा करी नहि. आवो विनय तेमणे साचन्यो ते ममाणे दरेक गध्वीए साधुम्रिराजनो विनय साचववो इत्युपदेशः

अहीं चंदनवाळानी कथा छे ते नीचे पणाणे-

"जंब्द्वीवना भरतक्षेत्रमां समृद्धिथी तथा लोकोथी भरपूर कोशाम्बी नामनी मगरी छे. एक वखत वहु साध्वीओथी परवरेली, श्रावकोथी पूजाती ने राजा त्रामंत शेठीआओ अने नगरवासीओए वांदेली एवी वर्धमान स्वामीनी मथम शिष्या आर्थ 'चंदनवाला' कोशाम्बी नगरीना चोकमां घणा माणसोनी साथ तती हती. ते वखते 'काकंदीपुरथी कोइएक दिरिदी आव्यो हतो. ते अति दुर्वल अने मिलन शरीरवालो हतो. तेना मुख उपर असंख्य माखोओ वणवणाट करती हती; अने ने प्रटेलुं माटीनुं वासण हाथमां लड़ने चेरचेर मिक्षा अर्थ भटकतो हतो. ते भिक्षके मार्गमां साध्वी चंदनवालाने जोइ, तथी ते विस्मित थयो के आ ग्रं कौतुक छे? आटला वधा लोको शामाटे भेगा थया छे?' एवं जाणी ते पण कौतुक जोवाने साध्वीनी पासे आव्योः एटले जेनुं मस्तक लोच करा-यिल छे, जेणे सांसारिक आसक्ति तजी दीथो छे अने जेणे भूमिपदेशने पवित्र करेल छे एवी शांतमृतिं आर्था चंदनवालाने घणीज साध्वीओथी परिष्टत थयेली अने घणा राजलोकथी वंदाती जोइ तेना मनमां आश्चर्य उत्पन्न थयुं. तथो तेणे 'पासे उमेला कोइ दुद्ध पुष्पने पूल्युं के—' आ कोण छे ने क्यां जाय छे?' ते दिद्ध पुष्पे कवं के स्थीर चित्ते सांभळ—

चंपा नगरीमां 'दिधवाहन नामनो राजा हता. तेने अति रूपलावण्य आदि रेगुणोथी युक्त, शीलथी अलंकृत अने मातापिताने माण करतां पण वधारे निय के-'आ स्त्री अति रूपवंती अने सौभाग्यादि गुणथी अछंकत छे, तथी मारो भती तेना रूपथी माहित थइ जरूर मारी अवगणना करणे; माटे एने दुःख आणे घरमांथी हांकी काहुं तो टोक.' एक दिवस शेट कोट कार्यने माटे वहार गा गया. तथारे घरे रहेछी तेनी भार्याए वसुमतीना केश सुंटावी नांखी, पगमां वंही नांखी, हाथने मजबूत वांधी छड ग्रप्त ओरटामां पूरी. शेट वेर आव्या एटछे तेले पोतानो स्त्रीने पूछयुं के-'वसुमती क्यां गठ छे?' तेणे जवाव आप्यो के-'हं जाणती नथी. ते कांडक गट हशे, सरळ बुद्धिवाळा शेटे विचार्यु के-' तेय हशे ए ममाणे अण दिवस वोती गया. चोथे दिवने कोइ पाटाशीए शेटने पूछयुं के वसुमती क्यां छे?' तेना दुःखथी दुःखित थयेळा शेटे कह्युं के-'हं जाणतो नथी, परंति वयांड पण गयेळो छे.' त्यारे तेणे कह्युं के-' तमारो सीना मारथी आकृष्ट करती एवी तेने कोइक ओरडामां पूरता आअथी चोथा दिवस उपर में जोयेली छे, तथी नमारा घरमां तपास करो. शेटे घरमां तपास करो, एटळे जेना पा

वेटीथो वंपायेळा छे, जेना केश गृही नाखेळा छे अने जे घणी क्षुपात्र थयेळी छे एवी वगुमतीने नेणे अटरना औरटामां दीटो. शेठे दु:खित-चिने विचार कर्यों के-' अहो ! सीनुं दुश्चरित्र कोइ पण जाणतुं नथी, कामथी अंध

तेने उंचो पकडी राख्यो ते जोट् तेनी भागी मूळाण मननो अंटर विनार की

बनैसी मारी मीने धिकार है ! 'पती दें है गसुरनोने पूल्युं के-' जा तारी शी दसा ! 'तेले जवाय आपो के-' सपलो टोप मार्ग वर्धनो है. लेहे नेने जदर-थी बहार बादी परना उमरा थाने देशादीने को फे-' नूं बही येग, पहाले ह देश भागवाने बोड ल्टारने घोलाची लाय. 'रेण वर्ष के-' मने मूल वह लागी हे रेभी गांडक खारानुं आयो.' ने रमने घोटाने माटे जटद वापला हता ने गुपडाना एक गुणामां नांकीने रोहे वस्मतीने काना आत्या, ने पण एक प्र इम्सानी पतार अने पीको प्रा उपरानी अदर राजीने देवी. दछी खेवामां ने रतेनामं सुँ ला सुपडामांमा अद्दर ग्याया जाय हो ने अवसरे श्रीवरमुँ ने मांपळी-शक्तरथपणे विचरता शीवताचीर स्वाधील पीताना पर्यना सबने गाँठ एवी अ-भिक्त परेलो हो में-" राजर त्या शेय. गांधु ग्रहावेलु तीय, धने दगगां धेरी र्मार्चेन्द्री होय. हाय दक्षिता होण. येदी नरीके दफरायेन्द्री होय. मृत्यनटे न्वरी-रावेली होय. जे एक पर तमरानी पहार ने वीजो पर उपरानी जेदर रासीने वेटेली होय हे वे प्लोर योग्या पत्नी सुपदाना सुपामां रहेला जरद जो मन वहोराये तो मारे वहोरवा " एवा अभिन्नह फर्जाने पांच मास ने वनीस दिवस उपहीत थया रता. ते नीरभगतंत एक गामधी बीजे गाम विदार फरतां ने त्रवसरे कोझाम्बी नगरीण प्राया- तेशो दोक परे पर्यटन महे छे, परंतु अभिग्रह मुगाण मिसा मजनी नधी: अनुक्रमे भगवान धनावह होटने घरे आज्या, नमने लोह समुमती विचारवा लागी के-'मने धन्य छे के आवी स्थितिमां गारे भगवानना इंग्लन घया.' पत्री पसुवतीए परंतु के-' हे पिलोकना स्वामी ! मापिमसाने माटे हाय लांबा फरीने मारो आ भगद्ध्यमांथी उदार करो अने मने तारो. ' एवां पगुमतीनां वचन सांभजीने भगवाने विवायुं के-'मारो अभिग्रह तो पूरो यथो है परतु आ रोती नथी एटल अधुरुं हे तथी हं तरोगीय नहीं, एयं धारी भगवान पाड़ा बळ्या. त्यारे बमुमनो अञ्चलच्यी नेबने मलिन करी विचारमा लागी के-' मंद्रभागिनो पवी मने बिहार है ! मारे वेर सगरान भाज्य छनां मारो हदार कर्यो दिना पाटा गया. त्यारे भगपाने अभिग्रह नपूर्ण यथे हो बोटपाटा बळाने मापिका ग्रहण करी, तंथी बसुपती अति हर्षित धर, तेनां नेत्र प्रफुलित धयां, नेनी रोमराजि विकर्पर घड: अने वे भवमागरनो पारपामी एम मानवा लागी. ते अवमरे ते दानना प्रभावची तेना पानी येडी पोतानी मेळे हुटो गट, मन्वक उपर इवाम कावाम विस्तृत चयो, रायमुं यंत्रन मुटी गयुं भने पांच दिव्य मगट ययां ते आ प्रमाण-१ नाडि बार क्रोड मोनेपानि छुट घड, २ सुगंधि पंचरंगि पुष्पांनि छुट घड, ३ बरानि छुटि घड, ३ सुगंधी जलनी छुटि घड अने ५ 'अहो दानम् दानम् ' ए प्रमाण आकाशवां देवनाओए श्रोप कर्यो अने जयजबकार ययो. देवनाओए बसुमनीनो चडन जेवा जिनल स्वभाव होवाथो तेहुं चड्ना

एवं नाम आए छे. मक्षण छमासी तपने पारणे करीने अन्यत्र विहार कर्यों. लोकों ए चंदनानी घणी प्रशंसा करी. ए वस्तते क्रकें (इद्रे) ज्ञतानीक चपनी समीपे आवीने क्र कें कें - 'आ वसुमती दिखवाहन राजानी प्रश्नी छे के जेणे स्वगुणोणी 'चंदना' एवं वीछं नाम मेलवेल छे. तेनु तारे यत्नथी रक्षण करतुं. आगं उपर ए घमनी उद्योत करनारी यशे अने भगवान श्रीवीर्ग्वामीनी गथम जिला धरों. 'ए प्रमाणे शिक्षण आपीने इंद्र देवलोक मन्ये गया.

शतानीक राजाथी अने घीजा छोकोथी अति सन्मान पामेछी चंदनाए केंट छाफ दिवसो गया पछी बीर भगवंतने केवळजान एत्पन्न थयेन्छ जाणीने भगवं पासे जइ तेमना हाथथी चारित्र छोधु, अने भगवाननी जिप्या थड. ते आ चंदन साध्वी नजीकना उपाश्रयमां रहेछा'श्रीसृश्थिताचार्य'ने बंदन करवाने माटे जायहै."

आ पमाणे तेनु सघळं चरित्र रुद्ध पुरुषे हमकने (भिक्षुकने) कही संभलां । तथी आनंदित थयेलो इसक साधुने उपाश्रये गयो. चंदना पण गुरुने वांदी पोताना उपाश्रये गइ गुरुए भिक्षुक ने जोयो, एटछे 'आ पुरुप थोडा वस्तान सिद्धि मेळवनारो छे ' एम जानवहे जाणी हेमणे विचार्ध के-'आ भिक्षकने प मां जोडवो जोइए.' एवं विचारी तेने मिष्टान खावा आखु. तेथी ते अति हिंग थइ मनमां विचारवा लाग्यो के—'आ साधुओ घणा दयाळ छे. आलोक ने ह लोक वंनेमां हितकर आ मार्ग छे. आलोकमां मिष्रान्नादि खावानुं मळे हे औ परलोकमां स्वर्गादिनां सुख मळे छे.' एवं विचारी ते भिक्षुके ग्रु पासे हैं छीधी. गुरुए पण तेने मत्रज्यामां दह करवा माटे घणा साधुओनी साथे साम ने उपाश्रये मोकन्यो. ते इमक साधु चंदना साध्वीने उपाश्रये गयो. वी साधुओ वहार डभा रहा, अने भिक्षुक साधु एकला उपाश्रयनी अंदर गर् चंदना माध्यी नवा दीक्षित थयेला दुमक साधुने आवतां जोडने तेमनां सर्वे गड, आसन आप्युं, तेमस समान कर्यु अने वे हाथ जोडी सामे उभी रही 🐉 साधु विचारवा लाग्या के-'अही ! आ वेपने घन्य छे ! जोके हं नवदी यथों छे छतां जा पूज्य एवी चवना मने आरले वधु मान आपे छे.' ए वसते धर्ममां दृढ थयो. चंदनाण नेमने पृत्रमं के-'आपने अत्र आववानुं मयोजन हे " दमके क्यं के- नगाग हवांत जाणवाने मादे गुरुष मने अहीं ते हे. ' एटवं वहीं मनने चानियाँ मिशर करी घणा काळ सुधी .नग^त चारित्र पात्रय.

ण हमान उपर भी अन्य साध्यीजीण पण मुनिनो जा प्रमाणे विनय । एसो आ रक्षानो उपनय हो.

सारी उनने सामुनी श्रेष्टता पतारे हैं,

वरिससयेदिग्वियाए, अञ्जाए व्यञ्जदिरिष्टिक्रो साहु॥ व्यतिगमण वंदण नमस्रोणं, विणयेण सो पुन्जे।॥ १५॥

फ्रन्सर्थ-" सं वर्षनी दीधित साध्योंने जाजनी दीसित साधु होय तो ने (९ण) जिमगमन, बंदन अने नगरकारवर्ट नेमज विनयपंट पूजवा योग्य हे."१५.

मावार्थ-'' सो वर्षनी दीक्षित एटछे एस एवी साध्यीने छपु मृनि एटछे यापन् एक दिवलनो दीक्षित मृनि पण पूनवा घोग्य छे तेना पूजनना मकार इतावे छे-अभिगमन ने सामा अनुं, बंदन ने द्वादशावर्तादि वंदन फर्श्चं, नम-स्कार ने अंतरंग भीति घराववी अने विनय ने आसन आपनुं चिगेरे.

्साधुना विज्ञेष पूजनीक्षणानां कारणो बनाये छे-धम्मो पुरिलप्पभवो, पुरिलवरदेसिट्यो पुरिसंजिठो ॥ स्रोपंति पह पुरिसो, कि पुण लोहत्तमे धम्मे ॥ १६॥

मन्दार्थ-" धर्म पुरुषयी उत्पान ययेली हे अने पुरुषश्रेष्ठे उपदेशेली हे नेथी नेमां पुरुष उथेष्ठ हे. छोत्रने विषे पण पुरुषन स्वामी थाय हे, तो छोत्री- चम एवा धर्ममां पुरुषनी शेष्ठता गणाय नेगां गु." १६.

भागर्थ-दूर्गितियी जे रक्षा करे ते पर्भ कहीणः एवा पर्भ पुरुष जे गणधर महारामा नेमनाधी उत्पन्न थयेलो-पर्म थयेलो छे. पुरुषवर-पुरुषश्रेष्ट जे तीर्थ-कर महारामा नेमनाधी उत्पन्न थयेलो-पर थयेलो छे. पुरुषवर-पुरुषश्रेष्ट जे तीर्थ-कर महारामा नेमणे बनावेलो-परेहेलो-परेपेटो छे. एवा छुन चारित्र रूप जे धर्म ने पुरुषना स्वामीपणावाळो होवाथी नेमां पुरुषनुं ज्येष्ठपण्चं कहेले छे. लोकोमां पण स्याभीपणुं पुत्रने अपाय छे, पुत्रीने अपातुं नथी; तो लोकमां उत्तम एवा पर्भमां तो विशेषे वरीने पुरुषनुं इसमीपणुं समज्युं. जो लोकमां पुरुषनी श्रेष्टता छे तो लोकोम्म एवा धर्ममां नो विशेषे करीने नेनी श्रेष्टता जाणवी.

नेने गाटे दृष्टांत वताये हे-

संवाहणस्स र्गो, तहया वाणारसीयनयरिए॥
कञ्चासहर्स महिद्यं, ख्रांसी कीर रूपवंतीणं॥ १७॥
तहिवयं सा रायसिरी, जब्बुदंती न ताइया ताहिं॥
जयरिएण इकेण, ताइया खंगवीरेण॥ १०॥

गाया १६-जेट्ठां. गाथा. १७-संप्राहणस्स. याणारसीय गाया १८-उल्लंदेती.

अध्यक रूपवती एवी एक हजार कत्याओं हती, तथापि तेनी राजलक्षी लंडाने नेओ राखी शकी निहः, अने उटरमां रहेला एवा पण अंगर्वार नामना एक पुने ते राखी. "१७-१८.

भावार्थ-वाराणसी नगरीमां राज करनारा संवाधन राजाने एक हुआं पुत्रीओ अत्यंत रुपवंती हती, तथापि ते राजा गुजरी गयो त्यारे तेनी हुंडाई राजलहभी हुं रक्षण करवाने तेओ समर्थ थड़ निहः परंतु च राजानी राणीना गर्भ मां रहेला एक पुत्रना कारणथी तेनी राज्यलदभी हुंटाती नाझ पामती रही गर्भ अर्थात् ते पुत्र के जेहुं पाछल्थी 'अंगवीर' नाम पाडवामां आव्युं हतुं तेना मार्क वहं तेनुं रक्षण थयुं, आनी स्पष्टता तना दृष्टांत्वह विशेष थड़ शक तेम हे.

संवाधन राजानुं दृष्टांत नीचे प्रमाणेः— 'वागणसी नगरीमां संवाधन नामनो एक राजा राज्य करतो हती. हैं एक हजार पुत्रीओ हतीः परंतु घणा उपायो कर्या छतां तेने पुत्र धयो नहीं राजाण विचार्य के—' पुत्र विना राजल्डभी द्वा कामनी ? जेना घरमां पुत्र ने ने यर पण शन्य छे.' वेदमां पण कृष्टां छे के—'' पुत्र वगरना माणसनी सद्भी भनी नभी अने स्वर्ममां नो ते वीकृष्ट जड अकतोज नथी, तेथी मनुष्यो पूर्व करा जांदने स्वर्म नाय छे.' लोकोक्ति पण एवी छे के—

चोमट दीवा जो वळे, बोरे रबी उगंत; यस घर तोहे श्रंधारमुं, जम घर पुत्र न हुंत.

"एकी व्यक्त चौगड दीवा बळता होय अने एकी बम्पेन बारे सूर्ष र होद ने दश देना घरमां पुत्र नथी तेना घरमां नो अधारत छे." तेथी पुत्र हैं राज्यत्र हो कोट कामनी नथी. आ ममाण विवासीने राजाण अनेक मांर्कि न कियो को के कियोने पुत्रमुं, परंतु कोट पण उपाये पुत्र माम थया निहि कहां है के

प्राप्तद्यो नियनियलाश्रयेण योऽषः मोऽसद्यं त्यनि नृणां शुभांऽशुनो या॥ जुनानां महिन श्रुनेऽपि हि प्रयन्ते। माराप्यं त्यनि न नायिनोऽस्ति नायः॥

िर्देश राज्ये राजवा नम्ब ते व्यव माग्र भवा मोग्य छे हैं। राजवार जार ते तारिकास मणाओं प्रतेस मयानी पने ते हैं। राजवार हो जहारी कार्य हुए तेनी साथ भवा नमी, "

हवे राजा दृद्ध थयो. ए वलतमां कोइएक जीव पहराणीना उदरमां पुत्र-ाणे आचीने उत्पन्न थयो; परंतु पुत्रमुख जोवा चगरज राजा तो परलोकमां ।यो. पछी सर्व पारजनो एकटा मळी विचार करवा लाग्या के-' हवे शुं थशे? त्त्र विनातं राज्य केवी रीते रहेशे ?'ए मगाणे विचारी सर्व नगरवासी लोको होकाकुळ थया ते वखते शत्रुओए पण सांभळ्युं के-' संवाधन राजा अपुत्र मरण ाम्यो हे. ' तथी तेओ सर्व एकडा मळो मोहं लक्कर एकडुं करी सज्ज थइने गराणसी नगरी तरफ चाल्या. ते वात सांभळी वथा लोको त्रास पाम्या, अने गोतिपोताना घरनी अंदर्थी धन काढवा लाग्या. ते वखते शतुओए कोइएक नि-मेत्तियाने पूछ्युं के-'अमारो जय थशे के केम ?' ते निमित्तिये लग्नवळ जोइने महुं के-'तमो सर्व मळीने जयनी अभिलापाधी त्यां जवानी इच्छा करो छो, प-रंतु संवाधन राजानी पहराणीना उदरमां रहेल गर्भना प्रभावथी तमारो पराजय धशे, जय थशे नहि.' ए ममाणे सांभळीने सर्यंळा वैरीओ पाछा वळ्या. नागरी को खुशी थया अने कहेवा लाग्या के-'अहो गर्भमां रहेल पुत्रनुं महात्म्य केनुं अद्भुत छे के जेथी सघळा शतुओं नासी गया. 'गर्भस्थिति पूर्ण थतां पुत्रनो जन्म थयो. अशुचिकर्म पूरुं कर्या पछी तेतुं 'अंगवीर्य नाम पाडयुं. अतुंक्रये ते युनावस्थामां आव्यो, अने तेणे लांचा वलत सुधी मजानुं पाळन कर्यु.

" हजार कन्याओथी पण राज्यनुं रक्षण थयुं निह, परंतु गर्भस्थित पुत्र मान्त्रधी रक्षण थयुं " एवो कर्मन्यवहारमां उपनय छे. धर्मन्यवहारमां एवो उपनय छे के—" सर्वत्र पुरुष एज श्रेष्ठ छे. तेथी साध्वीओए एक दिवसनी दीक्षा-वाला साधुनो पण विनय करवो. " ए प्रमाणे पूर्वनी गाथा साथे संवंध छे. इज्ज आगली गाथामां पण तेज वायत स्पष्ट फरी देखाडे छे.

महिँठाण सुवहुर्याणवि, मझ्जात्रो देह समत्त घरसारो॥ रायपुरिसेहिं निर्क्षेत्रह, जैंगेवि पुरिसो जैहिं निध्ये॥ १९॥

शब्दार्थ—" आ लोकने विषे पण ज्यां पुरुप-पुत्र नथी त्यां घणी स्नी-ओना मध्यमांथी पण समस्त घरनो सार राजपुरुपो लड़ जाय छे." १९.

भावार्थ-अपुत्रतुं धन राजा छइ जाय एवो लोकमां मचार छे, तेथी जेना कुळमां पाछळ पुत्र न होय तेतुं धन घणी लीओ अथवा पुत्रीओ होय छतां पण राजा छइ जाय छे तेथी पुरुपतुंज मधानपणुं छे.

हवे आत्मसाक्षीए धर्म करवा विषे कहे छे--

किं परजणबहुंजाणावणाहिं, वरं मप्पर्लिख्ययं सुकेंयं॥ ईह भरहचँकवटी, पसन्नचंदो र्य दिन्नतीं ॥ २०॥

शब्दार्थ-" हे आत्मा! परजनने वहु जणाववाथी शृं ? आतासांश सुकृत तेज श्रेष्ठ छे. अही भरत चक्रवती अने मसन्नचंद्रमुं दृष्टांत जाणगृं." २०

भावार्थ-" में आ अनुष्ठान कर्युं' एम परजन एटले बीजाओने वहु जणां वाथी शो लाभ छे ? आत्मसाक्षिक धर्भ करवो तेज श्रेष्ठ छे. आ विषय अ भरत चक्रीनुं दृष्टांत छे के जेमणे यत्त्वढे करेला आत्मसाक्षिक अनुष्ठानधी जि सुखने भाष्त कर्युं छे. भसन्नचंद्र राजिंपनुं पण आ विषय उपरज दृष्टांत छे.

तेमां पथम भरतचकीनुं दृष्टांत कहे छे:--

अयोध्या नगरीमां ऋषभदेवना पुत्र 'भरत' नामे चक्रवर्ती थया हता. प्य श्री ऋपभदेवस्वामीए चारित्र ग्रहण कर्यु ते वखते पोताना सो पुत्रोने पोतपंत नां नामवाळा देशो आप्या. 'वाहुवली' ने वहुिल देशमां तथाशिला नगरीतुं आप्युं अने भरतने अयोध्या नगरी हुं राज्य आप्युं. एक दिवस भरतराजा सम वैठेला हे ते वखते 'यमक' अने 'समक' नामना व पुरुषो वधामणी देवाने है भास्थानना मुख्य द्वार पासे आव्याः मतिहारे भरत राजाने तेओनुं निवेदन कर्यु एटले भूतंज्ञाथी द्वारपाळने आववा देवानो हुकम आपनाथी वर्ष अने समक सभामां आच्या. तेओ वंनेए हाथ जोडी आशीर्वाद पूर्वक ्राम स्तृति करो. पजी तैमांना यभके विज्ञप्ति करी के-' हे देव! 'पुरिमताल्यूं झकट नामना उद्यानने विषे श्री ऋषमस्वामीने केवळज्ञान उत्पन्न थयु है। वयामणी आपवा माटे हुं आच्यो छुं,' त्यार पछी समके कहुं के-'हे देव! ए हजार देवनाओधी सेवायेलं अने करोड़ों मूर्य जेवो प्रकाश आपतुं चक्ररल र युप्ताकारां उत्पन्न थयुं है. ' आ ममाणे वे माणसना मुख्यी वे वधामणी है भळोंने मरत राजा अनि हर्ष पास्यों, पछी रोमने जीवीत पर्गत देनां अने भे वतां गुटे नहि एटछुं धन आपीन ते वंनेनुं सन्मान क्युं. इवे भरत त्रिनार क् लाम्या के-' मारे प्रथम कीनी उत्सव कर्यो उचित है ? केयळज्ञाननी के ! नो " ए मणाले विचार करतां पाई तेणे चितव्युं के-' मने धिकार है के भा - विन्ते ? अवद मुखना दादा पिना क्यां ! अने मात संसारस्यानं है भ्त च वर्ग ! वही तातनी पृता वरतायी चहनी पृता पण थडन गड़। प मोरिके निवय गरी मोटा भारतगपूर्व ह पुत्रमोहशी विदल यसेला अने १ ऋष १ अर्थात्या नगरीन् प्रस्तात नामे पर हत्

!' ए नामनो जप एउना एवा पोताना पितामही ' मरदेवा 'ने मज उपर नि भरन राजा पहुषम स्वामीने पंदन परवा चाल्या. मार्गमां भरते मरदे-रां के-" गाना ! नमें स्वपुत्रनी समृद्धिने छुओ. तमे भने हमेशां कहेना के-'मारो पुत्र पन्यां भटके हो अने दृश्य अनुभषे हो, परंतु तुं हेनी संभा-नो नुधी. 'आ पमाणे दररोज मने ओळभी आपना हताः पण हवे नमा-वनुं भेशांच छुतो. "

ए अवसरे चौसट सुरेंद्रोए एफटा धर्ने समवसरण रच्युं, फरोटी देवदेवी-(एउ) मळ्यो. विविध प्रकारमां वार्तित्रोना वन्दोथी गगनवंडळ गाजी रहुं. य शब्दों साथ गीनगान पूर्वप घन सिंहासन अपर पेसीने देशना आपना ने यत्वने देवहृद्धिनो प्यति अने जयत्रयता शब्दो सांभळीने गरुदेवा फहे है के-' आ हात्क में है !' भरते वर्ष के-'भा तमारा पुत्रनु अवर्ष मरुदेवा विचारे हे के-' अहा ! प्रते बाहली दधी समृद्धि रेजरी हे?' ए में इंटरेटा पूर्वक जानदाशु आवृषायी तेमना पने नेत्रना पटल सुदी मयां मर्ने गत्यक्ष जोय जोटने विचार्य के-" अरो ! आ मनप्र आंगु अवर्ष वे छे ! परंतु एण मने एयाबार संभारी पण नथी. हतो एक हनार वर्ष ं पुत्रपोरधी दृःस्तित यह अने पुत्रना मनभां तो मोहन किचित् कारण पण ति नयी. अहा ! मोहनी चेहाने विकार है ! मोहांव माणसो कड वण जा-। नवी, " ए प्रपाण वैराग्यपप्रपणाधी अपकश्रेणी उपर आर्ड थया अने आठ नो अव फरी अंनकृत केवली घड़ने मोक्षे गया. देवनाओए महोत्सव कयों इंड दे मर्व देवीण समयसरणमांथी त्यां आवीने मर्ग्डवा मानाना अरीरने क्षीर-गरना मदाहमां बहेतं गुपयुं, पठी शोकमप्र भरतने अब्रेसर करीने सौ समवस-मां आज्या. भरत मभुने त्रण मद्क्षिणा फरीने यथायोग्य स्थाने वेटा अने नी देखना सांमळी तेमनो मीफ नष्ट पयो देशनाने अते मुखने बांही श्रावफ अंगीकार करी अयोध्यामां आच्या, अने पत्री नक्तमो उत्तव कयों.

भाव दिवस गया पछी च्छ पूर्व दिशामां चाल्युं. भरत राजा पण देश तवाने माटे चक्रनी पाउछ मैन्य सहित चाल्या. एकेक योजनचुं दररोज अप करना केटलेक दिवसे पूर्व समूटने किनारे आवी सैन्यनो पहाव नाल्यों. अस्त अहमनुं तप दर्युः अने माग्य नामना देवनुं मनमां ध्यान करीने यत स्था. त्रण दिवस पत्री रथमां वेसी समुद्रना जळमां रथनी घरी पर्वत या करी पोताना नामनी अंकित वाणने धनुष्यमां सांधीने ते देवमति छोडखं वाण वार योजन जडने मग्यदेवनी सभामां सिष्टासन साथे अथडाइने भूमि ए पट्युं. वाणनुं पट्युं जोड मग्यदेव कोथायमान यह गयो. पछी ते वाण

हाथमां छड़ तेना परना अक्षरो वांच्याः एटले भरत चक्रार्नीने आरेला जा कोपरिहत थड़ भेटणुं लड़ परिवार सिहत नेमनी सन्मृत्व चाल्यो. नजीक अली ते चक्रवर्तीना चरणमां पड़यो ने बोल्यो के-' हे स्वामिन्! मारो अपराध करो, हुं तमारो सेवक छुं; आटला दिवस सुधी हुं स्वामींग्हीत हनो, हने अपना दशनथी सनाथ थयो छुं. ' ए प्रमाणे कहो, नमस्कार करी, भेट प्रसी, रहे छड़ने स्वस्थाने गयो. पजी भरतचकीए छावणीमां पाछा आवी अद्यम व्या

त्यारपछी पाछ चक्र आकाशमां चाल्युं. मैन्य पण तेनी पाछळ चालें अनुक्रमे तेओ दक्षिण समुद्रने किनारे आच्या. पूर्वयत ते दिशाना स्वामी विश्व मदेवने' पण जीत्यों, त्यारवाद पश्चिम दिशामां 'प्रभासदेवने' जीतीने के उत्तर दिशा भणी प्रथाण कर्यु. अनुक्रमे वैताहय पर्वत पासे आवीने चक्रा अद्यम तप करी 'तिमस्ना' गुफाना अधिष्टायक 'कृतमालदेव' मुं मनमां ध्या करीने स्थित रह्या. अद्यम तपने अंते ते देव मत्यक्ष थयो अने तिमस्ना गुफानुं ही उत्तर्ध सहित भरत राजाए तिमस्ना गुफामां मवेश कर्यों. मिणरतना की इंचडे सैन्य सहित आगळ चाळतां 'निमन्ना' अने उत्तिमग्ना नामनी वे नरीं आवी.ते नदीओ चभैरत्ववडे उत्यां.अने आगळ वाळी गुफाना वीजा द्वा पारे सेन्यने वहार काढ्युं. हवे त्यां घणा म्छेच्छ राजाओ रहे छे तेओ एकठा की सेन्यने वक्षीनी साथे युद्ध करवा लाग्या चक्रीए ते समळाओने जीती लीकि चक्रीना सेवको थया. त्यां. आवेळा उत्तर तरफना त्रणे खंडने जी वक्री पाछा वळ्या. मार्गे चाळतां गंगाने तीरे सैन्यनो पडाव नाख्यो. त्यां निधिओ मगट थया नव निधानयुं स्वरूप आ ममाणे:—

"१ नैसर्प, २ पांडक, ३ पिंगळ, ४ सर्वस्त, ५ महापश्च, ५ काळ, ७ काळ, ८ माणवक ने ९ शस्त्र-ए ममाणे तेनां नामो छे. तंगंगाना मुखमां है । आठ पेडांवाळा, आठ योजन उचा, नव योजन विस्तास्वाळा ने । योजन लांवा मंजुपाने आकारे छे. तेना वैद्र्यमणिना कमाड (वारणा) कनकमय छे, विविध मकारनां रत्नोवडे परिपूर्ण छे, अने तेना अधिष्ठाता । विज्ञाना पत्योपमना आयुष्यवाळा होय छे.

चकीए गगाने तीरे रहीने आट दिवस सुधी ते नियान संबंधी इक्ष् क्यों. गंगानदीनो अधिष्ठायिका 'गंगा'नामगोदेवी अस्तचक्रीने पोताना आवाण इड गड. न्यां तेनी साथे एक हजार वर्षपर्वत भागभोगच्या. त्यारपछी चक्र आगळ व तं. एटल्डे नक्रीण वताह्य पर्वत पासे आवी तेनो उपर रहेनार 'निय' अने 'विवा मना विद्याधरोने जीत्या. विनमि विद्याधरे पोतानी पुत्री चक्रीने आपी. ते रस्न थइ. ए ममाणे भरतचक्री साठ हजार वर्ष पर्यत दिग्विजय करीने अयोध्यामां ग्र आव्याः ते पर्खंडाधिपति महा ऋढिमान थया. तेमनी ऋदितु स्वरूप कहे चोराशी लाख हाथी, तेटलाज रथो, तेटलाज अम्बो, छन्त्रकोटी पायदळ, श्चि हजार देशो, बत्रीश हजार मुद्धदवध राजाओ जेना सेवफ छे, अहताळीश र पाटण, बोतेर हजार नगरो, छन्तुकोटी गामो, बोद रतना, नव निधि, सांड ार वज्ञावकी कहेनारा भाटो, साट हजार पंडितो, दश कोटी ध्वंजा धारण नारा, पांच लाख मशालची, वीश हजार सुवर्ण आदि धातुनी खाणो.पचीश ार देवो जेना सेवको छे, अहार कोटी घोडेस्वार जेनी पाछळ चाछे छे-आ ाणेनी ऋदि माप्त यह छतां ते मनथी विरक्त रहेता हता. ए ममाणे घणालाख । व्यतीत यतां एकदा भरतचक्री पोतानी जुंगारवालामां शरीरवमाण आदर्श ाच) मां पोता हुं रूप जोवा छाग्या. ते बखते दरेक अवयवनी सुदरता निहाळतां ः आंगळीने वॉटीरहित होवांथी अत्यंत शोभारहित लागती जोइने मनमां विचार वा लाग्या के-" अहो ! दहनी असारता ! परपुद्गलोथीन शरीर शोभे छे, ाना पुरलोधी शोभतुं नधी. अरे ! में शुं कर्यु ! आ असार दहनी खातर में घणा रभो कर्या. आ असार संसारमां सघछ अनित्य छे. कोइ कोइन्चं नथी. मारा ना भाइओने धन्य छे के तेमणे वीजळीना चमकारानी जेवां चंचल राज्यसुखने ो दइने संयम स्वीकार्युं. हुंतो अधन्य छुं, जेथी आ अनित्य एवा संसारी छेलगां विपणानी बुद्धिथी मोह पामेलोलं. या देहने धिकार छे! अने सर्पनी फणा ा आ विषयोने पण धिकार छे ! हे आत्मा ! आ ससारमां तु एकलोज छे. वीज़ं इ तारुं नथी." आ प्रमाणे विचार करतां परमपद पर आरोहण करवानी सरणी रूप क्षपकश्रेणीए आरूढ थया; अने चार घन घातिकर्मनो क्षय करीने वल केवळज्ञान प्राप्त कर्छु. ते अवसरे शासनदेवीए आवीने मुनिनो वेष अपण र्धा. ते साधुनो वेप धारण करीने तेमणे केवलोपणे पृथ्वी उपर विहार कर्यो, रे अनुक्रमे मीक्षमुख माप्त कर्यु. एटलामाटे आत्मसाक्षिक अनुष्ठानज फळदायी अन्य सांक्षिकं अनुष्ठान फलदायी नथी.

आ प्रमाणे अध्यात्मिक अनुष्ठानमां भरतचक्रीनुं दृष्टांत जाणनुं.

हवे प्रसनचंद्र राजिंपुं दृष्टांत कहे छे-

पोतनपुर नगरमां प्रसन्नचंद्र नामनो राजा हतो. ते अति धार्मिक, सत्यवादी तथा। भिष्मिमां अद्वितीय निपुण हतो. ते एक दिवसे संध्याकाळे झरुखामां वेसी नगर- मुं स्वरूप जोतो हतो. ते समये नाना प्रप्तारनां रंगवालां वादलां भयां. संपार रंग खीह्यो. ते जोड राजाने अति हर्प थयो. पछी ते तेना तरफ पुनः पृष्ट हिए करवा लाग्यो. एटलामां ते सध्यास्वरूप शणिक होताथी जोतांजीतांगीं नाम पामी गयु. ते जोड राजा विचार करवा लाग्यो कि-अतो ! संध्याना गरे संदर्भता क्यां गई ! पुटलो अनित्य हो. संध्याना गंगनी पेठे आ देह पण अनित हो. संसारमां पाणीओने वंड पण मुख नथी. कर्गुं हो के—

पृखं स्त्रीकुक्षिमध्ये प्रथमितहत्तवं गर्भवासे नराणाम् बालत्वे चापि पृखं मलखुलितवपुः स्त्रीपयःपानिमश्रम्। तारुएये चापि पृखं त्तवित विरहजं वृद्धतावोष्यसारः संसारे रेमनुष्या वदत यदिसुखं स्वट्पमप्यस्ति किंचित्॥

" माणसोने आ संसारमां प्रथम स्त्रीनी कुक्षिनी विषे गर्भवासमां दुःस हो। छे, बाल्यावस्थामां पण माताना दुधना पानथी तेमल मळमूत्रथी शरीर खरडावें रहेवाथी दुःख छे, युवावस्थामां पण विरह्यी उत्पन्न थये छं दुःख छे, अने हुंह्मी तो तहन असारल छे. माटे हे मनुष्यों ! जो आ संसारमां स्वल्प पण कार्रक होय तो कहो."

ए प्रमाणे वैराग्यथी जेतुं मन रंजित थयुं छे एवो राजा चिंतवन करें हैं ? 'आ संसारमां वैराग्यनो साथे वरोवरी करी शके तेवुं कोइ पण छुखं नथी.'कहुं है ?

> नोगे रोगभयं सुखे इत्यनयं वितेऽशिज्जूनृद्भयम् दास्ये स्वासिन्ययं गुणे खलनयं वंशे क्रयोपिद्भयम्। माने म्लानिन्ययं जये रिपुन्यं काये कृतांताद्भयम् सर्वे नामन्ययं भवेऽत्र निवनां वेराग्यमेवाऽनयम्॥

"भोगमां रोगनो भय, मुखमां क्षयनो भय, धनने विषे अग्नि ने राजि भय, दासत्वमां स्वामीनो भय, गुणमां खळपुरूपनो भय, वंशमां कुनारीनो भ मानने विषे तेनी दानि थवानो भय, जयने विषे रिपुनो भय अने टेहने वि यम राजानो भय होय छे. ए प्रमाणे आ संसारमां मनुष्योने सर्व भययुक्त हैं। छे. मात्र वराय्यन एक भयरहित छे. "

ए ममाणे विचारी वैराग्यमां तत्पर थयेल राजाए पोताना वाल्यावस्थावाळा पुत्रमे राज्य उपर वेसाडोने पोते दोक्षा ग्रहण करी. तत्काळ जेणे केशनो लोच क्यों छे एवो ते राजा पृथ्वी उपर विहार करतां राजगृहीना उद्यानमां कायोत्सर्ग गुद्राथी उभो रह्यो. ते अवसरे श्रीमान वर्धमान स्वामि−एक गामथी चीजे गाम वेहार करतां चौदहनार साघुओथी परिष्टत थयेला, देवताओए निर्माण करेलां त्रोनानां कमलो उपर पोताना चरणोने धारण करतां राजगृह नगरना गुणशील नामना उद्यानमां समवसर्या, देवोए आधीने त्यां समवसरण रच्युं. वनपाळके वराथी श्रेणिक राजा पासे जड़ने विज्ञप्ति करी के-'हे स्वामिन्! आपना मनने वणाज व्हाला श्री महाबीर स्वामि वनमां समवसरेला छे.'ए प्रमाणे वनपालकतुं बोलबं सांमळीने राजाने घणां हर्ष थयो. राजाए तेने कोटी द्रव्य अने सोनानी जीम आपी. पछी श्रेणिक राजा मोटा आइंवरसहित मधुने वंदन करवा चाल्यो. सैन्यना अग्र भागे सुमुख ने दुर्मुख नामना वे चोपदारों चालता हता. वेओए पसन्नचंद्र मुनिने वनमां कायोत्सर्ग मुद्राए उभा रहेला जाया. पथम सुमुखे कह्युं के-'आ मुनिने धन्य छे के जेणे आवी मोटी राज्यलक्ष्मी तजी दइने संयम रूपी समृद्धि ग्रहण करेलो छ. एना नाम मात्रनो उचार करवाथी पाप जाय ता पछी सेवा करवाथी जाय तेमां तो शुं कहेबुं !' पछी दुर्मुख वोल्यो के-'अरे! आ मुनि तो अधन्य अने महापापि छे. त एने वारंवार शा माटे वलाणे छे ? एना जेवो पापि तो कोइ नथी.' सुमुखे मनमां चितन्युं के-'अहो ! दुर्जननो स्वभावज आवो होय छे के जे गुणोमांथि पण दोपनेज ग्रहण करे छे.' कहुं छे के-

> आक्रांतेव सहोपलेन मुनिना शतेव दुर्वाससा सातत्यं वत मुद्रितेव जतुना नीतेव सूर्छी विषेः। वद्धेवातनुरन्जुनिः परग्रणान् वक्तं न शक्ता सति जिह्या लोहशलाक्या खलमुखे विद्धेव संबद्ध्यते॥

"मोटा पथ्थरथी द्वायेली होय नहि! दुर्वासा मुनिथी शाप पामेली होय नहि! लाखधी निरंतर चोटाडी दीयेली होय निहि! विषधो मूर्जित थयेल होय निह अथवा जाडा दोरडाथी वांधेली होय निहि! तेवी खल माणसनी जीम पार-काना गुणो चोलवाने अशक्त होती सती लोडाना खीलाथी जाणे विधेलो होय निह तेवी जणाय छे " वली कहुं ले के- त्र्यायोंऽपि दोषान् खलवत्परेषां, वक्तुं हि जानाति परं न विति। किं काकवत्तीव्रतराननोऽपि, कीरः करोत्यस्थिविघट्टनानि॥

" सज्जन माणसने पण खल माणसनी पेठे पारकाना दोपो वोलतां आवं छे पण ते वोलता नथी. शुं कागडानी माफक पोपट पण तीव्र चांचवालो नथीं छे; छतां ते अस्थिना दुकडा करे छे ? नथी करतो. "

पछी गुमुखे कहुं-'हे दुर्मुख! तुं आ मुनीश्वर महात्माने शामाटे निंदे हैं। स्यारे दुर्मुखे कहां-" अरे ? तेतुं नाम पण छेवा जेवुं नथी. कारणके आ मुनि पांच वर्षना वाळकने राज्यगादी उपर वेसाडीने पोते दीक्षा लीघी छे; परंह तेन वैरीओए एकटा थइने तेना नगरने छंटयुं छे, तेना नगरवासी जनो आक्रंद अने विकाप करे छे. मोडं युद्ध थाय छे. हमणां तेना शत्रुओ ते वालकने हणीने राल ग्रहण करशे. आ सघळुं पाप तेना शिरे छे. " आ प्रमाणे सांभळीने ध्यानी स्थित थयेळा मसन्नचंद्र ऋषिए चितव्युं के-'अरे! हुं जीवतां जो मारा कर् मारा बाळकने मारीने राज्य ग्रहणकरे,तो ए माननी हानि तो मारी पोतानी जै ए प्रमाणे चितवतां ध्यानथी चिलत थइने मनमां शत्रुओनी साथे युद्ध करवा न ग्या; अति भवंकरपणाने पाम्या अने तेमां एकाग्र थवाथी राद्र ध्यान ध्वा स्टान्या. मनपटेन शत्रुओने हणे छे, अने 'में अमुक शत्रुने मार्या ' एवी इिं 'वह सारं थयं' एम मुखयी पण बोछे छे. 'हवे बीजाने मारुं ए प्रमा^{णे व} फरीने पण मनयो युद्धमां मवर्ते छे. एवे समये हाथी उपर बेठेला श्रेणिके प्रस् इंद्र मुनिने जोपा. एउछे 'अहो ! आ राजपिने धन्य छे के जे एकाग्र मने भ्यान यरे हे.' एम विचारी श्रेणिक राजाए गज उपरथी उतरी मुनिनी ^क भदितिया करीने तेमने वारंवार बांधा अने स्तृति करी. पछी तेमने कांध इत्तरां स्तुति करतो हाथि उपर चढी श्री महाबीर स्त्रामी समीपे आब्धो. समन्मा इं इने प्रवर्शनमार नाज्यमानी। विविधी निनेश्वरने बंदन करीने वे हस्तर्भ होती या प्रशंग स्तृति करी-

द्यदारवन्मकलता नयनहयम्य, देव त्वदीयचरणांवुजवीहाणे द्यद्य जिलोकित्यक प्रतितासने से,संसारवारिचिरयं चुलुकप्रमाणे ११ देव देवरणं चरणक्षकता दर्शनवी मार्ग वसे नेत्रो जान सफल गणे देने रे जिलोकित्य देशान जा संसार वार्गिव मने एक अनलक्षमाणत मार्गेले र के जिलोकित्य के देशके व्यवस्ता प्रोच गाम अनिसम अही साणीति

दिहे तुह्मुहकमले, तिन्नि विणहाई निरवसेसाई। दारिहं दोहग्गं, जम्मंतरसंचियं पावं॥

" तमारुं मुखकमळ देखवाथी दारिद्र, दौर्भाग्य अने जन्मांतरसंचित पाप-त्रणे वानां सर्वथा नाश पाम्यां."

इत्यादि एकसो ने आठ काच्योथी जिनेन्द्रने स्तवीने ते योग्य स्थान जपर हो. पछी प्रभुए क्छेशने नाग करनारी धर्मदेशना शरु करी. देशनाने अंते प्रेणिक राजाए वोरस्वामीने पूछयुं के-' हे मग्रु ! जे अवसरे में मसन्नचंद्र मुनिने ांद्या, ते अवसरे जो ते काळपर्म पामे तो तेनी गति क्यां थाय ? स्वामीए कहुं के-'जो ते वस्वते भरण पामे तो सातमी नरके जाय.' फरी पूछयुं 'हमणा काळ करे तो क्यां जाय ? भगवाने क<u>खं</u> के–' छद्दो नरके जाय•⁷ फरीथी श्रेणिके भणमात्र विलंब करीने पूछयु के-' इवे क्यां जाय ? ' भगवाने कह्य के-'पांचमी तरकभूमिए जाय.' क्षण पछी फरीथी पूछतां भगवाने कहां के-'चोथी नरक-भूमिए जाय.' ए ममाणे पुनः पुनः पूछतां ते 'त्रीजी, वीजी ने पहेळी नरक-भूमिए जाय' एवो उत्तर भगवाने आप्यो. फरीथी श्रेणिक राजाए पूछयुं के-हवे क्यां जाय ? ' त्यारे भगवाने कहुं के-' प्रथम देवलोकमां जाय ' एम पुनः पुनः पूछतां ' ते वीजा त्रीजा चोथा, पांचमा, छहा, सातमा, आठमा, नवमा, दशमा, अग्यारमा ने वारमा देवलोके जाय.' ए ममाणे अनुक्रमे ' नव ग्रैवेयक-मां अने पांच अनुत्तर विमानो पर्यंत ते जाय' एवो उत्तर श्रेणिक राजाए पूछतां मगवाने आप्यो. आ रीते सभामां मश्रोत्तर चालता हता तेवे समये आकाशमां देवदुंदुभिनो नाद सांभळीने श्रेणिके पूछयुं के-' हे मशु! आ दुंदुभिनो नाद क्यां थाय छे ?' प्रश्रुए कहुं के-' प्रसन्नचंद्र राजिंपने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी देवो दुंदुभि वगाडे छे अने जय जय शब्द करे छे. ' श्रेणिके पूछयुं के—' मभ्र ! आ कौतुक शुं ते मारा समजवामां आवतुं नथी, माटे आतुं स्वरूप शुं छे ते जाणवा माटे हे स्वामिन! तेनो सघ छो' इत्तांत कहेवा कृपा करो. ' मधुए क्यूं के-' हे श्रेणिक! सर्वत्र मन एज मधान छे.' क्युं छे के-

मन एव मनुष्याणां, कारणं वंघमोक्षयोः। क्रणेन सप्तमीं याति, जीवस्तंष्ठस्रस्यवत्॥

" मनुष्योने मन एज वंध तथा मोक्षन्नं कारण छे. जीव क्षणमात्रमां तंदु-छमत्स्यनी जेम सातमी नरके जाय छे." वली कर्षुं छे के— मणमरणेंदि अस्णं, इंदियमरणे मरंति कम्माई। कम्ममरणेण मुख्यो, तम्हा मणमारणं पवरं॥

"मनने मारवाथी इंद्रियो मरे छे, इंद्रियोने मारवाथी कर्म मरे छे अने व मारवाथो मनुष्य मोक्षने पामे छे; माट मनने मारवुं एज श्रेष्ठ छे."

वळी प्रभुए कहुं के-'' हे श्रेणिक! जे अवसरे तें प्रसन्तचंद्रने बांगा ने अवसरे तारा चोपदार दुर्मुखनां बचन सांभळीने ते ध्यानथी चिला हता. अने अवशोनी साथे मनमां युद्ध करता हता. तुं तो एम जाणतो हते आ एक मोटा मुनाध्वर छे. ते एकाग्र मनथो ध्यान करे छे; परंतु तेणे ते से अवशो साथ मनमां मोटुं युद्ध आरंभेन्छं हतुं: तो ते युद्धथी तेणे मातभी ना गोग्य भागुण्यानां पृत्रको मेळ्यां हतां, पण ते युद्धशो तिणे सातभी नांगा मरोतां. त्याग्याणी तुं तो तेमने बांदीने अहीं आध्यो अने तेणे तो मात्रा प्रदेश करें स्वाप्त प्रसेश पण सम्बां स्वीप्त प्रसार प्रसार प्रसेश पण सम्बां स्वीप्त प्रसार प्रसार प्रसेश पण पोतानी पारो एक बार स्वीप्त करें स्वाप्त प्रसेश पण पोतानी पारो एक बार स्वीप्त करें स्वाप्त प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रस्त प्रस्त प्रस्त प्रस्त प्रस्त प्रस्त प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रस्त प्रस्त प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसार प्रसेश प्रसेश स्वाप्त प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसेश स्वाप्त करें प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसार प्रसेश प्रसेश स्वाप्त प्रसेश प्रसेश स्वाप्त प्रस्त स्वाप्त प्रसेश स्वाप्त स्वाप्

्यां. शुभ अध्यवसायना बरुथी साते नरकभृमिने योग्य कर्मदलोनुं छेदन करीने उत्तरोत्तर सर्वार्थसिद्धि विमान पर्यंत जवा योग्य कर्मदलने मेळवीने अनुक्रमे इ पामती शुभ परिणामनी धारावढे परमपदनी माप्तिमां परम कारण रूप क्षपक शिनो आश्रय करी, घातिकर्मनो नाश करी तरतज अति उज्जल केवळज्ञान मेळ तेना प्रभावथी देवताओ एकठा थइ गीतगानादि पूर्वक तेनो महोत्सव करेछे."

आ प्रमाण प्रभुना मुख्यी सांभळीने श्रेणिक राजाए सविस्मय वारंवार ।। गुं मस्तक धुणान्युं, अने वीरपभुने वदन करी संदेहरहित थइ स्वस्थाने ।. प्रभुए पण अन्यरथाने विहार करीं । प्रसन्नचह राजपिए पण घणां वर्षी केवळीपणे भृमि उपर विहार करींने मांते मोक्षपद मांस कर्युं.

' आ दृष्टांत उपरथी सार ए प्रहण करनो के आत्मसाक्षीए करेलुं आचरणन ।पापना फळने आपनार छे. '

एकला वेषनी अशमाण्यता वतावे छे— वेसोपि छप्पमाणो, छसंजमपहेसु वद्यमाणस्स ।

किं परियत्तियवसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २१ ॥

शब्दार्थ-" असंयममार्गमां वर्तता मुनिनो वेष पण अप्रमाण छे. केमके शुं । परावर्तन करेल मनुष्यने विष खाधु सतुं मारतुं नथी ? मारे छे."

भावार्थ-पट्कायना आरंभादिकमां वर्तता एवा मुनिनो रजोहरणादि वेष मनो नथी, केवल वेषवहे आत्मशुद्धि थती नथी. अहीं दृष्टांत कहे छे के-हे वेष मूकोने वीजो वेष लीघो होय ते जो विष खाय तो मरण न पामे ? मे. तेम संविल्छ चिन्न रूप विष असंयम मार्गमां प्रवर्तनारा मुनिने मुनिवेष गां पण अनेक जन्म मरण आपे.

अहीं कोड एम कहे के त्यारे तो वेपनुं शुं काम छे? केवळ भावशुद्धिन वी. तेने गुरु कहे छे के एम निह, वेप पण धर्मनो हेतु होवाथी मुख्य छ आ ममाणे—

धर्ममं रख्खर वेसो, संकई वेसेण दिख्खिओं मि र्यहं ॥ उमगोण पहेंतं, रख्खेर रायां जणवउँवव ॥ २२ ॥

शब्दार्थ-" वेप धर्ममुं रक्षण करे छे, वेषे करीने हुं दीक्षीत छुं एम धारीने कायछे, अने राजा जनपदने राखे तेम उन्मार्गे पडताने वेष राखेछे. " २२

गाथा २१ - असंजमपण्सु. गाथा २१ -- जणपडव्य

भावार्थ-वारिवधर्मनी वेप रक्षा परेहें अने फोटपण मफारन पापकार आन् वता हु मुनिवेषधार्य छ-वीधीत छ एवा विचारशी माणम अकामले न्याना पा छे-पाप करी शकतो नथी. बळी राजा जेम जनपदनी एटले पोताना देशना लो कोनी रक्षा करेछे अर्थात् राजाना भवती जेग प्रजावर्ग उन्मार्ग नाली जकतो नधी मबत्यों होय तोषण राजभयथी पाछो निवर्त है: तेम वेप माणीने उन्मार्ग पहन रोके छे-उन्मार्ग पटी शकतो नथी-पटयो होय तोपण पाछी ओसरे छे.

ळपाण जाणइ छप्पा, जहिन्छो छप्पसिन्यओ धम्मो ॥

. श्रुप्पा करेड् ते तहूँ, जह श्रुप्पसुहावहं होईं ॥ २३॥

श्चृद्वार्ध-"आत्मान यथास्थित पोताना आत्माने जाणे छे, माटे आत्मसान क्षिक धर्म (ममाण छे.) तथी आत्माण जे क्रियानुष्टान आत्माने मुखकारक होय ते तेवा प्रकारेज करवुं के जे परभवमां हितकारक थाय." २३

भावार्थ-पोतानो आत्मा श्रम परिणाममां वर्तछे के अश्रम परिणाममां वृते छे तेनी खरी खबर पोताना आत्मनेज पटे छे, कारणके पारकी चेतोहिंग छग्नस्थ जाणी शकता नथीः पण पोते जाणीं शके छे.

. जं जं समयं जीवो, ख्राविसइ जेलं जेलं जावेण ॥

सो तम्मि तम्मि समये, सुद्दासुद्दं चंधए कम्भं॥ २४॥ शब्दार्थ-" जीव जेजे समये जेवा जेवो भावे वर्तछे ते ते समये ते (तेबाँ, मकारना) शुभाश्चभ कर्मने वांघे छे. " २४

भाषार्थ-समय ते अति मुक्ष्म काळ समजवो. जेवा शुभ के अशुभ परिणामम् आत्मा मवर्ततो होय तेवां शुभ के अशुभ कमें। वांवेछे, अर्थात शुभ परिणमि वर्तना थुम कर्म वांघेछे, अधुम परिणामे वर्तता अधुम कर्मी वांचेछे; ते कार्ण माटे शुभ भावन करवो, गर्वादिशी दृषित भाव न करवो. ते सबंबे हवे कहे है

भ्रम्मो मएण हुँतो, तो नविं सीजन्हवायविङ्झिमिछ॥

संवच्छरमणि सिद्यो, वाहुवली तह किलिस्संतो॥ २५॥ जन्दार्थ-'' जो अभिमाने करीने धर्म थतो होत तो बीत उप्ण वायु वि गेरेथी पराभव पामता अने एक वर्ष पर्यंत अश्चन विना रहेला वाहुविल तेवा मकारनो क्लेस न पामत." २५

गाया २४-१ आविस्मर्. २ आवसर. - आसक्ती भवति. गाया २५.-जती बद्धमिश्री मणसिश्रो ता अणसिश्रो-अनद्यित:-अदानं विना न्यित भावार्थ-एक वर्ष पर्यंत आधाररहित उपवासी रहा छतां अने अनेक मका-रना परिसहो सहन कर्या छतां 'हुं मारा नाना भाइओने वंदना केम करं ?' एवुं अभिमान हतुं त्यांसुधी वाहुविछने केनळज्ञान न थयुं, अने मान तब्युं के तरत थयुं,माटे अभिमानवडे धर्म थड् शकतो नयी, अहीं वाहुविछतुं हतांत जाणवुं ते आ ममाणे—

घाहुवलिनुं दृष्टांत.

भरतचकीए छ खंडनो विजय कर्या पछी पोताना भहाछं भाइओने बोलाव-बाने तेणे दृतो मोफल्या. दृतीए जहने फर्यं के—,आपने भरत रामा वेलावे छे,' नेथी सपळा बंधुओ एकडा थइ विचार करवा लाग्या के—'भरत लोभ रूप पिशा-बथी ग्रस्त यह मक्त यनेलो छे. तेणे छ खंडतुं राज्य पाप्त कर्युं छे छतां तेना लो-भनी तृष्णा शांत थती नथी. अहो केबी लोभांधता!' क्यु छे के—

सोत्रमृलानि पापानि, रसमृलानि व्याधयः । स्नेहमूलानि दुःखानि, त्रीणि त्यक्त्वा सुखी जव ॥ "लोभ पापतुं मूळ हे, रस (स्वाद) व्याधितुं मूळ हे, अने स्नेह दुःलतुं मूळ हे; माटे ए त्रणे वानांने त्यजीने सुखी या."

बली करंग हो के-

जोगा न जुक्ता वयमेव जुक्तास्त्रपो न तसं वयमेव तप्ता ।
काक्षो न याता वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा॥
"अमे भोग भोगव्या निह पण अमे जाते भोगवाया, अमे तप कर्छ निह
पण अमे तप्त थया, काळ गयो निह पण अमे गया अर्थात् अमारी वय गइ,अने
दण्णा जीर्ण यह निह पण अमे जीर्ण थया अर्थात् अमारी वय जीर्ण थइ."

"एटला माटे वलाःकारथी पण ते आपणुं राज्य ग्रहण करशे अने आपणे पनी सेवा करवी पडशे; माटे तेनी सेवा करवी के निह ?" आ मकारना विचा-रने अंते 'तेनी सेवा करवी निह' एवं दरेक भाइए कबुल कर्यु—मुकरर कर्यु. पछी सपला भाइओ श्रीऋपभस्वामी पासे पोतानो छत्तांत निवेदन करवा गया. मसुने बंदन करी हाथ जोडीने विद्वापना करी के—"हे मसु! भरत मत्त धयोछे अने ते अमारे राज्य ग्रहण करवाने उद्यक्त छे; माटे अमारे क्यां जवुं? अमे तो आपे आपेला एक एक देशना राज्यथी पण संतुष्ट छीए; अने भरत तो छ खंडसुं राज्य मल्या छतां पण संतुष्ट थतो नथी." एवां तेमनां वचन सांमळोने मसु बोल्या

के-'' हे पुत्रो ! परिणामे नरकगितने आपनारी ए राज्यस्मीथी शुं वि छे ? आ जीवे अनतीवार राज्यस्मी अनुभवेली छे, तो पण आ जीव तप्त यदे नथी. आ राज्यलीलानो विलास स्वप्न तुत्य छे" कहाँ छे के-

स्वमे यथायं पुरुषः प्रयाति, ददाित गृह्णाति करोति विक्तः। निष्ठाक्षये तच न किंचिद्स्ति सर्वे तथेदं हि विचार्यमाण्म्॥

"आ पुरुप (जीव) जेम स्वमने विषे मयाण करे छे, आपे छे, ग्रहण करे छे, कांइ कार्य कांड करे छे अथवा बोछे छे, पण निहानो क्षय थतां जेम तेमांहं होतुं नथी तेम विचार करतां आ श्रष्टछं-संसारी पदार्थमात्र नेवाज छे."

वक्री---

संपद्गे जलतरंगविलोझा, यौवनं त्रिचतुराणि दिनानि। धारदात्रसिव चंचलमायुः, किं धनैः कुरुत धर्ममनियम्॥

" संपत्तिओं जलनां तरंगों जेवी चएळ छे, यौवन त्रण चार दिवसतुंज है अने आयुष्य जरद ऋतुना मेघनी पेठे चलित छे, तो धनथी छं विशेष छे ! छ स्य एवो धर्मज करो."

" माटे हे पुत्रो ! तमारे आटलो वधो मोहविलास शो ! कोना पुत्रो ? राष्ट्य ? कोनी स्त्री ? कोड पण साथे आववानुं नथी. " कहुं छे के-

डव्याणि निष्टंनि रहेपु नायों, विश्रामजूमी स्वजनाः इमर देहिश्चिनायां परवाकमार्गे, कर्मानुगो चाति स एव जीवः

" द्रव्य तो घरमांत्र पड्युं रहे छे, नारी विश्रामभूमि मुधी आवे छे, स्व रमदान सुरी आवे छे, अने छेबट देह नित.ण न्हे छे. पत्री परलोकमां वर्ष महित जीवन एकलो जायछे."

"मादे तमे आ दिनाधी राज्य त्यती यो जने तथा गएं देखिनाज्य गेळ आ ममाणेती प्रमुती देशना तांतळीते जनराण दीक्षा ळीबी अने वि चात्रिय पारण जाता. दुनोण आर्थाने जग्दने ए हजीवन निवेटन करीत! भवनच्योत ने भएताना पुनोने बोळावीने सामानुं गान्य आप्युं.

चि भरत रामः अयोध्या नगरीः । आल्या न्यां चक्र आयुष्यालामा मवेश करते राजा प्राप्त क्षार्थ । आल्या कृता चक्र आखुवशालामा भवश करते नथी, तेंथी कृत्य के कि विकत्त हैमनी समीण आवीने जणाल्ये के हे स्वामी। चक्र आंगुप्रसालामां पर्वत् कर्तुं नथा, भरतचक्रीए पूछ्युं के- तेतुं शुं कारण हें शु मुंग सेनापतिए क्षं के स्वामिन । हज पण कांड शत्र स्वी होंग तेम जः जाय है । चलीए कर्ण के अत्र स्वी मारा माथा उपर कांड शत्र नथी। जाय है । चलीए कर्ण के आ उत्तरमां तो मारा माथा उपर कर्ण के जाय है । चलीए कर्ण के अ नुषेणे कर्ण के अपनी आपनी नानों नाने भाट वाहुविह आपनी आहा मानतो नथी. अपना नाना नान माने नहि तो तेने शहुम समजवो. भाड छता पण जो मोटा भाडनी आज्ञा माने नहि तो तेने शहुम समजवो. आहा पोताना घरमां पण चालती नधी ने स्वामी शेनो ?तेधी तेने आहा-करवो जोहण, भरत राजाण विचायु के भाग भयभी मारा राघळा भाइओए चारित्र महण नधुहे, हवे बाह, रूपे मारे एकन भाइ रहे छोड़े अने ते पण असुन यिल पासं जा अने तेने अहीं बोलावी लाव, आ ममाणे भरतचक्रीनां चचन सांपळीने पुष्पती माफक तेमती आज्ञा माथ चडावी रथमां वेसीने परिवार स हित ते चाल्यो. मार्गे जतां तेने वर्णा अपशुक्ताः क्याः परंतु ते अपशुक्तां वर्षाः हित ते चाल्यो. मार्गे जतां तेने वर्णा वामीनी आजा पालवामां उत्तात थयला ते अविच्छित् चात्यो. केटलेक तेने पूछ्युं के- हं कोण छे ? क्यां जायहे ? मुवंगना अमुचरोए हां कि आ मुवंग नामनो भरत रा प्या जायह है मुकाना अनुकराए कर्ष कि आ मुका नामना भरत रा-भी दून हे अने ते चाहुचितिने चोठावचा माटे जायहें, त्यारे होको पणी है, में दून हे अने ते चाहुचितिने चोठावचा माटे जायहें, त्यारे ते होको चोह्या में के-ए भरत कोण है ? मुकाना सेवकोए कहा के ते क्यां रहे हे ? अ-गतनो स्वामो है, अने ते होकोगं पण मह्यात है, त्यारे ते क्यां रहे हे ? अ-गतनो स्वामो है, अने ते होकोगं पण मह्यात क्यां क्यां रहे च्यां रहे मारा टेजागं को की जोता हा क्यां क्यां क्यां क्यां के क्यां क् .. नाटणा विषय प्रयत ता अम तन सामण्या नया क त वया १६ छ । अन मारा देशमां तो त्रीओता स्तनती कंचुकी डवर भरत होंग हे तेने अमे भरत सरीके मांगजीन जेन क्यां! अमे ए भरत क्यां! अमारा स्वामीना अजदंडमहारने सहन करे तेवो आ क्या : अने ए भरत क्या ! अमारा स्वामाना सुभद्डमहारण हार गरा जा जा जाता करें द्वित्यामां कोई नथी , आ प्रमाणे लोकोता सुख्यी वाहुविलिंगा बलने जाती हार द्वित्यामां कोई नथी , आ प्रमाणे लोकोता जनकार लेंगा हो । अग्यामा पाइ नयाः आ समाण लागामा अपना पहीच्योः नगरीमां दा-अ सांग्रीने चित्रत थतो सतो मुवेग अनुक्रमे तक्षशिलाए पहाच्योः राजानी आगळ सम्बद्धाः सहित्र का अने वाहुवहिना समामेंडण पासे आव्योः दूरपाळे राजानी आगळ ने अज्ञानी दत स्थमांथी उत्तरी बाहुविहिनी स मीपे जइ तेने पगे लाग्यो. वाहुवलिए दूतने पोताना भाइना इकिल समावी आदि पूछतां द्ते कहां के—"तमारो भाइ भरत इंशल छे, अयोध्या नगरो दुशह हो अने तेमना सवाकोटी पुत्रो पण कुंशल हो. जेना घरमां चोट रहन अने नह निधि आदि मोटो ऐश्वर्यसंपत्ति छे तेतुं अङ्गुशल करवाने काण शक्तिवान है जोके तेणे सर्व संपत्ति प्राप्त करी छे तथापि तेने स्वयन्धुनां दर्शनने। लाभ हे वानी घणी उत्कंठा छे. माटे तमे त्यां आवीने तमारा समागमधी उत्पन्न य मुलहिद्धिंधी तेने अति प्रमुदित करोः; किंद जो तमे निह आवो तो ते तमारा उ कुपित थड्ने तमने घणी पीडा पमाडशे. जेनी वत्रीश हजार राजाओ सेवा व तेनी चरणसेवाथी तमारो कोइ पण रीते उपहास (मञ्जरी) नथी, पांच माणत साये भोगववुं ते दुःख नथीं अवी लोकोवित छे; तेथी मान त्यजीने त्यां चाली एवां दुतनां वचन सांभळीने वाहुविल अति क्रोधाणमान थ्इ ललाटमां विक्री चंडावी भुजास्कोट करीने वोल्या के-"अरे दुत! भरत कोण मात्र हे? तेन चीद रत्नो शु मात्र छे? अने तेना सेवका पण कोण मात्र छे? में वाल्यवस्थामां भगतने गंगाकांठे दहानी माफक आकाशमां उछाळयो हतो अने पछी गगनमांथी पडतां मंज तेने मारा हाथमां झीली छीधो हतो, ते शुं भरत भूली गयो ? मार् ते वल तेने विस्मृत थ्युं होय तेम जणाय छे, जेथी तने अहीं मोकल्यों छे. आ रहा दिवस मुधी तो म पिता तुल्य गणीने मोटा भाइनी आराधना करी छे. जा हवे को हुं तेनी उपेक्षा फर्ह छुं. केमके गुणहोन अने छे।भी एवा मोटा भाइयी पण थे! तेणे अहाणुं नाना भाइओनां राज्यो छइ छीघां अने तेओएतो नी णपणाने लीघे लोकापवाद्यी डरी राज्य स्यजीने संयम ग्रहण कर्धे, परंतु हुं तेने निंह सहन करें. मारी भुजमहार केवळ भरतज सहन करको, पण ते स करवा माटे अन्य कोड आवशे निह, माटे तुं जा दुत होवाथी तुं अवध्य तेथी मारी दृष्टियी नन्काळ दूर था. "

आ ममाणे क्रोधयी लालचोल नेत्रवालं मूर्धमंडलनी माफक उदीप्त ! हेनुं मुख जोड़ने मुदेग भय पामी घीमे घीमे त्यांथी वहार नीकळयो अने वरो मानभंग यह रथमां वेसी अयोध्या तरफ चाल्यो. मार्गमां वहुली देश हाल्यां तेचे आ ममाणे छोकोनां चाक्यो सांगळयां-"अरे ! भरत कोण हे अधारा स्वामीनी साथे युद्ध करवाने उन्छे छे ? परंतु तेना जेवी कीट मूर्य ने नथी के जेले मृतेला सिंहने गगाडयोहे." ए ममाणे लोके।नां वाक्यो रुदेश विद्युत थरने विचारवा लाग्यों के-"अहा ! आ देशना छोकी ! इत बड़े कीर्य घराचे हैं। परतृत नेमना स्वामीनोन ममाय है, तेओनी मम भरते भा मुं फर्युं ने भेणे बीक न फर्युं, अयोग्य फर्युं, "अ मगाणे विचार फरतो ने लोफोने भय पशानतो मुखेग फेटलेफ दिवसे अयोध्या नगरीए पहेंचियों.
नेण सभामां भइने सर्य एकोशत भरत चक्रीने निवेदन फरी. छेवटे तेणे हुं के—'ए नगारो मानो भाइ नमने हण्यत् गणेछे, वधारे मुं पहुं !' एवा दुः एवा सांभन्नीने सेन्य सहित भरत चक्रीए ने तरफ मयाण फर्युः भरतनी मोटी म पाली, नेधी दिःमंदल पण धुमवा लाग्युं, नेना सेन्यमुं स्वरूप नीचे मगाणे—दिग्चकं चिलतं ज्यान्जलि निधर्जातो महाव्याकृलो । पाताले चिकतो चुजंगमपितः होणिधराः कंपिताः ॥ ज्यांताः सुष्ट्थियी महाविषधरा हथेकं वमत्युत्कटम् ।

वृत्तं सर्वमनेकथा दलपतेरवं चमृनिर्गमे ॥

" दिगमेटल कंपवा लाग्यु, भयधी ममुद्र आकुलन्याकुल थयो, पातालमां ग्नाग चक्तित थयो, पर्वतो कंपायमान थया, पृथ्वी भगवा लागी, मोटा विप-रे उत्सट थिपत्तुं वमन परवा लाग्या; सेनापतित्तुं सैन्य चालतां अनेक मकारे ममाणे थवा लाग्युं,"

अदारकोटी घोटेस्वारोचुं लब्कर एकठुं करी भरत राजा पोताना इस्तीरत्न र स्वार घड्ने चाहुवलिने जीनवा माटे चाल्यो. केटछेक दिवसे ते बहुळी भा पढोंच्यो.

भरत आच्यां हे एवं बाहुबलिए पण सांभळ्यं एटले ते पोताना त्रण लाख पुत्रीपरित यह सोमयना नामना पाताना पुत्रने सेनापिपति यनायीने मोटी सेना
देत सामे नीकळ्यो. बन्ने सेन्यो सामसामा मळ्यां. वंने सेन्यना चोराशी हए रणत्रीना अवाजो यदा लाग्या. भेरीओनाभोकारांथी अने वार्लिनोना शत्यी कान उपर पहतो शब्द पण न संभळावा लाग्यो. पछी उद्धत, रणभूमिमां
किंद, अनेक हस्तीओनी घटामां जेओए मचेश करेलोछे तेवा, सिंहतुं पण मर्दन
तारा अने जेओनो कीर्तिपट चारे तरफ फेलायेलो छे एवा योद्धाभाए युद्ध
किंदी. योद्धाओना वीरशब्दो यवा लाग्या. आखं जगत शब्दमय भासवा लाकिंपीनी खरीथी उडती रजबडे घेरायलं मूर्यमंडल वायुसमृहनी अंदर रहेला
कि पद्धाश पत्रनी जेवं देखावा लाग्यं. तेवखते त्यां आममाणे युद्ध यवा माग्यं.
एके वे हन्यासाना सामलित सन्यता जीवशिषाः प्रतन्ति

एके वे हन्यमाना रणजिव सुजटा जीवशेषाः पतन्ति । होके मुर्छाप्रपन्नाः स्युरिष च पुनरुन्मुर्छिता वे पतन्ति । मुंचन्त्येकंऽद्वहासाञ्चिजपितकृतसन्मानमार्चं असादं स्मृत्वा धावंति मार्गे जितसमरत्रयाः प्रौढिवंतो हि जकत्य

"केटलाएक सुभटो रणभूमिमां हणावाथी जीवरोप थउने पढे हे, मूर्णिययेला केटलाएक सुभटो शुद्धिमां आवीने पाछा मूर्जित याय छे, केटला सुभटो अदृहास करे छे अने केटलाएक पोताना स्वामीए करेला सन्मानने ते पाथिमक मसादने संभारोने युद्धने। भय दुर करी भक्तिवडे मौढ वनी रणमा दोडे छे." ए ममाणे मोटा युद्धमां केटलाएक योद्धाओं हाथोओंना झुंडने पा पकडी आकाशमां फेरवे छे, केटलाएक उल्लाल योद्धाओंने पकडोने भूमि पाडे छे, केटलाएक सिंहनाद करे छे अने केटलाएक हस्तना आस्फोटनथी अोनाह्दयने फाडी नाखे छे. ए प्रमाणे स्वामीए भ्रक्कटोसंज्ञाथी उत्तेजित के सुभटोए उत्तर युद्ध आरंभ्युं. कहुं छे के—

राजा तुष्टोपि श्रृत्यानां, मानमात्रं प्रयच्छति । ते तु सन्मानमात्रेण, प्राणैरप्युपकूर्वते ॥

" राजा संतुष्ट थतां सेवकोने मात्र मान आपे छे. पण सेवको तो मानथी पोताना माण आपीने वदलो वाले छे."

रणमां एक मित्र वीजा मित्रने कहे छे के-'हे मित्र ! ब्हीकण ना था। रणके युद्धमां को वंने मकारे युख छे. जीत मेळवशुं तो आछोकमां सुख छे। मृत्यु थटा तो परलोकमां देवांगनाना आळिंगनतुं सुख माप्त थटा.' कहा छे

जिते च रुच्यते रुद्दमीर्धृते चापि सुरांगना । कण्विष्वंतिनी काया, का चिंता सरणे रणे॥

" गणमां जीतवाथी लक्ष्मी माप्त थाय छे अने मरवाथी देवांगना माज छै: आ फाया क्षणमां नाश पामे एवी छे, तो युद्ध करतां मृत्युनी चिता मारे राजवी?"

ए प्रमाण युद्ध थतां बार वर्षव्यतीत थयां, तो पण वेमांथी एकेतुं सैन्य ध्टम निह, ते अवसर करोटो देवों ते युद्ध जोवाने माटे गगनमंडलमां क्ष्या, तेनी अंदर सार्थमंत्रे आबीने विचार क्यों के—'अहो! कर्मनी गिति हो! के लेथी वे सगा भादओं अंशमात्र राज्य मेळववाने माटे कोटी मिन्न जिल्हा करे है, माटे हं त्यां जड़ने युद्धने अटकावृ! एवो विचार करी हैंडे अ

ध्या छे एवा है भरत राजा! आ शुं आरंभ्युं छे? मात्र सहल फारणमां तमे जगननों या माटे संदार करों छो ? श्रीदापमदेवें लांबा बखतथी पाळेल प्रजानी लय केम करवा मांट्यों हे ? मृपुत्रने आगु आचरण घटनुं नथी मृपुत्रने तो गए जेममाणे आचरेलुं होय ते ममाणे आचरतुं-वर्ततुं जोउपःगाटे हेराजेन्द्र! हना संहारधो तमे निर्म धाओं." भरते कर्षे के-"तातना भक्त एवा आपे फ्षुं ने सल हे. हं पण ने जाएं हं, परंतु शुं करं? चक्र आयुषशालामां पेसतुं ो. तेथी बाइवन्ति मात्र एकवार मारी समीपे आवी नायतो पछी मारे वीछै कार्य नथी. नेनुं राज्य छेवानी मारे जरुर नथी; माटे तमो त्यां जड्ने मारा [पंधृने समजाता." एवा भरतना वचना सांभळीने शक्रेन्द्र वाद्व्वित पासे ा. बाहुबल्लिए नेममुं घणुं सन्मान कर्यु अने कर्यु के-'दुक्तम करा, आपने क्या हुं शृं मयो जन हैं ? ' इद्रे कर्ष के-'तमे पित तुल्य मोटा भाउनी साथे सुद्ध छि। ए तमने घटतुं नथी, तथी तमें तेनी पासे जड़ने नमो, अपरायनी क्षमा ों अने लोक्संहारथी निष्टत याओं.' वाहुवलिए कर्तु के-'एमां देाप भरत-न है, अहीं आं तेने कोणे बोलाव्यो हतो ? ने अत्रे गागाटे आव्यो है ? अहप्त । नेने ळजा नयी. ने सर्वेदेवुशोनां राज्यो ग्रहम फरीने हवे मारुं राज्य लेवा च्यों छै: परंतु ने जाणको नयों के सर्व दरोनी अंदर फांड उंदरी होता नथी; टे हुं पाछो हटनार नथी; कारणके मानदानि करतां माणहानि वधारे सारी पहुँ हे के—

अधमा धनमिच्छंति, धानमानो च मध्यमाः। उत्तमा मानमिच्छंति, मानो हि महतां धनम्॥

"अधम लोको धनने इच्छे छे, मत्यप लाको मान अने धनने इच्छे छे. म लोको माननेज इच्छे छे, कारणके मान ए मोटाओनुं धन छे." वली-

वरं प्राणपरित्यागो, ना मानपरिखंडनम् । खुलुस्तरकणिका पीमा, मानखंके दिने दिने ॥

् '' प्रकृतां त्याग कभ्यो ए वधारे सागे छे, पण पानखंडन साढं नथी. का-को स्टुर्यु तेन क्षणेमात्र पीटा आपे छे, पण गानलंड ने। दररोग पीडा करे छे."

ए पनाण बारुवलितुं निश्रयगळ वत्तन सांन्छोने रहे कहुं के-"जो एवोन अय रोम हो नगारे वंने भाइजोएज गुड कार्ड, आ लोकसंहार शामाटे करो छो ?' प्राहुलिए ते बात फनुल करी. पत्नी उंदे गांच प्रकारनो मुखो स्थाणि क्षें इष्टियुद्ध, बाक्युद्ध, बाहुयुद्ध, मिट्टियुद्ध अने इंडियुद्ध, अरते पण ए प्रवाणे कर्ति कर्युः, पछी बने भाडओं सन्यने युद्ध करतुं नथ करीने सामसामा आल्याः

मथम दृष्टिगुद्ध शरू पर्यु. परम्पर दृष्टि रागे दृष्टि मलतां प्रथम भरतमा नेत्रमां अश्रुजल आवी गयां. तेथी साक्षीकृत देवताओए कहा के—'नकी हार्गा अने वाहुवलि जीत्या' एम पांचे युद्धोमां वाहुवलि जीत्या. एटले तिलसा भवेत के कोए मर्यादा मुकी चक्रने लोड्यु. त्यारे वाहुवलिए कहां के—'ए प्रमाणेन को सर्युक्तोए मर्यादानो त्याग करवो ए योग्य नथी.' लगां पण तेणे वाहुवलि अति चक्र मुक्यु, एटले वाहुवलिए मुट्टि उगामीने विचार कर्यो के—'आ मुट्टिवंड का सिहत भरतने चूर्ण करी नासुं.' एटलामां चक्र तो वाहुवलि पासे आवी वाहुवित सहित भरतने चूर्ण करी नासुं.' एटलामां चक्र तो वाहुवित पासे आवी वाहुवित वितन्युं के—'आ वज्र जेशी मृद्धि वटे माटीना लसणनी माक्रक भरतने चूर्णका नासु.' बळी तेणे विचार कर्यो के—'अहो ! में अंश्वानत्र मुखने अर्थ आ बांधनी नासु.' बळी तेणे विचार कर्यो केन 'अहो ! में अंश्वानत्र मुखने अर्थ आ बांधनी नासु शामाटे चित्रव्यो? जेने अंते नरक माप्त थाय छे एवा राज्यने धिकार छे! मारा नाना भाइओने धन्य छे के जेओए अनर्थहेतुक राज्ये तभी दहने संयम ग्रहण कर्यु छे." आ ममाणे जेना हृदयमां वेराग्य उत्पन्न की छ एवा वहुवलिए उगामेली मुटी पोताना माथा जपर पाछी वाळीने पंचाि छोप कर्यो; ते वसते देवताए रजोहरण विगरे साधुनो वेप तेने अर्पण कर्यो। वाहुवलिए स्वयमेव चारित ग्रहण कर्यु.

पछी जेण साधुनो वेप ग्रहण करेलो छे एवा पोताना भाइने जोइने भरत वार्षे आच रेला कमथी लज्जा पाम्पो एटले वंने नेत्रमांथी अल्ल वर्णावतो वारे वारे ते विचरणां पहचो अने वोल्यो के—'तने धन्य छे! मारो अपराध क्षमा कर अने राज्यलक्ष्मी ग्रहण करवानी ऋणा कर.' वाह्यलि मुनिए कखुं के—'आ राज्यली विलास अनित्य छे, योवन अनित्य छे अने शरीर पण अनित्य छे, तेमज विचयो परिणामे दुःख आपनारा छे.' इत्यादि उपदेश आपवा बढे भरतने वी ग्यवान करीने वाह्यलि मुनि तेज स्थाने ध्यानमुद्राथी उभा रहा। तेमणे मूल विचार करों के—'दुं लग्नस्थ होवाथी दीक्षाए चढेरा एवा लघु वन्धुओने की रीते वंदन फरं?' ए प्रमाणे गानथी उन्नत ग्रीवावाळा थइ कार्योत्सर्ग धारण रीने त्यांज उभा रहा।

भरतचक्री तेमने वांदी सामयशाने वाहुवित्र हुं राज्य आपीने स्वस्थाने गर्व बाहुवित्रए पण एक वर्ष पर्यत शीत, वात, आतप आदि परीसहोने सहने टाचानस्थी टारेला बाटना रृंटा हेवं पोतासं बरीर करी नारयुं. तेनुं शरीर लाओधी चींनार गयं. तेना दगरां दर्भनी शृजीओ उगी नीकळी. तेनी आस-ास राफराओ भट गया. तेनी टारी दिगेरेना वेशोमां पक्षीओए माळा नां-तिने प्रमय कर्यो.

नर्भे अने भगगान प्रत्मदेवे वार्यिलने शित्योध परवाने गाटे बात्मी में गुट्री नाम्भी हेनी वे दोनोने में कली. भगवाने तेमने कर्ं के-'तमारे वां प्रत्मे ए प्रमाण परेनं के-'ते बच्ची श्रायी उपन्धी उत्तरो.' ते बहेनो वाहु-ली समीपे कर होने वांटी ए प्रमाण योजी के-'हे भार! हाथी उपन्धी उत्तरा.' ए प्रमाण में तोनाना प्रत्मे नहेनोनां एवन सांग्ली ते मनमां विचार करवा दान्या के-'में सर्व क्यानो न्याम प्रयो हो तो मारे हाथी क्यांथी ? मारी बहेनों आ श्रं पहें हें ? परे ! में जायु, हं मान स्पी हाथी उपर चड़यो हुं, तेथी में यह पहेंचे सत्य हो. परे ! दार विचाने घारण प्रयाप प्रवा मने धिकार छे! तम ते नाना भाड़ओं मारे नंप हो. तेथी तेमने बांटवाने हुं जातं." ए प्रमाण नयम करीने चरण उपादतांज हेमने केवळतान उत्पन्न थयुं, पछी प्रस पासे ह वांटीने केवळतानीओंनी स्थामां वेटा. माटे "म्हयी धर्म यतो नथी ए योन्य कर्युं हो. गुमन्नुए धर्मकर्ममां विनयन करवो. एण मान राख्वुं नहि." आ ह्यानो ए उपदेश हो.

नित्रगमञ् विगण्पित्रं नितिएण सच्छंदबुद्धिरङ्ण्ण । केनो पारमंहियं कीरङ् युरु व्यणुवण्सेणं ॥ २६ ॥

भन्दार्थ--- "गुरुना उपदेशने अयोग्य, पोतानी मतिना विकल्पथी विचार रिवाबाळो अने स्वतंत्रमति पूर्वक चेष्टा करवाबाळो प्राणी परछोकनुं हित शो-ोन करे ? अर्थात् न करे. " २६.

भावार्य — मारेकर्पी जीव गुरना उपटेशने अयोग्य समजे छे. तेवो स्वेच्छा-भोगी माणी पोतानी बुद्धिमात्रथी आ स्थूळ ने आ गृहम इत्यादिक विचारो करे है। तेवो मनुष्य परलोकनुं हित करी शकतो नथी.

थंद्रो निरोवयारी, अविणीय्रो गव्वियो निरुवेणामो । साहुजणस्म गर्हित्यो, जर्णवि वयणिज्जयं ठेहइ ॥ २७ ॥

वर्ष-"स्तव्य, निस्पकारी, अधिनीत, गर्वित अने कोइने नरीं नमवात्राको मनो पुरुप साधुजनयी निदाय छ अने छोकमां पण हीछनाने पामे छे."२७.

गाथा -६- परत्रितम् अनुपदेश्येन. गाथा २७-घपणित्रियं. घचनीयतां

स्तन्ध ते अभिमानी-अक्कड रहेनारो-कोइने निह नमनारो, निह्मका फोइना फरेळा उपकारने निह जाणवावाळो-कृतध्न, अविनीत ते आसन व वा विगेरेवडे वडीलनो विनय निह करनारो, गर्वित ते पोताना गुणो प्रगट वानो उत्मुक, निरूपनाम ते गुरूने पण नमस्कार निह करवावाळो-एवा पुर साधुजनो पण गर्हा करे छे अने लोको पण आ दुष्ट आचारवाळो हे एम तेने निंदे छे, तेथी विनीतज स्टाधाने पामे छे एम समजवुं.

योवेणवि सप्परिसा, सणंकुमास्टव केंड् बुझति।

देहें खर्णपरिहाणी, जं किर देवेहिं से कहियं॥ २८॥

अर्थ-" कोइ सत्पुरुपो (छलभवोधीओ) थोडा निमित्त मात्रे करीने सनत्. इमार चक्रीनी जेम वोध पामे छे, जे कारण माटे 'टेइने विषे क्ष प्रमां पण रूपनी हानी थड़ गइ छे' एम देवताए तेने (सनतकुमारने) वहुं तेटछं पचनमात्रज तेने वोधनु कारण थयुं. एम सांभलीए छीए." २८.

अहींसनत्कुमार चक्रीनुं दृष्टांत जाणुंबु. ते आ प्रमाणे-

 गैरियसौनाग्यकरा नृषां ग्रुणाः, स्वयंग्रहोता युवतीकूचा इव । होता द्वितयं वितन्वते न तेन गृह्णन्ति निजं गुणं बुधाः॥ " युवती जो पोताना स्तनने पोताना हाथे ग्रहण करे तो ते जेम तेने सौ-र अने ग्रुखना करवावाळा थतां नथी, तेम पोताना ग्रुखथी वर्णवाता पो-ा गुणो मनुष्योने सौभाग्य ने मुख आपनारा थता नथी; पण तेज गुणो ा स्त्ननी क्षेम चीजाओधी ग्रहातां-वर्णवातां सौभाग्य अने सुख वंने आपे तेथीज डाह्या पुरुषो पोताना रुणानी मशंसा पोताना मुखे करता नथी. " पछी चक्रवर्तीतु वचन मान्य परी ते वंने विमो त्यांथी चाल्या गया, अने रे चक्री सभामां विराजमान थया त्यारे त्यां आव्या. ते वखते चक्रीना रू जोइने तेओ खिन्न थया. चक्रीए पूछ्युं के- तमने खेद थवानुं शुं कारण ' तेओ वोल्या के-'संसारतुं विचित्रपणु अमारा खेदतुं कारण छे. ' चकीए युं के−' केवी रीते [?]' तेओए क<u>य</u>ुं के−'अमे पहेलां आपनुं जे रूप जोयुं हतुं । करतां आ वखते अनंतगुणहीन छे.' चक्रीए कधुं के-' तमे ते शीरीते जा-?' तेओए कहु के-' अवधिज्ञानधी.' चक्रीए कहु के-' तेमां प्रमाण शुं ? ' ण कहां के-" हे चक्री! मुख्यां रहेळ तांबूळनो रस भूमि उपर शुंकीने के तेनो उपर जे मिसका वेसे ते मृत्युवश थाय छे ? आ अनुमानयी तमे ानों के तमारुं शरीर विपरूप यह गयुं छे तमारा शरीरमां सात मोटा रोगो त्र थयेला छे. " आ प्रमाणे देवताओनां वचन सांभलोने चन्नी विचार म लाग्या के-' अहो ! आ देह अनित्य छे, आ असार देहमां कांइ पण

ह्दं शरीर परिणाम हुर्वलं, पतस्य वश्यं श्वायसंधिजर्जरं।
किमीपधेः क्षित्रयसि मूट हुर्मते, निरामयं धर्मरसायनं पिव॥
"आ शरीर परिणामे दुर्वल छे, तेथी तेना सांघा शिथिल थवाथी जर्ज। थडने ते अवध्य पहेछे; माटे हे मूट! हे दुर्मति! तुं औपयो करवा वहे शा
है केश पामेछे सर्व रोगथी निष्टत्त करनार धर्मरसायन हुंज पान कर."
विभी—

नथी. ' कहाँ छे के-

कस्तूरी पृपतां रदाः करिटनां कृतिः पशूनां पयो धन्नां छद्मंडलानि शिखिनां रोमाएयवीनामपि।

पुच्वस्नायुवशाविपाणनखरस्वेदादि किं किं च न

स्यात् कस्याप्युपकारि संत्र्यवपुषो नासुष्य किंचित्पुनः॥
" मृगोनी कस्तुरो, हाथीओना दांत, पशुओनुं चर्म, गायोतुं दुष, मृग्नं
पीछा, घेटाना बाळ अने अन्य पशुओनां पुच्छ, स्नायु, चरवी, शींगढां, नहः
स्वेद आदि कांइ कांइ कोइने पण उपयोगमां आवे छे; परंतु मनुष्पना भरीगं
तो कांइ पण उपयोगमां आवतं नथी. "

ए प्रमाणे वैराग्यपरायण ययेल राजाए राज्यलक्ष्मी तजी दईने संयमल् ग्रहण करी. जेम अजंग कांचळीनो त्याग करी पाछं जोतो नथी तम त पोतानी पाळ्ळ आवती समृद्धि तरफ दृष्टि पण करी नहि. स्तीरत्न सुनंदा आ पोतानी स्त्रीओना विलाप सांभळतां छतां पण ते जरा पण डग्यो नहि. छ मा सुधी निधिओ, रत्नो अने सेवको तेनी पाछळ फर्या, परंतु तेणे तेमना तर जोयुं पण नहि. सनत्कुमार मुनि दीक्षा लीधा पछी ववे उपवासने अंते पार्णं करी लाग्या, अने पार्णे पण नीवी के आचाम्लादि (आंविल आदि) तप करि लाग्याः ए ममाणे विगयना त्यागी, धर्मना अनुरागी अने रोगथी भरेली की यावाळा ते मुनि मायारहितपणे भूमि उपर विहार करे छे, ए अवसरे सीवमेरे फरीथी सभामां तेनी मसंसा करी के-'अहो आ सनत्कुमार मुनिने घन्य है के जे मोटा रोगथी पीडित शरीरवाळा छतां पण आपध आदिनी किंचित् पण स हा करता नथी. ' एवां इंद्रनां वचन सांभळी तेने नहि श्रद्धनारा वे देवो व्राक्ष णतं रूप धारण करी सनत्कुमार मुनिनी पासे आद्या अने चोल्या के हैं मुनि तमारं शरीर रोगथी जीर्ण थयेछं अने घणुं पीडातुं जणाय छे; अमे वैय ली जो तमारी आज्ञा होय तो अमे तेनो उपाय करोए.' मुनिए कहुं के अनित्य शरीर माटे उपाय शो करवो ? तुमारामां शरीरना रोगने दूर करवार शक्ति है, पण फर्मना रोगने दूर करवानी शक्ति नथी; अने ते शक्ति (देहर्ग द्र करवानी शक्ति) तो मारामां पण छे, " एटलुं कही आंगळीने थुंक लगा बताबवामां आवी तो ते सोना जेबी थर गड. पछी कहां के-' मारामां आ यक्ति तो छे, परंतु तथी सिद्धि शी ज्यां सुधी कर्मरोगनो क्षय थयो नथी त्रं गुधी देहरोगना नाश्यी शुं? तथी मारे रोगनो प्रतिकार करवा साथे कार् मयोजन नथी." वंने देवो आधर्य पास्या अने तेमने वांदी पोतातुं स्वहत्व भ पादी स्वर्गमां गया.

मनश्रमार मुनि पम मानमे वर्ष सुधी रोगोने अनुभवी एक लाख वर्ष १ र्घत निर्दोष चारित्र पाठीने एकावनारीयणे जीजे स्वर्ग उत्पन्न थया लाः स्वरीते म्यावित्रमां मनुष्य थर गिद्धिपदने माम क्लाजे. त्वे आयुष्पनी अनित्यता दर्शांवे हे, जंड् ना लवसत्तममुर-विमाण्वासीवि परिवर्मति सुर्रो । चितिङ्जं तं ससं, संसारे सासयं कयरं ॥ २७॥

अर्थ-- "जो ने अनुचर विमानवासी देवताओ पण आयुक्षये त्यांथी पढछे-यपेछे तो विचारी जो के बाकी संसारमां शुं माध्वत-स्थिर छे? अर्थात् कांड्पण गध्यत-नित्य नथी, एक पर्मज नित्य छे. " २९

अनुत्तर विमानवाभी देवो लवसत्तमीआ देवता फहेवायछे. तेवा सर्व जीव-री अधिक आयुष्यवाळा देवताओं हुं ३३ सागरीपम जेटळं आयुष पण पूर्ण धइ ताय हे अने ते त्यांथी त्यचे हे तो तेनी अपेक्षाए हीन स्थितिवाळा आ संसा-मां बीहुं शुं शास्त्रत हे ? कांड नथी.

कह तं भन्नह् मुख्यं, सुचिरेणवि जस्स पुरुखं मुर्ह्स अश् जं च मरणावसाणे. जवसंसाराणुवंधिं च ॥ ३० ॥

अर्थ-"घणा काळ पण जेना पारणामे दुःख वेठवुं पढे तेने ग्रुख केम क-ोप ? न कहीए. जे कारणमाट मरण पछी नरकादि गति रूप संसारमां परि-म्मण करवुं पढे अथवा गर्भावासादि दुःख सहेवृं पढे ते ग्रुखज न कहेवाय." ३०

गृहतो कहेळो उपदेश पण भारेकृषींने लागतो नृथी. उवएस सहस्तेहिवि, बोहिज्जंतो न युक्ट् कोइ।

जह वैत्रदत्तराया, उदांधि निवमारखो चव ॥ ३१॥

अर्थ-"कोइ (भारेकमी जीव) हजारो उपदेश बढे बोध पमाडयो संतो पण अतो नथी. जेम ब्रह्मदच चक्री बोध पाम्यो नहि अने उदायि उपने मारनार गारवर्ष पर्वत तप तच्यो-मुनिषणे रह्यो पण भन्यत्व पाम्यो नहि."३१

त्रध्यदत्त चक्रीने तेना पूर्वभवना भाइमुनिए घणी रीते उपदेश आप्यो पण केचित् मात्र योध लाग्यो नहि तेमुं तथा उदायि नृपमारकनुं दृष्टांत अहीं जा-गर्छ. ७-८. ते आ प्रमाणे—

गाया ३० मल्लोअइ. भयर्सनाराणुवधं गाया ३१-फोइ-फोपि न्पमारक

वसदत्त चक्रीनी कथा.

पथम बद्यदनना भर्ना कारणभूत चित्रसंभूति मुनितुं (ब्रह्मदत्तना पूर्वभ

वतुं) स्वरूप आ प्रमाणे छे-

पूर्वभवमां कोइएक गाममां यदिक परिणामी चार गोवाळीआ हता. एक दिवस ते चारे गोवाळीआओ ब्रोप्प ऋतुमां गायो चारवाने माटे वतमां ग्या मध्यान्हसगये ते चारे जणा पकटा एउने दातो करवा वेटा; एवामां मार्गथी भूला पड़ेला, जेने ते वनगां मार्ग जडता नथी, जेनुं गलुं अति तीत्र रुपायी हैं धाइ गयुंछे अने जेतुं तालुपुट सकाइ गयुं छे एवा कोइएक साधुने दूसनी छाण मां बेठेला तेओए जोया; एटले तेओए विचायु के-' आ कोण हरो ?' पछी ते चारे जणा मुनिनी समीपे आव्या. त्यांत्वातुर थवाथी अति पीडा पान्ता अने जेना माण कटगत थयेला छे एवा ते मुनिने जोइने मनमां विचार करवा ला ग्या के-'अरे आ मुनि जंगमतीर्थ जेवा जणाय छे, पण ते पाणी विना मृत्य पामशेः तथी जो कोइ नग्याएथी पाणी लाबीने तेमने आपीए तो मोड पुण थाय' आम विचारी पाणीने माटे तेओए आखा वनमां शोध करी पण मन्य निहार त्यारे तेजा एकटा थड़ गाव दोही दूध छड़ने साधु समीपे आन्यार सा भूना मुखपां द्वनां टींपां मूकीने त्मने सावधान कर्या. साधु सचेतन थया ए टेले मनमां विचार करवा लाग्या के-' आ लोकोए मारा उपर मोटो उपकार कर्यों है; केमके तेओए मने जीवितदान आप्युं छे. पछी ते साधुए तेओने स रल रदमादवाला जोड़ने देशना आपी. ते देशना सांभळीने ते चारे वैराग्यने भाग थया, अने तरतम् चारे जणाए दीक्षा लीधी अने सम्यक्त्व मेळव्युं ते सा धण नेत्राने साथे छड्ने अन्यत्र विहार कथी.

हवे न चारे जणा चारित्र पाछेछे, पण तेमां वे जण चारित्रनी अवधा करे है के- आ साधनों वेष तो सारों है, पण स्नानादि विना शरीरनी शुद्धि के रोते थाय ? मेळां वच पहेंग्वां, दांत साफ न राखवां इत्यादि गहा कष्ट है.'दे ममाण विचारणा करवाथी ते ये मुनिए चारित्रनी विराधना करी; अने वे क णाण निर्दाप चारित्र पाल्युं, ते देने जणाएता तेज भवमां केवळजान माप्त करि

में मासमुद्ध मेळच्य

जे बनेए चास्त्रिमी विस्पाना करी हती तेओ अंतसमये ते पापने आला च्या निवाय एत्यु पामीने रवेग गया. नेजो लांबा बखत सुधी देव संबधी मुन में हरी हरों ने च्यरीने मा दियनी निंदा करवाथी दशार्ण देशमां कोइएक ब्रा करना प्रान्ते नाम वरनार्ग दाया त्नी वेना इक्षिने विषे उत्पत्न जारे हैं की मुक्तदर के पानदा जाने परनु कामकाज करवा लाग्या.

पक दिवसे वर्ष अनुमां क्षेत्रनी रक्षा परवा काह ते यंने भाइओ गया. म
प्यान्डसमये ते येमांनो एक जण क्षेत्र गरीपे आवेला घडना आड नीचे झीतल
रायामां स्तेत्रों से तेवामां ते बहना पोलाणगांधी एक वर्ष भी कथी, अने ते

मृतेलाने प्रो वस्यो. ते वस्ते देवयोगधी शिका भाइ पण न्यां आख्यो. तेणे सपने खायो. एक्टे तेणे सर्पने गाळ दीधी के—'अने दूर कम ! मारा भाइने क
णीने हूं प्यां जाय हरे ?' एवां तेनां वचन सांभजीने क्षोधित थयेला सर्थ कृदीने

तेने पण करत्यो. यंने भाइओं मृ यु पारण. तीजा भन्मां कालितर पर्वतनी

गर दिलानी पृक्षिमां तेओ मृगपण उत्पन्न थया. तेओ परम्प अति स्नेहयक्त

ा. एक्दा जोड शिकारीना जाणकहरूगी तेओ मन्ण पार्या. त्रीता भवमां

ा। नदीना विनाने हंसीनी पृक्षिने विषे इंक्ष्यणे इपन्या. ते भग्मां पण तेओ

प्या यणा स्तेहयाला थया. तेओ गंगाने किनारे रहेला कगलना विसत्तुणो

प से अने मुखमां काल व्यतीत करे होः तेवामां कोडएक शिकारीण ते

मिसी नाख्या.

चोये भने साधुवेपनी निंडा फरवाना फलधी फाजी नगरीमां कोड चंडालने र पुत्रपणे उत्पन्न थया. ते चंटाले पुष्पल धन मन्दी ने वंने लोकरणनां नाम अने संश्ति पाट्यां. तेओ पूर्वभवना स्नेहची अन्योन्य अति रागयुक्त थया. क अण पण वीज नो नियोग सहन करी ककता नथी. हवे ते नगरनो जे राजा तेनी समामां नमुचि नामनो पथान ले. ते प्रधान गानानुं परम विश्वासस्थान परंतु ने राजानो पहराणीनी साथे प्यारमां संलग्न थयो हो, अने तेनी साथे त्योज भोग भोगवे हो. पहराणीने पण तेनी साथे अत्यंत स्नेह वंधायो हो,तेथी पोताना भतारनी अवगणना करीने ते नमुचिनी साथे भोग भोगवे हो. अहो! मनो अंधता अपूर्व हो. वहा हो के

दिवा एक्देति नो धूकः, काको नकं न पश्वति । अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्वति ॥

" घुड दिवसे जोड शकतो नथी, कागडोरात्रिए दे खतो नथी; पण कामांध कोड अपूर्व अंध्र हो के जे टिवसे तमज रात्रिए जोड शकतो नथी."

वळी फेंगु छे के-

या चिंतयासि सततं मिं सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं स जनो ज्यस । असमरकते च परित प्यति काचि । " के स्त्री हुं हमेगां चित्रका कर हो है माराशी विमस पहे हैं अते हैं। अस्य पुरुष ने इन्हें हो, ते एक्प बीकी श्रीमा शासक्त अये हो हो, वे ने ते बीकी कोइ स्त्री मने चाहे हो। माटे ते (राणी) ने विमान हो, हेना मारने जिला है, मदनने विकार हो अने मने पण विमार हो."

ए श्रमणि गणा दिनमो जतां तेन पाप कोतनी माफक फरी नीकर्यं, ग जाए ते बात जाणी, एटले ते मनमां दिचार करना लाग्यो के—'आ पापाला प्रधान दुष्ट छे के जेणे आयुं नीच वाम पर्युः एणे पोताने जायेन मृत्यु माणे जीधुं छे. ए जोके युद्धिमान छे छतां पण नीच जीवाथी उपेशा करना देखि छे. ''क्युं छे के—

ब्णह धुणह कूमाणसह, ए त्रिहुं इक सहाछो।

जिहां जिहां करे निवासको, निहां तिहां फेंस ठारा । भावार्थ:-" लुणो, घुणोने कुमाणस ए त्रणे एक सरखा म्बभाववाला हो ।

छे. ते ज्यां ज्यां निवास करेछे त्यां त्यां रहेवानां म्थानकनोज नाश करे हैं।
लुणो भींत विगेरे ने पायमाल करे छे; गुणो लाकडामां थाय छे ते तेने कोणी
नाखे छे, अने खराव माणसने जे आश्रय आपे तेने ज ते पायमाल का है।
'तेथी आ मधान वध्य छे ' एम विचारी चंडालने वोलावीने कहाँ के एमें भिर्में ध्यभूमिमां छइ जड़ने मारी नाखो राजानी आज्ञा थतां चंडाल नम्र्चिने कार्में

मिए छइ गयो. ते चंडाछे विचांर कथे कि-'अरे! कोड माटा कर्मना शोलें आ काम थयेछं छे. विनाशकाछे युद्धिमान पुरुषोनी युद्धि पण नाश पामें के कहुं छे के--

न निर्मिता केन न हप्टपूर्वा, न श्रृयते हेममयी कृरंगी। तथापि तृष्णा रघुनंदनस्य, विनाशकाले विपरीतयुद्धिः॥

"सोनानी हरिणी कोइए बनावेली नथी, कोइए पूर्वे जोयेली नथी स्मानेली पण नथी, तोषण तेने माटे रघुनंडन (राम) नी तृष्णा थड, " विनागकाले विपरीत युद्धि ज थाय छे," वली कयुं छे के—

ावपराण द्वाद्ध भ याय छ." वळा कशु छे के-रावण तणे कपाळ, अद्योतरसो द्वाद्धि वसे; लका फीटणकाळ, एको वृद्धि न सवरी.

" रावणना वपाळमां एकसो ने आट वृद्धि वसती हती, छतां पण अ लंकानो फीटणकाल आज्यो त्यारे एके वृद्धि स्मरणमा आवी नहिः"

चळी चांटाले विचायु के-'आ मधान महा चुिह्हिचाळो छे अने मारा प्राण्य छोक्रम भणवा लायक थणाले, पण बीजो को देमने भणावको निहः तेथी भी तेने भणाववानुं कबुल करे तो हुं तेनो बचाव करुं.' ए प्रमाणे विचारी मुचिने पूछ्यु के-'जो तुं मारा पुत्रोने भणाव तो हुं तारुं रक्षण करुं, तेणे रवानुं कबुल कर्युं, तेथी चांडाले तेने ग्रप्तपणे पोताना घरे आण्यो अने रा भयथी तेनेभोयरामां राख्यो त्यां रहीने ते चित्र अने संभूत नामना लपुत्रोने भणाववा लाग्योः तेओ बुद्धिवान होवाथी योडा वखतमां सकल मं पारंगत थया. नमुचि प्रधान त्यां रहेतो सतो चित्रसंभूतनी मानी सापे मां पड़ियो. अहो ! आ कामनो दुष्ट स्वभाव दुस्त्यज छे. कारणके आवी अव-प्राम्या छतां पण नीच माणस विषयनी आशंसा तजतो नथी कहुं छे के-

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलो ।

त्रणापूर्यक्कित्रः कृमिकुलशतेरावृततनुः॥

हुधाक्रांतो जीर्णः पिठरककपालापित, गलः।

् शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हंत्येव मद्नः॥

" शरीरे दुईल, वाणो, लंगडो, बहेरो, पुच्छ विनानो, जेना अंगपर चौदा हां हे, पश्यी खरहायेहों हे अने जेतुं शरीर हजारी कृमिथी घेरायेहं हे वो सुधाक्रांत, जीर्ण अने जेना गलामां ठीवनो कांट्रो, वल्कोलो छे एवो स्वान ग को कृतरीने देखे छे तो तेनी पाछळ जाय छे; तेथी दिझगीरीनी बात छे कोमदेव मरायेलाने पण मारे छे. "कामनो स्वभावज दुस्त्यज् छे, कर्युं छे,के

ं जखल करे धनुकडां, घरहर करे घरटः

जिहां जे छंग सनावडा, तिहां ते मरण निकट-जेम खारणीओ घवकारा करे छे अने घंटी घरघराट करे छे तेम जे अंग नेन जेवो स्वभाव पडयो होय छे ते मरण पर्यंत रहे छे, फरतो नथी. "

्ममाणे घणा दिवसो जतां चांडाळे ते वात जाणी, एटळे ते विचारवा. ो के-अहो ! आ विषयांधने धिकार छे ! तेना उपर करेलो उपकार पण ठी गयो छे. आना करतां कृतरो पण वधारे सारो होय छे के जे करेल ारने भूली जनो नथी. ' कहा छे के

शिनमात्रकृतज्ञतयाग्रुरोर्न-पिशुनोऽपिःशुनोः लभते तुलाम्। ।पि वहूपकृते सखिता खर्ले, न खबु खेबति खेलतिका यथा। "भोजनभात्रथी वृतक्षरणावटे गुरु तरीके माननार एवा कतरानी पण र रोवरी पिश्रन [रूळ इस्प] वरी इक्तो नथी; वे मके हेनी उपर घणा उपराह कर्या छे एवा रूळ साथेनी मित्रता पण आकाशमां स्ताटकी शकती नथीं ते [लांबो वखत] टकती नथी. "

'में पहेलांज विपरीत कार्य क्युं के आ दुए सं रक्षण कर्युं. आ तो वध का कार्यक हो. 'आ ममाणे विचानीने तेणे तेने मारी नांखवा माटे का काढ्यों. ते. वखते चित्रसंभृतिए विचार्य के—'आपणो पिता आपणी नजर आमें आपणा विचागुरूने हणे ए मोटो अन्य थाय हो. ' पछी तेना रक्षणना लांक मनमां विचारीने तेओए पोताना पिताने क्षण के—'हे पिताजी! आ पाणी मा दुराचरणी छे, ए एणवा लायकंज हो, रक्षण करवा लायक नथी. तेथी अमें तम इक्स आपो के अमे तेने स्रकानभृतिमां लग्न कहने मारी नांखीए. 'वांक हो तेम आका आपी, एटछे देओ तेने छड़ने राहिना इखते नीवस्या. की दूर जड़ने तेओए तेने एकांतमां क्षणुं के—'तमे अमारा विचागुरू हो तेथी औ तमने छोड़ी दुर छोए, माटे तमे आ गाम छोड़ी दृर चाह्या जाओ.' ए अस्ति नम्रचि त्यांथी नीकळी गयों. अनुक्रमे ते हस्तीनापुर आह्यों अने सन्ति मारनो सेषक थड़ने रही.

अहीं चित्र अने संभृति नामना ते वंने भाडओ संगीतकलामां घणा है। थया हता, तथी हाथमां वीणा छडने नगरना चोकमां रंगीत करवा हागाति र हमा रागधी मोहित धड्ने घणा लोको आवता हता. जेओ मूर्यने पण ले रुषती नहोती प्रवी युवतीओ पण तेमना रागथी मोहित थ्रह लड़जा होहीते हैं। भजवाने मारे स्यां आवती हती. केटलीक स्त्रीओ तो अर्थ कृगार वर्षी है अर्थ घाषीमां छ एवी स्थितिमां त्यां आवती हती; तेमां केट्लीके अन्त एउन प्रा रायो हतो, केटलीक सीओए एकंज आंसा आंजी हती अने वेट स्त्रीशोना माया उपरनां कपटां प्यन्थी उटी गयां हतां, केटलीक स्त्रीओ है। कतन उपा यांचली पहेंसी हती, फेटलीफ स्त्रीओ अन्य स्त्रीओनां बालकाते व तानां हे एवी चृद्धियी उपाटीने भाषी हती, केटलीक ग्रीको पोताना मर्ता क बांह बहान कारी 'आर्ट्ट ए' एम कही त्यां आवेली हती, वेटलीक ही ब जम्मी करनी भागननी याळी छोटीने जीवा माटे टोटी आबी हती, के की माय दोवाने माटे बाछटाने गायना आंचळे बळगाडीने प्राची हती. केटलीक की भी तो पोताना भनीरनी नमरे उंचे मृत्य करीने एमने जोती भा मार्क नगमां परप्रा बने हो कापिनीको समछ घरन वामकान छोडी । ्यमें हरी अने । माहनी पानगात केती हो ! मंगू है है-

सुखिनि सुखनिदानं, पुःखिताना विनोदः।
श्रवणहृदयहारी, मन्मथस्यायदूतः॥
रणरणकविधाता, वृद्धभः कामिनीनाम्।
जयति जगति नादः, पंचमश्चोपवेदः॥

नाद ए मुखो जनोना मुखनुं कारण छे, दुःखी माणसोने विनोद आपनार अवण अने हदयना हरनार छे, कामदेवनो अग्रेसर दूत छे, विधाताए रण-ट करेलो छे अने कामिनीओने वहाळो छे-एवो नाद के जे पांचसो उपहेद त जगतमा जय पामे छे. "

ए ममाणे सघळी सीओ रागमां मोहित थड़ने तेमनी पाछळ भस्या करेछे.
लोकोए विचार्यु के—' चांडालकुळमां उत्पन्न थयेळा आ बन्ने छोकराओए
घळुं नगर मिलन कर्यु छे.' पछी ते भोए राजा पासे जड़ने अरज करी के
थवा चित्र संभृति नामना चंने चांडालकुत्रोने गागमांथी बहार काढो
सेव! आ चित्र संभृति नामना चंने चांडालकुत्रोने गागमांथी बहार काढो
सा जोड़ए, कारणके तेओए आखुं नगर दूषित कर्यु छे. जो तेओ वधारे वरहेजे तो आचारशुद्धि विलक्ष्यल रहेशे नहि. राजाए तरतज तेओने नगररहेजे तो आचारशुद्धि विलक्ष्यल रहेशे नहि. राजाए तरतज तेओने नगररहेजे तो साचारशुद्धि विलक्ष्यल रहेशे नहि. राजाए तरतज तेओने नगर-

हवे चित्रसभृतिए मनमां विचार कर्यो के—' दुएकुलना दोपथी दुषित थयेआपणी कलाधी शो लाभ छे?' ए प्रमाणे विचार करी कोई पर्वत उपरधी
आपणी कलाधी शो लाभ छे?' ए प्रमाणे विचार करी कोई पर्वत उपरधी
गापात करवाने तेओ चाल्या; अने कोई पर्वत उपर चढी वंने हाथे तालो दुई
गापात करवाने तेओ चाल्या; अने कोई पर्वत उपर चढी वंने हाथे तालो दुई
ओ जेवा पडवाने तत्पर थया तेवाज नजीकनी गुफामां ,तप करता कोई साआप तेमने जोया. एटले ते साधु वोल्या के—' अरे तमे पडशो नहि.' ए प्रमाणे
ए तेमने जोया. एटले ते साधु वोल्या के—' अरे तमे पडशो अने आसपार
ओए साधुनुं वाक्य त्रणवार सांभळीने पडवामां विलंब कर्यो अने आसपार
होवा लाग्या के 'आपणने पडतां कोण वारे छे?' तेटलामां गुफानी अंदर त
होवा लाग्या के 'आपणने पडतां कोण वारे छे?' तेटलामां गुफानी अंदर त
होवा लाग्या के 'आपणने पडतां कोण वारे छे?' तेटलामां गुफानी अंदर त
होता कोई गुनिने जोईने तेओ त्यां गया. गुनिए पूछ्छं के—'तमारे दुःखनुं करात को शिद्ध छे?' तेओए सर्व वीना निवेदन करी. एटले साधु वोल्या के—' कुल्य होता सिद्धि छे? अने आवी रीते अज्ञानपणे मरवाधी पण शो छाम छे? मा
भी मिनेश्वर भगवाने कहेलो धर्म आचरो के जेथी आ लोकमां तेमन परल होता तमारा कार्यनी सिद्धि थाय. ' ए प्रमाणेना साधुना ब्रावयथी तेओने वैश्व हम्म उपलक्ष थयो, एटले तरतन तेमणे दीक्षा ग्रहण करी अने निरतिचारपणे अ

अन्यदा एक गामयी वीजे गाम विहार करतां ने वंने मृति हस्तीनापुर ह्यानमां आव्या. वंने मुनि मासलमण करना इता नेथी मासलपणने पारण ह भृति मृति आहार छेवा निमित्ते गजपुरमां गया. त्यां निक्षा अर्थ नाना मो कुळमां फरता ते मुनिते नमुचि मधाने जोया. 'अरे! आ नो संभृति नामनी न ु डाल्पुत्र जणायहे. ते अहीं क्यांयी आच्यो ? माटे ने मार्च चित्र रखेने राजाने क दे. 'एम विचारी नोकर पासे गरदन पकडावी तिरस्कार करीने नेने गहर बहार काटी मृक्या संभृति मुनिए विचार्य के-'अरे! आ दृष्ट नमृचिए शुं में अमें तेने मरणयी वचान्यों हे छतां पण तेने लाज न आवी, नो हवे हुं वाळी नांखुं, 'पछी ते मुनि दीपायमान थयेला क्रोध द्यी अग्निवडे तेनी तेनोछेस्या म्कवाउयुक्त यया मुखमांयी धूमाडाना गोटेगोटा नोकळवा जार तेयी सर्व नगर अच्छादित यह गयुं. ते जोइ शोकयी आहल ययेला लांडे आ श्रे धयुं ! ' एम बोटतां त्यां एकटा यह गया. सनत्त्रमार चक्रीण पग ने हा कत सांभन्नी. एटले मययी आइल्ल्याइक यह ते पण त्यां आची मंसूनि इति चर्णमां पडया 'अने बोल्या के-" है मस ! अपराध समा करो अने कृण क लोकना संहारयी पाला ओसरो, मारा पर एटलो अनुबह करो. नमें कुंगी छो, नतवत्सल छो, समाशील छो, हुं दीन हुं अने वेने हाय नोडी अरन हुं, तथी कुपा करीने क्रोय तजी दो. "

कांह पड्हा देहर्घार, निाम्न विकार करेह । स्थापी तार्वे पर तवे, परतह हाणि करेह ॥ २ ॥

" देह रूप परमां कोष पढ़ा नो ने घण विकार फरे. १ पाते तपे, २ बी-गर्ने तपाने अने ३ परमाचेना स्नेइनी ढानी फरे. "

" गाट ने क्रीकना आध्यमृत आ देहनेन तनी देवी जीइए, अवगुणीना भेवासस्थान एवा आ देहने धारण फरवायी शो लाभ हे ? "आ मगाणे विचार रीने वित अने संभृति यंने मृतिजोए यनमां जडने अनशन ग्रहण फर्युं, छोको रत्य ! घन्य !' एम कहीने नेमनी मर्शसा फरवा लाग्या. घणा लोको तेमने वां-वा गया, एटले सनन्तुमार चत्री पण पीताना परिवार सहित तेपने बांदवाने यो. ने बांदी मदासा यहीने पाछो आल्यो. पछी नक्रवर्तीनी स्रोरन्न सुनंदा घणी पित्रोयो परिष्टत घडने बांड्या गर, अने ने भक्तियी वंने हाथ नाडी चित्र मुनि-। चरगने बांटीने पटी संभृति मृतिना चरणमां पडी. ने समये कानल जेवो पाप तेनो केनपास संभृति सुनिना चरणमां अवटायो. तेना स्पर्शयी जेने अ-रंत राग उत्पन्न थयो हो एवा मंभृति मृनिष नियाणुं कर्यु के-' जो मारा त-वुं फळ होय तो आवुं सीरत्न मने परभवमां माप्त थाओ.' आ प्रमाणे निका-वेड नियाशुं कर्यु. ते अवसरे चित्र मृनिए कर्यु के-' हे वन्यु! तमे ए शुं करो में ? जा दुर परिणामनाळा विषयों आ जीवे अनंतीवार भोगव्या छे तथापि ते प्ति पाम्या नथी. माटे आहे निवाणुं न करो. ' संभृति मुनिए कर्युं कें-' में इड नथी जे नियाणुं करेलुं हे ते फरवानुं नथी, माटे हवे तुं कांड कहींग नहि.' ते गंभळी चित्रमृति माँत रहा।

अनुक्रमे यंने मृनि अन्धन पाळीने स्वर्गे गया. यंने जणा एकज विमानमांस्थिन थया. त्यां चिरकाल भाग भागवी मध्य चित्रनो जीव त्यांथी च्यवीने पुस्थिन थया. त्यां चिरकाल भाग भागवी मध्य चित्रनो जीव त्यांथी च्यवीने पुस्थिन नगरमां एक शेठने घेर पुत्रपणे उत्पन्न थयोः अने संभूति निदानना
स्थित्यं कांविल्यपुर नगरमां ब्रह्मदत्त नामनो वारमो चक्रवर्ती थयो. तेनी
स्थित्तं स्वस्प आगल कहीशुं. अनुक्रमे तेणे छखंडनो विजय कर्यो. एक दिस्थि सभामां घेठेला ब्रह्मदत्तने पुष्पनो गुच्छ जोवाथी जातिरमरणज्ञान थयुं. तेथी
र्वभवमां अनुभवेत्युं निल्नीगृहम विमान तेने याद आन्धुं. तेसाये पाछला पांच
वि तेने याद आन्धा. तेणे मनमां चित्रवन कर्युं के-' जेनी साथे मारे पांच भस्थि संबंध इतो ते मने केबी रीत मळशे? ते क्यां उत्पन्न थयो दशे ?' पछी
लि पोनाना बंधुने मल्जाने माटे अर्थी गाया रची ते नीने ममाणे---

आधदासी भूगो नंदी सहंगा वर्ग नन्।

"मथम वने वादाप [कोराना रागितार), प्रती विष्ण, पति । व पति वे मातंग (चांदाल) अने पत्ती उने देन व्या. " म प्रमाण नन्तानि ' आ माथानो अर्थ भाग पूरो करते वे पाने त्यान पेतं नोत्रण, जीनाथी प्र शकाय तेम नथीं एवा निश्चय करीने तेणे लोकाणं नारेर कर्ष के 'जे आ म् थानो उत्तराई पूरो करते तेने हं मनवाद्यित आधीश आ म्माणनो हित्त सांग्य सर्व लोकोए ते अर्थी गाथा कंठे करी, परंतु कोइ से स्पष्टमा पूर्ण करी अ नहि. ए प्रमाणे यणा दिवसो ल्यतीत थया.

हवे एवे समये पुरिश्ताल नगरमां गेठना कुलमां उत्पन्न अयेला निं जीवे गुरु पाने नारित्र गरण कर्यु, तेने जातिन्तरणवान अयुं, तेनो नेणे पण छलो पांच भवनो संबंध जाल्यो, पछी तेणे निचापुं के—' मारा वांत्रवे निं करेलुं होवाथी ते भिन्न छळ्नां चक्राचीं अयेलोळे, माटे हु सेने शतिबोध प हुं.' एवो विचार करी ते कांपिल्यपुरना उचानमां आच्या, त्यां रेंट चलावना मुख्यी पेछो अरथो गाथा सांभळो चित्रमुनिए उत्तराई पूरुं कर्युं, तेनीचे म

एषा नौ पष्ठिका जातिरन्योन्याच्यां वियुक्तयोः॥

"एक वीजायी जुदा पढेला एवा आपणो आ छहो भव छे." ए पा
मुनिमुस्त्रशी उत्तराई सांभलोने रेंट चलावनारे राजा पासे जड गाथानुं उत्त
पूरुं कर्युं, ते सांभलो अित स्नेहथी राजा मृद्धित थड गयो. पली सावधान
इने पूलवा लाग्यो के—' अरे! आ समझ्या कोण पूरी करोले ?' तेण कर्युं
'मारा रेंटनी पासे एक मुनि आवेलाले तेण आ उत्तराई पूरु करेले छे.'
मुनिनुं आगमन सांभली घणोज खुशी थयो। अने सपरिवार वांद्वा गयो। देशना आपी; तेमां आ संसारनी अित्यता वर्णवोने कलुं के—' हे ब्रह्म
वीजलीना चमकारा जेयुं चंचल विषयमुख तजी दे अने जिनेश्वर भगवाने धर्म सेव, विषयमां अनुरागनुं परिणाम घणुं खराव छे; ते पूर्वभनमां ि
कर्युं ते चखते में तने घणे। वायों इतो लतां पण तें मोक्षमुखने आपनार्हं अंशमात्र एवा राज्य अने सीना मुखने अर्थे गुमावी टीधुं छे. इन्च पण पा
नरक आपनारा राज्यथी विरक्त था." ए गमाणेनां चंधुनां वचन सांभली
वोल्यो के—' हे चंधु! मोक्षमुख कोणे जोयुं छे? आ विषयादि मुख तो
क्ष छे; माटे हे भाइ! तुं पण मारे चेर चाल अने सांसारिक मुखनो अनुभ

आ माथुं मुहानाथी शुं विशेष हो ? आपणे प्रथम सारी रीते भोग भोगन्या पछी स्यम ग्रहण परशुं. "ए प्रमाणेनां सभृतिनां वचन मांभळीने चित्रमनिए कर्ष के—" पनो कोण मृद होय के जे भग्मने माटे चटन ग्राठे ? एवो कोण मृद्ध होय के जे जीववानी ? ज्याथी कालकट निपत्न भ्रष्टण करे ? एवो कोण नीच होय जे लोहाना खीला माटे प्रवहणने तोही नांखे ? एवो कोण मृद्ध होय के दोराने माटे मोतीनो हार तोही नाखे ? गाटे हे भाड़! त प्रतिवोध पाप, जेवोध पाम. "ए प्रमाणेनां वधुनां जन्म अनेक्चार सांभ्रळसां पण तेने वरा-पाम थयो नहि. तेथी 'आ द्वित हो रिपा जाणी चित्रमुन्ण ग्रधने जणाने खांथी विहार क्यों. जहारत पण पोतांने चेर आह्यो. अने अनेक पापा- ग करवा लाग्यो.

चित्रमुनि लांबाबाळ सधी साधमार्गने सेबी वेबलजान पाप करीने मोक्षे पा; अने जेणे पूर्वभवे निराण करेलु छे एवो बहादत्त धर्मे पाम्या जिवाय नेक पापकम आचरीने सातसें व्यंतु आयण्य भोगनी सातमी नरके गयो.

ए प्रमाणे वीजा माणस पण भारेक्सी होय छे ते प्रतिवोध पासता तथी: वि सुलभ वोधिपणुं ए प्रणुं दुलभ छे एवा आकथानो तात्प्य छे.

हवे वीज़ं जदायो नृपने मारनार्न हप्टांत कहे छ-

पांडलीएज न्यागां कोणिक गड़ानो पत्र लहायी नामे गला शको. नेणे के गालानं राज्य लह लीए. हेशी ने नरी गालाण जोतानी स्थामां कर के जं कोड खदायी राजाने मारी आवे हेने ह मार्ग ते आए. 'तं ज़पयी तना केड खदायी राजाने मारी आवे हेने ह मार्ग ते आए. 'तं ज़पयी तना केड खदायी राजाने मारी आवे हेने ह मार्ग ते सेवक णहलीएर आह्यों अने केने खपायों जित्ह्या. परंतु कोह खपाय लागु परंगों निहः तेशी ने हमें वि-।।रंगु के 'खदायी राजा विश्वास विना मन्य पामे तेम नथी ' तेथी तेण गर्म मिपे जहने कपटंथी चारित्र ग्रहण कर्न ते आचार्य (ग्रह) इटायी राजाने मार्ग हता. ऐलो सेनक चारित्र ग्रहण वर्ष ने अचार्य पामे अध्यान कार्यों अने साधुओंनी अह्यंत हिनय करवा लाग्यों. अनुक्रमें विन्यगुण- गी तेणे आचार्य विगेरेनां चित्र वश कर्या.

हवे उदायी राजा आठमने हिवसे अने चोदशने हिन्से रात्रिदिवसना गेसह करे छे, त्यारे आचार्य धर्मटेशना आपवाने रात्रिए तेनी पापधशाळामां शायछे. आठमने दिवसे त्यां जवाने गुरु प्रष्टत्त थया ते वखते पेळा नवटीक्षित शाधुए कहुं के-'हे स्वामिन! आपनी आज्ञा होय तो हु साथे आहुं.' पत्तु हृदय नहि जाणवाथी साथे ळीधो नहि ए प्रमाण दर वखते मागणी करे

पण नेने गरु साथे लेला मधी, एम लाग नर्न चोची एतां, सन रुपाने तार्वाने विद्से सारवाने गर त्यां लाग ने ने न्याने ने ना नगरी आ गा गण के ने खामी! हु साथे अन्य ! भित्रत्यमाने नीने काल न ने मं भने भाग 'ते थी ने गुरु साथे रायो राम रामानी गाएपजालागां जात्या, मारी त्याचा गीत रा उपर देटेला उठायी राजाण तेमने यांचा. एक परिणाल परम, तनी गंगा राषोर्षी भणावीन राजाण शयन करा. राजा नियारण भणा मक्ते नेता हैं शिष्ये उठीने छानी रीते रातेली कंक जातिना लोगानी हानी बानारे ग रवी, जेथी तत्काळ ते मनण प मनो पड़ी हनी नमांन नरेना तट्न ने नारी वहार रहेला राजसेवकोण 'आ साथु हो । एम जाणीन तेन ्रहमारो अनुक्रमे रुधिरनी प्रवाह गुरना संयारा पासे आल्गो, नेना मार्गी गुरु खडया अने विचार करवा लाग्या के-' आ शुं ?' नेणगारी जिल्लाने जीगी एटले धार्च के 'आ कृशिष्य राजाने मारीने नाली गयेलो जणाय है 'प ते कात्नी खात्री करीने विचारवा लाग्या के-'आ मोटो अनर्थ श्यो है. काळे जैन शासननो मोटो उड़ाह यशे के मनिओ आगं दए एम आचरे तेथी तेम न थवा माटे गुरु पण पोताना गळा पर छरी फेरनीन मृत्युवश य वंने जणा मरण पामीने स्वर्गे गया.

ए ममाणे वीजा अभव्य जीवो वहु उपदेशथी पण मितवोध पामता नय पेलो दुए सेवक साधुवेष छोडीन पोताना राजानी पासे ग्यो अने सघली कीकतं कही. ते सांभळीने राजाए कहां के-' तने धिकार छे! अरे दुष्ट्र! तं व शुं कर्युं ?' ए मयाणे तिरस्कार करी तेने देशमांथी हांकी काढयो. माटे जीव ए कोड पण प्रकारे भारेकमीं न थबुं एवो आ द्रष्टांतनो उपनय छे. गयकन्नचंचलाए, अपरिच्चताए रायलच्छीए।

जीवा सकस्मक लिस न-चेरिय भरांता पर्नेति छहे ॥३२॥

अर्थ-" हांथीना काननी जेबी चपळ राज्यलक्ष्मीने नहीं छोडनारा जीबी पोताना कर्मिकिलियपथी भरेला भारवडे अधोभृमिमां पडे छे अर्थात् नरके जाय छे. " ३२

वृज्यावि जीवाणं, सुडकराइंति पावचरियाइं। जयवं जासा सासा, पच्छाएसो सु इणमो ते ॥३३॥ गाया ३२-अपरिचताम भगती भरती

गाथा-३३ वृतुण चूतृण सुडुक्षरायंति पच्चाणमोय. पच्चापसोहु

अर्थ- ''वेटलापः जीवोसं वन्त्विति इत्वरे महेवाने पण मृहुत्वत होय है, अर्थात् करेवा योग्य पण होतां नयी. ते उपर निश्चये हेशिष्य? भगवंत! त सी ने ? (भारी बहेन !), भगवते कतुं ' हा ने ने ' था तारे हत्रांत जाणहुं." ३३ वेटलाफ प्राणीनां पापफागे एवां होय छे के जे बीजानी समझ कहेतां पण ल्डना आवे. एटलामाटे एक पुरुषे सावसरणमां आवीने भगवंतने पूछछं के 'ते, ते ?' भनवते वर्त 'हा. हे. 'अहीं 'जारग सासानं ' दर्गत जाणनु.

' जासा सासा ' तुं हण्टांत.

वसतपुर नगरमां अनगरेन नामे एक सोनी रहेती हतो. ते अति सीलंपट हतो. ते पांचमो सीको परप्यो हतो. ते टरेक अति रुपवती हती. ते सोनी पो॰ तानी स्त्रीओने वहार काहतो नहोतो, घरणांज राखतो हतो. एक वस्तत त जम-वाने माटे पोतानाकोड मित्रने घेर गयी. त्यारे ते सर्व स्त्रीओए विचार फर्या व-'आज आपणने बखत गडयो है. ' एम विचारीने स्नान. विछेपन, फाजळ, हिंदुरना तिलक विगेरे करीने तथा आभरणो पहेरीने हर्व स्त्रीओ पोतानां हरत-मां कोदर्श (काच) छड पोताना रूपने जोवा लागी; अने इसवुं, रमबुं, गीत-गान फरवां इत्यादि क्रीडा परस्पर फरवा लागी. तेओ अन्योन्य कहेवा लागी ' आदणाणांथी जेना बागे होय हे तेनेज आपणो स्वामी तो आभूपण दि-

थी हुशोभित करे छे, बीजी सीओने शणगार पण करवा देतो नथी; तो हवे ाणे आजे तो मरलो मुलय फ्रीटा वरवी जोइए. " एवामां सोनी पोताने घेर त्यों, तेणे पोतानी सीओंनी पूर्वोक्त चेष्टा जोइ; एटछे तेगांथी एक स्त्रीने डीने पर्मस्थानमां मार मार्चा, जेयी ते मृत्युवश थड् गइ. त्यारे वीजी स्त्री-ए विचायुं के 'आणे एकने मारी नांखी तेम वीजीओने पण मारी नांखजे दे एनेज मारी नांखवी जोड्ए. 'ए प्रमाणे विचार करी, ते सपनी सीओए ही वखते पोतपोताना द्यथमां रहेलां दर्पणो तेना तरफ फेंक्यां. ते दर्पणोना ार्यी सोनी मृत्यु पाम्यो. पाछळ ह्योओ लोकोना अपवाद्यी भय पामीने री मुड. तेओ वधी मरण पामीने एक पालमां चोर थइ. जे स्त्री प्रथम मृत्यु ापी हती ते कोइएक गाममां कोड व्यापारीने धेर पुत्र तरीके उत्पन्न थई, अने ोनीनो जीव ने श्रेष्टीने घरे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेण पूर्वभवमां अति विप्र तेच्यो हतो तथी ते जनम् पामतांज अति कामातुर थड् रुद्न करती हती. एकदा तेना भारती हात तेनी योनिने छाम्यो, बटके ते रोती वंध यह गह. आं ममाणे तेना भारती हात तेनी योनिने छाम्यो, बटके ते रोती वंध यह गह. आं ममाणे तेने छानी राखवानो उपाय हाय छा

तेने छानी साखवानो उपाय हाय छा

रोज ए प्रमाण परे एट है है नि इंड क्ल टाइ कर उन्हें के निमा तेने ए प्रमाण करतो जोने तेनी तेन तेने जाने क्या प्रमाण करतो जोने तेनी तेन तेने जाने क्या प्रमाण करतो जोने क्या है तेने परमांथी पाठी मृत्यों, ते जोन्य दीवां जा के व्यापां पाठ पाती जोने स्वामी थयों, एक दिवस से मई जोनेए एक राजा को गाम प्राप्त त्यां पेन्ते विषयाध्यक्ति कार को कोने पाति पास थड हे ते आवी हती, तेने जोरोए जोट करने पूर्णभाना को की पाती पास थड हे ते आवी हती, तेने जोरोए जोट करने पूर्णभाना को हती काणा प्रध्यता के खायों ते कों के स्वीकारों, आ प्रमाण से पांचयों जोरोनी पत्नी गड़, पात्र ते पांचयों सुरुपोथी पण हिंस पायती नथी, अहो ! स्वीजोनी कामको ला केवा प्रकारती हे ! कहुं हे के-

नामिस्तृप्यति काष्टोघे, नीपगानिर्महोद्धाः। नांतकः सर्वजूतेज्यो, न पुंनिर्वामलोनना॥

" फाष्टना समूहयी अग्नि तृप्त थतो नथी, नदीओशी समुद्र तृप्त थतो नथी, र माणीओथी यम राजा तृप्त थतो नथी, अने पुरुषोथी स्नी तृप्त थती नथी," वर्ष

नागरजातिरप्रष्टा, शीतोविक्वार्निरामयः कायः।

स्वाप्ठ च सागरसिखं, स्त्रीपु सतीत्वं न संजवित ॥ " नागरजातिमां अदुष्टपणुं, वन्दिमां शीतळपणुं, कायामां निरोगपणुं, र द्रजळमां स्वादिष्टपणुं अने सोओमां सतीपणुं संभवतुंज नथी. "

एक दिवसे चोरोए विचार्य के-'आ स्ती पांचसे पुरुपोथी सेवातां दें पामे छे, तेथो वीजी स्ती लाववी जोइए.'ए प्रमाण दयाथी तेओए बीजी आणी; तेने जोइ पहेली स्तीए विचार्य के-'अरे! मारा उपर आ बीजी आणी! आ मारा विपयभोगमां भाग पाडशे.' एवी बुद्धिथी तेणे तेने क् नांखी दीधी, जेथी ते मृत्यु पामी. ए वात पट्टीणितए सांभळी तेथी विचील लाग्यो के 'अहां! आ कामथी अतिविन्हल छे अने महापापकारिणी छे.' वली तेण विचार कर्यों के-'आवी तीत्र कामरागवाळी कदि मारो वहेन हरों! कारणके तेनामां अति कामबुद्धि हतो.' पछी ए प्रकारनो संशय दूर करवाने माटे ते श्री वर्धमान स्वामीना समवसरणमां गयो.

पछीपतिए मभुने वांदीने पूछयुं के-'हे भगवन् ! 'आ ते ?' त्यारे भग वाने कहुं के-'ते ते.' ए ममाणे सांभळी वैराग्यपरायण थइ, व्रत अंगीकि करी, पाळीने ते शुभगतिने माप्त थयो.

अहीं गीतम स्नामीण मभुने पूछ्युं के—"हे भगतन ! आपने पहीपतिए पूछ्युं के—'भा ते ?' त्यारे आपे उत्तर आप्यो के 'ते ते ' पहछे शुं ! अमे फांइ समज्या नहि. " भगवाने पहुं के—' एले समझ्यामां पूछ्युं के—' के पेळी मारी पहेन हती ते आ हे के नहि ? ए प्रमाले लडजाधी तेले पोतानी स्त्रीचं स्वरूप पूछ्युं, एडळे मे पण समझ्याथी जवाब दीधो के 'तारी पत्नी ते तारी बहेनज हो, ' ते सांभळो घणा छाफ मतिवाध पाम्या.

' क्री मेरागेला जीव न आचरवानुं पण आचरे छे ' आवो आ कवाना उपनय छे.

पडिवडिजंडाण दोसे, नियाए सम्मंच पायवेनियाए । तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलंनाणम् ॥ ३४ ॥

नर्ध-" पेताना दापने अंगीकार करीने सम्यक् मकारे जिकरण श्रुद्धे परे पडेडी एवी (गुरुणीनी सेवा करनारी) गृगावतीने तेज कारणयी निश्यये नि-गवरण एवं केवळतान उत्तवस गयुं, " ३४. तेथी विनयज सर्व गुणोचुं निवा-मस्थान हे.

अहीं मृगावती साध्तीतुं दृष्टांत जाणवुं. मृगावतीतुं दृष्टांत.

फोनाम्बी नगरीण शीमहाबीर स्वाणी मणवसर्या ते वखते सर्व सुर अने नियुनाना उंट फरोहो हेवनाओयी परिष्टन यह वांद्वाने माटे आव्या; तेगज र्य अने चंट्र पण पोताना मृळ विमानमां वेसीने वांद्वाने आव्या. आर्य चंद्रना नाध्वी पण मृगावतीने साथे लड़ने वांद्वाने आव्या. आर्य चंद्रना आदि साध्वी-मो पश्चेन वांदीने पोताना उपाश्रये आवी, पण मृगावती तो समवसरणमांज मंगी रही. ते वखते संध्याकाळ ययो हतो छतां पण सूर्यना तेजयी ते तेना जा-गवामां आव्यो निहः कारणके उद्योत तेवो ने तेवोज रहेळो हतो. अनुक्रमे एति पणी गइ, अने सर्व छोको प्रभुने वांदीने पोतपोताने घर गया; पण मृगावतीण रात्रि पणी गइ छे एम जाण्युं निहः पछी प्यारे सूर्य चंद्र पोताना विमानमां वेतीने पोताना स्थानके गया त्यारे समवसरणमां तेमज पृथ्वी उपर अधकार पसरी गयो, तेथी मृगावती संश्रमित यह. ' प्रणी रात्रि गई छे ' एम जाणी शहरमां आर्य चंद्रनाना उपाश्रये आवी. ए समये आर्य चंद्रना साध्वी पण मितकमण करी, संथारापोरपी भणावी, संथारामां वेसीने मनमां विचार करनी हती के—' मृगावती क्यां गइ हवे ? अने क्यां रही हवे ?' एवामां मृगा-वतीने आवेळी जोड तेने ठपको आपवा छाग्या के—' हे मृगावती! तने आ न

घटे. तारा जेवी मधानकुळमां जनमेळी. साध्वीने रात्रिण वहार रहेवं ए उति मधी; तं आ विरुद्ध आचरेळुं छे. ' आ प्रमाणेनां आर्थ चंद्रनानां चचन सामः ळीने नेत्रमांथी गळतां अशुथी संतापने वहन करती न पश्चाचाप करवा लागी के-' मे आ गुणवती साध्वीने संताप उत्पन्न करोी.' ए ममाण पोताना आता ने निंदती ते हाथ जोडी कहेवा छागी के-'हे भगवनी! मारो आ एक अप राध क्षमा करो, हुं मंदभागी छु; प्रमादवश्यी हुं रात्रिनुं रवस्प जाणी गर्नी निह, हुं फरीथी आहुं करीज निह, ' ए प्रमाणे वारंवार खमावीने तेमना वर णमां पढी त्रेमनी वैयावच्च करवा लागी. आर्य चंटना तो संथारामां मुह गया पण मृगावती तो पोताना आत्मानी निंदा करे छे. एम करतां करतां मृगावतीनी श्रुष्यान रूपी अग्नि दृष्टि पास्यो अने कठिन कर्म रूपी इन्यनसमृह वर्जी गर्बी। तेथी मृगावतीने केवलहान उत्पन्न थयुं. एवामां कोइएक सर्प आर्थ चंदनाना संयारानी पास आवतो मृगावतीए केवळबानथी जोयो, एट्ळे संथारानी वहार रहेलो आर्य चंदनानो हाथ तेणे संथारामां मूक्यो. तेथी आर्य चंदना जागी गर्य अने पूछयुं के-' मारो हायकोणे हळाच्या ?' त्यारे मृगावतीए कहुं के-' लाः मिनी ! मारो अपराध क्षमा करो, में तमारो हाथ हळ। च्यो छे, ते सांमजी चंदनाए 'केम हळाच्यो ?' एम पूछतां मृगावतीए कहुं के-' सर्व आवे है ते थी. ' चंदनाए पूछ्युं के न आवा अंधकारमां तं ते केम जाण्युं ? ' मृगावती बोबी क-'अतिशयथी, आर्थ चंदनाए पूछधुं क-'आ अतिशय केवा मकारनी एगायतीए कहुं के-' केवळज्ञान रूपी अतिशय.' ते सांभळी आर्थ चंद्रना केने लक्षानीनी आंशातना थयेली जाणी पशात्ताप करवा लाग्या अने मृगायतीन नरणमां पटया. ए मगाणे आत्मनिदामां तत्पर थयेला आर्थ चंदनाने पण क वलकान उत्पन्न थयुं.

जेवी रीने मृगावतीए कपाय न कयो तेवी रीते वीनाओए पण कषाय करवी निह, एवी आ दृष्टांतना उपनवधी उपदेश आपेली हो. इतिः

किंमको वृत्तुं जे, सरागर्थमंभि कोई अकसायो।

जो पुण धरिंडज धिण्या, पुट्ययणुडजालिए से मुणी ॥३॥॥
अथ—"गुं एम कही शकाय के अधिनिक सराग अमेमां-रागदेष सित्तै चारित्रमं (कोट मृति) अक्षायी-सर्त्रथा कषाय रहित होय, आ बात संभित्र स्थो काए के सर्व्या क्षायरित्रपण् अल स्थायी होए ? परंतु जे दुर्वन हर्ष काएक्ट कर्वाटन करेट अल्यन एवा क्षाय हुए आंग्रेस धरी नारं।-उद्देय औ

रणसः -- अहलार घणित्र दृश्ययमस्तित तृत्वयमसित्यः अहित्पर्यः

हाने पण प्रगट न थवा दे तेज मुनि, तेज महापुरुष; कारणके सर्वथा कषा याग तो वहु दुर्लभ छे. सर्वथा कपायरहितपणुं तो आ काळमां संभवतुंज नथी, रंतु जिल्लो कोइना कहेलां दुर्वच्नोथी उदयमां आववाने तैयार थयेला कपायने ण रोकी राखे तेने धन्य छे, ते महापुरुष छे. " ३५

कमुख कसायतरूणं, पुष्फं च फलं च दोवि विरसाइं।

ण झाइ कुविद्यो, फलेण पार्व समायरइ॥ ३६॥

र्थ-" कडवा कपाय दृक्षनां पुष्प अने फूळ वंने निःस्वाद् छे. तेनां पु-कोपायमान थयो सतो परने मारवा विगेरे अनर्थ चित्रे छे—ध्याय छे. ाय दूसनां पुष्पो छे अने फले करीने परने ताडन तर्जन करवा रूप पाप

ते वि को वि उझ्झइ, को वि असंति वि अहिलसइ नोए । यह परपच्चएणवि पन्नवे। दहूण जह जंबू ॥ ३७ ॥

अर्थ—" कोइ (महापुरुष्) छत्। भोगने तजे छे, कोइ (नीचकर्मी जीव) ता भोगनो अभिलाप करे छे, अने कोइ पर्ना निमिन् करीने पण भोगने दे छे. अन्यने छता भाग तजती देखी पोते वोष पामे छे. जेम जंबस्या-र भोग तजतां जोड़ने पांचरो चोर सहित प्रभव स्वामीए पण भोग तजी दीधा i. ३७. अहीं जंबू स्वामीतुं दृष्टांत जाणवुं. ११

श्री जंबूस्वामीतुं दृष्टांत.

मथम तेमना पूर्वभवतुं स्वरूप कहे छे-

एकदा राजगृह नगरे श्री महावीर स्वामी स्मवस्यां, श्रेणिक राजा वांद्-ाने माटे आन्या. ते समये कोइ देवताए मथम देवलोकथी आवी सूर्याभदेवनी ोताने स्थानके गयो. पछी श्रेणिक राजाए पूछपुं के- हे स्वामी! आ देव ियां जन्म छेशे! वीर पश्चए कतुं के- आ राजगृह नगरमांज जंब नामे ए क्षेष्ठा केवली थशे. १ श्रीणिक राजाए क्यु के-'हे मधु! एना पूर्वभवतुं स्वरूप हानि कहो. 'भगवाने कहा के-" जंगृहीपनी भरतक्षेत्रमां मुग्रीत नामना गाममां अश्वत नामनो कोड रंक रहेतो हतो. तेने देवती नाम स्त्री तही. नेनाधी भवदेव ो भारदेव नामना दे पुत्रो धया व्हाः

गाथा ३५-नाइ साइ-ध्याचित.

एकदा भवदेवे दीक्षा लीधी. विहार करतां ते एक दिवस पोताना गामे आवा ते वखते भावदेवे पोतानी नवी परणेली नागिला नामनी सीने तजी दहने व ज्जावढे पोताना वंधु भवदेव ग्रुनि समीपे चारित्र ग्रहण कर्यु. भवदेव मृत्यु प मीने स्वर्गे गया. भावदेव भवदेवना मरण पछी चारित्रथी भ्रष्ट थया. ते लन तजी द्इ नवी परणेली नागिलाने संभारता भोगनी आशाथी घर तरफ वाहर अनुक्रमे पोताना गामे आवी गामनी वहार श्री ऋपभदेव भगवानना मंहिए रहा. ते समये तपथी कृश थयेली नागिला पण त्यां दर्शनार्थे आवी. तेणे ताना पतिने ओळ्ख्या अने इंगिताकारथी तेने कामातुर पण जाण्याः न ि पूछमुं के-' हे मुनि! आप अहीं शा अर्थ पधार्या छो?'साधुए कर्षुं के-' री नागिला नामनी स्रोना स्नेहने लीचे हुं आव्यो छुं, में लज्जाने लीचे संयम ग्रहण कर्युं हतुं, परंतु मेमभाव केम जाय ? माटे जो नागिला मळे ता सर्व मनवांछित सिद्ध थाय. " त्यारे नागिलाए कहाँ के-" अरे मुनि! बि णिने छोडीने कांकरो कोण ग्रहण करे? हाथीने छोडीने रासम उपर स्वारी करे ? नावने दूर छोडी दइने मोटी शिलानो आश्रय कोण करे ? क तरुने छोडी धंतुरो कोण वावे ? " इत्यादि उपदेश आपी पोताना धणीने चारित्रमां दृढ कर्या. भावदेव पाप आलोवी चारित्र पालीने त्रीना स्वर्गमां सागरीपमना आयुष्यवाळा देवता थ्या. नागिळा पण मरण पामीने स्वर्ग त्यांथी च्यवी एक अवतार करीने मोक्षे जर्शे.

भावदेवनो जीव त्रीजा देवलोकथी च्यती जंत्र्द्वीपमां पूर्व विदेहने विषे त्रांका नागरीमां पद्मरथ राजाने घेर वनमाला राजीनी कृक्षिथी पुत्रपणे उथा. तेनुं शिवकुमार नाम पाइयुं. युवान वय पामतां ते पांचसो राजकन्यां पर्प्यो. एक दिवसे ते गोखमां वेटो हतो तेवामां तेणे एक साधुने जोण देले गोखमांथी उत्तरी नीचे आवीने तेणे साधुने पूल्युं के—' तमे आटलो वलेंग नामांटे सहन करो छो '? साधुए कह्युं के—' धर्मनिमित्ते.' शिक्ष पूल्युं के—' जा पर्म कया मकारनो ?' साधुए कह्युं के—' जो तमारे सांपल उत्तरा होय तो अमारा गुरु पासे आवो. ' शिवकुमार तेनी साथे धर्मधी वार्य पाम गयो. त्यां धर्म सांभलतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पत्रो ते निर्मते घर आव्यो. तेण मानपिता पासे दीक्षानी आज्ञा मागी. तेमणे वार पाम गयो. तेमणे वार पाम अधित्र वार्या लाग्यो. ए ममाणे वार वर्ष मुधी तप करीने साल आवित्र वार्या लाग्यो. ए ममाणे वार वर्ष मुधी तप करीने काला काला नामे देव थयो.

है श्रेणिक! ते विद्युन्माली देव अहीं आच्यो हतो. "आ प्रमाणे जंवस्वामीना वार भव बीर प्रभुए श्रेणिक राजानी आगळ कहा।

पांचमा भवमां विद्युन्माली देव स्वर्गथी स्ववी राजगृह नगरमां ऋषभदत्त भिष्टीने घेर धारणी देवीनी कुिंसमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. स्वममां शास्त्रत जंबूतिर देखवाधी ते जन्मयो त्यारे तेनु जंबकुमार नाम राख्युं. तेण वाल्यावस्थामां
समस्य कलानो अभ्यास कर्यो. अनुक्रमे यौवन प्राप्त थतां ते अति स्पवान होवातंभी तस्णी स्पी हरिणीओने पाश स्प थयो. ते समये तेज नगरमां रहेनारा आठ
रशेठीआओए जंबकुमारनी साथे पोतानी आठ कन्याओनुं वेशवाळ कर्युं.

र रोठीआओए जंब्रुकुमारनी साथे पोतानी आठ कन्याओनुं वेशवाळ कर्युः अन्यटा श्री सुधर्मा स्त्रामी गणधर राजगृह नगरे सम्वसर्या कोणिक राजा ंबांटवा आब्यो. श्री सुधर्मा स्वामीए संसार रुपी दावानलना तापनी शांति अर्थे त्रभेघनरुनी धारा जेवी देशना आपी, अने संसारना स्वरूपनी अनित्यता दर्शावी ंदंतिमणे कतुं के-' जेम कामीओतुं मन चंचळ होय छे, मूपा (सोतुं गाळवानी) 🖂 इरडी)नी अंदर रहेलुं प्रवाही बनेलुं सोतुं चंचळ होय छे, जळनी अंदर पडतु हाचिंद्र सुं पतिचिंव चंचळ होय छे अने वायुयी हणायेछो ध्वजनो पांत भाग जेग ूर्वंचळ होय छे तेवीज रीते आ संसारम्नं स्वरूप अस्थिर छे. वळी जेवी रीते अं-कृष्यो चूसी पोतानीन लाळ्नुं पान करतो वाळक जेम सुख माने छे, तेम आ कीन पण निंदित भोग भोगवी सुख माने छे. अहो! आ लोकोंनुं मूर्खपणुं केंगुं छे! के ते जेमां उत्पान धयो छे तेमांन आसक्त थाय छे, जेनुं पान करेलुं छे के ते जेमां उत्पान धयो छे तेमांन आसक्त थाय छे, जेनुं पान करेलुं छे कि तेन स्तनोनो स्पर्श करवाथी मनमां खुशी थाय छे. 'इत्यादि देशना सांभळीने कंग्रुं केन' हे स्वामी! मने संसारनो निस्तार करनारी दीक्षा आपीने मारो उद्धार करो, 'सुधर्मा स्वामीए किंगुं केन' हे देवानुष्रिय! ममाद कर नहि. 'ए प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी ते र्भं मातापितानी आज्ञा छेवा माटे घेर आवतां राजमार्गमां आव्यो. त्यां घणा रा-विकामारो हथियारोनो अभ्यास करे छे. त्यांथी एक लोढानो गोलो जंब्कुमार ्रिं ,यासे आवीने पडयो. जंबूकुमारे विचार्य के-' जो मने आ गोळो लाग्यो होत ती हुं मनवांछित केवी रीते करी शकत?' ए पमाणे विचारी पाछा वळी गुरु भारते आवी तेणे छघु दीक्षा ग्रहण करी; पछी घर आव्या, अने मातापिताना कि क्षेत्रचरणमां पडीने कहेवा लाग्या के—' हु दीक्षा लड्झ, आ संसार अनित्य छे, आ क्षेत्रा कुटुंबपरिवारथी शो लाभ छे हैं तो अंतरंग कुटुंबमां अनुरक्त थयेलो छुं, ति श्रेतेथी हुं उदासीनवणा रुपी घरनी अंदर वास करीश अने विरित्त रुपी मातानी सेवा करीश, योगाभ्यास रुपी पीता, शमता रुपी धावमाता, निरागता रुपी

भिय वहेन, विनय रुपो अनुयायो वंधु, विवेक रुपी पुत्र, सुमित रुपे णिया, ज्ञान रुपो अमत्योजन अने सम्यक्त्व रुपो अक्षय भंडार—आ कुट्रा मारो प्रेम छे. तप रुपी अश्व उपर स्वारो करी, भावना रुपो कवने भा करी, अभयदान आदि उपराचो सहित संतोप रुपो सेनापितने अग्रेणर करी, अभयदान आदि उपराचो सहित संतोप रुपो सेनापितने अग्रेणर करी, अपक्रेण रुपो गज्या परिष्ठत थइ, गुरुनी आज्ञा रुपो शिरम्ञाण धारण करी, धर्मध्यान रुपो क्ष्म परिष्ठत थइ, गुरुनी आज्ञा रुपो शिरम्ञाण धारण करी, धर्मध्यान रुपो क्ष्म प्रवान वचन सांभळीने मातापिता वोल्यां के—"हे पुत्र! एक वस्त आठ क्रिंग प्रवान वचन सांभळीने मातापिता वोल्यां के—"हे पुत्र! एक वस्त आठ क्रिंग अने परणी अमारो मनोरथ पूर्ण करो पछी त्रत ग्रहण कर्म. "ए प्रमाणिती जाने परणी अमारो मनोरथ पूर्ण करो पछी त्रत ग्रहण कर्म. "ए प्रमाणिती त्रान वचनथी तेण आठे कन्याओनी साथे पाणिग्रहण कर्मुः परंत ते क्रिंग तहन निर्विकारी हतो. एक एक कन्या नव नव क्रोड सोनामहोर करीना छाने हती. अने एक क्रोड जब्रुकुमारना गोसाळपक्ष तरफथी आवी हती. ए प्रमाणे एक्री क्रोड सोनामहोर आवेळी हती. अने अहार क्रोड सोनामहोर पोताना घरमा ही क्रोड सोनामहोर पोताना घरमा ही क्रोड सोनामहोर जावेळी हती. अने अहार क्रोड सोनामहोर पोताना घरमा ही अप प्रमाणे जब्रुकुमार नवाणु क्रोड सोनामहोरना अधिपति थया हता.

हवे जंबुकुमार रात्रिए रंगशाला (शयनगृह) मां स्त्रीओ साथे के पण ते तेमने रागवाळी दृष्टिए जोता पण नथी, तेम वचनथी पण संतेष अ नथी. स्त्रीत्रोए तेने प्रममय वचनोथी चलित करवा माटे घणो प्रयत्न कर्या ने चिंत थया नहि. ते समये प्रभव नामनी चोर पांचसे चोरोथी पिंही जंबुकुमारना घरमां आव्यो, तेमणे क्रोड सोनामहोर छइ तेनी गांमडीओ अने मस्तकपर मुकीने नीकळवा लाग्या, ते अवसरे जवुकुमारे स्मरण करेल चपर्पेष्टी नगम्कार मंत्रना महात्म्थी ते सर्वे भींत उपर काढेल चित्राती म्यिर यह गया त्यारे मभवे कतुं के 'हे जंबुकुमार! तुं जीवद्यापालक है। भयदानधी वधारे दुनियामां चीजुं कोइ पण पुण्य नथी; अमे जो अहीं पक्ष नो भातःकाळ कोणिक राजा अगने सर्वने मारी नांखजे. माटे अमने होती अने मार्ग पामे तालोद्याटिनी (ताल उघाडनारी) अने अवस्तापिनी (हित करनारों) नामनों वे विद्या है ने तु है अने तारी स्तिमिनि भार त्रितुत्मारे कर्षु के- मारी पासे ता धर्मकला नामनी एक मारी। है, है सिरायनो बोसो है। हियाओं कृतिया है हु तो सुणनी मार्ग र्गः भोगाने न्या । गार गारा । जना छन् दीक्षणमा करवाना छै १ यह करबा को सम्तक्ता रशण शाद माथापर मूरी छे ते लीहरी हिंदू हेटा हो. ' प्रभवे पाएं के-' एने प्रपृद्धि पुरुष हुं हुष्टांत कहो। ' प्रकेष्टि

'' एक दनमं साथधी निग्हों की गयेलों फोहण्क पुरप भटके छे. एवं कि एक उनली हाथी तेने दारवाने माटे एन्स्य होडणों. एटले तें नाहों. धी नेनी पान्ह लाखों. धारल दालतां हाथीना भयथी स्वानी अंदर रहेंल इसनी दाराहों आपल लाने ते प्रवामां लटकी रक्षों. ख्वामां तेनी नीचे ला मुन परीने रहेला एका वे अन्यारों लटकी रक्षों. ख्वामां तेनी नीचे हाथमां दबरें लो हरनी झाला उपर रस्थी भरेलों एक मध्युडों छे. में उंदर ने झाला हे इसी मरेलों एक मध्युडों छे. में उंदर ने झाला हे हाथमां दे हों मास्वीओं तेने उंख मार्थी में हो. ए प्रवाद ना बहुमां दहेलों ले मह माणस घणे लांचे बखत मध्युडामां में हो. ए प्रवाद ना हिहा हे हरीने तेना स्वादधी पोताने छखी माने छे. एवं एते मोहा कि हिहा हमा हा अलों. नेणे तेने वहां के नेतां आ विमानमां ख. हु हमें दृश्यमांथी मूल मरे. 'स्थारे ते मूर्ख माणसे जवाव आप्यों के—' एक मुले मोमों, ह आ मधना एक विद्वार स्थाट एडने आवुं छुं. ' ते सांम- विद्याध्य चात्यों गयों अने ने मुर्ख दु:ख पाम्यों. ''

माटे हे प्रभव ! आ दिएयनो दिपाक एक्टिटना खंबो छे. आनो उपनय को हे के-' आ हरार रूपी मोटं जगल हो. तेमां जीव रूपी विखुटों पड़ी ग-हो रूप हो, जन्म, जरा ने मरण रूपी ज़बो हो. ते विषय रूपी ज़ळ्थी भरेलों नारकी गिन अने तिर्देक गति रूपी वे अजगरों हो, क्याय रूपी चार संपी , आरुष्य रूपी दश्नी हास्ता हो, श्वल ने कृष्ण पक्ष रूपी वे उदरों हो. मृत्यु पी दायों हो,अने विषय रूपी मध्इटों हो.तेमां आरूक्त यह आ जीव रोग,शोफ, रूपोग आदि अनेक उपद्रवोंने सहन करे हो. माटे धर्म एज मोटं ग्रुख हो, तेवा को आपनार गुरु ते विशाधननी ज़्याण हो.' आममाण मधुर्विदुनुं दृष्टांत जाणवुं. मभने फरीयों पणु के-' भर वावनमां पुत्र सी विगेरे सघळा परिवारनो

ाग करवो उचित नथी. ' जंग्रुकुमारे कु के-' एक एक जीवने परस्पर अनंार दरेक सर्वध धयेला छे. जेर के एक भवमां धयेला अहार नातरानो संछे. ' मभवे कहां के-' ते अहार नातराना संवधनुं स्वरूप केनुं छे ते मने
ा. ' जंग्रुकुमारे कहां के-' मथुरापुरोमां कुवेरसेना नामे वेश्या हती. तेनी
तथो छोकरा ने छोकरीन सुगल उत्पन्न थयुं. छोकरानुं नाम कुवेरदत्त राख्यं
छि।करोहं नाम कुवेरदत्ता शब्द्यं. ते युगलने तेमनां नापथो अंकित मंद्रा
रावो वस्त्रमां वीटों पेटोमां नाखाने ते पटा यमुना नदीना भवाहमां बहेती

आप ते पेटी वहार फ'ही एक कोठे पुत्र ग्रहण कर्यो अने वीनाए पुत्री ,

करी, तेओ युवान थतां फर्मयोगे लग्ननी गांटथी परस्पर जोडायां. प्रका गठात्राजी रमतां कुवेस्ट्लाए पोताना पतिना हाथमां पेली मृदा जोह 'आ मारो भाइ छे 'एम जणी ते चिरक्त थड. तेणे संयम ग्रहण कर्युः तेने अवधिकान माप्त थयुं. एवे समये कुवेरदत्त कार्य अर्थे मणुराए गणे कुंघेरसेना वेज्या जे तेनी माता हती तेनी साथे छपटायो. तेमने पुत्रपाति, कुवेरदत्ता साध्मीए अवधिज्ञानथी जाण्यु के-' आ मोटो अनर्थ धाय है. तेमने प्रतिवोध प्रमाहवाने माटे ने -तेमने यतियोध प्रमाड्याने माटे ते त्यां आच्या. ते कुवेरसेनाने घरेत रयां रुद्दन फरता पेला वालक पासे आबीने कहेवा लाग्या वे-"हे हुं फेम रुपे छे ? मान ग्रहण कर. तुं मने वहालो छे. तारी साथे मारे ह है. (१) तुं मारो पुत्र हे, (२) तुं मारा भाडनो पुत्र हे, (३) तुं मारो भा (४) हुं मारो दीएर छे, (५) हुं मारो काको छे, अने (६) हुं मारोवात्र है. है पत्स ! सारा पिता साथे पण मारे छ संबध छे. (१) ते मारो पित है। मारो पिता छे, (३) मारो ज्येष्ठ वंधु छे, (४) मारो पत्र हो, (५) मारो छे, अने (६) मारो मिपता (पितानो पिता) छे. तारी मानी सार्थे पण मारे संबंध छे. [१] ते मारी भ्रातृपत्नी (भोजाइ) हे. [२] मारी सवत्नी कोडी [३] मारी माता छे, [४] मारी साम्रु छे, [५] मारी वहु छे, अने [६] मातामही (पापनी मा) छे. " ए ममाणेनां साध्वीनां वचन सांभळी पूर्व स्वरूप जाणी कुवेरसेनाए व्रत ग्रहण कर्यु, अने ससारना पारने पामी माने हे मभव ! आ संसारमां अनंतवार दरेक सबध थयेला है. कोण की वर्ष एत परम बंध छे.

मभवे फरीयों कहा के-" हे जंनू कुमार ! तमे जे कहा ते खहं है. पूर्व मुत्र नधी तेमे सद्गति नथी ' एवं पुराणवाक्य छे. तेथी भोग भोगवी इन्ने घरे म्कीने पछी सयममां मन राखजो " जंबकुमारे कहुं के -मो सुगित धाय अने में न होय तो कुगति थाय एवो कांड नियम मधी। म्मारी जीवोने केवळ मोहजन्य भ्रम छे.जेम महेश्वरदत्तने पुत्र काममां अ क्य." मभदे पृत्रयु के 'ते महेश्वरदत्त कोण हतो ?' जंत्रकुमारे कर के

" दिल्यपुर नगरमां महेत्यादत्त नामे एक शेठोओ हतो. तेने महेन एक युव हतो. मदेश्वरदने पोताना गरणममये पुत्रने कतुं के- भारा

· आ भवमें हे प्रथमने क्वरण,

ते एक पाडाने मारीने तेना मांसधी आपणा सघळा परिवारने तृत फरले. '
महेत्वरदत्त मरी गयो। पुत्रे पितानुं चवन याद राख्युं. महेत्वरदत्त मरीने
ां पाडो थयो। महेत्वरनो माता घरणां वहु मोह होवाधी मरीने तेन घरणां
ध्वः देवयोगथी श्राद्धने दिवसे तेन पाडो आण्यो। महेत्वरनी स्त्री व्यक्षिणो हती। तेनी साथे क्रोडा करनारा जारपुर्वने महेत्वरे मारो नांख्यो। ते
ते तेनेज घरे पुत्रवणे उत्पन्न थयो। तेने छाड छडाववामां आये छै. हवे
पाडाने माणमुक्त करवामां आब्यो, अने छुडंयोओए ते पाडानुं मांस भस्त्रण
एवे समये श्रीधर्मधोप नामना मुनि गोचराने मार्ट स्था पधार्या। तेमणे मना घरनुं सघछं चरित्र ज्ञानथो जाणोने किंतु के—

मारितो वल्लजो जातः पितापुत्रेण भक्षितः! जननी तानयते सेयं, छही मोहविजृंजितम्॥

" जारने मारी नांखवाथी ते पुत्रक्षे बल्लभ [मिय] थयो, पाडा थयेला नि पुत्रे मक्षण कर्यो; अने कुतरो थयेली माताने ताडन करवामां आवे है. । माहनो विलास विचित्र है. "

ए प्रमाणेनो श्लोक सांभळोने महेन्दरे पूछयुं के—'हे स्वामी। ए केवी ?' साधुए सर्व हकीकत कही. ते महेन्दरे मानी नहि, एटछे इतरी पासे खजानो वतावीने साधुए विन्वास उत्पन्न कर्यी महेन्दर श्राद्ध छोडोने श्रा- थयो। इतरीने पण जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थवाथी तेणे मिथ्यात्वनो त्याग जिने ते स्वर्गे गइ. माटे हे मभन ! पुत्रथी श्री कार्यसिद्धि थाय ते कहें, " प्रमाणे महेन्दर ततुं हृष्णंत जाणवुं,

हवे प्रभव कहे छे के-' हे लंगूकुमार! तुं गने आ जिनितदान आपे छेले तारुं पहेलं पुण्य छे, हवे जो आ मारो परिवार वंधनथी छटो थाय तो हुं तमारी साथे चारित्र प्रहण करीश.' ए प्रकारनो तेनो निर्धय सांधळीने सप्त-ामनो प्रथम-ही बोली के- "तमारा जेना दृष्ट कर्म करनाराओमे तौं रित्र यटे छे? दुःखी माणीओ सुसनी अपेक्षाथी चारित प्रहण करे छे, परंतु ही छोकोने संयम-रूपी बाह अनिए छे, अने प्राये करीने छोको पारका परने नाराज होय छे, हे प्रभव! जो आ ंद्रुणार तारा कहेवाथी प्रतने परण से तो एक हाळोनो पेठे तेन पर्ताबु पडण." भनवे अधुं के-' ए हाळो म हतो ?' समुद्रश्री कहे छे के सांमळ-

मरु देशनां अंदर एक वग नामनो पामर वस्तो हतो. ते खेती करतीं अने कोद्रा, कांग विगेरे धान्य वावतो हतो. ते एक दिवस पोतानी दीकरीने सरे गयो. त्यां तेने गोळिमिश्रित मालपुडा जमाडया. त्यां तेणे शेरडीनी अर गोळिनी उत्पत्ति जाणी. तेथी पोताने घेर आवीने तेणे पुष्प ने फळ्थी खीं क्षेत्रने निर्मूल करी नांखीने तेमां शेरडी वावी. तेनी स्त्रीए तेने घणो वार्यी ते अटक्यो निह, आपमितलो थयो. महभूमि होवाथी पाणी विना शेरडी तो निह अने पूर्वेनुं धान्य हतुं ते पण गयुं. पछी ते पश्चात्ताप करवा लाग्यं 'मिए भोजननी आशायो में मथमनुं पाकेलुं धान्य पण गुमान्युं.' ते प्रभा माणवल्लभ! तमे पण पश्चात्ताप पामशो. माटे भाम थयेल मुखनो त्यांग अधिक मुखनी वांछा करवी नहि.

इति वगपामर दृष्टांत ?.

जंब्कुमारे कहुं के—" तुं जे कहे छे ते सत्य छे, परंतु जेओ आ हं सुलना अभिलापी होय छे तेओ दुःख पामे छे. पण ज्ञानथी उत्कृष्ट वीहं नथी, शमता जेंचुं वीजं सुख नथी, 'दीर्घ काळ जोवो 'ए आशीर्वाद हं वीजो उत्तम आशीर्वाद नथी, लोभ जेंचुं वीजं दुःख नथी, आज्ञा जेंचुं वंधन अने सी जेवी वीजी जाळ नथी. तेथी जे सीओमां अतिलुब्ध रहे छे ते की नी माफक अनर्थ माप्त करे छे. " स्त्रीए पूछयुं के—'ए वायस कोण हतीं

जंबुकुमार कहें छे ने-मृगुक्षच्छमां रेवा नदीने किनारे एक हाथी पाम्यो. त्यां वह कामडाओ भेगा थई आवजाव करवा लाग्या. जेम दान मां बाल्यणो मळे तेम त्यां कामडाओ एकडा थयेला हता. तेमांथो एक ने मरेला हाथीना गुदाद्वारमां भवेश कर्यो अते नांसळुळ्थ थइने त्यां राज्यो. एवामां ग्रीष्म काल आवतां गुदाद्वार संकृचित थई गयुं. तेथो व अंदरज रहो। वर्षाकत आवतां ने हाथीनुं बाव पाणीना मवाहमां तणायुं. मुं विकासन यवाथी ने विचारों कामडो वहार तो नीकल्यो, पण चारे दिशा पीनुं पूर जोडने त्यांत मरण पाम्यो. आ ह्यांतनो एवो उपनय छे के मरें थीना वर्ष्यय देवी स्वीओं हो, अने कामडा जेवा विपयासक्त पुरुष हो, गारम्यी जल्यां युटेहे, विपयना अतिशय लोगथी ने शोकने पामे हो.

इति का ह हण्टांत २.

हरे की हो हो है की को का लागों के ने है मिय ! अति लोमगी मह

्र रनी पेठे दुःख पामे छे. ' ममव चोरे कतुं के-' ते वानरमुं दर्शत कहो. ' पदाश्री कहे के सांभळां-

एक जंगलमां काइ वानर ने जोइ मुखे रहेतुं हतुं. एक दिश्स देवाधिष्ठित पाणीना धरामां ते जोडामांथी वानर पड़यो एटळे तेने मनुष्यपणुं माप्त थयुं ते नोइ वानरो पण पड़ो एटळे ते पण मनुष्यणी थइ. पछी वानरे कणुं के—' एक-वार आ धरामां पड़वाधी मनुष्यत्व माप्त थयुं छे तेथो जो वीनोवार पड़ोए तो देवत्व माप्त थाय.' तेनी स्त्रीए तेने तेम करतां वार्यो छतां ते पड़यो, तेथी ते पाटो वानर थड़ गयो. ए समये कोइ राजा त्यां आन्गो. ते पेछी दिन्य रूप-बाळी सोने पोताने घरे छइ गयो. वानर कोइ मदारीना हाथमां पड़यो, ते मदारीए तेने तृत्व शीखन्युं. ते वानर तृत्य करतो सतो एकदा राज्यहारे आन्यो. त्यां पोतानी स्त्रीने जीइ ते अति दुःखित थयो।

इति वानर दृष्टांत ३.

जंबुकुगार कहे हे के-हे िषये! आ जीवे अनंतोवार देव संवंधो भोगो पण भोगवेला हे परंतु ते तृप्त थयो नथी तो आ मतुष्यनां सुख तो शी गणत्रीमां छे? जेम एक कवाडी कायला पाडवा माटे वनमां गयो हतो. त्यां मध्यान्हकाले अति तृपित यवाथो तेणे वधां जलपात्रा पीने खाली कथी, तोपण तेनी तृपा भटी नहीं. पछी ते एक झाडनी छायांमां सुतो, अने तेणे स्वप्नमां सबे समुद्रो ने नदीओ छुं जल पीधुं तो पण ते तृष्त ययो नहीं. छेवट एक भागमां रहेळ कादवधी मळेले जल पीवा मांड छुं पण कांड तृष्त थयो नहि. समुद्रजलथी तृष्ति न थइ तो कीचडवाला जलधी तृष्ति क्यांथो थाय! अहीं समुद्रजल जेवा देवना भोगो छे, अने कादवना जल जेवा मनुष्यशरीरना भोगो छे एम जाण छं.

इति कवामी दृष्टांत थ.

हवे त्रीजी पश्चसेना स्त्रीए कहुं के-'सहसा कार्य करवायी नूपुर पंडिता-नी पेठे पश्चात्ताप थशे ' मभवे कहुं के-'नूपुर पंडितातुं दृष्टांत कहो.' तेणे ते दृष्टांत कहुं. 'तेना उपर जंबुकुमारे वियुन्माठीतुं दृष्टांत कहुं, जेणे मातंगीना नंगथी यथी विद्या गुमाबी हती. ते दृष्टांत आ ममाणे—

अ। भरतक्षेत्रमां कुशवर्धन गाममां विषना कुळमां विद्युत्माली ने मेघरथ नाम वे माइओ उत्पन्न थया हता. एक दिवसे तेओ वणमां गया हता, त्यां तेमने कोइ विद्याघरे मातंगी नामनी विद्या आपी. विद्याघरे तेमने कहुं के-'ते ी देवी भोगनी मार्थना करशे, पण जो तमे मननी स्थिरता राखशो अने

१ आ पृष्टांत परिशिष्ट पर्यादिशी जाणी लेखें, अहीं आप्युं नयी

चित्र थशो निह तो विद्या सिद्ध थशे. पछी वंने भाइओ विद्या साधवा की तेमां एक विद्युन्माली विद्ववल मननो होवाथी चलित थयो, अने वीजो मेपए गुरुतुं वचन याद राखीने चिलत थयो निह तेने विया सिद्ध थई अने छ गास मां पुष्कळ घन माप्त थयुं; विचुन्माली दुःखी थयो आ दृष्टांत कहीने जंबुकुमारे कहुं के-मातंगी सहस मनुष्य खीना भोगों है, तेथी वह मुखना अर्थी पुरुषोर तेनो त्याग करवो योग्य छे.

इति विद्युन्माली कथा ५-६.

चोथी कनकसेना नामनी स्त्री वोली के-'हे स्वामी! जो अमे मातंगी सह हता तो तमे शा माटे परण्या! हवे पाणी पीने घर पूछवुं ते घटित नथी. वर्णे हे स्वामी ! अतिलोभथी तमे पेला कणवीनी पेठे पश्चात्ताप पामशो.' ते दृष्टी

सुरपुर नगरमां एक कणची वसता हतो, तेण पोताना खेतरमां खेड की हती. तेथी रात्रिए पक्षी उडाडवाने माट ते शंख वगाडती हता एक दिव चोरो गायोतुं धण छड्ने ते क्षेत्र पासे आव्या. तेवामां बंखनो ध्वनि सांभग्नी तेओ भयाक्रांत यह गया. एटळे गायोने छोडीने नासो गया. पेळो कणबी गायो वेचीने छुखो थयो. ए प्रमाणे त्रणवार वन्युं. एक दिवस ते चोरोए कर् योनी तमाम हकीकत जाणी, एटछे तेओए त्यां आवीने कणवीने बांध्यां अने महार्यी सीधो कर्यो. ए ममाणे हे स्वामी! अतिलोभी माणोओ दुःख पामें

इति शंख वगाडनार कणवीनुं दृष्टांत ७.

नंबुकुमार फहे हे के-' अति कामनी छाछसावाळा मनुष्यो वानरनी पे वंधन माप्त करे हैं. ने वानरहं दृष्टांत आ प्रमाणे-

एक यानर ग्रीष्म ऋतुमां तृपानुर थवाथी जळनी आंतिए चीकणा जळनी रना दीचटमां पड़यो. जम जम करीरनी उपर कोचडना स्पर्ध थतो गरो ते नेम टंटो लागतो गयो, तथी तेण आखु अरोर काद्यथी लींखुं; पण तेथी तेले त्या गर निहः अने मर्थना नापथी ज्यारे कादव मुहायो त्यारे तेने शरीरे धर्ण पीटा घट. हेरी सेते हे निये! विषयग्रस रपी कोचटथी हुं मारा नरीहरे

इति वानर दृष्टांत ए.

हो १०% मा म्योगा को ता लागी के-हि स्वारी ! अगिलोम न हार् विशेषणी होते मह भारते. ने इपर मिद्धि अने गुढिमुं ह्यांत छे. ' तें

ंगिति यदिनुं दृष्टांत पूर्ं, ने सांभजी जंबकुणारे उत्तर आप्यो के-'हे मिये! यह कहेवाथी एण जातियन घोटानी पेठे हुं अवळे गार्गे चाळनार नथी. ' ते जातियंत घोडानुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे--

यसंतप्त नगरमां ज्ञित्त्र नाभे राजा गज्य करतो हतो तेने घेर एक घोडो हतो. ते घोटो तेणे जिन्दान नामना श्रावकना घरे राखेलो हतो. ते घोडो अनेक सारां लश्जानालो होगाधी एक दिवसे कोड पहीपतिए तेने उपाटी ला-बरा माटे पोनाना एक सेनवने मोकल्यो. तेणे खातर पाटीने ते घोडाने वहार काश्यो, पन्नु ते घोटो उन्मार्ग चालतो नधी. तेणे घणो मयास कर्यो, पण तेणे अहमदेला राज्मार्ग शिवाय ते अन्य रस्ते योड रीने चाल्यो नहि, एडलामां रोठे जागी ज्यायों ते जात्य करने घोरने घोडो लड लीघो. पछी चो-रने पण क्रक्त कर्यो. एनी रीते हे निये ! हुं पण घोटानी पेठे शुद्ध संयम स्वी मार्गने छोडी चोरो समान जे तमे नेनाधी आकर्षण करानो कुमार्ग जड्य नहि.

इति घोटक हप्टांत ९-१०

हवे छटी स्त्री पतनश्री पहेचा छागी के—' हे म्त्रामी ! तमे अति हट करो छो ते युक्त नथी. सम्जु मनुष्ये आगामी फाळनो विचार करवो जोडए बाब-णना छोदरानी पेठ नथेटान पूछडुं परडी राखवुं न जोडए. ' प्रभवे कर्युं के—'ए दिन कोण हतो ?'

फनकथी फहे के सांभळो-एक गामगां एक ब्राह्मणनो पुत्र हतो ते घणो मूर्य हतो. तेने तेनी पाताए कर्णु के-' पक्टेन्ट छोडी देव निह ए पण्डित तुं खरण छे. ते मूर्याए पोतानी मानुं बचन मनगां पकडी राख्युं. एक दिवस काड हेंगारनो गर्थटो तेना घरमांथी भाग्यों. हंगार तेनो पठवाडे दोडयों. हंगार पेखा ब्राह्मणना छोकराने कर्णु के-' अरे ! आ गर्थडाने पकड, पकड.' ते मूर्याए गर्येडानुं पूछटुं पकड्युं अने गर्थडों पगनो छातो मारवा लाग्यों, तोषण तेण पूछटुं मृत्युं निह एटछे लोको कहेवा लाग्या के-' अरे मूर्य! पूछडुं छोटो दे. त्यारे पेला छोकराए क्युं के-' मारी माताए मने एवी शिखामण आपो छे के पकटेन्ड छोडवुं निह.' आ ममाणेना कदाग्रहयी ते मूर्व कष्टपांम्यों.

इ्नि विष्रपुत्र दृष्टांत ११

नेयुकुमार कहे छे के 'तमोए जे कबु ते बरोवर छे, परंत तमे वधोओ खरजेंबी छो,अने नमारो स्वीकार करवो ए खरना ट्रूडाने पकडो राखवा वरावर छे.वळो

रै मिडियुडिनुं हप्टांत पण परिशिष्ट पवांदिथी जाणी लेवुं.

इति विप्रकथा १२.

हवे सातमी ही रूपश्रो कहेवा लागी के-' हे स्वामी ! हमणां तमे अम कहेवुं निह मानो, पण पलीयो मासाहस पक्षीनी पेठे तमने संस्ट माप्त मस्ति समज्ञाः,' ते कया आ ममाणे—

एक मासाइस नामनुं पक्षी कोइ वनमां रहेतं हतुं. ते पक्षी मृतेला वार मुख्यमं पेसी, तेनी दादमां वळगेळ मांसनी पिट लड वहार आवीने एम वीन हतो के—' आ ममाणे कोइए साइस करखुं नहि.' आटळा उपरथीज तेनुं र भासाइस 'पड्युं हतुं. ते पक्षी जे ममाणे कहेती हती ते ममाणे पोतेन वर नहोतो. तेने वीजां पक्षोओए घणो वार्यो छतां पण मांसमां लोलुप यहने ते रंवार वाघना मुख्यमं पेसतो हतो. एम करतां करतां वाघ जाग्यो एटछे ते क्षोनो कोळीओ करी गयो.

इति मासाहस पक्षी हण्टांत १३.

जंबूकुमार कहे छे के 'हे स्त्रीओ! आ संसारमां कोइ रक्षण करनार न मात्र जेम प्रधानने तेना धर्भिमित्रे सहाय आपी तेम धर्मिमत्र शरणे जतां र फरेछे. 'ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

सुप्रीवपुर नामनां नगरमां जितशत्र नामे राजा हतो. तेने सुगुद्धि मत्री हतो. ते मंत्रीने त्रण मित्रो हता. एक नित्यमित्र, वीजो पर्वमित्र अने प्रमणामित्र. राजा तरफथी कष्ट माप्त थये आ त्रण मित्रभांथी प्रण मित्रि रिते रक्षण आपो मधानने वचाव्या तेनो कथा परिशिष्ट पर्वीदिथी जाणी है

माणमित्रतं दर्शतः

ते त्रण भित्रनो उपनय आ प्रमाणे छे-

नित्यमित्रसमोदेहः स्वजनाः पर्वसन्निजाः

जुहारमित्रसमोक्षेयो धर्मः परमबांधवः॥

" नित्यभित्र समान देह छे, पर्वभित्रो समान स्यांबहासां छे, अने प्रशामा ती जेवो परमवंधु धर्म छे. " ते धर्म प्राणीने अंतसमुद्रे पण सहाय करेछे अने जे तेतुं शरण करे तेने कुश्कक्षेमे स्वस्थाने पहोत्राडे छे. "

इति त्रणमित्र दृष्टांतः १४

हवे आठभी स्नी जयश्री जे धनावह शेठनी पुत्री हती ते जंबूकुमारने कहेवा लागी है स्वामी! आ वचनविवाद शो? अमने नवी परणेलीओने आपनी साथे दि करवो गुक्त नथी; परंतु तमे आवी कल्पित वार्ताओं कहेवा वहे अमने शामाटे छे? आपे जे जे कथाओं कही छे ते तमाम कल्पित छे; अने जेवी रीते एक णिनी पुत्रीए कल्पित वार्ताओधी राजातुं मन राजित क्युं इतुं तेवी रीते तमे पण ति वार्ताओधी अमारुं मन रंजन करों छो. ते समये सर्व स्त्रीओए क्युं के ज्यश्री! ते कथा कहे के जे सांभूळीने आपणो पियतम घरमां रहे. ' जयश्री हे के सावधान थड़ने सांभळी—

घेर आह्या. ते बस्ते मारां माताणिता है नमां परां एतां हो हो हों। विस्ति स्नान भोजन आदियों तेने चित रंता परी. एवंत मां, चित्रत रंग कामज्ञ का विद्या तेने चित्र रंता परी. एवंत मां, चित्रत रंग कामज्ञ व्या अति पीडित थया. ते पर्त्म चप्र देते मतो पोताचे जंग मरहे हैं, बालां बचनो बोले हे, अने नारेनारे मामा तरफ उपि परे हो, में तेनो अभिष्य एटले में हैने कहां के—' हे स्वामी! उतार न करो. पाणियळण दिना विपार्थ यतं नथी. घणो भृरयो माणस शुं वे हाये साना लागे हो? माटे हमणां योग्य नथी.' एवं मार्च वाच्य सांभलीने घणाज नाभात्र थरोला मारा पितने शुळ उत्पन्न थयुं, अने ते ब्याधिथी ते मरण पास्मी. हेने मे मारा प्रानी अं दिधो. ते बात कोइए जाणी नहि. मारां मातापिताण पण ते बात जाणी राजन! मारी अनुभवेली आ वार्ता में पहेलों हो.' ते बार्ता सांभलीने माना ययो अने ते बन्या पोताने घरे आवी. जब्शी बहे हे के—' हवी मी वार्ताथी ते विमष्ठिण राजानुं मजनवन वर्यु तेर्धा रीते तमे पण अमारा मह करो छो, परंतु ए महात्ति विध्या हो; माटे हो माणस विचारीने पगलं प्राणसनी छाज रहे छे. तेथी हे स्वामी! भोगो भोगवी पछी चारित्र ग्रहण पोतानो अर्थ साधवी जिन्न हो."

इति ब्राह्मण्युत्री दृष्टांत १५

ए मगाणे जयश्रीतुं वाक्य सांभळीने जंबकुमारे कहां —'हे जयश्री! मं तुर थयेला माणीओ अधर्ममां धर्मबुद्धि मानी विषयोने स्थापित करी कर्में परंतु ए विषयो घणाज खराव परिणामवाला छे. विषथी पण विषयो आं खरेखरुं छे. कारणके विषयो ता मरेलाने पण मारे छे. कहां छे के—

भिक्षाशनं तद्धि नीरसमेकवारं शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रं। वस्त्रं च जीर्णशतखंडमयी च कंथा हाहा तथापि विषया न परित्यजन्ति॥

" खावामां भिक्षानुं भोजन-ते पण नीरस अने एकवार, सुवामां मात्र जनमां मात्र पोतानोज देह अने छुगडामां जीर्ण अने तहन फाटेली स्यितिवाळा माणसने पण हा हा इति खेदे ! विषयो छोडता नथी." तेथे जो जन्म, जरा, मरण, रोग, वियोग ने शोक आदि शत्रुओ मारी समी

हुं तमारी साथे भोग भोग छुं. ते शिवाय जो तमे मने वळारकारे घरमां राखशो तो तेग आदिथी रक्षण करवामां तमारी जाति छे? त्यारेक्षीओए कतुं के हे स्वामिन! समये कोण होष के जे संसारियतिने अहरावी शके ? त्यारे जंबुड़मारे कहुं तमय काण धाय का जा ततारार्याण महिली भूरेली अने मोहती कुंडी ह्या के मां हु भातिवाळो थतो नथी. कारणके ह्वीओनो जन्म अनंती पापनी

_{अणंता पापरासीओ,} जया उद्यमागया । त्या इध्यीतणं पतं, सम्मं जाणाहि गोयमा ॥ गौतम! अनंती पापनी राशिओं ज्यारे उदयमां आवे छे त्यारे स्वीपणं

हि एम वरावर जाणजे " वहीं कहाँ है के--द्रीने हरते चित्रं स्पर्शने हरते वलं ।

पट्यम थतां चित्रमे हरे हो, स्पर्ध थतां बळने हरे हो, संगम थतां वीर्यने हरे हो-अट्यम थतां चित्रमे हरे हो, स्पर्ध थतां बळने हरे हो, संगम थतां वीर्यने हरे हो-रिते नारी साक्षात् राक्षती है " माटे हु छितांगकुमारनी मेठे मोहमां निमम हो नथी, के लेथी अपित्र वस्तुना क्वा हव आ मवक्रपनी अंदर पहुं. श्वारे ा नया, क जया अपावत्र वस्तुना क्वा क्वा क्वा क्वा हतो ? के जेने आपे उपनय - न्युं के हे स्वामित्! हाहितांगड़मार कोण हतो ?

गुर नगरमां 'श्वतपमा' नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने 'रूपवती' नामे हती. ते घणी रूपवती, योवन आदि गुणोधी युक्त अने मोहराजानी राजधानी शति मोहम हती. ते राजाने घणी वहां ही हती पूर्व व्यभिवारिणी हती. एक ते रूपवती राणी वारीमां वेसी नगरकोत्तक जोती हतीः ते समये (हाहितांग) मा अति रूपवान युनकने मार्ग जतां तेण जोषो. तेषुं रूप जोह मोह उत्पन्न थवायो आते कामात्र यह गह, तेथा तेणे हासीने कहीं के अरे ! हं आ अवकते अहीं , , ---्राणीना मकाने प्यारोः ते पण विषय रूपी भिक्षाने माटे महकनार न्यभि तिथी ते राणीना महेलमां गयो लिलतांगने जोइ हावभाव विलास आहिने ों, आळस मरहती, हस्तना मूळ भागने वतावती अने नाभिमंडळने वहरहित

राणीए तेना मनने वश्च क्युं, क्लुं छे के-

स्त्री कांतं वीक्ष्य नाभि प्रकटयित मुहुविक्षिपंति कटाक्षान्, दोर्मूलं द्रीयन्ती रचयित कुसुमापीडमुक्षिप्तपाणिः रोमांचस्वेदजृंभाः श्रयति कुचतटं स्त्रंसिवस्त्रं विधते, सोव्लंटं विक्त नीवीं शिथिलयित द्रात्योष्टमंगं मनिक्त ॥

"स्री पोताना पियपुरुपने जोइ वारंवार नाभि वतावे छे, कटाक्षी फेंके हैं।
मूळ वतावे छे, हाथ उंचा करी फामदेवने उत्पन्न करे छे, रोमांच, स्वेद अने
धारण करे छे, जेना उपस्थी वस्न खसी जाय छे एवा स्तनोने देखाढे छे,
योछे छे, वस्रग्रंथीने शिथिल करे छे, ओएने डसे छे अने अंगने भांगे हे.

तेनुं तेनुं स्वरूप जोइ कामथी उछळता अंगवाळा छाळितांग तेनो साथे भोग ववा लाग्यो; विषयथी चेतना हराइ जवाथी तेणे निःशंकपणे तेनी साथे भोग में तेवामां ते राणीनो पति राजा आच्यो. ते समये वारणा पासे उभेळो दासीता राजानुं आगमन सांभळीने भयथी विष्ठळ बनेळी राणीए ते लिळतांगने अविश्व यो भरेळा ज्वानी अंदर उतायों; अने आवेळा राजानी साथे हास्यविनोद कि पार्ता फरवा छागी.

सम्यक्त ने जील रूप वे तुंबढांबढे आ भवसमुद्र झुँखें तरी शकाय छें। तेवा वे धारण फरनारो जंबूकुगार सी रूपी नदीमां वे.म बुढे ? "

इति ललितांग दृष्टांत १६.

ए ममाणे जंब्कुमारे घणो अपदेश दीघो. एम परस्परंना उत्तर मत्युत्तरमां रात्रि.
त यह. एटले सीओ पण वैराग्यरसंथी पूर्ण थह गह. तेमेणे फंह्यं के-'हे स्वामी ।ळवां ते दुष्कर छे, वाकी आ वैराग्यरस तो अनुपम छे. जेओए आ वैराग्यरसने रीने सेवेला हे तेओए मुक्तिपद अलंकृतं करेलं छे.'ए ममाणे कहेवा वढे स्ती- जंब्कुमारमुं वचन मान्य कर्युं.

तं समये प्रभवे कतुं के — " मारुं पण मोहं भाग्य के में चार छतां पण आवी पनो वार्ता सांभळी. आ विषयंना अभिलाप महा विषम छे. विषयरांग तजवो हुएकर छे. जेणे युवावस्थामां पण इंन्द्रियोने वश करी छोधा छे एवा तमने धन्य " जंय्कुमारे पण तेनो उद्धार करवा माटे तेने घणो धर्मीपदेश आप्या. एटले एक थइ मभव चारे कतुं के—' तमे मारां उपर घणो उपकार कर्यो छे. हुं पण । साथे बत ग्रहण करीश. '

अनुक्रमे मातःकाळ थयो, एटछे कोणिक राजाए तमाम हकीकत सांभळी; पछी । जंब्कुमारने गृहवासे राखवा माटे वह उपायो कर्या, पण जंब्कुमारे मनमां कर्या नहि. पछी सवारमां मोटा उत्साह पूर्वक साते क्षेत्रमां पुष्कळ द्रव्य वापरी कि राजाए कर्यो छे दीक्षामहोत्सव जेमनो एवा मभवं आदि पांचसे चोरो,पे।तानां पिता, आठे सीओ अने तेओनां मातापितां सहित जंब्कुमारें श्री सुंधंमी स्वामी चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे द्रादशांगीनुं अध्ययन करी, चौदं पूर्वधारी थइ, चार मात करी श्री सुधमी स्वामीनी पाटना भूपण रूप थया, त्यार पछी घातिकंमनो करी, केवळक्षान मेळवी मोहमपदने पाम्या.

धन्योऽयं सुरराजराजिमहितः श्रीजंबूनोमामुनि। स्तारुण्येऽपि पवित्ररूपकलिते योनिर्जिगाय स्मरम्।

त्यक्त्वा मोहिनवंधनं निजवधूसंवंधमत्याद्रान्

पुक्तिस्त्रीवरसंगमोद्भवसुखं छेभे मुदा शाश्वितम् ॥

"अनेक इंद्रोधी पूजायेल श्री जंबू नॉमॅना मुनिने पन्य छैं। कॉर्रणके तैमिणे स्वाळी युवावस्थामां पण कामदेवने जीत्यों अने मोहनी मुळ कारणभूत एवा

07

निज वधूना संवंधने पण छोडी दइ अति आदरथी मुक्ति रूपी सीना श्रेष्ठ सं उत्पन्न थयेला शायत मुख (गोक्ष) ने हर्पपूर्वक मेळव्युं. "

ए प्रमाणे जंबुकुमार जेवा पुरुषो क्षणभंगुर विषयसुखोने छोडी दह शा^{धत} मां रमण करे छे अने तेमनी मतीतिथी प्रभव जेवा सुलभवोधी जीवो पण संसार तरवाने शक्तिवान थाय छे. ए प्रमाणे साडत्रीशमी गाथानो संबंध जाणवो.

इति जंबूकुमार चरित्र,

दीसंति परमघोरावि, पवरधम्मप्पनावपडिबुद्धा । जैह सो चिलाइँपुत्तो, पडिबुद्धो सुसुमाणाए ॥ ३०॥

अर्थः-" परमधोर, मबर रोद्रध्यानयुक्त एवा पण घणा माणीओ पवर-एवो जे धर्मनो गभाव तेथी मितवोध पामेला देखाय छे. जेम सुसमाना हुछोर चिलातीपुत्र मितवोध पाम्यो तेम." ३८.

अर्हपूर्शनना महात्म्यथी मिथ्यात्व निद्रा दूर जवाने लीघे धनावह शेठनी है पुत्र, अतिरीद्र कर्मनो करनारो चिळातीपुत्र मतिबोध पाम्या. तेतुं हण्डांत आप चिलातीपुत्रकथा.

मथम थोउँ चिलातीपुत्रना पूर्वभवतुं स्वरूप कहे छे.

सितिपतिष्ठित नगरमां 'यहदेव,' नामे बाह्मण वसतो हतो, ते कात्म, तर्फ अने मिमांसादि शास्त्रोना निवारमां घणो चतुर हतो अने शामोनो पारगामी हतो. तेणे एवो मितहा करी हती के 'जे मने वाद निवार हों हिएय थाउं. 'ए मगाणे मितिहाने धारण करनार यहदेवे बादमें मितहाने जीत्या. एक दिवस एक नाना साधुए तेने जीती छोधो. एर मितह ने यहदेवे ने शुद्धक पासे दोक्षा छोधो अने भावयुक्त थर् ब्रव लाग्यो; पांतु जानिगुणने छोधे ते देहवस्य आदिनी मिलनता रूप परीसार्व, हो. ने सिवारे हे के 'अरे! आ मार्गमां सर्व सार्क हो परंतु स्नान अनाय हो ने मोट जुगुणाम्यान हो. 'ए मगाणे मलपरीसहने सहत् के अराज एक परा चारियभंगना भयथी ते स्नान आदि वहे देहादिनी शुद्धि कार्त

मणा ३८-शंकप्रामय । गुममातान-उदाहरणे.

्र एक दिवसे एपवासना पारणे भिक्षामाटे भटकतां कपोतरित्ताना न्याये पोतानी ने घेर गयो. त्यां मोह रूप पिशाचथी ग्रस्त थयेली ते स्त्रीए पूर्व स्नेहना वशयी करूपमां रहेला पोताना पितने कामण कर्छे. ते कामणथी मुनि शरीरे अति क्षीण ।। केटलेक दिवसे ते विहार करवामां पण अशक्त थइ गया, तेथी अनशन ग्रहण ।। कालधर्मने प्राप्त थइ स्वर्गमां देव थया.

पेली स्रोप मुनिरूपमां रहेला पोताना पतिनी मरणवार्ता सांभली, तेथी ते शासाप करवा शामी वे-'अरे! मने धिकार छे! पतिने मारवाथी मने मोढुं पाप गर्ये. साधुनी हत्या करनार मने नरकमां पण स्थान निह मले. तेथी अञ्चरण थिंही मने तेनो वेषल शरण रूप छे.'ए प्रमाणे वैराग्यपरायण यह तेणे चारित्र ण कर्युं अने अतिलग्न तप वर्यु. पूर्वकृत पापनी सारी रीते आलोचना ग्रहण करी काल चारित्र पालीने ते स्वर्गे गइ.

वीजा भवमां यहदेव ब्राह्मणनो जीव देवलोकथी च्यवीने चारित्रनी जुगुतथी वाधेला नीच गोत्रवहे राजगृह नगरमां 'घनावह' कोठने घेर 'चिलाती' नामनी
तीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनु नाम 'चिलातीपुत्र' पाडवामां आच्युं. तेनी
तो जीव देवलोवशी च्यवीने तेज कोठने घेर कोठनी स्त्री भद्रानी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न
तो जीव देवलोवशी च्यवीने तेज कोठने घेर कोठनी स्त्री भद्रानी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न
तो के माणथी पण अति वहाली थह. एक वस्तत ते चिलातीपुत्रने तेनी साथे कुचेष्टा
तो जोइने ते कन्यानां मातापिताए विचार्युं के ''आ दासीपुत्रव्यसनी, मद्यपानमां
तो जोइने ते कन्यानां मातापिताए विचार्युं के ''आ दासीपुत्रव्यसनी, मद्यपानमां
तो को कि कि अस्त्रोत्त होवाथी घरमां राखवा योग्य नथी. ' एम विचारी तेने घरतो को मूक्यो. ते चोरनी पाल (चोरलोकोने वसवातुं स्थान) मां जइ चोरोमां
तो गया. तेओए तेने साहसिक जाणीने पल्लीपित नीम्यो. ते पाप करवामां अति
वालो हे।वाथी जीवोनो वध करवामां पाले हठतो नथी.

कि दिवसे तेणे चारोने एकटा करी कहुं के—' चालो आपणे धनावह शेटने घेर करवा जइए; पण धन मळे ते तमाहं ने सिसमा कन्या मारी.' ते चोरोए उ कर्यु. पछो घणा चोरोने एकटा करीने ते राजगृह नगरमां धनावह शेटने घेर यो. तेओए शेटनुं घर छुट्युं. चिलातीपुत्रे कन्याने ग्रहण करी अने बीजा चारोए ळ धन लोधु. पछी सर्व पाछा फर्या.:त्यारपछो धनावह शेटे व्म पाडी; एटछे ट योधाओना समृह सिहत दुर्गपाल चेरोनो पाछळ दोडचो. शेट पण पुत्र पिर-सिहत दुर्गपालनी साथे दोडचो. ते चेरोनो पण घणा लेको पछवाडे लागवायी अने

अन्यदा भगवान श्री अरिष्टनेमी अहार हजार साधुश्रोथी परिवृत्त यह दूरिकी पुरीना मोटा उद्यानमां समवसर्या. तेमने वांदवाने माटे कुण्ण वासुदेव हंहण कुमा सहित नीकळ्या. वांदीने योग्य स्थाने वेठा. एटछे प्रमुण कुमतरूप अंधकारने द्र करनारी, पतित जनोनो 'उद्धार करनारी, अमृतना नियरणा जेवी, गोह महने नाश फरनारी, सर्व ननने आनंद आपनारी, माछव कोशिक रागनी अनुवाद की नारी अने समग्र मछेशने नष्ट फरनारी देशना आपवी शरु करी. ते सांभळतां ' हैं?' हुमारतं मन वैराग्यरसयी व्याप्त थड जवाने लीवे तेणे श्री नेमिनाथ स्वामी पारे बारित्र ग्रहण कर्यु. वारित्र ग्रहण कर्या पछी ते द्वारिकापुरीमां मिक्षार्थे फरे हो, वर्र कृष्ण नामुदेवना पुत्र तरीके तेमज श्री नेमिनाथ स्वामीना शिष्य तरीके मिदि छ पण तेने शुद्ध भिक्षा मळती नथी अने अशुद्ध भिक्षा ते ग्रहण करता नथी. त्रा भी नेपिश्वर भगवाने तेने कशू के-'हे ढंढण! ते पूर्वभवमां वांबेलुं अतराय क उदयमानमा भावेन्द्र हो, तेथी तने शुद्ध आहार मळतो नथी; माटे बीजा मुनि भाणेका आहार प्रहण कर.' त्यारे हाथ जोडी ते ढंढण ग्रुमारे कत् के-' हे त्रिली नाग ! ज्यारे मार्ग अंतराय कर्म क्षय पामशे त्यारेज मारी पोतानी लिखियी में भूद भारार में ग्रहण करीन, गीनाए लावेलो आहार ग्रहण करवो पने जवित न्यी भा मनाने पर्ताने नेले तेनो अभिग्रह स्वामीनी साक्षीए लीघो. पत्री मितिरिंग भएदावृद्ध एने निक्षार्थ फरे छे, प्रांतु तेने शुद्ध भाहार मळतो नथी. तेथी ते व अने धुरा गरन करे है. आ मगाणे तेने केंद्रलोक काल व्यतीत थये।

 ।इने चितन्धुं के भारते ! आ मुनि महानुभाव देखायू छे, जेथी गृहा समृद्धि-न कृष्ण आदि राजाशो पग तेमना चरगरमलमां पहे छे. माटे मारे तेमने शुद दक् व्होरात्रोने लाभ छेवो. तेमने व्होरावत्रायो मने मोडुं प्राय थरो. 'आ ममाणे चारीने ढढग म्रिनने पोताने घरे तेडी छावो तेणे बहुमावया मोद्द न्होराज्या.

हंडण मुनिए भगवाननो मुनीये अशीने पूज्यु के-'हे भगवन्! मारुं अंतराय आजे नष्ट थयुं ? 'भगवाने कह्यु के- 'हे मुनि ! इजु ते नष्ट थयुं नथा ' ढढण निए पूछ्युं के-'हे स्वामिन्! त्यारे आजे मने भिक्षानी लाभ केम थयो ?'स्वा-ए कहा के-'कृष्ण वासुदेवनो लिबियो तने आ आहार मळेलो छे, पण अंतरा-हमेंना क्षयथो उत्पन्न थयेलो तमारी लिब्बा मळेलो नथी. ' आ प्रमाणेनां भगवा-नां वचन सांभळीने ढंढण मुनि ते आहारने शुद्ध भूभिमां परठववाने गया. त्यां इ अने अतिशुद्ध अध्यवसायथो पवल शुक्त ध्यानरूपी अधिवढे कर्परूपी इंब-वाळी दइ पोतानां पूर्वकृत कमीनो समूह होयनी तेम मोदकने चूर्ण करतां तां तेमने केवलकान उत्पन्न थयुं. ते बखते देवोए दुंदुभि बगाडी चारे तरफ जय र गृब्द् कर्यो अने कृष्ण आदि सर्व भन्य जना खुशी थया. घणा काळ सुधी ख्बीपणे विहार करीने मांत ढंढण मुनिए मुक्ति माप्त करी. आ ममाणे अन्य ात्माए पण वर्तेवुं.

इति इंडण म्रानि कथा. आहारेस सुहेसुअ; रम्मावसहेस काणणेस च साहूण नाहिगारो; अहिगारो धम्मकज्जेस ॥ ४०॥

अर्थ—'' श्रम एवा आहारने विषे, रम्य एवा उपाश्रयने विषे अने (विचित्र ।।) उमान-वागवगीचाने विषे साधुने अधिकार (आसक्तपणुं) नथी; निर्भव होवाथो. तेओने तो मात्र धर्मकार्यमां अधिकार छे: मुनिने इंद्रियोने मुखकारी अ पदार्थीमां आसक्ति होती नथी." ४०

साहू कांतार महाभएंसु, अवि जणवएवि मुइंयम्मि । अवि ते सरीरपीडं, सहंति ने लहाति ये विरुद्धम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—" अटबीमां के राज्यविष्ठवादि महा भयमां पण मुनि ऋदिवाळा रूपद्रव जनपदमां होय तेम निर्भयपणे वर्ते छे. वळी ते मुनिओ शरीरनी पीडाने हन करे छे पण विरुद्ध वस्तु ग्रहण करता नथी." ४१, अर्थात् मुनि गमे तेवा

गाथा ४०-रम्या आवसवा=उपाश्रया गाया ४१-कंतार. मुद्दअंभि नयलंतिज्ञ

अन्यदा भगवान श्री अस्तिनेमी अदार हनार साथ गोणी पांच्यन यह द्वारा पुरीना मोटा उद्यानमां समवसर्याः तेमने बांदराने माटे 'कल्म राम्हेर हंदम कुमा सहित नीकळ्या. वांदीने योग्य स्थाने वेडा. एटडे प्रमुप ज्यावरण अंग्राहे द्र करनारी, पतित जनोनो । उद्धार करनारी, अमृतना निप्रमणा जेपी, मोर महत नाश फर्नारी, सर्व ननने आनंद आपनारी, माछव होशिक रागनी अनुवाद का नारी अने समग्र पछेशने नष्ट फरनारी देशना आपवी शरु तरी, ते गांगळतां 'हैं। हुमारतुं मन वैराग्यरसयी व्याप्त यह जवाने लीवे नेणे श्री नेमिनाय ररामी पाने चारित्र ग्रहण कर्यु, चारित्र ग्रहण कर्या पछी ने द्वारिकापुरीमां गिथार्थ फरे हे, पा कृष्ण बास्रदेवना पुत्र तरीके तेमज श्री नेमिनाय स्वामीना जिप्य नरीके मसिद अ पण तेने शुद्ध भिक्षा मळती नथी अने अशुद्ध भिक्षा ने ग्रहण करता नथी. एक श्री नैमिश्वर भगवाने तेने कशु के-'हे ढंढण! ते पूर्वभवमां वांबेल्ड अवराय क खद्यभावमा आवेलुं हो, तथी तने शुद्ध आहार मळतो नथी; माटे बीजा मुनि आणेळें। आहार ग्रहण कर.' त्यारे हाथ जोडी ते ढंढण गुमारे कण के-' हे तिलंड नाथ! ज्यारे मारुं अंतराय कर्म क्षय पामदो त्यारेज मारी पोतानी लिव्ययी महेन शुद्ध आहार हुं ग्रहण करीश, बीनाए छावेछो आहार ग्रहण करवो मने उचित न्यी आ ममाणे ऋहीने तेणे तेवो अभिग्रह स्वामीनी साक्षीए छीथो. पछी प्रतिहिं अन्याकुळ मने मिक्षार्थे फरे छे, परंतु तेने शुद्ध आहार मळतो नथी. तेथी ते हैं अने श्रुपा सहन फरे छे. आ ममाणे तेने केटलोक काळ व्यतीत थया.

एक दिवस नेमीश्वर भगवानने बांदवाने माटे छुटण वासुदेव आव्या. में बांदोने छुटण वासुदेवे पूछयुं के—' आपना अहार हजार साधुओमां दृटकर कार्य के नारो कयो साधु छे?' ते वलते भगवाने कयुं के—' हुटकर करनार तो सर्व साधुओं पण तेमां ढंडण सुनि विशेष छे.' वासुदेवे कयुं के—' हे भगवन् ! कया गुणथी ते विशे छे?' त्यारे भगवाने तेनो सर्व अभिग्रह कयो. ते सांभळी आति हपित यह कृटण वंहि के—'ते घन्य एवा ढंडण सुनि वयां छे? तेने वांदवानी मने तीव इच्छा यह छे भी वाने कथुं के—' भिलार्थ शहरमां गयेळा छे, ते तपने सामाज मळ्जे, पछी सार्य वांदीने हारिकापुरीमां पाळा आवतां गर्जेद उपर आरूड थयेळा छुटले ढंडण सुनि वांदीने हारिकापुरीमां पाळा आवतां गर्जेद उपर आरूड थयेळा छुटले ढंडण सुनि वांदीने हारिकापुरीमां पाळा आवतां गर्जेद उपर आरूड थयेळा छुटले ढंडण सुनि वांदीने हारिकापुरीमां पाळा आवतां गर्जेद उपर आरूड थयेळा छुटले ढंडण सुनि वांदीने हारिकापुरीमां पाळा आवतां गर्जेद उपर आरूड थयेळा छुटले ढंडण सुनि वांचा अने कयु के—' हे सुनि! तपने घन्य छे! तमे सुनि शास्त्रो छो. आते भाग्य शिवाय तमारा दर्शन थवा सुळम नथी.' ते समये सोळ हे राजाओ पण ते मुनिना घरणमां परचा. ते वखते वारीमां वेठेळा एक विश्वे

तोइने चिंतन्युं के 'अहो ! आ मुनि महानुभाव देखाय छे, जेथी महा समृद्धि-ान कृष्ण आढि राजाशो पण तेमना चरगरूमलमा पढे छे. माटे मारे तेमने शुद्ध ोदक व्होरात्रोने लाम छेवो. तेमने व्होराववायो मने मोडु पुण्य थहो. ' आ ममाणे वेचारीने इहम मुनिने पोताने घरे तेडी छात्रो तेणे बहुमात्र्या मोद र ब्होराब्या.

टंढण मुनिए भगवाननां समीपे अशीने पूज्य के-'हे भगवन्! मारुं अंतराय र्भ आजे नष्ट थयु ? 'भगवाने कत् के-' हे मुनि ! हजु ते नष्ट थयुं नथी ' दहण िए पूछ्युं के-' हे स्वामिन्! त्यारे आजे मने भिक्षानो लाभ केन थयों?'स्वा-ीए कहा के-'कृष्ण वासुदेवनो लिब्बियो तने आ आहार मळेलो छे, पण अंतरा-किमेना क्षयथो उत्पन्न थयेलो तपारी लिन्ययो मळेला नथी. ' आ प्रपाणेनां भगवा-ानां वचन सांभळीने ढंढण मुनि ते आहारने शुद्ध भूमिमां परठववाने गया. त्यां द अने अतिशुद्ध अध्यवसाययो मवल शुक्त ध्यानरूपी अग्निवहे कर्मरूपी इंध-ने वाळी दइ पोतानां पूर्वकृत कर्मीनो समृह होयनी तेम मोदकने चूर्ण करतां रतां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते बखते देवीए दुंदुभि वगाडी चारे तरफ जय य शब्द कर्यो अने ऋष्ण आदि सर्व भव्य जनो खुशी थया. घणा काळ सुधी विद्योपणे विहार करीने मांत ढेंढण मुनिए मुक्ति माप्त करी. आ मगाणे अन्य हात्माए पण वर्तवं.

इति दंदण मिन कथा. आह्रारेसु सहेसुअ; रम्मावसहेसु काणणेसु च साहूण नाहिगारो; अहिगारो धम्मकडजेसु ॥ ४०॥

अर्थ—" भ्रम एवा आहारने विषे, रम्य एवा उपाश्रयने विषे अने (विचित्र वा) उमान-वागवगोचाने विषे साधुने अधिकार (आसक्तपणुं) नथो; निभेन्त होवाथो. तेओने तो मात्र धर्मकार्यमां अधिकार छेः म्रुनिने इंद्रियोने मुखकारी ाह्य पदार्थीमां आसक्ति होती नधी." ४०

साहू कांतार महाभएंसु, अवि जणवएवि सुईयम्मि । अवि ते सरीरपीडं, सहंति ने लहेंति ये विरुद्धम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-- अटबीमां के राज्यविष्ठवादि महा भयमां पण ग्रुनि ऋदिवाळा विष्यद्व जनपदमां होय तेम निर्भयपणे वर्ते छे. वळी ते ग्रुनिशो शरीरनी पीड्राने हन करे छे पण विरुद्ध वस्तु ग्रहण करता नथी. " ४१, अर्थात् मुनि गमे तेवा

> गाथा ४०-रम्या आयसंया=उपाश्रया गाथा ४१-कंतार. मुद्दक्षमिः नयलंतिमः

फरनारा छा, मुखथी न कहैवाच एवा स्त्रीना गृहा स्थानना मर्दन करनारा हो? उत्तम पकारना ज्ञानथी दूर करायेला छो, माटे हंज मुपात्र छुं तमारा भागवीर तमारा यहमंडपमां आवेलो छु; माटे मने शुद्ध अन आपा. " एवां वाक्योवि स्कार करायेळा बाह्मणो ते मुनिने मारवा तैयार थया. तेओए लाकडी अने मी मुनिने केटलाक महारा कर्या. एटले रुष्टमान थयेला यक्षे ते ब्रह्मणा ने पहा **ग्रुखमांथी रुपीर वमता करी दीघा, अने शरीरना सां**शा शिथिल करी नाह्य तेओ पृथ्वी उपर पड्या. मोटो कोलाइल थड़ गये।, एटले सवला त्वां एक कोलाइल सांभलीने सुभद्रा राजकन्या पण वहार नीकली. तेणे मुनिने जीय तर्त ओळख्या. पछी भयथी विद्वल वनी जइने नेणे रुद्रदेव विगेरेने क्तुं के दुई दिवाळाओ ! आ मुनिने पीडशो तो यममंदिरमां पहेंची जशो. आ ते। नि पूजेला महा मभाववाला तपस्त्री सुनि छे, में पूर्व तेमने चलित करवा मा यत्न क्यों हतो; परंतु ते जरा पग ध्यानयो चलित थयां नहोता. माटे अ धन्य छे धन्य छे. 'एम बोलतो सुपदा मुनिना चरममां पडी अने कर्तु क्रपासिंधु ! हे जगत्वंधु ! मारा आग्रहयो आ मूच लो हो ग करेला अपरा करी. ' मुनिए कतुं के-" मुनिने कोप करवाना अवकाश नथी. कारगके की अनर्धकारी छे. क्युं छे के-

जं अन्त्रियं चिरत्तं, देसूणाए य पुटवकोडी ए। तंपिअ कसायमित्तो, हारेइ नरो मुहुत्तेण ॥

" देशे उणा कोट पूर्व पर्यंत जे चारित्र पाळयु होय तेने पण प्राणी ए मात्र कपाय करवाथी हार्रा जाय हो. "

माटे साधुने कीप कर्ती योग्यन नथी. तेथी ते कीप करेन निंह, पान पर कीर करनार यक्षने नमें मसदा करो." मुनिना कहेवाथी ब्राह्मणीए ते यह पर्यो, परणे ते सब ब्राह्मणी साना थया. पछी तेओ यबक्रम छोटी हुई चरणमां पट्या अने शृद्ध अन्तवटे मुनिने पटिडास्था. ते बस्वते न्यां पन हिं थया. ते लेट 'आ शृं?' एम बोडनां कुतुरळ जावा माटे घमा लोको ए हिं सहार एए ए हरीबन जामीने न्यां जात्यो. सचलाओं मुपाब दाननी प्रशं सावा करें छे के-

हैयाजे स्याद्दिगुणं वित्तं, हयवसाये स्याञ्चतुर्गुगम् । हेन्त्रे शतगुणं प्रोक्तं, पानेऽनंतगुणं तथा ॥ १ ॥ " न्यानमां धन वमणं थाय छे, न्यापारमां धन चोगणं थाय छे, क्षेत्रमां बाव-सेागणं धाय छे, अने सत्पात्रने आपवाधी अनंतगणं थाय छे. " वळी—

सिथ्यादृष्टिसहस्रेषु, वरमेकोह्यणुत्रती । अणुत्रतिसहस्रेषु, वरमेको महात्रती ॥ २॥ महात्रतिसहस्रेषु, वरमेको हि तात्विकः ।

तात्विकस्य समं पात्रं, न जूतं न भविष्यति ॥ ३ ॥
" इनार मिध्यात्वीओ करतां एक श्रावक व्रतथारी वधारे श्रेष्ट छे, इनार श्रावक
ारीओ करतां एक महाव्रती (साधु) वधारे श्रेष्ठ छे; इनार महाव्रतीओ करतां
तत्त्ववेत्ता मुनि (गणधर महाराना) वधारे श्रेष्ठ छे, एवा तात्विक मुनिनो वो करनारुं पात्र वीजं कोइ थयुं नयो अने थशे पण नहि."

माटे आ जैन साधुने दान देवुं ए धन्य छे. पड़ो त्यां मुनिए देशना आपी. माणसा मुनिनो देशनाथी प्रतिबोध पाम्या अने सघडा ब्राह्मणो पण कथया.

हरिकेशि मुनि शुद्ध त्रत आराथी केवलहान पामीने मोक्षे गया. माटे कुळतुं । नय नथी, पण गुणोतुंज पाधान्य छे; गुण न होय तो कुळ कंइ करी शकतुं नथी. । आ आत्मा नटनी माफ क नयां नवां रूप धारण करी सम्रार्मा परावर्तन कर्या छे (अनेक देह धारण करे छे). माटे कुळाभिमाननो अवकाशन क्यां छे ? आ कितने त्रण गाथा वहे स्पष्ट करे छे—

देवो नेरइउत्तिय, कीड पर्यंग्रित माणुसीवेसो ॥ रूबस्सीछा विरूवो, सुद्दुनागी दुख्खभागीछा ॥ ४५ ॥ राजतिय दमगृत्तिय, एस सपागृति एस वेयविक ॥ सामी दासो पुन्नो, खलति अधणो धणवहति ॥ ४६ ॥

गाया ४६-स्वपाकश्रंडाल । खलुत्ति.

निव इत्यं कानि नियमों, सकाप मिंगिष्टि समिपक्षित्री अनुस रूववेसी, नहुद्य परिवर्गा, जीवा ॥ ४७॥

अर्थ-" आ जीय देवता यतो, नारकी यतो, को जा जने पतापि गरे। इनि णयो अनेक पकारनो निर्यय थया, मतुष्या नेपाला विवाद प्रवाद विवाद प्रमान निर्यय थया, मतुष्या नेपाला विवाद प्रवाद प्रमान निर्यय थया, मतुष्या पानन थया, दुम्मतो भानन-दुर्व भी वनार प्रण थयो, ४५ राजा थया, द्रमक एटले भित्रक प्रण पया, एन जीव वंड थयो, एज वेदनो जाणनारो पथान जात्मम प्रण थयो, मनापो थतो, सेक थ्योड़ प्रेम प्रमान विवाद थयो, स्वल दुर्जन प्रण थयो, निर्यत थयो, अने धनमान प्रमान होय हो. अन्य प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान होय हो. अन्य प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान होय हो. अन्य प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान होय हो. अन्य प्रमान प्रमान प्रमान होय हो. अन्य प्रमान होता न्यो स्वाद होय ते हिन्द प्रमान होय होय हो प्रमान होया होय होय होता नथो. ते हपर प्रहे हे-

कोंमीसएहिं घणसंचयस्स, गुणसुँत्ररियाए कर्ह्नाए ॥ निव बुँद्धो वयररिसी, अलोभया एस साहूणं ॥ ४५॥

अर्थ-" द्रव्यसपूहना संकड़ो कोडीए सहित आवेली, रूप लावण्याहि भरेली एवी कन्या (अपिरणीता) ने विषे पण वैरक्तिए (वज्र स्वामी मुित) णा नहीं, लुब्ब थया नहीं. आवी अलोभता सर्व साधुओए करवी." ४८. अर्थी निर्लोभी थवुं.

पुष्तळ द्रव्य सहित अत्यंत रूपवंत 'रुक्मिणि' नामनी कन्या वर्झर गुणोधी मोह पामीने तेमने वरवा आव्या छतां वज्रस्तामीए किंवित् पण द्रव् स्त्रीमां न छोभातां तेने उपदेश आपी धर्म पमार्डा चारित्र आप्तुं. आपी निर्होद मुनि महारागण राखवा योग्य छे. अहीं वज्रमुननुं दृष्टांत कहे छे—

गाया ४३-स्यक्षमेथिनिथिदसक्तक्तक्तेष्टः । अत्रन गाया ४८-म् ग्रह्म्

श्री वज्रमानिनुं दृष्टांत.

तंववन गाममां 'धनिगिरि' नामनो एक न्यापारी वसतो हतो. ते अति भद्रिक हतो. 'धुनंदा' नामनी स्त्री हती. तेनो साथे भाग भोगवतां तेणे चगादिवसो मुखयी ति कर्या. एक दिवस वैराग्य उत्पन्न थवाथी धनिगिरिए सगर्भा भार्याने छोडीने गिरि ग्रह पासे चारित्र ग्रहण कर्यु. ते उग्र तप करवा लाग्या; अने ग्रहसेवाना के धह सारणा, वारणा, चोयणा, पिडचोयणा विगेरे प्रहण करवामां कुशळ थया. पाछळ सुनंदाने पुत्र प्रसव थया. ते वस्त्रते, आना पिताए दोक्षा लिघेली छे अने पन्यवाद आपवा लायक मुनि थयेल छे.' एवं ते पुत्र जन्मतांज स्क्जनमुखथी सांभनी मनमां चितन करवा लाग्यो के-' अरे! आ लोको श्रं योले छे? आ दीक्षाधर्म विशेष छे? में कोइ पण वस्त्रत तेनो अनुभव करेलो लागे छे.' ए प्रमाणे ध्यानमां दे थएला ते वालकने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं एटले तेणे पूर्वे अनुभवेलुं चारित्र दें सक्त्य जाण्युं. तेथी संसारथी विरक्त थइने ते विचार करवा लाग्यो के-' आ वि जरा आदिनो दुःखपरंपराथी ल्याप्त एवे। संसारनो विलास क्यां! अने शाक्षत विगे ज्या पत्रा पत्रा पत्रा पत्रा चारित्र धर्मने विषे निवास क्यां! अरे! अनंतीवार भोगव्या श्री पण आजीव विपयोमां तृप्ति पामतो नथी.' कह्युं छे के-

घनेषु जीवितब्येषु, भोगेष्वाहारकर्मसु ।

अतृष्ताः प्राणिनः सर्चे, याता यास्यन्ति यान्ति च ॥ इच्यमां, जीवितन्यमां, भोगमां अने आहारकर्षमां अतृप्त रह्या सताज सर्वे पाणी-ला छे, जज्ञे अने जाय छे."

ही कहुं छे के-

: [

ा न भुक्ता वयमेवभुक्ता—स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

हो न यातो वयमेव याता—स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जोर्णा॥
भोगो भोगवाया नथी पण अमे ज भोगवाया छोए, तप तप्युं नथी, पण अमे
ा छोए, काळ गया नथी पण अमेन गया छोए, अने अमारी तृष्णा जोर्ण यह
ण अमे पोते ज जीर्ण थया छोए." माटे सांसारिक सुखो सुर्लभ छे, परंतु
विरतन परम दुर्लभ छे. कर्षु छे के—

[े] सारणा-संथारी त्रापबुं, वारणा-अशुद्ध भणतां वारवुं, चोयणा-पेरणा करवी, पणा-वारंवार पेरणा करवी इत्यादि.

खुळहो विमाणवासो, एगच्छत्तावि सेइणी सुळहा। इब्लहो पुण जीवाणं, जिणंदवरसासणे वोहि॥

" विमानवासी एटले देवता यनु ते मुलभ छे अने एक उत्र पृथ्वी पण छे. अर्थात चक्रवर्ती यनुं ते मुलभ छे, परंतु जिनेंद्रना श्रेष्ठ शासनमां वोधिवीन ते जीवोने परम दुर्लभ छे."

आ ममाणे विचार करीने ते चाळक पोतानी माताने उद्देग पमाडवा. गाह स्वर्थो रुद्दन करवा छाग्यो भाताए घणा उपायो कर्या, परंतु ते जरा एण मंभ थतो नथी. जी के माता नुं मन तेना पर स्नेहयुक्त हतुं तोपण आयी विकि गयुं, वाळक पण जेम जेम माताचं मन विरक्त थनु जाणवा लाग्यो तेम तेम ते रुदन फरवा लाग्यो. ए प्रवाणे छ मास व्यतीत थया. ए समये श्री भिक्षी मिर त्यां पंधार्याः नगरना लोको तेमने नदन करनाने गयाः गुरुए देशना है। देशनांने अंते सभा वीखराइ जतां धनगिरिए गुरु पासे आवीने भिक्षा माटे व आग्ना आपी. त्यारे गुरुए कहुँ के-' आज गोचरीर्या साचेत्त के अचित जे म समछ ग्रहण करवुं,' ए ममाणे चं गुरु चं वाक्य स्वीकारी ने धनगिरि भिक्षा मार्ट में मां गया. गोचरी माटे फरतां फरतां ते पोतानी स्त्री मुनंदाने घेर आत्रा काभ आप्यो त्यारे सुनंदाए कहां के-'हे स्वामी! आ पुत्रने ग्रहण करी, आ पुत्र पणो सनाप उपनाच्यो हो.' एवं सांभळीने गुरुनं वचन जीमणे स्मृतिमां सांवि एवा धनगिरिए मुनंदाए आपेला पुत्रनी भिक्षा स्वीकारी. बोळीमां पुत्रने हरने व गगीप पाठा आल्या. गुम्म वज्र जेवा ते वालकमां भार जाणीने तेतुं नाम पाटगुं. ने वाठकने मार्वाभोना उपाश्रये सेांच्यो. त्यां घणी श्राविकाओं तेनी यरवा लागी. श्रीमवने पण ने अति भिय थयो त्यां पारणामां मृतां मृतां ने गर्ने जनेक महारनां मिद्धांताना अभ्यास या त्या पारणामा मृता वृत्ता गांवी अभ्यास करती साध्वीओना गृत्वी कायार अंगोनु अन्ययन कर्युः अनुक्रमे ते त्रण वर्षनो थयोः तेनी मार्ग दरकोत आवती हो। ने पुत्रने दिव्य रापाळी जीडने मोहणी मन निक्त की छेडाने आर्था, नेपा छत् का १८ मारो पुत छड जड्या, ' धनिमिरिए कर्तु के । जारिए रहि, रागमें तमें भने आ वाजक नपास डाथशीन अर्पण करों है. ममारो पारपा नाह गया विकास का ना मान नामा हाथशान अपण गरा कार्या प्रमान का नामा का का महिल मानानी को गर्भ करता पर हैं होते बहेते हैं। एवं तकतो है, महि बीत्पातार्ग हैं। बेल कर रूप के बोर्ग के प्राप्त करती है, महि बीत्पातार्ग हैंगी नेता जा पुत्र, पत्रा नवाय दीता लागे छे. 'ते सामलाने सुनंदा जनेक मार्ग

बार्ना चीजो. मुखरी, विचित्र मकारनी आभरणो अने वाळकना चित्रने रंजित प्या ब्रन्तुओं (रमकडांओं) मोहा आगळ मृकीने पुत्रने बोलाववा लागी के-'हे ! या छे, आ छे.' पांनु नेणे ए प्रमाणे बोछतो मातानी सन्मुख पण जोयुं नहि ी ते । दिन्न थइ. पछी धनगिरिए कर्षुं के-'हे वाळक! अमारी पासे नो आ धर्म न (रनोहरण) हे, जो तने पसद पटे ती ने ग्रहण कर.' एवं सांपळी ते बाळक तो सुरु पासे जड धर्मध्वजने माथे चटावी मफुछित नेत्र करीने वृत्य करता छाग्यो। गए कर्ण के-'आ पुत्र गुरुनोज हो.' सर्व छोको से जोडने आधर्य पाम्या के 'अरे! त्रण दर्पना यालकनुं बान तो जुओ। 'पछी सपळा संघना माणसो सुरु सहित 1श्रये आतीने पोतपोताना स्थाने गया.

अनुक्रमे ते बाद्यक आठ वर्षनी धयो पटले गुरुण तेने दीक्षा दीघी. पुत्रना हथी मुन्य थयेन्टी मृतदाए पण चारित प्रहण कर्यु, पछी गुरुए 'आ बालक योग्य ं एम जाणी पोताना स्थाने (आचार्यपदे स्थापित कयी. दश पूर्व जाणनार अने प्रतप वस्तीर एवा इन्नमृतिने पूर्वभवना दित्र फोड देवे वार्वाने वैक्रिय छव्धि अने काशगामिनी विषा आपी.

रकड़ा दिला आहि विनिश्योधी एक्त श्री दलस्वामी पाटलीपुत्र नगर (पटणा)-सा यह यी बांदवाने हारे नगरना लोको आल्या. वज्रस्वामीए पण विद्याना वलयी त्रानुं रुष विशेष करीने धर्मदेशना आषी ने देशनावडे लोकोनां चित्त वहु आक-यां अने परम्पर वोलवा लाग्या के-'अही ! आ गुरमहाराजनो रूपने अनुसरतीज र्णाविलास है !' पछी देशनानी समाप्ति यये कर्व लोको स्वस्थाने गया अने ते बस व्यतीन थयो.

हवे ते नगरमां 'धनावह' नामनो एक भेट वसेछे. तेने 'रुक्मिणी' नाभे घणी दिती पुत्री है, तेणे एक दिवस कोड आर्याना मुखयी वजस्वामीना गुणे। सांभळ्या ा, अने आर्या पण रुक्तिणीनी पासे वारंगर वज्रम्वाभीना गुणोनुं कथन करती इती. ी तेना रूप, स्रावण्य, विद्या विगेरे अतिशयोधी मोहित थड्ने रुनिमणीए मतिज्ञा ो के- वजस्वामी शिवाय अन्यने हुं परणीश नहि.' तेणे पोताना पिताने पण कहुं - 'हु वजस्वाभी शिवाय अन्यने वरवानी नथी. 'आ प्रमाणे केटलोक काळ व्य-व थया पछी बज्रस्वामीनु आगमन मांघळीने धनावह शेठ पुत्री जपरना स्नेहने षे वीजे दिवसे अनेक कोटि रत्नो सहित देवांगनाओनां करतां पण वधारे छंदर ो अने अलंकृत करेली पोतानी पुत्रोने लड्ने भगवान् वन्नस्वानी पासे आव्या. शेठ

हाथ जोडी बोल्या के 'हे भगवन! गाणयी पण पश्चिम नराली एता आ मार्ग हत्या स्त्तराशि सहित पाणिशहण करवा क्या करो.' भगनान न सर्मार्भए कर्युं के 'हे महें आ कन्या गुरुष हो. ते कड पण समजती नथी. अमे तो मक्तिम्यी कन्याना आस्मित्र खडुक्त होवाशी अशुचियी भरेली सीओमां रित पामता नथी. सोनं शरीर मळमूत्र खाण हो. तेने स्पर्ण करती ए पण अनर्थकारी हो. '' कहाँ के के-

वरं ज्वलद्यस्तंनःपरिरंनो विधीयते । न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम्॥

"यडवित छोडाना थांभछाने आर्तिगन करतुं ए वधारे सारुं हे, पण नरका द्वाररूप स्त्रीना जघननं सेवन करतुं सारुं नथी. " माटे आ मोहना निवासरूप भीने देह प्राणीओने पाशरूपज हो. कहां छे के—

श्चावर्तः संशयानामविनयत्तवनं पत्तनं साहसानां दोषाणां सन्निधानं कपटशतसयं क्षेत्रमपत्ययानाम्। स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं सर्वमायाकरंडं स्त्रीयंत्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनामकपाशः॥

" संश्वयोत्तं वमळ, अविनंयतं घर, साहसतं नगर, दोषोनो भंडार, इति कपटथी भरेळ, अविश्वासत्तं क्षेत्र, स्वर्गद्वारतं विद्य, नरकपुरनो दरवाजो, सर्व भक्षार मायानो कंडीयो-एउं आ स्वीरूप यंत्र कोणे सर्ज्यं हशे ? के जे माणीओने विश्व छतां अमृतमय देखातं पाशरूप छे." माटे ब्रह्मचारीओने स्वीनो संगत करवे। यो नथी अने तेनां अंगोपांग पण जीवां योग्य नथी. वळी--

स्नेहं मनोप्तवक्ततं जन्यंति पाव नाजीभुजस्तनविज्रूपणद्शितानि । वस्त्राणि संयमनकेसवियोक्तणानि भूदोपकंपितकटाक्तनिरीक्तणानि ॥

"न्त्री कामदेवथी उत्पन्न थयेला स्नेहने पेदा करेले, हावभावथी भुजा, र विभूपण, रस अने छ्टा करेला केस देखाडेले, तमज भ्रमुटीना आक्षेपथी कंषित क पूर्वक लुए हो." विषयी प्रमा अधिक विषय एवा जो विषयो है वर्णन फरवाथी प्रमा । यहाँ पानन समीवर उपर भाग प्रमालो, वन पत्तथी शुद्ध, सुमति इंसीथी युक्त मंद्र ध्वानम्य मुक्ता । लवा जातका, जह अने संतत्त्वना नकावतने जाणनार अने विभावहं प्रयु प्राप्त होना प्रदार एवा राजहंग तुल्य आत्माने छिपर, प्रजा ने स्वी वहें पूर्ण प्रया अर्थावन सीना देहर्ल्या ह्यमां यसतुं अविन नथी, तेथी जा कि सांहर हानोने योग्य एवं प्राप्ती प्रण गये, हे श्रेष्टी! जो पारा उपर गारी आ न्यानो रासे भेम होय तो ने पोनानो अर्थ साप्ता पर गारा चिन्ने मेल आनंदित के. ए प्रपाणनां श्रीय जन्मामीना प्रयुन मांभलीने ग्रानस्पी बोपक जेने मदीन्त में हे, रप्तपाव अने विभावले स्वयं जेले जाणीने हैं जोने अति हपेयो अपुनल जेनां अपीन मदे हो एवा स्विम्लीए हाथ जोहीने कलुं के हे स्वामी ? आवनां कहेलां वचन माणे वर्षपायो पण हं जनार्थ हुं. पठी पन सांथवाहे तेने जाना प्रापी एडले तेणे जम्मामीनी पासे दोसा प्रध्य करी पने सम्बर्ध मकारे चानित पालीने स्वर्थ गड.

दम पूर्वने धारण फरनार चलस्यामी अनेक भन्य नीयानी उपदेश देवावटे उद्घार मि आट वर्ष गृहर्गपणामां रहीं, नुंबालीश वर्ष गृगसेवामां फाडी, लभीन वर्ष गुग-स्पानको विवर्ग नहानी वर्षमुं आयुष्य पूर्ण कर्ग श्री महावीर स्वामीना निर्वाणधी विक्ता नोरामी वर्ष व्यनीत थया पत्नी देवपणाने मान्न यया.

भारते नाम धर्म रहिवाय के जेमां बाटला वथा मगाववालामां पण आवा मकारती निल्डोंभना होय हो, अन्य जनोए पण यचन्यामीनो पेटे निल्डोंभी यहुं एवा का कथानो जानय हो:

इति वजस्याकी कथा १६.

श्रंते उर पुरचंत बाह्णेहिं, वरसिरिधरेहिं मुनिवतहा । कामेहिं बहुबिहुहिय, ठंदिझाता वि नेच्छंति ॥ ४० ॥

"स्मिणिक ख्रीओ. नगरो, चतुरंगिणी सेना अने हस्ति अधादि वाहनोण करी-ने, ब्राथीएड एटछे प्रधान द्रव्य भंटारे करीने अने यह प्रकारना काम जे पांच इदि-योना विषयो तेणे करीने निमंत्रित कर्णा छतां पण मुनिष्टपभा (मुनिश्रेष्टो) तेने इच्छ-वा नथी." ४९. एओ पोताना चारित्रधर्मनेज इच्छेछे.

वेओ भेखो वसणं खायास किलेस भय विवागो अ ॥ मरणं धम्मर्जांसो खरेई खरथांखो सब्वाई ॥ ५० ॥

गाया ४९-मृणिवसभाः बद्दविहेहिः गाया ५०-विवादः कलदः । अध्यातः

कर्मणो हि प्रधानस्त्रं, किं कुर्वन्ति शुना ग्रहाः। विसप्टद्त्तलग्नोऽपि, रामः प्रत्रजितो वने॥

" कर्मनुंज प्रधानता छे, तेषां शुभ ग्रहो पण शुं करे ? रामने गादीए माटे विश्वष्ट मुनिए मुहूर्त्त आपेलुं हतुं छतां पण ते मुहूर्त्त तेने वनमां जुंडु पहुं

आ प्रमाणे विचारी दुःखगिषत वैराश्यवहे ते मामाना घरमांथी नीकजी फरतो रत्नपुर नगरे गयो. त्यां उपवनना कोइ एक भागमां वखरहित थड़ क्रीढ कामरसथी उन्मत्त थयेछुं. परस्पर गाढ आछिंगनथी जोडायेछुं सीपुरुपतुं जोई नेदिपेण मनमां वहूज खिन्न थयो अने आत्महत्या करवा माटे वनमां गयो. त सिस्थत नामना मुनि मळचा. मुनिए कह्युं वो—हे मुग्ध! आवा अज्ञान मृत्युः शो छाभ थवानो छे ? पूर्वे अनंतीवार विपयादिकना सेवनथी कोइ पण पिसिद्ध थइ नथी; माटे कांइक धर्मकार्य कर के जेथी कार्यसिद्धि थाय. आ फण जेवा भयंकर अने परिणामे अति कह एवा विषयमुखयी शो छाभ हे रोगनो भंडार एवं आ करीर पण अनित्य छे.' कह्युं छे के—

पणकोमी अनस्ति, लख्खा सवनवह सहस्स पंचस्या चुलसी अहिआं निरए, अपद्दाणंमि वाहिओ ॥

''सातमी नरकना अमितप्टान नामना नरकावालमां पांच क्रोट अडस³ नवाणुं हजार पांचर्य ने चोराशी व्याधिओ हे."

तेथी आ अनित्य टेइवटे सारभून एवा धर्मने अंगीकार कर. कार मनुष्यभव अन्यंत दर्छभ छे अने ते धर्म विना व्यर्थ छे. कहुं छे के

नंसारे मानुप्यं सारं, मानुप्यं च कोलिन्यम्। कोलिन्यं धर्मित्वं, धर्मित्वे चापि सद्यत्वम्॥

मंनारमां मनुष्यज्ञनम सारख्य छे, गनुष्यजनममां कुलिनपणुं सार रुलिनपणामां धर्म पालचा ए सारख्य छे अने धर्म पालवामां पण द्यायुक्त सारभ्य छे.'

[?] आ प्रणाणना ज्याधि सत्तागृत सर्व अभिग्मां रहेला होय छे. फर्ज नरपना नाप्योने विधासीयये वर्त छे अने अन्य नीवाने विसासमां वर्तना न प्रमाणनीयना सार्वाण कोट सीमग्य कहेवाय छे नेनी साथे संवंत्र करते भित्रों गणो शकाय छे.

शा ममाणेनी गुरुमहाराजनी अमृत तुल्य देशना सांभळीने विषयतावथी निष्टत तेणे गुरु पासे दीक्षा लीघी, अने उग्रविहारीवणे गुरुनी सेवा करतां विचरवा पा. तेओ छह छहने अंते पारणुं करवा लाग्या अने अत्यंत वैराग्यथी मनने पूर्ण 'दरराज मारे पांचशे साधुओनी वैयावज्ञ करवी' एवी नियम ग्रहण कर्यो. साधुनो विष्तुं मोटुं पुण्य कर्युं हो के—

वेयावचं निययं, करेह उत्तमगुणे घरंताणं । सठवं किर पडिवाई, वेयावद्यं अप्पडिवाई ॥

" उत्तम गुण धारण कर्नाराओनी वैयावश्च निरंतर कर. कारणके सर्व गुण गाति छे अने वैयावश्च गुण अमितवाती छे."

आ ममाणे विचारीने नंदियेण सुनि गाममा आहार पाणी वहोरी लाबी पछी साधुओने अर्पण करीने पारणुं करे छे. आ कारणथी संघनी अंदर तेनी घणी ॥ थर्, एक दिवस सायभे इंद्रे नंदिषेणना नियमनी मशंसा करी, तेने नहि सर्द-वे देवे। नंदिषेणना नियमनी पर्शक्षा करवाने माटे रत्नपुरे आव्या एक देव नगर र उग्रानमां ग्लान मुनिनुं रूप धारण करीने रह्यो, अने वीजो देव मुनिने रूपे नग-अंदर ज्यां निद्षेण मुनि क्रष्टमु पारणु करवा वेसेछे त्यां आव्यो. जेवामां पहेलो (कोळीओ) मुखमां मुके छे तेवामां पेलो साधुवेपवाळो देव त्यां आवीने वोल्यो अरे! निर्देषेग ! मारा गुरु नगरनी वहार उध्यानमां अतिसारना रोगथी पीडा पामेळे तुं वैयावच करनार फहेवाय छे छतां निश्चितपणे भोजन करवा केम वेटो छे ? ' विचन सांभळतांत्र हाथमां छीधेछो ग्रास छोडी दइ आहार उपर वस्र ढांकीने ते [साथे निदिपेण मुनि वहार चाल्या. साधुदेवे कहां के 'अरे! प्रथम देहशुद्धि गाने माटे तुं जळ छइ छे. ' एटले नंदिषेण जळ वहारवा चाल्या. परंतु ते ज्यां जायछे त्यां त्यां अथुद्ध जळ मळे छे तोपण ते खिन्न थता नथी. ए ममाणे आखा रमां वेबार फरतां छतां देवना उपरोधधी तेने शुद्ध जल मलखुं नहि. त्रीजी बार छेवा फरतां ळाभांतराय कर्मना क्षयोपशनी पवलता थवायी अने तपलन्धियो देवे हो 'उपरेश्य निष्टत यतां शुद्ध जळ मळयुं, ते जळ लइने देवमुर्निनी साथे वननी र ग्लान मुनि पासे आव्या. ग्लान मुनिए नंदिपेणने घणां कर्कश वचनो 'कहां, ह नंदियेण पोतानोज दोप जुएछे. मननी अंदर जराये क्रोधयो कछिपत यता नयी. किं के 'हे ज्लान मुनि! मारो अपराध क्षमा करो.' एटर्ल् वोली तेनुं श्रिरीर विडे साफ करी कहां के 'हे स्वामी! आप उपाश्रये पचारो, जेथी आपिय करवा

वरे मगापि प्रमारी शकाय.' दे क्या या गूण के 'दे अंतित । गांग वालवानी शक्ति नथी तथी ते देशी शते आहें त्यारे गांग अति मिलें विवार वे मार्टीने वाल्या. मान्यां ते ने ने ना अप जि इंगा शती श्री अने 'अरे नंदिपेण ! तने विशार ते । का गणके नं ना पाले उनाय में नार्टिक मने वहु कह थाय है.' इत्यादि कर ना पर्या तेनी वह तर्नेना करे ते. पांत्र तो तीवतर शुभ परिणापनाला थया मता नित्ते के 'आ महात्मा केशी शि (निरोगी) थशे.' आम निवारीने ते नो त्या के-'भरे ख्वान मृति ! मार्ह । पिथ्या थाओ. हवे हुं तमने सारी नीते लड़ जड़भें एम वोजना भागल नालवा । पछी देवे विचार कर्यो के 'अहो ! आ मृतिने घटन हे में! तेने अत्यंत खेर । छतां ते जरा पण चिलत थया निह. मार्टे इंद्र ने नान सत्य छे.' आ माणे करी देवमायाने संहरी लड़ दिच्य रूप भागण करीने तोल्यो के-'हे स्वामी ! इं रिते तमारुं वर्णन कर्युं हतुं ते तुंन में जोयुं पित्र आत्मावाला तमने धन्य छे! क्रोधने जीत्यो छे. मारो अपराध क्षमा करो. ' आ प्रमाणे वाग्वार कहीं सुनिना पगमां पड़ी ते देव पोताने स्थाने गयो.

गोशीर्पचंदनथी जेना शरीर उपर छेप करायेळो छे एवा नंदिषेण मुनि स्थाने आव्या. पळो घणा काळ सुधो वैयावच फरी नाना प्रकारना अ पाळ्तां दुष्कर तप कर्सु. वार इजार वर्ष पर्यंत चारित्रधर्म पाळो प्रांत सम्वे सं करीने दर्भना संथारा उपर वेसी चतुर्विध आहारनो त्याग कर्यो. इवे ते सम्वे कोइ मकारना कर्मनो उदय थवाथी पातानुं संसारीपणानुं दुर्भाग्य याद करी मुनिए एवं नियाणुं कर्सु के 'आ तपचारिचादिना मभावथी हुं आवता मुनुं स्रोमिय थकं.' ए प्रमाणे निदान करी, मरण पांमीने आठमा सहस्र देवपणे उत्पन्न थया.

देवलोक्था च्यवीने नंदिपेणनो जीव सोरीपुर नगरमां अंधकिविष्णु सुभद्रा राणीनी कुक्षिमां समुद्रविजय आदि नव मोटा भाइओ पछी वसुदेव नामें भाइ तरीके जन्म्यो. तेणे पाछला भवमां निदान करेलुं होवाथी ते अति सीं सुभग अने लोकिमियं थयो. ते निश्चितपणे नगरमां स्वेच्छाए फरेले. तेलुं ह्वाज पामेली नगरवासी स्त्रीओ घरकाम छोडी तेनी पाछल भम्या करेले. लाजवाल वान स्त्रीओ पण पोतानो धर्म तजी देले आ ममाणे स्त्रीओनुं न्याकुळ्पणुं जाणी थयेला नगरवासी लोकोए समुद्रविजय पासे आवी अरज करी के "स्वामिं

े परनी अंदरज राखवा जोड़क कारणके तेना रूपधी मोहित थयेली पैरिसी-लाचार आदिनो पण त्याम करेल हो. तेने लीचे कुलांगनाना आचारनी हानि , भने भा भनावारने नहि अटहायवाधी तमारो पण दोष गणाय हो. " ए सांदलीने समुद्रविषये वसुदेवने योग्य रीते शिखामण आपीने महेलनी अंदर , ते त्यां कलाम्बाम करवा लाग्या.

क दिवसे उनाळानी पत्नुमां शीयादेशीए गोशीर्पचंदन घसी सोनाझुं फचोळुं सीना राथे पोताना पति मगुद्रविनयने मोकल्युं. गार्गमां वसुदेवे बळारकार्यी j पोताना गरीर उपर यिखेवन कर्यु, तथी दासीए कर्यु के-अटकवाळा[®] छों अखा 'गुप्तिस्थानमां राखवामां आव्या है. पही ते संबंधी वधी व्यतिकर ने पण्डली राने एकाची नगरना उलार नीजळी कोड स्थानेथी एक मृतक छड दरनाना पासे नेने यालाने पा नलत् के-'यसदेव अत्र वली सुत्रो हो, तेथी एना मई लोकोए एखेंकी रोप्र आ विमाणे लग्योने ते नगरमीयी नीकळी रातःकार्लं ममुद्रविभये ने बात सान्। नि अति शोक कर्यो अने विचारवा छारया ें ता मानीषु दृष्कृतन जिला सु कर्ष ? पण हवे शुं करीष् ै भावि केाइ मकारे थतुं नथी विद्वेत पण पृथ्वीमी भ्रमण परता सता नवां नवां रूप, नवानवां नना नवां भागरणाधो भागवद्यात् हजारो विष्णापरनी कन्याओ अने हजारो याओ परण्या. ए प्रमाणे एकमा बीप वर्ष प्रात देशाटन करतां तेणे ७२००० पाणिप्रहण कर्च, पद्यी रोहिणीना स्वयंवरमां आवीने कुन्मरूपयी तेने परणी. सार्वे युद्ध कर्रा, चमत्कार देखादो. पोनानं स्वन्य मगट करी सम्रद्रविजय आनंद उत्पन्न कर्वी. लोका आश्रव पाम्या अने कहेवा लाग्या के "वहो! र्व पुण्यनो मान्भार तो बहु विशेष जणाय छे. " पृछो स्वमनोनी साये प्रहरेद नगरे थाच्या. अने छेवटे देवक राजानी पुत्रो देवकी तुं पाणिप्रहण कर्युं. ते किसियी श्रीकृष्ण वामुद्देव उत्पन्न थया अने तेना पुत्रो शांव, प्रमुन्न विगेरे रा ममाणे वष्टदेव हरिवराना पिनामह थया.

ा सवलुं पूर्व भागमां आचरेला वैयावज्ञ रूप अभ्यंतर ने छह अहमादि बाह्र ने छ अहमादि बाह्र ने छ अहमादि बाह्र ने छ जाणबुं ए भमाणे बीजाओए पण बने मकारनां तपने विषे मयत्न करवो.

सपरकम राजलवाइँग्ण, सिंसे पर्लाविए निअए। गयमुकमालेण खमा, नहां क्या जह शि वं पत्तो ॥५५॥

वंदोलानामां.

•

" पराष्प्रमवाळा अने राजाना वंधु वहु छाळनपाछन करेडा एवा । मुनिए पोतानुं मस्तक वळते सते पण एवी क्षमा करी के जेथी तेओ मोक्ष मत्ये अहीं गजसुक्तमाळनुं दृष्टांत जाणवुं. १८.

गजसुकमाळनी कथा.

द्वारिका नगरीमां श्री कृष्ण नामे वास्त्रदेव राजा हता. तेनी माता देवशी हती. त्यां श्री नेमिनाथ जिनेश्वर समवसर्या. देवेाए आवीने समवसरण कर्षु ने भगधाने देशना आपी. सभाजनो पोतपोताना स्थाने जतां भिहलपुरमां , रे भाइ साधुओ भगवाननी आज्ञा छइ छहने पारणे ववेना संघाढे त्रण भागे भिक्षा अर्थे नीकळचा. तेमांना पहेला वे मुनि फरतां फरतां देवकीना मंहिरे तेमने जोइने मनमां अति हरखाती देवकीए लाइवडे मतिलाभ्या. तेओना ग बीजा वे मुनि पण त्यांज आच्या. तेमनुं पण देवकीए भाव पूर्वक मोदक सन्मान कर्युं. तेओना गया पछी दैवयोगे त्रीजा वे मुनि पण आन्या, सरसं तिवाळा अने अति उल्लास उत्पन्न पत्नारा तेमने जोडने दवकी विचार करवी के 'आ मर्माणे एकने एक ठेकाणे त्रीजीवार आहार माटे आववुं शृद्ध साधुने नथी, तेथी आनुं शुं कारण इशे ?' ए प्रमाणे विचार करी तेमने पूछ्युं वे -नुभाव ! आ द्वारका नगरी वहु विशाल छे, तेमां श्रावको पण घणा छै। बारेवारे अहीं आववातुं शुं पयोजन छे ? शुं आ नगरीमां आहार महती अथवा थे साधुओ वघारे छे ? के भूछथी आववुं थयुं छे ? " ए म्माणे पूछवाथी ते साधु बोल्या के-'हे सुश्राविका! अमे छ भाइओ छीए. छुट्ट मयक् मथक बहोरवा नीकळतां जुदा जुदा तमारे घेर आवेला छीए. अमे ए आकृतिवादी होवाथी तमने संशय उत्पन्न थयेको छे. ' ते सांभळी देवकीए कर्यों के "आ छए मिन सरखी आकृतिवाळा छे अने कृष्ण जेवा देखाय" पण प्ञोने जोवाधी पुत्रदर्शन तुल्य आनंद थायछे. पूर्वे पण ' अतिमुक्त ' मु कयं दतं के 'तने आठ पत्र थशे. ' तेथी आ मारा (पत्रो तो निह होप संदेर तेने ययो. वीजे दिवसे ते नेभी चर भगवान पासे गई अने वांदीने पूर के-'हे स्वामिन ! गट काछे छ साधुओना दर्शनथी मने घणी आनंद ग ते उपरना अति स्नेहनुं शुं कारण छे ? 'भगवाने कखुं के-" ए छए सापु पुत्रो छ. कंमना भयथी हरिणगमेपी देवे तेने जन्मतांज उपाडी तेने वटले मृतक पुत्रो म्कीने महिलपुरमां नागपत्नी 'सुरुसा'ना घरे तेमने सेांव्या व

तंओ मोटा थया. युत्रान वय पामतां तेओने वजीश वजीश कन्याओ परणावी. ते मोए तेरी देशना सांभळोने वैराग्य पाप्त थवाथी संसारनो त्याग करी चारित्र गृहण कर्यु. श्रो कायम छहना तप करवा लाग्या. आजे छहने पारणे मारा आदेशथी नगरीमां हार अर्थे नो कच्या, अने तमारे घेर मथक् मयक् जोडळे आव्या. तेमने जोवाथी श्रासंबंधने लीवे तमने हर्प उत्पन्न थया. "

आ प्रमाणे भगवाननां वचन सांभळीने देवकी घरे आवी पश्चाचाप करती सती तमां विचारवा लागी के 'विकिसत मुखबाळा अने कोमळ हाथ पगवाळा पोताना जने जे रमांडे छे अने खोळामां वेसांडे छे ते स्त्रीने घन्य छे ! हुं ते। अधन्य अने भांगी छुं; कारणके में मारा एक पुत्रने पण रमाहया नथी. 'आ प्रमाणे विंता-कि यहने भूमि तरफ द्रष्टि राखी रहेला पोतानी माता देवकीने कृष्णे दोठा, एटछे भणे चिंतानुं कारण पूछयुं. देवकीए चिंतानुं कारण कही वतान्युं. पछी मातानो नोर्थ पूर्ण करवा माटे अठम तप करीने तेणे देवनुं आराधन कर्युं. देवे आवी रिवान आप्युं से 'देवकीने पुत्र थशे, पण ते घणा काळ सुधी घरमां रहेशे नहि.' वुं कही देव स्वस्थाने गयो.

, अनुक्रमे सिंहना स्वप्तथी स्चित पुत्र यथा. तेनुं नाम 'गजमुकमान्न' राखनामां गिन्युं, क्रमे करीने ते आठ वर्षना थया. माताना आग्रहथो तेने सोमिल ब्राह्मणनी गिठ पुत्रो परणावी. पछो नेमीश्वर भगवाननी देशना सांभली संसारनी असारता गणी गनमुकमाले चारित्र ग्रहण कर्युः, अने प्रभ्रनी आहा लड्ड स्मशानभूमिमां कायो- सर्ग मुद्राए रहा।.

ते अवसरे फरतां फरतां त्यां आवेला सोमिले तेने जोइने कहुं के-' आ दुष्टे । तिरपराधी वालाओने फोगट परणोने वगोवी.' आ प्रमाणे उत्पन्न ययेल छे. म जेने एवा सोमिले तेना मस्तक उपर माटीनी पाळ बांधीने तेमां धगधगता अंगारा । त्यां. अग्निवहे मस्तक वलतां लतां पण गजसकमाले अपूर्व क्षमा धारण करी अने कि ध्यानवहे अंतकृत् केवली थइने मोक्षे गया.

बीजे दिवसे श्रीकृष्ण मभुने वांदवा आव्या. तेणे मभुने पूछयुं के-'गजमुकमाक यां छे?' भगवाने कहुं के-'तेणे पोतानुं काम साधी छीधुं.' एम कहीने पछी तेनुं पछ हत्तांत कहुं. कृष्णे कहुं के-'हे स्वामिन्! आ कुकर्भ कोणे कर्युं?' भगवा-'कहुं के-'तने जोइने जेनुं हृदय फाटो जाय ने मृत्यु पामे तेनाथी ए कार्य थयुं छे मिसनजे.' शोकमान समेन सम्म नाम सम्बद्धा स्वास्त्र केन्यों के

सोमिल सामो मलयो. भयथी नासतां तेतुं हृद्य फाटी जवाथी ते गरण पा इत्याना पापथी सातमी नरके गया.

धैयवान गजसुकमाछे जे प्रमाणे क्षमा धारण करी ते प्रमाणे अन्य पण समग्र सिद्धिने देनारी क्षमा धारण करवी एवो आ कथावडे उपदेश ह

रायकुलेसुवि जाया, भीयाँ जरमरणगङ्जवसहीणं।

साहु सहंति सठवं, नीयाण्वि पेसपेसाणं ॥ ५६॥ अर्थ-" राजकुळमां उत्पन्न थएला छतां पण जरा मरण ने गर्भावासनां पामेळा एवा मुनि पोताना दासना करेला सर्व उपसमेरी पण सहन करे हैं

पणमंति य पुठवयरं, कुलया न नसंति ऋकुलया पुरि पण्ञो पुठिंव इह जइ—जणस्स जह चक्कविष्टमुणी अर्थ-" कुळवान पुरुषो प्रथम नमे छे. अकुछीन नमता नथी. अहीं र (पूर्वना) यतीजनने प्रथम नम्या [तेनुं दृष्टांत जाणवुं). ५७. अ इनी ऋदि छोडीने मुनि थगेला छतां पूर्वना—दोक्षा पर्याये ज्येष्ट मुनि

जह चकवहीसाह सामाईअ साहूण निरुवयारं।
पण्यो नचेव कुविओ, पण्यो वहूअत्तण गुणणं
अर्थ-" जेम चकवर्ती साधुने (प्रथम बीना मिनिओने नमस्कार
सामान्य साधुए निष्टुरपणे तुंकारो करीने कतुं के तुं आ ताराथी दी
मृतिओन वदना करः तथापि ते विलक्षल कापायमान थया निहं अ
पारित्र गुगवहे श्रेष्ट-वहुपणावाला मुनिओने नम्या." ५८.

अहीं मामान्य साधु ने दोक्षापर्याये लघु समजवा.

ते धन्नो ते माह, तेमि नमो जे अकज परिविरया। धीर्ग वर्य मोमहारं-चरेति जह शृक्षिभद्दमुणी॥ ॥ ॥ ॥

गाया ५६—मीताः बश्ताः गातः गाथा ५८— चक्रवहि, माई. गहुग, निम्द्रयारं, गाथा ५९.—परिप्रिटिया, भूछभद्दस्रणो.

र्ध-'' ते पुरुष धन्य-इतपुष्य, ते साधु-सत्पुरुष, ते पुरुषने नमस्कार याओ कर्मार्थथी निष्टस धया छे. एवा घीर पुरुषो जेम थृलिभद्र ग्रुनिए आवर्धु तेम सर्वर्ध व्रत ते असिधार सददा-खर्मनी धार उपर चालवानी जेवुं आवरे छे ." ५९. अधें श्रीस्थृतिभद्रनुं द्रष्टांत जाणवुं. १९.

थी स्वृछिभद्रचुं द्रष्टांत.

लीपुरमां नंद नामे राजा हतो. तेने 'शकडाल' नामे नागरब्राह्मण हातिनो मंत्री ने लारछलटे नामनो सी हती. तेने 'स्पृलिभद्र' नामे मोटो पुत्र हतो अने पीजा ं नामें हता, तथा 'यक्षा' आदि सात पुत्रीओ हती. स्वृलिभद्र युवावस्थामां विनोद ातो एक दिवस मित्रोयो परिष्टत यह वन जीवाने गयो. पाछो आवतां तेने 'कोशा' वेदयाए जायो. तेना रूपयो मोहित थयेळी ते वेदयाए तेने वात करवाना मिप-ो करी चातुर्वगुणधी तेनुं चित्त वश करी लोधुं स्पृलिभद्र पण तेना गुण ने रूपथी पड़ ते वेडपाने वेर रहाो; अने तेनी साथे विषयपुखे भोगवतो सते। ते नवा नवा करवा छारया.तेना पिता पण पुष्कळ द्रव्य मोकलवा वह तेनुं इच्छित पूर्ण करवा ए ममाणे त्यां वार वर्ष सुधी रहेला स्यृलिभद्रे सादीवार कोड सोनामहोरेने। व्यय ते अवसरे वररुचि बाह्मणे करेछा प्रयोगधी शकडाल मंत्रीनुं मरण पशुं. ते वसते नाए श्रीयकने मधानपद आपवाने गाटे वोलान्यो. त्यारे श्रीयके कहां के-' हे ! मारो मोटो भाइ कोशा वेदयाने घरे छे, ते प्रधानपदने योग्य छे.' नंदे वोळा-सेवको मोयल्या. ते आव्यो. तेने मंत्रीपट आपतां तेणे एकाएक न स्वीकार्धु. र कारण पूछतां स्वृलिभद्रे कहां के-'स्वामीन! विचार करीने ग्रहण करीश.' र विचार करवानी रेजा आपीं, एटछे अशोकवाटिकामां एकांत स्थले जड़ने विचार ि लाग्या के-'' आ संसारमां कोइ कोइनुं नथी सर्व स्वार्थी छे.' कहां छे के-

वृक्षं क्रीणफलं त्यजान्ति विहगाः शुष्कं सरं सारसाः ॥
पुष्पं पर्श्विपतं त्यज्ञन्ति मधुपा दग्धं वनांतं मृगाः ।
निर्दृट्यं पुरुषं त्यज्ञान्ति गणिका भृष्टं नृषं सेवकाः॥
सर्वः स्वार्थवशाक्जनोमिरमते नो कस्य को वह्नजः॥

"पत्तीओ फळ विनाना दक्षना, सारस पत्तीओ जळ विनाना सरोवरनो, अमरो गयेलां पुष्पानो मृगो बळेळा चननो, गणिका निर्धन पुरुपनो अने सेवक्ष्णोको

षोलवा लागी.

अहीं स्युलिभद्रने पणा दिवसे। व्यतीत थता चार्गीम उपा एक है पासे आवीने कहाँ के-' गिंहग्फा पामे वात्पीत करवा उन्हें छू. ' ए प्रम मागी एटछे बीजा मुनिए कयुं के-' हं संपना भाल पासे चातुमीस करवा त्रीना मुनिए पर्षु के-'ह कुवानी भंतराळ रहेळ लाकटा उपर (भार चातुर्मास करवा इन्छं छं. रयारे चोथा गाधु स्थृतिभद्र कर्ता के - ह कीम घरमां चातुर्मास कर्वा इन्छ छं.' गुरुए योग्यता जाणीने चारे मुनिने आ स्थूलिमद्र गुरुने नमीने कोशा वेदयाने चर गया. तने आवतां जीह की

पित थइ अने सामे आवीने पगमां पही. तेनी आज्ञा लइ स्थ्लिभद्र तेनी विश्व तुर्मास रहा। ते हमेशां पट्रसने। आहार करे छे, समय पण वर्षा ऋतुने। छे, ह शाळामां छे, मीति कोशानी छे, अने परिचय वार वपना छे. वळी नेत्र नहीं विलास, हावभाव, गान, तान, यान, बीणा ने मृदंगना मधुर शब्दों सहित नाली विगेरे नाना मकारना विषयोने स्यूलिभद्र आगळ मगट करती अने पोतानी

यतावती कोश्वा कहे छे के-' हे स्वामिन्! स्वाधीन एवी कामिनोनां कुन्तर्ग आछिंगन आहि होते हे क्या कि आर्छिगन आदि छोडीने आबुं फडोर तप शामाटे करो छो ? ' कर्बुं छे के

संदृष्टेऽधरपह्नवे सचिकतं हस्तायमाधुन्वती । मामा मुंच शठेति कोपवचनैरानिर्ततस्त्रूलता ॥ सीत्कारांचितलोचना सरजसं येश्चुंबितो मानिनी । प्राप्तं तैरमृतं श्रमाय मिथतो मूढेस्सुरैः सागरः ॥

अधर पह्नवनो दंश करतां चिकत थइने हस्तना अग्र भागने धूणावती, अने हि, हे शरु! छोडी दे' ए प्रमाणे कोपवचन वोलवा साथे भूलताने नचावती क्षारथी सत्कार करायेलां जेनां नेत्र ले एवी मानिनीने जिस्साथी जेणे चुंवन तेओए खरुं अमृत मेळच्युं ले एम हुं मानुं छुं, वाकी मृद देवताओए तो अमने माटेज समुद्र मथेलो छे." तेथो हे स्यूलिभद्र! आत्याग साधवानो समय गटे मारी साथे यथेच्छ विषयम्रख भोगवी तेनो स्वाद ल्यो. फरीथी आ मनुपामचो दुर्लभ छे. अने आ योवन एण दुर्लभ छे. माटे हे स्वामिन्! हमणा अंगसंगथी उत्पन्न थयेलुं मुख भोगवो. पाछळथी द्युतावस्थामां आ तप करवो हे. '' ते सांभळीने स्यूलिभद्र वोल्या—'हे भद्रे! अपवित्र अने मलमूत्रनुं । कामिनीना शरीरने आलिंगन करवाने कोण इच्छे ? कहुं छे के—

स्तनौ मांसयंथी कनककलशावित्युपमितौ। मुखं श्लोदमागारं तद्पि च शशांकेन तुलितम्॥ स्नवन्मूत्रिक्लन्नं करिवरशिरःस्पर्छिजघनं।

मृहुर्निद्यं रूपं कविजन विशेषिर्युरुक्ततम् ॥
स्तनो मांसनी गांठ छे छतां कविजनोए तेने से।नाना कळशनी उपमा आपी
श्रेश्म (कफ)नुं स्थान छे तोपण कविओए तेनी चंद्र साथे सरलामणी करी छे
वता मूत्रथी व्याप्त एवा जधनने हाथीना गंडस्थलनी साथे सरलाव्युं छे. ए ममाणे
निद्वा लायक स्त्रीना स्वरूपने कविआएज विशेष महत्वता आपी छे." वळी—

वरं ज्वलद्यस्तंनः, परिरंभो विधीयते।

न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम् ॥

तपावेला लोडाना थांभलाने आलिंगन करवुं ए सार्ह छे, परंतु नरकना द्वार
ना कघननुं सेवन करवुं ए सारु नथी." वळी एक वखतना स्नीसंभोगयो अनेक •
। घात थाय छे. कहुं छे के-

मेहुणसन्नारुहो, नवलच्ख हणेह सुहुमजीवाणं। तिथ्थयराणं भणियं, सदहियदवं पयत्तेणं॥

" मैशुनसंझाने विषे आरह थयेलो जीव नव लास सुक्ष्म जीवाने हाँ तीर्थंकर भगवंते कहेलुं छे तेने पयत्न पूर्वक सर्वहवुं.

वली है कोशा! आ विषयो अनेकवार भोगव्या छतां तेनायी तृषि । फुं छे के-

श्चवद्यं यातारश्चिरतरमुपित्वापि विषया । वियोगे को भेद्रत्यजति न जनो यत्स्वयममून् ॥ व्रजंतः स्वातंऱ्याद्तुखपिरताषाय मनसः । स्वयं त्यवत्वा ह्येते शिवसुखमनंतं विद्धित ॥

"आ विषयों छांचा वखत सुधी रहींने पण छेवटे जनारा छे ए तो तम तो पछी तेना वियोगमां फेर जो छे के जेथो माणसो पोतानी मेळे विष्याने छो नथी; केमके जो ए विषयों पोतानी मेळे आपणाथो छुटा पढे छ तो मनने अति ताप उत्पन्न करे छे. पण जो आपणे पोतेज खुजीथी तेनो त्याग करीए छीए जो मोक्षस्रक आपे छे." एटला माटे सर्पनी फण जेवा आ विषयोंने छोडी दुई शील अलंकारथी तारा सुंदर अंगने अलङ्कत कर. आ मनुष्यभव फरोथी मळवो पुरके अने ते भव धर्म विना हारी जइशा. कारण के सर्व कार्यीमां उत्तम कार्य कर्युं छे के—

न धम्मकङ्जा परमित्य कर्जा, न पाणिहिंसा परमं अकर्जा। न पेमरागा परमित्य वंधो, न वोहिलाभा परमित्य लाजो॥

धर्मकार्यथी उत्कृष्ट वोजं कोड कार्य नथी, प्राणीनी हिंसा उपरांत वीर्ड अकार्य नथी, प्रेमरागथी विशेष कोट वंबन नथी, अने वोधि (सम्वक्त) न उपरांत वीर्ज कोड परम लाभ नथी. "इत्यादि उपदेश आपीने जेतुं मन वालेड एवी कोशा वोली के-' हे कंदर्पन विदारण करनार! हे शासननो उद्योत करना पिथ्यात्वने निवारनार! तमने धन्य छे, तमेज खरेखरुं जीविततुं फल मेल्ड हैं। अधन्य छं, में तमने बहु रीते चलाववा मयास कर्यो पण तमे चल्या नहिं. हवे कि करीने सम्यक्त आपीने गारो उद्धार करो.' आ ममाणे कहीने स्थुलिभद्रनी पारं प्रदेशना उच्चार पूर्वक वार वत अंगीकार करी ते कोशा परम श्राविका था. ते

ए मोकछेल पुरुप शिवाय अन्य पुरुषनो वचनथी पण हुं स्त्रोकार करीश नहिं' गणे भोग संवंघो पचरुखाण लीधुं, तेमज जीव अजीव आदि तस्वोनो पण गर थइ.

रममाणे कोशा वेश्याने प्रतिवोध पमाडी चातुर्मास पूर्ण करी स्थूलिभद्र मुनि श्री विजयाचार्यनी पासे आव्या. पेला त्रण मुनिओ स्थूलिभद्रनी पहेलां आव्या हता. ते त्रणेने 'दुष्कर कार्य कर्युं' ए प्रमाणे एकवार कहीं ने मान आप्युं हतुं; परंतु भद्र मुनिने 'दुष्कर कार्य कर्युं' एम त्रणवार कहीं घणा आदर पूर्वक मान आप्युं. हि सिहगुफावासी मुनिना मनमां मत्सर आव्यो के "गुरुनो विवेक तो जुओ के र क्षा ने त्याथी पीडायेला अमोने 'दुष्कर कर्युं' एम मात्र एक वखत कर्युं, गृहरसने खानार तथा मोह उपजावे एवा स्थाननी अंदर रहेनारने 'दुष्कर दुष्कर एम त्रण वखत कर्युं," ए प्रमाणे तेणे मनमां मत्सर धारण कर्यो.

हवे एक दिवस नंद राजानी आज्ञाथी कोइ रथकार कोषा वेदयांना मंदिरे तो. तेनी वारीमां रहीने तेणे वाणसधान विद्यार्थी आम्रफलनी छंत्र त्यां वेटा वेटा । पोतानी कला वतावी, एटले कोशाए पण पोताना आगणामां सरसवनो दग-रावी, तेना उपर सोय मूकी, नेना उपर एक पुष्प मूकीनेतेना उपर तृत्य कर्युं. ।इ रथकार चमत्कार पामीने वोल्यो के—'आ अति किटन काम छे. 'त्यारे ए कहुं के—

इकरं अंवयद्धंवतोस्णं, न इकरं सिरसव निच्चआए॥ इकरं तं च महानुन्तावं, जं सो मुणी पमयवणंमि बुच्छो॥१॥ " आंवानी छंव तोडवी ते दुष्कर निहं तेमन सरसव उपर नाचवुं ते पण दुष्कर दुष्करं तो ए छे के जे ते महानुभाव स्थुलिभद्रे कर्युं अने ममदा रुपी वनमां न पामतां शुद्ध रहाा."

गेरी ग्रहायां विजने वनान्तरे, वासं श्रयंतो विशनः सहस्रहाः । स्येति रम्ये युवतीजनांतिके, वशी स एकः शकडाखनंदनः॥२॥

"पर्वतमां, गुफामां, एकांतमां अने वननी अंदर निवास नारा इजारे। छे, पण अति रम्य इवेलीमां अने े . य राखनार ता ते शकडालनंदन एकज छे." ए भगाणे जेम स्थृलिभट्टे दुर्भर व्रतने धारण करी नोराको नोबीशी मुने तातुं नाम राख्युं तेम अन्य मुनिओए पण गुरुनी जाजाने अनुगर्भा ग्रहण करेन पाळीने कीर्तिवंत थवं.

> विसयारिपंजरिमव, लोएं छातिपंजरंमि तिरुखंमि॥ सिंहा व पंजरंगया, वसंति तवपंजरे साहु॥ ६०॥

अर्थ-" छोकने विषे जेम तीश्ण सहना पंजरशी भय पामेल सिंह काष्ट्रना रामां वसे छे तेम विषय रूप सदद पंजरशी भय पामेला मुनिओ तप रूप पंजर्मी छे, अर्थात् वार मकारनो तप आचरे छे. " ६०

विषय पांच इंद्रियोना शन्दादि जाणवा. तट्टुप पंजरथी अथवा तत्तुल्य जे ते तेथी भय पामेला मुनिओ संसार तजी दट चारित्र अंगीकार करीने वाहा अभ्वंतर आचरे छे, एटले तप रूप पंजरमां वसे छे.

जो कुण्ड अप्पमाणं, गुरुवयणं नय लहेड् उयएसं। सो पन्छा तह सोअइ उवकोसघरे जह तबस्ती॥ ६१॥

अर्थ-" जे प्राणी आत्ममान करे छे अर्थात् पोताना गुणनुं अभिमान करे छे अर्थात् पोताना गुणनुं अभिमान करे छे गुरुना वचनने—उपदेशने—आज्ञाने अंगीकार करतो नथी ते प्राणी पाछळ्यी एवं करे छे के जेवो उपकोशाने घरे गयेछा तपस्वी मुनिए कर्यी." ६१

'अहीं जे गुरुना वचनने अप्रमाण करे छे 'एम कहां छे त्यां ' जे गुरुना डा ने मानतो नथी' एवो अर्थ पण थाय छे.

स्यृष्ठिभद्रजीनी ईर्व्यायी कोशा वेष्याना वहेन उपकोशा वेश्याने घरे ग सिंहगुफावासी मुनि जे चतुर्गासमां चारे मासना उपवास करीने सिंहनी गुफाने कार्योत्सर्गे रहेता इता तेमचुं दृष्टांत अहीं जाणवुं. २०

सिंहगुफावासी मुनितुं दृष्टांत.

एक दिवस पाडलोपुरमां श्री संभृतिविजय आचार्यना सिंहगुफावासी शि^{र्धे र} भट्ट उपर उप्पों करी वीजं चातुर्यास कोशा वेश्यानी वेन 'उपकाशा' वेश्याने बेर वानी गुरु पासे आज्ञा मागी. गुरुए अयोग्यता जाणी आज्ञा आपो नहि. गुरुए क्र

गाथा ६०--मिहा. गाथा ६१--नयलएइ न लहेड.

•			
:			
:			
:			
:			

संबंधी चिंतन करतां तेने याद आव्युं के 'उत्तर दिशामां नेपाछ देशना गा (नवा) साधुने छक्ष मूल्यमुं रत्नकंवल आपे छे, माटे त्यां जइ, रत्नकंति थानी साथ विषयस्य सेवीने मनःच्छित परिपूर्ण करं.' आ ममाणे विवारीक मेघनी पुष्पळ दृष्टि यतो हती छतां नेपाळ देश प्रति मयाण कर्यु. यणा जीरी देन करतो अने अनेक कष्टो सहन करतो केटछेक दिवसे ते नेपाल देशे की आशिर्वाद पूर्वक राजानी पासे रत्नकंवल माग्युं. राजाए ते आयुं, ते लान फरतां मार्गमां चोरोए लुंटी छोधुं, तथी तेणे फरीवार नेपाळ जड रानाने अन एटछे नेने फरीयो रत्नकंवल आपवामां आव्युं. ते रत्नकंवलने बांसमां नार्वः छावनां चोरनी पाछना पोपटे चोराने ने जणाववाथी तेओने तेने वेरी छीते। के ' एक छाखनी किंमतने रत्नकंवल तारी पासे हे ते बताव. ' तेणे क्रुं के पाने कंड नयी.' बोरोए क्युं के-' अमारो आ पोपट खोहं बोले नहि मार्ट की ममे ने एउथं निह.' तेथी तेण सत्य कहेवाथी मिसुक जाणीने तेने जा हैं। क्रमे में पाटकीपुर आव्यो अने रत्नकंवल उपकोशाने आप्युं, तेणे तेनाव^{हे वेथे} ं हिने होने द्र अपवित्र स्थानमां फेंक्रो दोधुं, त्यारे साधुए कहुं के 'अं वि कार्त छ पर्य । आ रन्नकंवल अनिदृष्टिभ छे.' न सांभळी वेदयाए कर्युं के " र रे बीटा क्रोण निर्माणीमां जिसेमणि छे? में तो आ लक्ष्य मळतुं स्तरा काराया राती दी रेष्टे, पण ने ती अमृत्य एवा ज्ञान दर्शन चारित्र स्थ र अवस्था प्रमासका दुरुम ने नट बीट पुरुषने शुंकवाना पात्र जेवा ६८६८८ व्याटा एका माना देहमों फेंकी दीवा छे; माटे नगर विवास कारा है र विशेष प्रमाण वहमा प्रका दोवा छ; माट नगर विवास के तेमा है। विवास के प्रमाण के प्रमाण के किया है। तेमा है। त कि इति वे देशसा सापुत्रमें तभी दरमारा शंगमां मोह पामी वर्ष दे ते राज्य करे बहु भी मते यात करवा पूर्वक चारित्रनी त्याग करवाणी अ भारता के दुर्ल-के देदराने तु देवी गीने महन क्याश !" इत्यादि ह करें के किए के मान सक्ता के मृति यहें या लाग्या के -'तरे प्राय के ेर पान इप्राथ महेत्र, हते हु अग्रत्यकी तिष्ट्रम सर्वे छु, रेर्वाह केरी हैं।

न स्थिति का कारण अस्या, भरणायी प्रतिस स्कृतिस प्रतिस विस्थिति । रोग न साम प्रति अस्य अस्य अस्य अस्या अस्या त्रिम् स्वर्थीत् । स्वर्थानी प्रति साम्बद्धित सम्बद्धित स्वर्थीयण । अस्य प्रतास (१९) :यृिळभद्रने जे कहुं ते सत्य है.' एप्रमाणे कही पापनी आछोचना करी, फरीथी त्र ग्रह्ण करीने ते म्रुनि सद्गतिए गया. माटे गुरुनी आज्ञा पूर्वक ले आवरचुं त्रष्ट छे, एवो आ कथानो उपदेश छे.

जिद्ववपव्वयत्रर-समुद्वहणववसित्र्यस्स ऋच्चंतं।

जुवइ जर्ण संवर्यरे, जईत्तर्ण उभन्नो नर्छ ॥ ६२ ॥ अर्थ-" ज्येष्ठवत जो महावत ते पर्वतना भार सहश छे, तेने वहन करवामां ा उद्यमी एवा मुनि पण युवतिजननो संसर्भ कर्ये सते द्रव्यथी ने भावथी वने ना चतिपणाथी भ्रष्ट थाय छे. "

जइ वर्णी जइ मौणी, जुँ मुंडी वर्कें त्वस्सी वा। पश्थितो छ-अवंतं, वंतावि न रोचए मर्ड्सं ॥ ६३ ॥ र्थ-"जो स्थाना के०कायोत्सर्ग करनारो होय, जो मानी के० मान धारण करनार भो मुंडी के ॰माये मुंडन करावनारो होय, अथवा वस्कली के॰झाडनी **छालनां** वस्न नारो होय के तपस्वी के अनेक पकारनां तप करनारो होय तो पण अब्रह्म जे मैथुन मार्थतो-वांछता हाय तो ते कदि ब्रह्मा होय तो पण ते मने रूचतो नथी. अर्थात तेंबुं कष्ट करनार होय पण जो ते मैथुना भिलापी होय तो ते श्रेष्ठ नथी." ६३ तो पहिचं तो गुणियं तो मुणियं तो अ चेइओ अप्पा।

आवडिय पह्लिया मंतिखोवि, जर्र न कुण्र अकर्ज ॥५४॥

अर्थ-''जो अकुछिनना संसर्ग रूप आपदामां पहयो सतो एटछे कुमित्रे मेर्यी अने स्त्रीए आमंत्रित कर्यी सतो-बोलाच्यो सतो एण जे अकार्य मत्ये जतो नथी. ारतो नथी तो तेन्नुं भणेञ्जं प्रमाण, गणेञ्ज प्रमाण, जाणेञ्जं प्रमाण अने आत्म ब्पनं चिंतवन पण प्रमाण समजनुं." ६४. नहीं तो ते वधुं अप्रमाण जाणनुं.

पागित्य सबसह्यो, ग्रुरुपायमूलंमि छहइ साहू पर्य। श्रविसुद्धस्स न वदृष्ट्, ग्रणसंडी तिस्या ठाइ ॥ ६५ ॥

गाथा ६३-- टाणि. पध्यंतो. रोयए. गाया ६२—स्त्रीजनससंर्गेकृते. गाथा ६५-पादमुलंगि. साहुपयं तित्तिया. गाया ६४— मुणीयं, विल्लिया.

अर्थ-" गुरु महाराजना पादमुछे-गुरुसमीपे जेणे सर्व शत्य मगट क्या पाप आळोच्यां छे ते पाणी साधुताने पामे छे; अने अविश्रद्धनी-अनासोनि कर्मवाळानी गुणश्रेणि तेटलीज रहे छे-टुद्धि पामती नथी."६५. अवात् गार ळोचीने निःशस्य थया विना गुणो द्यादि पामता नथी; तेटलेज अटको रहे है.

ज्इ दुक्र पुक्रस्कार्जित, भणिओ जहूँ ठियो साहू। तो कीस अज्ञसंत्र्अ-विजयसीसेहिं निव खामियं।।६१।

अर्थ-' जो यथास्थित एवा श्री स्थूछिभद्र नामना साधुने गुरुए (चोमाम् रहीने आव्या त्यारे) 'दुष्कर दुष्कर कारक' एवा बहुमानपूर्वक ने गुन्वचनने श्री संभूतिविजयना शिष्य सिंहगुफावासी मुनिए शामाटे न महन परं ." आ तेमनुं निर्विवेकीपणुं छे; माटे यथास्थित गुणोने जीहने नीने नेना पर नो अनुसागज करवो; द्वेप न करवो.

ज्ञ ताव स्ट्वओ सुंद्राति, कम्माण उवसमेण जह। भरमं वियाणमाणो, इयरो कि मच्ठरं वह इ॥ ६७ । र (- रिंग कोट मथम कर्मना उपश्चमवटे करीने सर्व प्रकारे गुंदा रें प्रश्नितं जाणतो सतो जामाटे तेना उपर मतार वहन करें? िट के वा अयोग्यामपूर्व कोड जीवनी आ सर्व प्रकारे सारी हैं। ता का विकास प्राची ते विकास प्राची ते । स्वतं महास धारो ते । विकास का माना प्राची मुनिए तेना मत्ये महमर धारो ते ं । १ र र २ र इस प्रत्या धारण कर्यो ने व्यर्थन छै।

ा गृहियोति गुणमम्हियोत्ति, जी न महह जह प मा पीनां प्राभवे, जहां महापीहंपीह रिमी ॥ ध

पीठ अने महापीठ मुनिनी कथा.

र्शिवदेह क्षेत्रमां 'वज्रनाम' चक्री राज्य छोडी चारित्र ग्रहण करी चैादपूर्ववारी ना चीता चार नाना भाइओ वाहु, सुवाहु, पीठ अने महापीठ पण दोक्षा छड़ अंगने घारण करनारा थया. तेमां वाहु मुनि पांचसे साधुने आहार लाबीने हता, सुवाहु सुनि तेटलाज साधुओनी वैयावच करता हता, अने पीठ महा-ने अध्ययन करता हता. एक दिवसे गुरुए वाहु अने सुवाहु मुनिनी प्रशंसा करी. बोने पीठ अने महापीठने डर्ष्या उत्पन्न यइ. तेओ विचारवा लाग्या के 'अहो! विवेशी पणुं तो जुओ ! तेओ इज राजस्वभाव तजता नथी. पोतानी वैयावच्च अने अन पाणी लाबी आपनारने वलाणे छे. आपणे वंने जणा दररोज अ ने तप करीए छीए' परंतु गुरु आपणी प्रशंसा करता नथी. 'ए प्रमाणे इर्ष्या-रेत्र पःणता छेवटे पांचे साधुओ काळ करीने सर्वार्धसिद्ध विमानमां देवपणे थया. त्यांथी रववी वज्रनाभनो जीव श्रीऋषभदेव थया, बाहु सुवाहुना जीवो वना पुत्र भरत अने बाहुविल थया अने पीठ महापीठना जीवो इर्ष्या करवा-विद वाधेल होवाथी ऋपमदेवनी पुत्रीओ ब्राह्मी अने सुदरी थया. ्ममाणे जेओ गुणमशंसामां इर्ष्या करेछे तेओ पीठ अने महापीठनी पेठे हीनप-

ामे छे; तेटलायाटे विवेकीओए कदि पण गुणी पत्ये मत्सर धारण करवा नहि.

परपरिवायं शिएहइ, अहमयविरल्लणे संया रमइ।

मुझ्फइ ये परसिरीए, सकसाओ दुख्खिओ निच्चं॥ ६ए॥ पर्थ-" जे पारका अपवादने ग्रहण करे छे-बोछे छे, आठ मदने विस्तारवामां ामे छे−मदमां आसक्त रहे छे अने पारकी छक्ष्मी−शोभा देखीने दाझे छे−बळेछे सक्तपायी पुरुष निरंतर दुःखीओ जाणवो. "

विग्गह विवायरुइणो, कुलगणसंघेण वाहिरकयस्स ॥ नित्य किर देवलोए विं, देवसिमझ्सु अवगासो ॥ ७० ॥ वर्ध-" विग्रह ने विवादनी रुचिवाळा अने क्रुळ गण संघे वहार करेला एवाने किमां देवसभाने विषे पण अवकाश पृटले प्रवेश माप्त थतो नथी."७०-अर्थात् युद्ध मां के मिथ्या विवाद करवामां तत्पर एवा अने कुळ ते नागेंद्रादि, गण ते कुळनो

गाया ७००-देवसमायां भवकाकाः प्रवेताः ौ ६९—अष्टमद्विस्तारणे.

समुदाय अने संघ चतुर्विध (साधु, साध्वी, श्रावक ने श्रानिका) तेमणे अयोग ं ने जेने वहार कर्यो होय-कुळ, गण के संध्यो दूर करेळ होय तेने स्वर्गमां देवला मां पण अवकाश मळतो नथी एटळे ते कि ल्विप जातिना नीच देवपणे उपजे छे. के तेने देवसभामां वेसवाना हक मळतो नथी. ए कि ल्विप देवा मनुष्यमां जेम ढेढ गण छे तेम देवताओमां हळकी जातिना देव गणाय छे.

जाइ ता जणसंववहार-विज्ञिय मक्ज मायरइ अन्नो। जो तं पुणो विकत्यइ, परस्त वसाणण सो इहिओ॥ ७१॥ अर्थ-''जो मथम कोइ अन्य, जनन्यवहार-लोकाचारमां वर्जित-निष्द प्रेचीर्याद अकार्यने-पापकर्मने आचरे छे अने जे पुरुप ते पापकर्मने (लोकसम्प्र), स्तारे छे ते पारके दुःखे दुःखीओ थाय छे अर्थात् बोजो माणस परनिंदा कर्त्वा निर्थक पापनो भाजन थाय छे." ७१

सुड्ठिव उज्ज्वमाणं, पंचेव करिंति रित्तयं समणं। अप्पथुइ परिनंदा, जिल्लो वर्त्या कसाया य ॥ ९२॥

अर्थ-"तपसंयम क्रियाने विषे भछे मकारे उद्यमवंत एवा साधुने पण १ औं स्तुति, २ पर्रानंदा, ३ जीहा, ४ उपस्य इंद्रिय अने ५ कपाय ए पांच दोष, एण रिक्तगुण, रहित करे छे. अर्थात् तप संयम क्रियावान होय छतां पण जी आणि दोपमांथी कोइ दोप होय तो ते मुनि गुणरिक्त यह जाय छे." ७२

आत्मस्तिति ते पोतानी मशंसा स्वमुखे करवी, परनिंदा ते पारका अपनार वी वा, जीहां शब्दे रसेंद्रियनुं परवशपणुं, उपस्थ शब्दे पुरुषाचेन्ह या स्नीवित्रं कें विषयनुं अभिलापीपणुं अने कषाय ते क्रोधादि चार-आ पांच पकारना दोषणी हैं रहित थवाय है.

परपितायमईस्थो, इसइ वयणोहिं जेहिं परं।
ते ते पावइ दोसे, परपित्वाई इस्र स्थिति। परं।
क्यं-'पाका अपवाद बोलवामां निषुण बुद्धिबाला पुरुप जे जे ववनोण में
गाया ७१—कस्थितः गाथा ७२—सुद्धि उन्नममाण करंनि अपी
जिल्मोपस्या जिता उमस्थाः गाथा ७३—परपित्वायमइसः अपिन्ना-मोन

रनें दोषवंत करेछे ते ते दोपने पोते पामे छे. ए हेतु माटे परपरिवादी पुरुष ममेह्य-अदर्शनीय-न जीवा लायक छे, अर्थात् परनिंदाकारक पुरुपतुं मुख पण तावा लायक नथी. " ७३

थर्दा विद्पेही अवन्नवाई स्यंमई चवला।

वंका कोहणसीला, सीसा उच्वेळगा गुरुणा ॥ ७४ ॥

अर्थ-"स्तब्ध ते अनम्र-अभिमानी, छिद्रान्वेषी ते अवर्णवादि, स्वयंमति ते स्वेच्छाचारी, चपळ स्वभावी, वक्र अने क्रोधस्वभावी-एवा शिष्यो गुरुने उद्देगना

कराबनारा होय छे. " ७४ " जस्स ग्रहंमि ने जन्ती, न य बहुमाणों न गजरवं न जयं। नेवि लज्जों निव ने हो, ग्रह्कुलवासेण किं तस्स ॥ ७५ ॥

अर्थ-" जे शिष्यने गुरुने विषे भक्ति न होय, बहुमान न होय, गुरुनुं गौरव न् होय, गुरुना भय न होय, गुरुनी रुज्जा न होय अने गुरु उपर स्नेह पण न होय तेवा शिष्यने गुरुकुलवासे करीने छं ? अर्थात् तेवा दुर्विनीत शिष्यने गुरु समोपे वसवाथी कांइ पण फळ नथी. " ७५

भक्ति एटळे विनय-गुरुने आवता देखीने उभा थवुं, आसन आपवुं विगेरे अने

बहुपान ते अभ्यंतर भक्ति समजवी.

रूसइ चोइन्जंतो, वहंघ हियंपण अणुसयं जिल्छो। नय कहीं करणिन्जे, ग्रह्मस खालो न सो सीसी॥ 9६॥ अर्थ-''जे शिष्य गुरुए प्रेरणा कर्यो सतो रोप करेछे अने वोछान्या सतो अनु-शय एटले क्रोधने हृदयमां धारण करे छे तथा कोइ पण कार्यमां काम आवतो नथी. तेवा शिष्य ते गुरुने आळरूप छे, शिष्य नथी. " ७६ शिक्षाने ग्रहण करे ते शिष्य कहेवाय जेनामां शिक्षाग्रहणनो अभाव छे ते शिष्य कहेवायज नहि.

जुट्विल्लण सूत्र्यण परिजवेहिं, छाइ जिएय दुरु भणिएहिं। संताहिया सुविहिया, नचेव भिदंति मुहरागं ॥ ७७ ॥

गाथा ७४-- उवेअगा-उद्देगकारकाः गाया ७६ - चायंडजंतो. कम्मिं.

गाथा ७५- गोरवं. गाया ७७-परभवेहिं. भिंदंति..

थी अस्य फळवाळा थयो."८१ एटलो तप जो दयायुक्त कर्यो होत तो तेनुं मुक्ति फळ माप्त थात. तेथी निनाज्ञायुक्त तपज प्रमाण छे.

अहीं आटला वधा तपथी मात्र जेने इशानइंद्रपणानी पाप्ति थइ एवा तामिल । तुं इप्टांत जाणवुं. २२.

तामिल तापसनी कथा.

तामिलिसी नगरीमां 'तामिलि' नामे शेठ वसतो हतो. एक दिवस तेणे पोताना । गृहभार सेांपीने वैराग्यपरायण यह तापसी दीक्षा लीधी अने नदीना कांठा उपर । लाग्यो. तेमज कायम छह करीने पारणुं करवा लाग्यो पारणाना दिवसे पण जे तर लावतो तेने नदीना नळथी एकवीशवार धोई निरस करीने खातोहतो अने उपर । छह करतो हतो. ए प्रमाणे साठ हजार वर्ष सुधी तेणे दुष्कर अज्ञानतप कर्यु. छेवट ।न अंगीकार कर्यु. ने अवसरे वलींद्र च्यवी गयेल होवाथी विल्वंचा राजधानीना ।रा असुरोए आवी, अनेक प्रकारना नाट्य अने समृद्धि वतावी तापिल तापसने सि करी के—' हे स्वामिन् ! तमे नियाणुं करी अमारा स्वामी थाओ. अमे स्वामी । छीए.' ए प्रमाणे त्रणवार कहा छतां पण तेणे तेमसुं वचन अंगीकृत कर्युं निह. पछी । पुणे थये कषाय अल्प होवाथी तेमज अन्यंत कष्ट करेलुं होवाथी तेना प्रभाववहे ते । करीने इशान देवलोकमां इंद्रपणे उत्पन्न थया, अने तरतन समिकत प्राप्त कर्युं. शानपूर्वक तप करवुं एज मोक्ष आपनारुं छे. तेथी थोडुं पण तप दया अने ज्ञानयुक्त हैं। पण तामिल तापसनी पेठे अज्ञान ने हिंसायुक्त करवुं निह.

छक्षीवकायवंहगा, हिंसकसस्थाइं उवर्इस्ति पुणो ।

सुवहुंपिं तविकलेसो, वाखतवस्सीण ऋप्पफलो ॥ ७१ ॥

अर्थ-"छ जीवकायना वध करवावाळा अने वळी हिंसक शास्त्रोनो उपदेश करे छे विक्र तपस्वीओनो अति मचुर एवो तपक्छेष पण अरुप फळवाळो थाय छे. तेथी राना त्यागवडेज तप महाफळने आपे छे एम समजंडु." ८२

अहीं छ जीवकाय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति अने वेइंद्रियादि त्रस तो समजवा. वाळतपस्वी ते अज्ञान कष्ट करनारा तापसादि जाणवा.

परियेच्छंति सर्वं, जहंिहियं ऋवितहं ऋसंदिद्धं । तो जिलवयणंविहिन्तू, सहंित वहुऋस्स वहुऋाइं ॥ ७३ ॥

गाया ८३—परियच्छंतिय. बहुअस्त. बहुआए.

अर्थ-" (जे साधु होय छे ते) यथान्यित, सत्य अने संदेह निनातं के सर्व पदार्थी तुं स्वरूप जाणे छे तेथी तेवा जिनवचननी विधिना जाणवाता घणां जनोनां घणां दुर्वचनादि सहन करे छे. " ८३ तेथी तेमतुं तण अर्थे थाय छे.

जो जस्स वर्देए हियए, सो तं ठावेड् सुंदरसहावं। वंग्धी ठावं जणणी, जदं सोमं च मझेड्॥ छ॥

अर्थ- " जे जेना हृद्यमां वर्ततुं होय छे ते तेने गुंद्र स्वभावनाछ स्वार् छे. अहीं दृशांत कहे छे के वाघण माता पोताना वाळकने भद्र अने सोम्प्रमां

जेम वाघण अज्ञानपणाथी अभद्र अने अञ्चात-सर्व जीवतुं भक्षण कर्त पोताना वाळकने पण भद्र अने शांत माने छे तेम अज्ञानीओ पोताना गयेळा पोताना अज्ञान तपने पण सम्यग् तप जाणेछे-मानेछे; प्रंतु ते मान्

मणिकणगरयणधणपूरियंमि, जवणंमि सालिभदोवि।

अन्नोवि किर मइझ्वि, सामिओित्त जास्रो विगयकार्मी अर्थ "मणि, कंचन, रत्न अने धनवढे पूरित-भरेछा एवा भुवनमी पण शालिभद्र नामे श्रेष्ठी निश्चये 'मारो पण बीजो स्वामी छे' एम विविषयिमिलापरिहत यह गयो." ८५ अर्थात् 'हजु मारे मार्थे पण बीजी एम छक्षमां आवतां, जो एम छे तो तो आ मारा वैभवने धिकार छें शालिभद्रे विषयभोग तभी चारित्र अंगीकार कर्युं.

अहीं गाळिभद्रनो संबंध मिलद हे। वाथी संक्षेपे कहे छे. २३

श्री शालिभद्रनुं ह्प्टांत.
पूर्व भवमां शालिग्राममां रहेनारी 'घन्या' नामनी कोड दिरही होहती,
वाने माटे 'मंगम'नामना पोताना पुत्रनेळड़ने राजगृह नगरीमां आर्वी, अने पा
करवा लागी. संगम पण गामना वाल्यहाओं चारवा लाग्यो. एक दिवम व
मने दरेक घरे शीर थवी जीड़ ते खावानी इच्ला थवाथी सगमें पण
पामें शीरमोजन माग्युं. तेणे पण पाहोशणोए आपेल द्ध विगेरेथी सी
मने यालीमां पीग्मी. ने शीर अति उल्ल होवाथी सगम फुंके हे तेश्री

गाया ८४- छात्रं-मृत. गाया ८५-पूर्वंति, अन्तो.

तोइ साधु त्यां वहारवा माटे पधार्या. तेमने जाइ संगमने अति हर्ष थवाथी मावपूर्वक वधी क्षीर ते सुनिने वहारावी दीधी. पछी ते विचार करवा के—'आजे साधु रूपी सत्वात्र मने माप्त थवाथी हुं अति धन्य छु!' ए ममाणे कार्यनी मशंसा करवा छाग्यो. आ ममाणे अनुमेदना सहित दान घगुं फळ थाय छे. कहुं छे के—

भानंदाश्रूणि रोमांचो, वहुमानं प्रियंवचः । केंचानुमोदना पात्र–दानत्रूषणपंचकम् ॥

भानंदथी नेत्रमां आंसु आववां, रामराय विकस्वर थवा वहुमान सहित र्वं, मिय वचन वोलतां आपबुं अने तेनी अनुमादना करवीः; ए पांच सुपात्र पुण छे."

ों संगमे साधुने दान आपवाथी घणुं पुण्य उपार्जन कर्युं. कह्युं छे के--याजेस्याद्विगुणं वित्तं, ट्यवसाये चतुर्गुणम् ।

हित्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं जवेत् ॥ व्याजनी अंदर धन वमणुं थाय छे, व्यवसाय (व्यापारादि)थी चारगणुं क्षेत्रमां सागणुं थायछे, अने पात्रमां आपवाथी तो अनंतगणुं थायछे. " वळी

दान आप्युं ते अति दुष्कर छे कारणके-

ाणं दरिहस्स पहुस्स खंती, इह्यानिरोहोय सुहोइयस्स ।
गरुणणए इंदियनिग्गहोय, चत्तारि एयाई सुदुक्कराई ॥
दरिद्री छतां दान आपवुं, सामर्थ्य छतां क्षमा राखनी, सुखने। उदय छतां
रोध करवे। अने तरुणावस्थामां इंद्रियोने। निग्रह करवे।—आ चार वानां अति
। "

धुना गया पछी संगमनी मा आवी. तेणे थाळी खाली जोइने वाकी रहेली (सी. पछी ते विचार करवा लागी के—"आटली वधी सखवाळों मारों पुत्र दर-ज्ये ज रहेतो जणाय छे, तेथी मारा जीवितने धिकार छे!" ए ममाणेनी स्नेह-रोपथी (पुत्रने दिष्ट लागवाथी) तेन रात्रिए थ्रम ध्यानथी मृत्यु पामीने संग-व तेज शहेरमां गोमद्र नामना शेटने घेर तेनी स्त्री भद्रानी कुर्किमां परिपूर्ण शाळि (डांगर)थी भरपूर क्षेत्रना स्वमधी स्चित पुत्रपणे उत्पन्न थयो. विताए तेनुं नाम शालिकुमार पाइयुं. युवावस्था प्राप्त थतां तेने कित्र ओ एक छरने परणावी. त्यारपछो गोभद्र शेठ चारित्र ग्रहण करी पांते अनक्षर सौधर्म देवलोकमां देवता थया यछो अवधिक्षानथी पोताना पुत्रने जोइने अति वनी त्यां आवी तेने दर्शन दीधुं अने भद्राने कह्युं के 'शाळिभद्रने सर्व प्रकारती पग्री हुं पूरी पाडीश.' एटलुं कहीने ते गयो. पछो गोभद्रनो जीव देवता तेमने पूरवा लाग्यो. दररोज ३२ स्त्रीओ अने शालिभद्रने माटे ३३ पेटी वस्नोती, व आभूपणोनी अने ३३ पेटी मोकलवा लाग्ये

यहोभद्रः सुरपिरहढो जूषणाद्यं ददौ य जातं जायापदपिरचितं कंविलरत्नजातम्। पएयं यद्याजिन नरपितर्येच सर्वार्थसिद्धिः स्तद्दानस्याद्जुतफल्लिमदं शालिभद्रस्य सर्वम्॥

"देवताओं मां श्रेष्ठ एवा गोभद्रे जेने भूपणादि आप्यां, रत्नकंवस जेती पगर्ना साथे परिचयवाळां थयां, एटले जेनी स्त्रीओए रत्नकंवल तो पग लुड़्यां जने राजा (श्रेणिक) फरियाणा रूप बन्यो अने जेणे मांते सर्वार्थितिद्धि विष फर्य-आ ममाणेशालिभद्रने दाननुं सर्व पकारनुं अद्युत फल माप्त थयुं."

पादांभोजरजः प्रमार्जनमपि क्सापाललीलावती-

पुःप्रापाद्गृतरत्नकंत्रलद्लैर्यद्वज्ञानामजूत्। निर्माट्यं नवहेममंडनमपि क्षेत्राय यस्यावनी-

पालाखिंगनमप्यस्ते विजयते दानात्सुजद्रांगजः ॥
'हेर्ना स्रीक्षोना चरणकमल उपर लागेली रजतुं ममार्जन राजानी राग् वर्णने पम दुष्माप्य एवा रत्यक्षवलना करुडावढे थयुं, जेने नवीन सुवर्णनी पम दरेक दिवमे निर्मालय रूप थया, अने जेने भूपतितुं आलिंगन पण के यह एवा सुनदानो पुत्र सालिमद पूर्वे करेला दानयो विजय पामे हैं."

व्याची वालियहनी समृद्धि नोटने श्रेणिक राजाए पण आ प्रमाणे वि

म्नुही महानम्बिह्निद्दसानुर्यथोच्यते । सारतेज्ञावियोगेऽपि नस्द्वास्तथा वसम्॥ " जेम स्तुही नामलुं झाड बहु नातुं होयछे छतां पहातर कहेवायछे, अने अग्नि जेटलो होय छतां पण ते बृहद् भातु (मोटामां मोटो सूर्य) कहवाय छे, तेवोज अमे सारभूत तेज वगरना छतां पण नरदेव कहेवाडए छोए. "

शालिभद्रे पण पोताने घेर आवेला श्रेणिक राजाने पोताना स्वामी जाणीने ही के—'आ मारी पराधीन लक्ष्मीने धिकार छे!' ए ममाणे वैराग्यपरायण वनी ज एकेक स्त्रीने तजवा लाग्यो. ते इकीकत सांभळीने धन्य नामना तेना बनेबीए नि एक साथे सर्वस्त्रीओनो त्याग करी दीक्षा लेवानी तेने भेरणा करी. आ ममा- मेरणाथी लत्साहित बनी श्री महाबीर स्वामीनी पासे जह चारित्र ग्रहण करी र तप तथी वार वर्ष पर्यंत दीक्षापर्याय पाली मांते एक मासनी संलेखना करी पिसिद्ध विमानमां तेत्रोश सांगरोपम आयुष्यवाला अहमिन्द्र' देवपणे लत्यत्र थया. आ मुनिने धन्य छे के जेमणे सघलुं अनुत्तर (सर्वथी उत्तम) माप्त कर्युं.

अनुत्तरं दानमनुत्तरं तपो, ह्यनुत्तरं मानमनुत्तरं यशः। श्रीशाबिजद्रस्य ग्रणा अनुत्तरा, अनुत्तरं धेर्यमनुत्तरं पद्म् ॥ "तेनां (शाल्भिद्रनां) दान, तप, मान, पश, ग्रणो, धेर्य अने पद्रै-ए सर्व वर (जेनाथी अन्य श्रेष्ठ नथी एवां) छे."

भा मगाणे ज्ञान सहित तप करवामां आवे तो मोढं फूळ माप्त थायछे.

ने करित जे त्व संजमं च ते तुल्लुपाणिपायाणं।

पुरिसा सम पुरिसाणं, अवस्स पेसत्तण मुविति ॥ ८६ ॥

अर्थ-" जे पाणो तप (बार प्रकारे) अने संयम (सत्तर प्रकारे) करता-आदरता ते पुरुषो समान हाथपगवाळा अने सदश पुरुषाकार घारण करनारहे सेवकपणुं स्य माप्त करे छे. " ८६

शालिभद्रे एज विचार करों। इतो के-" श्रेणिकमां ने मारामां कांइ पण हाथपगतुं भपणुं नथी ते छतां ते स्वामी ने हुं सेवक, तेतुं कारण मात्र में पूर्वजन्ममां सुकृत नथी ते ज छे. " आम विचारीने तेणे चारित्र ग्रहण कर्युं.

सुंदर सुकुर्माल सुहोइएणु, विविहेहिं तवविसेहेहिं। तह सोसविओ छप्पा, जह निव नाओ सभवणेपि ॥७९॥

१ जेने स्वामी तरोके इन्द्र होता नथी तेओ पोतेज पोताना वियानना पायी अहमिंद्र कहेबाय छे. २ पद ते स्थान-अनुत्तरविमान. ८० सम्बर्णीव.

अर्थ-"सुंदर (रूपवान), सुकुमाळ(मृद् शरीरवाळा)अने सुसोचित अर्थात् अभ्यासी एवा शाळिभद्रे विविध प्रकारनां तप विशेषवटे करीने पोताना एवा शोपव्यो—दुर्वळ कर्यो के जेथी पोताने घेर पण ते ओळखी शकाया नि

शालिभद्र मुनि थया पछी पाछा राजगृहीए आव्या त्यारे पोतानी माताने गोचरी निमित्ते जतां तेना सेवकपुरुपोए पण तेमने ओळख्या नहि एवं तपस्यावढे देह सुकवी नाख्यो हतो.

दुकर मुद्धोसकरं, अवंतिसुकुमाल महृरिसीचरियं। अप्पावि नाम तह तक्क-इिस अच्छेरयं एयं॥ ए०॥ अर्थ-"दुष्कर अने सांभळतां पण रोमोत्कंप करे-ह्वाडां उभां थाय एवं सकुमाळ महिपेतुं चरित्र छे; जे महात्माए पोताना आत्माने पण एवा प्रकारे करों के जेमतुं चरित्र संपूर्ण आधर्षकारक थयुं. " ८८

अहीं अवंतिमुक्तमाळनो संबंध जाणवो. २४ अवंतिमुक्तमाळ कथा.

अवंती देशमां उड़्जियनी नगरीमां भट्टा नामनी एक शेठनी स्नी हती तेने नीग्रस विमानथी स्यवीने आवेलो अह ति हु माल नामे पुत्र थयो. ते वशीक साथे विपय हरूनो अनुभव करतो हतो. एक दिवस पोताना घरनी नजी स्थाये विपय हरूनो अनुभव करतो हतो. एक दिवस पोताना घरनी नजी हरियत आचार्यना मुख्यी रात्रिनी पहेली पोरपीमां नलिनीग्रस विमान सांभली जातिरमरण शान यवार्थी पूर्वभव मुस्य साणी, त्यां (नलिनीग्रस सांभली जातिरमरण शान यवार्थी पूर्वभव मुस्य पासे जइ विनयपूर्वक पूछ्वा लागा अप नलिनीग्रस विमान मुंस्य पहें वी रीते जीग्रु?' गुरु पर्ण के 'ति निष्ठी नेत्रथी जीग्रुं छे. ' पछी अवंति मुक्रमाले पूछ्युं के 'ते केवी रीते मार्र थार्थी गुरुप पर्ण के 'त्रारित्र पाळवार्थी. कारण के चारित्र आलोक अने परलोक्ष्मां गुरुप पर्णुं के 'त्रारित्र पाळवार्थी. कारण के चारित्र आलोक अने परलोक्ष्मां मकार मुंस्य आपे छे. ' कहा छे के—

नो पुष्कर्मप्रयासो न कुयुवतिस्तर्त्वा मिदुर्वाक्यदुःखम्। राजादो न प्रणामोऽद्यानवसन्धनस्थानचिता न चेव॥ ज्ञानातिलांकपूजा प्रदामपरिणतिः प्रेरयनाकाद्यवाति। चान्त्रि द्यीवदायके सुमत्यरतत्र यत्ने कुरुष्वम् छ॥ गाया ८८— चर्त्तयं, २ तज्जयित, ॐआ चोशुं पद भूलवाद जणाय छै। " जेनी अंदर दुष्कर्म संबंधी प्रयास नथी, जेनी अंदर खराव स्त्री, पुत्र के स्वा-लां दुर्वाक्यश्रवणतुं दुःख नथी, जेनी अंदर राजा आदिने प्रणाम करवे। पडतो नथी, जो अंदर भोजन, वस्त्र धन के स्थान माटे चिंता करवी पडतो नथी, जेनी अंदर लेनी पाति थाय छे, छोके। पूजा करे छे, शांतभाव परिणमे छे, अने परभवे लीदिनी पाति थाय छे एवा मोक्षदायक चारित्रमां हे विद्वान पुरुषो! तमे न करो."

'माटे चारित्र ग्रहण करी, अनशन करवावडे निलनीगुरम विमान मेळवी शकाय ए प्रमाणे ग्रह्मुख्यी सांभळीने अवंतिम्रुकुमाळे कहां के 'में चारित्र अने अनश-गवंधी अंगीकार कर्युं छे.' ग्रहण ज्ञानथी जाण्युं के 'आतुं कार्य आ प्रमाणेन ह अवातुं छे तथी तेने रात्रिण्ज साधुवेष भाष्यो. ते वेष धारण करीने ते शहेरथी र स्मशानभूमिण जह कंथेर (थार) ना कनमां कायोत्सर्ग मुद्राथी रहा. त्यां जतां मां कांटा, कांकरा आदिना महारथी भितकोमळ एवा तेना चरणना तळीयामांथी र स्ववा छाण्युं. तेना गंधथी पूर्व भवमां अपमानित करेळो स्त्रीनो जीव शियाळ-धणां वचांओथी परिष्टच यह त्यां आवी अने तेतुं शरीर खावा छागी. परंतु ते मुनि पण स्त्रुमित थया निह. तेमनुं वित्त स्थर होवाथी अति वेदना सहन करता सता करीने ते निळनीगुरम विमानमां देवपणे उत्पन्न थया. मातःकाळमां ते सगळुं माता भद्राण जाण्युं. एटळे एक गर्भवंतो बहुने घरमां राखोने वाकोनी तमाम ते साथे भद्राण चारित्र ग्रहण कर्युं. घर आगळ रहेळो वहुने एक पुत्र थथो. ते स्मशानभूमिमां एक निनमाताद चणाव्यो अने तेमा जिनमितिमा स्थापो. स्मशा-नाम 'महाकाळ' पड्युं.

जे ममाणे अवंतिम्रक्तमाले धर्मने अर्थे पोताना शरीरने। त्याग कर्यी परंतु ग्रहण । व्रतना भंग कर्यो निहें, तेवा रीते अन्य जनोए पण धर्मविषयमां यत्न करवी, आ कथानो उपदेश छे.

अर्च्यू सरीरघरा, अन्नो जीनो सरीर मन्नंति॥
धम्मस्स कारणे सुनिहिया, सरीरंपि छुडंति॥ उए॥
अर्थ-" तजी दीधो छे शरीर रूपी घरनो मोह जेणे एवा सुनिहितो—उत्तम प्रकृषो
कारणे 'आ जीन अन्य छे अने शरीर अन्य छे ' एनी दुद्धिन हे करीने शरीरने

[ा]या ८९-उच्छुट, बाच्छुट.

आ देहनो संबंध एक भवनोज छे अने ते शरीर जन्मे जन्ममां नवुं नवुं छे, पण धर्म जो तजी दीधो तो ते फरीने माप्त थवो दुर्छभ छे, तेथी उत्तम । धर्मने कारणे शरीरने तजे छे पण शरीरने कारणे धर्मने तजता नथी. माटे । पण धर्मने न तजवो.

एक दिवसंपि जीवो, पवर्जामुवागओ छ्यनन्नम्णो।
जहिव न पावह मुख्खं, छ्यवस्सं वेमाणिओ होहा। ए०॥
अर्थ-' चारित्र धर्मन्नं फळ कहेछे-अनन्य मनवाळो जीव एक दिवस पण
(दीक्षा) पतिपन्न करे अर्थात् भवमांते एक दिवस पण शुद्ध दीक्षा पाळे तो ते पः
संहनन काळादिना अभावथी-मोक्ष न पामे, परंतु अवदय वैमानिक देवतो वापि।
एक दिवसना विशुद्ध मनयुक्त चारित्रन्नं फळ आ काळमां पण वैमानिक हैं।

पणानी माप्ति थवा रूप छे.

सीसावेढेण सिरिंमि-वेढिए निग्गयाणि ऋहीणि। मेयज्जस्स नगवळो, नयं सौ मणसावि परिकृविळो ॥ ए। ॥

अर्थ-" छीलो चामडानी वाधरवंडे मस्तकने वेष्टित कर्ये सते (ते सुकाइने आंग्रो नीकळी पडी, परंतु ते मेतार्थ भगवंत मनथी (छेश मात्र) पण (सोनी फोपायमान थया नहि. " ९१

मेतार्य मिनना मस्तके सोनीए छीछो वाधर वींटी ते सुकावाधी नसेति । थराने छोधे वंने नेत्र नीकळो पड्यां, परंतु मेतार्थ मिन किंचित् मात्र पण ते । उपर कोपायमान थया निह. एवी रीते वीजा मुनिराजेाए पण क्षमा करवी.

अहीं मेतार्थ मुनिनुं दृष्टांत जाणतुं. २५

मेतायमुनिनी कथा.

माकेननपुरमां 'चंद्रावतंत्रक नामे अत्यंत धार्मिक राजा हतो. तेने 'मुर्कि सामनी खो हती. ते खोनी कुश्तियी 'सागरचद्र' ने 'मुनिचंद्र' नामे वे पुत्र उला हता. ते बेमां मोटाने युवराजपद आप्युं अने नानाने उज्जिपनी राज्य आर्थ बेज्रिं 'वियर्जना' नामे राणीयो 'गुणचंद्र' अने 'वाळचंद्र' नामे वे पुत्र वर्षा ए प्रपार चार पुत्र विगेर्था परिद्रन थर ते राजा राज्य करतो हती.

गाया ९०-उट निव. असम्म. साथा ९१-सिरंमि आर्टबर्मका

त दिवस चंद्रावतंसक राजाए पैषध कर्यो हतो. ते रात्रिए एकांतवासमां रह्या णे एवो अभिग्रह कर्यो के 'ज्यांसधी आ दीवा वळे त्यांसधी मारे कार्योत्स- थत रहेचुं 'ते अभिग्रह ने निह जाणनारी के इ दासीए ते दीवामां तेल पूर्या णे। वस्तत कार्योत्सर्गमां स्थित रहेवाथी राजाने शिरोवेदना थइ, तेथी ते स्यो अने देवलोकमां गया. ते जाइ सागरचंद्रे विचार्य के—'आ देहनो संवंध छे, जे प्रातःकालमां जावामां आवेछे ते मध्यान्हे जावामां आवतुं नथी अने ान्हे जावामां आवेछे ते रात्रिए नाश पामेछे. वायुए कम्पावेला पत्र जेबुं आ क्षणे क्षणे श्रीण थतुं जाय छे. कह्युं छे के—

श्रादित्यस्य गतागतेरहरहः संक्षीयते जीवितम् व्यापारैर्वहुकार्यनारग्रहिमः कालो न विज्ञायते ॥ दृष्ट्वा जन्मजराविपित्तमरणं त्रासश्च नोत्पयते पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तप्रूतं जगत् ॥

सूर्यना गमन ने आगमनथी आयुष्य टररोन क्षय पामेछे, वहु प्रकारना कार्य-मोटा मोटा न्यवसायोधी काळ केटलो गया ते जणातुं नथी, अने जन्म, हुद्धा-विपत्ति ने मरण जोइने माणसोने त्रास उत्पन्न थतो नथी; तेथी (जणायछे के) थी ममाद रूपी मदिरानुं पान करीने आ जगत उन्गत्त थयेछं छे." लादि कारणथी जेतुं चित्त वैराग्यवान थयेछं छे एवो 'सागरचंद्र राज्यथी परा-हतो छतां पण तेनो ओरमान माताए कहुं के 'मारा वंने पुत्रो हाल राज्यभार करवाने अशक्त छे, तेथी तुं आ राज्यधुराने ग्रहण कर.' ए प्रमाणे वळात्कारथी रचंद्रने राज्य उपर स्थापित कर्यो, परंतु ते विरक्त भनधी राज्यतुं पाळन करेछे. में तेने समृद्धि ने कीर्तिथी वधी गयेलों जोइने तेनी ओरमान माता दुभाणी, ते दररोज तेनी ईंध्या करेछे अने छिद्र खोळेछे. एक दिवस कोडाने वास्ते ां गयेला 'सागरचंद्रने' माटे तेनी माताए दासी मारफत एक लाडु मोकल्यो.ते । लाइ आपवा जती हती ते वखते तेने बोलावीने ओरमान माताए पूछयुं के-थें छे ?' तेणे कहां के-'हुं राजाने माटे लाड लइ जाउंछुं.' तेणे कहां के-'जाेडं, वो छे ?' दासीए तेने आच्या, एटले ते ओरमान माताए विषयी खरडायेडा वढे ते छाडुने सारी रीते स्पर्श करी विपमिश्रित करीने दासीने पाछे। आप्या. ीए ते छाड़ छइ जइने राजा पासे मूचयो. राजाए ते मनेारंजक छाड़ ग्रहण कर्यो. परंतु ते अवसरे पोतानी आगळ हाथ जोडीने उमेळा पेताना वे साक जोड़ने स्नेहवश थइ तेणे विचार फर्यो के 'मारा छछु वंधुओने छोडीने मारे ते उचित नथी.' एम विचारीने तेणे छाड़ना वे माग करी वनेने वहेंबो धीं खायो नहि. थोडा वखतमां पेछा वंनेने विप चडवाथी भूमि उपर एंड राजा घणो खित्र थया, अने मणि मंत्र आदि प्रयोगोवडे तेमतुं हो उप (तेनुं कारण शोधतां) दासोना मुख्यी ओरमान माताना हस्तस्पर्शयी ध्येन (तेनुं कारण शोधतां) दासोना मुख्यी ओरमान माताना हस्तस्पर्शयी ध्येन पहेंछां मारा आपतां छतां पण ते राज्य अंगीकार कर्युं नहि, अने सांपतां अर्थ कर्युं क्षित्रों निर्मा अर्थ कर्युं स्वीभोना चरित्रने विकार छे।' कर्युं छे केन

नितंबिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं चातरं हाण्म् । आरोपयंत्यकार्येऽपि, प्रृधृताः प्राणसंशये ॥

"दुगनग्णी स्रोओ पाताना पतिने, पुत्रने, पिताने अने भारते माण्या गंगप थाप तेना अकार्षमां पग जाडी दे छे." 'हवे दुर्गतिना । करार्थमां पग जाडी दे छे." 'हवे दुर्गतिना । करार्थमां मार्थ गंप पमाणे विवास करी ते ओस्मान माताना पुत्र 'गण करें करें दाशा लड नालो नोकत्या.

 णो लई नगरनी वहार नीक्ळी वनमां कार्योत्सर्गगृद्वाए स्थित धर्मा. अहीं राजने पुरुष्टित्युत्र वंनेने घणी वेदना थवाथी ते पोकार करवा लाग्या. एटले राजाए
ने पूछ्युं के—' तमन शुंधयुक्ते?' त्यारे बीजा लोकोए कह्युं के—' अहीं एक मिनि हिता तेणे कंइक करेलुं जागय छे. ' एटले राजा ते मुनिने खीळतो खीळतो गयो. त्यां पोताना मोटा भाइने जोड बांदीने अरज करवा लाग्यो के—' हे शि! आपनी जेवा महात्याओने बीजाने पीडा करवी घटती नथी.' ते सांभळीने त्यारे कह्युं के—' तुं चंद्रावर्तस्क राजाना पुत्र पांचमो लोकपाल छे, लतां साधुओने देतां नारा पुत्रने तेमज पुरोहितपुत्रने शामाटे अटकावतो नथी? आवो अन्याय भवर्ताचे छे?' त्थारे मुनिचंद्र राजाए कहुं के—' मारो अपराध क्षपा करो ते ' जेंचुं कर्युं तेचु तेनुं फळ भोगव्युं. परंतु आप-पिताने स्थाने छो, माटे कृपा ते वंनेने साजा करो. आपना शिवाय तेओनां अस्थिटेकाणे लाववाने वीजा कोइ बान नथी.'' एम कहीने वंनेने सागरचंद्र मुनि समीपे लाववामां आव्या. त्यारे पहुं के ' जो जीववानी इच्ला करता हो तो स्थम लेवानु कचुल करो.' तेमणे प्राणे कवुल करवाथी तरतज तेओने साजा करवामां आव्या, एटले चारित्र ग्रहिंण में तेओ साथेज नीकळ्या.

प वे मुनिमां पुरोहितपुत्र जाते ब्राह्मण होवार्या तेणे जातिमद करवाने छीधे गोत्र बांध्युं. चारित्र पाळीने मांते ते वंने देवता थया. तेओ परस्पर स्नेहवाळा तेथी तेओए सकेत कर्यों के 'आपणामांथी जे मथम च्यवीने मनुष्य याय तेने मां रहेला वीजाए मितवोध पयाडवो.' पर्छी कालांतरे मथम पुरोहितजीव च्यवीने एह नगरमां 'महेर' नामना चंडालना घरमां 'मेती' नामनी भार्यांनी कृक्षिणं मिद करवाथी अवतर्था. ते चंडालनी भार्यों ते शहेरमां कोइ शेठने घेर हमेशां आवेछे. शेठनी खी साथे अत्यंत मैत्री थइछे. शेठाणी मृतवत्सा [छोकरां जीवे निह ते] रिपवाळी होवाथी तेने छोकरां जीवतां नथीं. ते वात तेणे चांडालनी खीने कहीं कर्में के—'आ वखते जी मने पुत्र थशे ते। हुं तमने आपीश.' काळे करीने तेने अन्मपो एटळे ते पुत्र तेणे शेठाणीने गृप्तपणे आप्यो. शेठाणीए पुत्रजन्ममनो महोत्सव वियो, अने मेतार्थ एवं ते छोकरानुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते सोल वर्षनो थयो. विवसरे भित्रदेव (राजपुत्रनो जीव) पूर्वनो संकेत होवाथी तेनी पासे आवीने तेने कर्मा लाग्यो, पण ते प्रतिवोध पाम्यो निह. अन्यदा तेना पिताए आठ कर्मुत्राओनी साथे तनो विवाह कर्यो. तेना लग्नवत्ते मित्रदेवे आवी चांडाल-मा श्रीरमां मवेश कर्यों तेथी ते छोकोने कहेवा लागी के—'आ मारो पुत्र छे.तमे

सुनक्षा मनिनं वृतांत.

एक वखत श्रीवीरमभु श्रावस्ती नगरीमां समवसयी, त्यां गोशालक ण नगरमां एवी बात फेलाइ के आजे नगरमां ने सर्वा आनेला हो. एक अने बीजा गोशालक. ए वात गोचरीए गयेला शीगीतम स्वामीए सांभली, तेनी भगवंतने पूछ्यं के 'आ गोशालक को णहे के जे लोकानी अंदर सर्वत एवं नाम छे.' भगवाने कतुं के-'हे गीतम! सांभळ. सरवण नामना गामगां मंखि नामने जातिना एक पुरुप हतो. तेने भद्रा नामनी सी हती, तेनी कुलियी ते जनमां है घणी गायो हती तेवा एक ब्राह्मणनी गोशाळामां जन्मवाथो तेनुं नाम गोशाहर हतुं. ते युवान थयो तेवामां हुं छगस्थ अवस्थाए फरतो राजगृह नगरने विशे ... रह्यो हता.ते पण फरतो फरतो त्यां आव्यो.भं चार मासक्षपणनां पारणां परमाश्री वहें क्यीं तेनो महिमा जोइने ते विचार करवा छाग्यों के 'जो हुं आनो शिष्यां दररोज मिष्टान्न मळे.' ए ममाणे विचारी 'हुं तमारो शिष्य छुं' एम कही मारी लाग्यो ते मारी साथे छ वर्ष पर्यंत भम्यो एक दिवस कोइ योगिने जीइने तेण करी के आ ज्ओं अध्यातर हैं तेथी को धितथये हा ते योगिए तेनापर तेजी हेगाए में शीतछेश्या मुकीने तेने बचाच्या. पछी तेणे तेजाछेश्या उत्पन्न करवानो उना पूछचो.मं पण भावि भाव जाणीने तेनो उपाय कहाो, एटछेते माराथी जुदो पड़ी। छ मास कष्ट वेठी तेजीछेइया साधी,अने अष्टांग निमित्तीना पण जाण थयो.पहीं ममाणे जनसमुदाय आगळ ते पोतानं सर्वज्ञपणं स्थापित करेछे; परनत ते खोड़ के कोने निक्त / जाल करें एक नथी." आ प्रमाणेनी भगवंते कहें हो हकी हकी की की निक्त / जाल करें ळीने त्रिक (त्रण मार्ग मळे ते स्थान) मां, चोकमां अने राजमार्गमां सप्रजी गोचरीए जतां जोइने तेणे वोलाव्या अने कहुं के "हे आनंद! तुं एक द्रष्टांत हैं केटलाएक वाणीआ करियाणांना गाडां भरीने चाल्या. तेओ जंगलमां गया. त्यां घणी तथा कागवाथी पाणीनी शोध करतां ते ओए चार राफडानां शिखरो जोगां, त एक शिखर तोडयुं, एटले तेमांथी गंगाजळ जेवुं निर्मल जळ नीकत्युं. सपनाओं ह वारंबार पीने संतुष्ट थया. बीजं शिलर तोड्बा जतां साथेना कोई एक हुई की तेमने वार्या, परंतु तेओ वार्या रहा नहि. ते शिखर तोडता अंदरयो सोर्व ने ाणे त्रीजं शिखर भेदतां अंदर्थी रत्नो नीकल्यां. चोथुं शिखर भेदना का णा वार्या छतां पण तेओए ते शिखर तोडयुं तो तेपांथी अति भवंकर गरि कळयो. तेणे सूर्य सामुं जोइने तेमनी उपर दृष्टि फॅको, जेथी ते सप्रम

या. पेछो छद्ध वाणीयो वच्यो तेवी रीते हे आनंद ! तारी धर्माचार्य पण पो-ऋदिथी तृप्त न थतां मारी इर्ष्या करेछे तेथी हुं तेने वाळीने भस्म करी ना-्परंतु तुं तेने हितोपदेश देनार थ्वायी तने हु वाळीश नहि." ए प्रमाणे सां-म्यभीत थयेला आनंदे भगवानने सर्व हकीकृत कही. भगवंतनी आज्ञाथी गा-आदि मुनिओने ते वात जणावी; जेथी तेओ सर्व भगवतथी दूर पोतपोताने स्थाने गया. एटलामां गोशालक त्यां आबी मभुने कहेवा लाग्यों के 'हे काश्यप! तुं पोतानो शिष्य कहेछे ते खोड़ छे. ते नारो शिष्य तो मरी गयो. हुं तो तेनुं श-वळवान जाणीने ते शरीरमां स्थिति करीने रह्यो छुं. 'ए सांभळीने 'आ तननी अवज्ञा करेछे ' एम जाणी ग्रम्भक्तिमां अत्यंत रागवाळा सनक्षत्र नामना र गोशालकने कहां के 'अरे ! तु तारा धर्माचार्यनी निंदा केम करेछे? तेज तुं लक छे (वीजो नथी).' ए सांभळीने गोशालके क्रोधवश् थइ तेजोलेक्यायी त्र मुनिने वाळी नाख्या. समाधिथी मृत्यु पामी ते आठमा देवलोकमां देवपणे न थया. ए समये बीजा सर्वानुश्रुति नामना साधुए पण सर्व जीवोने खभावा न करी गोजालकनी सन्मत्व आवीने कहा के 'तं स्वयुगीचार्यनी निंदा केंग करे तेथी दृष्ट गोशालके तेमने पण वाळी नांख्या. ते मरीने वारमा देवलोकमां उ थया. पछी भगवाने कहा के " हे गोशालक! तुं शा माटे तारा देहने गोपदे म कोइ चोर भागतो सतो कोड न देखे तेटला माटे तरण पोतानी आडुं घरेछे तेथी ते छानो रहेतो नथी, तेबी रीते तुं पण माराथीज बहुश्रुत थयो छे अने न अपलापना करछे." इत्यादि वचनोथी क्रोधित थडने तेणे भगवाननी उपर जिल्डिया मुकी ते तेजोलेड्या भगवानने त्रण प्रतिश्वा करी पाछी वळीन छम्ना शरीरेमांज पेटी. पछी गोशालक वोल्यो के 'हे काश्यप तु आजधी सा-देवसे मरण पामीश.' त्यारे भगवाने कहुं के 'हुं तो सोळ वर्ष सुधी केवळीपणे ोश, परंत तुंनो आजधी सातमे दिवसे मोटी वेदना भोगवीने मुरण पामीश.? गोशालक पोताने स्थाने आन्यो. सातमे दिवसे शांत परिणामथी समकित फ-तेथो ते मनमां विचार फरवा छाग्यो के ' अरे! में आ अत्यंत विरुद्ध आचरण में भगवाननी आज्ञानो लोप कर्या! में माधुश्रोनो घात कर्या! आवता भवमां भी गति थशे?' ए प्रमाणे विचारी शिष्योने वोलाबी कहा के "मारा मरण पछी क्लेवरने पगथी वांधीने श्रावस्ती नगरीमां चारे तर्फ फेरवजो, कारणके हुं निह छतां ' हु जिन छुं ' एवुं में छोकमां कहेराच्यं छे." आ प्रमाणे आत्मनिंदा सतो मरण पामीने ते वारमा देवलोकमां उत्पन्न थयो। पछी शिष्योप ग्रुरुनं मान्य करवा मांटे खपाश्रयनी अंदर श्रावस्ती नगरी आछेखी कमाड वय करी रने पर्ग रज्जु वांघीने चारे तरफ फेरव्युं.

ए मगणे छनक्षत्र मुनिनी पेठे अन्य साधुए पण गुरुभक्तियां राग करतो, एवी ज्यानो उपदेश हो.

पुनेहिं चोइया पुरकडिं. मिनिशायणं शिवस्रमना।

एस मागसेसिनहा, देवयिमिय पड्जवार्मित ॥ १०१ ॥
अर्थ-" पूर्वकृत प्रण्यवटे मेरायला, लक्ष्मीना भागन गने आगामि कांचे
कल्याण थवासुं छे एवा भन्य जीनो पोताना गुक्ने देनतानी जेम सेवे छे.
जेवी रीते देवनी सेवा करे तेवी राते गुक्नी गुण सेना करे छे. "१०१.

चहु सुरुख सयसहस्साण, दायमा मोर्टोंगा दुर्सहस्साणं आयरिक्रा फुड मेळां, केसि पएसिक्रा तहेल ॥ १००० ॥ अर्थ-"चहु मकारना लाखोगमे मुखना आपनारा, अने संकडो अध्वा इ:खथी मुकावनारा धर्माचार्य होय हो. ए बात मगट हो (एमां संटेह जेतु न मदेशी राजाने केशी गणधर तेबीज रीते सुखना हेतु थयेला हो." १०२.

अहीं केशी गणधर अने मदेशी राजानो उपनय जाणवी. ३९ जंबुद्वीपना भारतवर्षमां कैकयाई देशमां उवेतांवी नामनी नगरी छे. त्यां नो शिरोमणि जेना इस्त निरंतर रुधिरथी छेपायेछाज रहे छे एवो, परलेकी फार विनानो अने पुण्यपापमां निरपेक्ष मदेशी नामनो राजा हतो. तेने वि नामनी मंत्री हतो. तेने एक दिवसे पदेशी राजाए श्रावस्ती नगरीपां जितंशत्रु पासे मोकल्यो. त्यां ते केशिकुमार नामना मुनिनी देशना सांभकीने परम थयो. पछी तेणे केशिकुमारने विद्यप्ति करी के 'हे स्वामीन ! एक वलते आ तांची नगरीए पधारवानी कृपा करवी. आपने तेथी लाभ थरो. केशिगणवरे के 'तमारो राजा वह दृए छे तेथी केवी रीते आबीए?' चित्रसार्थिए कर्ष के दुष्टछे तो तेथी शुं? त्यां बोजा भव्य जीवो पण घणा वसेछे. 'त्यारे केशिक्रमारे भसंगे जोडशुं १ पछी चित्रसार्थि क्वेतांवीए आब्यो. अन्यदा केशिकुमार प्र मुनिओधी परिवृत यह इवेतांचीनी वहार मृगवन नामना उपवनमां सूझ चित्रसार्थि तेमनुं आववुं सांभळी मनमां विचार करवा लाग्यों के हुं राज छतां दुर्नुद्धि अने पापी एवो मारो राजा नरके न जवा जोइए, माटे तेने अ पासे लइ जाउं. ' एवं विचारी अञ्चलीडाना मिपथी राजाने नगर छड़ गयो. पछी अति श्रमधी थाकी गयेल राजा श्री केशिकुमारे अलंकि वनमां आच्यो. त्यां घणा लोकोने देशना देतां तेमने जोड़ने राजाए वि पृष्टयुं के 'आ मुंहो जह अने अज्ञानी लोकोनी आगल शुं कहे छे ? ' विश्वमा

गाया १०१-पुष्णेहि. गाया १०२-दुहसयाणं. तेहेड-तद्धतः मृम्बहेहः

ं के 'हुं जाणतो नथी.' जा आपनी इच्छा हाय तो चालो. त्यां जहने सांभळीए. भिमाणे कहेतां राजा चित्रसारियनी साथे त्यां गयो, अने वंदनादि विनय कर्या विना ने पूछ्यं के 'आपना हुकम द्दाय तो वेखं ?' गुरुए कहुं के 'आ तमारी भूमि छे, है इच्छा मुनव करो. 'ए सांभळीने राजा तेमनी आगळ वेठो. तेने वेठेळो इने आचार्ये विशेषे करीने जीव आदिनुं स्वरूप वर्णन्युं. ते सांपळीने रानाए ं के "आ सर्व असंबद्ध छे. जो वस्तु परयक्ष देखाय तेज सत् होय छे. जेम पृथ्वी 乃 तेज ने वासु मत्यक्ष देखाय छे तेम आ जीव मत्यक्ष देखातो नधी तेथी आकाश-ीवत् अविद्यमान एवी जीवसत्ता केम मानी शकाय ? " स्यारे केशिक्रमारे कह्युं के िराजा! जे वस्तु तारी नजरे देखाय नहि ते शुं सवळानी नजरे न देखाय ? हैं कही शके ' जे हुं देखुं निह ते सर्व असरप छे' तो ते मिथया कथन छे. कारण रसपळाए जोधुं होय अने एके न जायुं होय तो ते असत्य उस्तुं नथी. वळी जी कही क 'सघळाओं जोइ शकता नथी' तो हुं शुं सर्वष्ठ छे के जेथी वया जोइ शकता नथी नो तने खबर पड़ी ? जे सर्वज्ञ छे ते तो जीवने मत्यक्ष छए छे. तुं तारा शरीरता म भाग ज़ाइ शके छे पण पृष्ठ भाग जाइ शकतो नथी तो जीवतुं स्वरूप के जे अवरी मते तो शी रीते जोइ शके ? माटे जीवसचा छे एय मानीने परक्रोकर्त साधन छे ी ममाण कर." त्यारे मदेशि राजाए कतुं के 'हे स्वामी ! मारो पितायह अरपंत वी इतो ते तमारा मस ममाणे नरके जवा जाइए. तेने हुं घणोज मिय इता,पण तेणे वीने मने कहुं नहि के पाप करीश नहि. पाप करीश तो नरके जहुं पडशे, त्यारे विसत्ताने हुं केवी रीते मान्य फरुं ?' केशिकुमार मुनिए कहु के 'तेनो उत्तरसांभळ--री सरीकंता राणीनी साथे विषयसेवन करतां कोइ परप्रुरुपने जी है जुर तो तेने थि कर ?' राजाए कहां के 'हुं तेने एक घाए वे डुकडा करी मारी नाखुं, एक क्षण हैंबमेळाप करवाने माटे तेने घेर जवानी पण रजा आधुं नहि.' ग्रहए कहुं के ' ए ाणे नारकीओ पण कर्मथी वंघायेला होवाथी अत्रे आवी शकता नयी.' फरीथी नाए कहुं के 'अति धर्मिष्ठ एवी मारी माता तमारा मत ममाणे स्वर्गमां गइ हत्ते. पण आवोने मने कहां नहि के वत्स ! पुण्य करजे. पुण्य करवाथी स्वर्ग मळे छे, हैं जीवसत्ताने केवी रीते प्रमाण करुं ?' त्यारे केशिगणधरे कधुं के 'तमे भन्य पहेरी चंदन आदिथी शरीरने लिप्त करी स्त्रीनी साथे महेलमां क्रीडा करता है। वलते फोइ चंडाल तमने अपवित्र भूमिमां बोलावे ता तमे त्यां जाओं के नहि ?" मीए कहुं के 'न जाइं.' गुरुए कछुं के तेवी रीते देवो पण पोताना भोगाने छोडीने वियो मरेला आ मृत्युलोकमां आवता नयो. कधुं छे के-

चत्तारिपंचजोयणसयाई, गंधोख मणुळ लोगस्स। जहं वद्यइ जेणं, न हु देवा तेण आवंति॥

"आ मनुष्यलोकनो दुर्गीघ चारश पाचशें योजन सुधी उचो जाय है। देवताओं अहीं आवता नथीं." फरीथी राजाए कहां के 'हे स्वामी ! एकवार ! भोरने जीवतो पव ख्यो अने छोढानी के। ठीपां नाखी तेनुं वारणुं वंध कर्युं का के ते कोठी हुं पारण उघाडी जो युं तो चोर मरी गया हतो अने तेना करेन्स् जीवडांओ उत्पन्न थयां हतां पण तेमां लिद्र परेलां नहोतां ता ते जीवने नीर भने बीजा जीबोने आववानां छिद्रो तो होगं जाडए. मं ते जीयां निह तेगी क जीव नथी. 'केशिकुमारे कहुं के 'कोड एक प्रक्षने घरना गर्भागामां राखवाः अमे घरनां सर्व द्वार वंध करवामां आवे;पछी ते मध्ये रह्यो सती शंख ने मेरी बाजिंत्र बगाहे, तो तेनो शब्द यहार संभक्षाय के निह ?' राजाए कहां के संभवा गुरुए कह्य के 'यहार शब्द आववाथी शु ओरडानी भींतमां छिद्रो पहेंछे ! राजाप के 'पडतां नथी. ' गुरुए कत् के ' जो रूपी शब्दथी छिद्र पडतां नथी तो श जीवथी छिट्टो केम पढे ?? फरीबी घटेशी राजाए वहा के 'हे स्वामी! एक फेशिगणधरे फहाँ के "सु फडीयारानी जेवो मृख देखाय है. केटलाएक कडीय छाफडां छेवाने माटे वनमां गया. तेमांथी एक कठीयाराने कहा के आ हेथी रसे।इनो वस्तत थाय त्यारे रसे।इ करजे. किंद आ अजिन बुझाँ जा था अरणीना काष्ट्रमांथी अग्नि उत्पन्न करजे. 'ए प्रमाणे कहीने तेओ गयी. अप्रि बुहाइ गयो तथी पेला मूर्ख कहीयारे अर्णी हुं लाक हुं लाकी तेना . क्या. परंतु अग्नि उत्पन्न थयो नहि. तेटलामां पेला करीयाराओं आला. नेनी मृत्ता जाणी बीजं अरणीचं काष्ट हाबी तेनु मयन वरीने तेमांधी करित अर्था अने करीने तेमांधी करित अर्था अने करीने तेमांधी ययों, अने रमोड वर्ग भोजन वर्यु, एम जेबी राते काप्टनी अहर गहेली अहर पथी मधाय हे तेवी रीते देहमां रहेलो जीव पण साधी शकाय हे. मांप्रीने मदेशि राजाए करों के "हे स्वामिन्! में एक चौरतुं वृजन का भाषानु रंदन करीने तेने मारी नांख्यो, तेने फरीथी तेख्यो तो ते तेट्याप्त के यदोः त्यार में जात्रुं के 'गीर नथीः' जो नेनामां जीव होत तो जीव जनते कोने। यात." देशियणभरे क्या के 'हे महीपति! तोम पूर्व जो रेखी चामहाते. ने राज्य में बार्जी पूर्व करीने जासना पण ने तेटलीन धाय है-मार बार्ज है हैं दोने हीय रोबर्स तुं सारी शिते विचार कर. ज्यारे स्पी द्रव्य हैंग

र वध्यो निह तो अरूपी द्रव्य जीवना जवाथी न्यूनता शी रीते थाय? मृहम एवा रूपी योनी पण विचित्र गितछे तो अरूपी द्रव्यनी विचित्र गित होय तेमां ते। शुं कहे छुं! माटे वावतमां तुं शामाटे शंकित थाय छे! आत्मा आपणने अनुमान ममाणथी गम्य छे किवछीने पत्यक्ष ममाणथी गम्य छे. वळी 'हुं सुखी छुं हुं दुःखी छुं' ए प्रकार हुं जे थाय छे ते आत्मा हुं ज छक्षण छे. माटे जेम तछनी अंदर तेळ, दुधनी अंदर घी काष्ट्रनो अंदर अग्नि रहेळ छे तम देहनी अंदर जीव रहेळो छे." इत्यादि अनेक ोना उत्तर शास्त्र शुक्तिथी आप्या तेथी सदेहरहित थयेलो राजा विचार करवा लाग्या 'आ वात सत्य छे, आ ज्ञानने धन्य छे, पछो गुरुने नमस्कार करीने राजाए विकरी के 'हे भगवन! तमारा उपदेश रूपी मंत्रधो मारा हृदयमां रहेलो मिध्यात्व पिशाच-भागी गयो, परंतु कुळपरंपराथी आवेळा नास्तिक मतने हुं केवी रीते हुं?' त्यारे केशिकुमार मुनिए कहुं के "हे प्रदेशि राजा! तुं लोहवणिकनी पेठे किम वने छे ? ते वार्ता आ प्रमाणे छे—

केटबाक वर्णिको व्यापार करवाने माटे परदेश जवा चाल्याः मार्गमां तेओए लोहानी त्याण दोटी, एडले तेओए लाहानां गाडां भर्यी. आगळ चालतां तां- . ी लाण जाइ, तेथी छोडुं खाछी करीने ताबु भर्युः मात्र एक वाणोआए छोडुं बी कर्युं निह. आगळ चालतां ते ओए रुपानी खाण जाइ, एटले तांबुं खाली करी भर्छे. घशुं कहेतां छतां पण पेछा छोहवणिके छोहुं काढो नांख्युं निह आगळ उतां तेओए सानानी खाण जाइ, तेथी रुषुं खाळी करी सोन्नं भर्युं. आगळ चोळतां ोनी खाण जीइ, एटछे सोतुं खाछी खरी रत्नो भर्या. ते वखते तेओ पेछा छोइ-गमने कहेवा लाग्या के 'हे मुर्ख ! आ मेळवेलो रत्नसमूह तं शापाटे ग्रमावे छे! हं तज़ी दहने रत्नो ग्रहण कर, निह ती पाछल्यो जरुर तने प्याताप करनो पड़शे' प्पाणे तेने घणुं कहेदामां आव्युं छतां तेणे मान्युं नहि अने कहेदा लाग्यो के मारामां स्थिरता नथो, तेथी एकने छोडा वीजाने ग्रहण कराछो अने वोजाने छोडी नाने प्रहण करोछे। पण हुँ ए प्रमाणे करता नयी. में तो जेनो स्रोकार कर्यो तेनो ीं.' पछा ते सपळा घेर आव्या, अने रत्नना प्रभावयो पेळा विणको सुली यया. ने सुली थयेला जोइने लोहवणिक मनमां पश्चाताप करवा लाग्यों के 'अरे! में थं कर्य ! तेओ तुं कहे बुं में मान्युं नहि.' एम तेणे घणा काळ सुधी शोच कर्यो. ए ाणे हे मदेशि राजा ! तने पण लोहनणिकनी पेठे पथाताप करवो पडशे. वली जे भी होषछे ते शु कुळपरंपराधी जावेल रोग के दारिष्यनो त्याग करवा नथी इच्छ-ी जो कळभार्ग तेज धर्न होय तो पछी दुनियामां अधर्मतुं नाम पण नष्ट थशे. वली-

दारिष्ठदास्यदुनेयद्भगनादः स्वितादि (पत्नितिम । नेवं त्याद्यं तन्यः स्वकुलाचारेककणितन्यः॥

" दारिहा, दासपणुं, अनीति, दर्भागीपणं अने दःगीपणुं आदि जे पीताना। तादिए आचयुं होय तेने पोतानो वुळाचार एन नीति हो, एम कहेनारा पुत्रीए तजबुं जीइए." माहे हे राजा ! गुलाचार ए भूग नथी, तिनु जंतनी यहा करवीहरू दिज धर्म हो." इत्यादि वचनोथी प्रतियोध पामेलो प्रदेशि राजा विनय पूर्वक के 'हे भगवन ! आ आपनुं वाक्य मत्थ हो अने तका रूप हो, एज खरों अर्थ है। शिवाय बीज़ं सर्व अनर्थन छे.' ए प्रमाणे फर्राने पदित्र राजाए समिकितमूळ वतो ग्रहण कर्या. फरीधी शिक्षाने अवसरे केशि गणधरे कल के-

माणं तुम पएसी पुव्चि रमणिको जवित्ता पच्ठा अरमणिकी

भविद्धासिइति.

आं राजमश्रीय सुत्रनो आळावो छे. तेना भावार्थ ए छे के 'प्रदेशि राजी तुं पूर्वे रमणिक थइने पश्चात् (हवे) अरमणिकन थइना. ' एटले प्रथम अन्यनो । थइ सांमत काळे जिनधर्मनी मामि थवाथी तेमनो अदाता न थड़का; केमके तेम अमने अंतराय कमें वंधाय अने जिन्धमनी अपभ्राजना (निंदा) थाय. वळी ब वखतथी चाल्या आवता दाननो निषेध करवाथी छोवः विरुद्धता अने अमभाजनाहिः तने पण माप्त थाय. माटे जेने आपतो हो तेने आपत्रुं पण पात्रवृद्धिए न आपतुं अ इंत विगेरे पण उचित दाननो निषेध करता नथी, माटे तारे तो मिध्यास्यने तर्न सर्वथी उत्तम एवा द्यादानने निरंतर धारण करवुं.'' ए प्रमाणे गुरुनी शिक्षा फरीने मदेशि राजा घेर आच्यो, अने पोताना धननो (राज्यनी आवदानीनो) भाग अंतःपुर माटे, वीजा भाग सैन्य माटे, त्रीजा भाग भंडार माटे अने वीयो दानशाला माटे वपयोगमां लेको. ए ममाणे मुकरर करीने सर्व उपज चार भाग हेंची दींघी. अनुक्रमे आव्या पालतां केटलोक काल व्यतीत यया वाद एकर पुरुपमां छुन्ध थयेली 'सूर्यकान्ता' नामनी तेनी पटराणीए तेने भोजनमां विष ते वातनी भोजन क्या पछी मदेशि राजाने खबर पडी, परंतु अन्याकुळ चिते राजी किंचित पण क्रोध कर्या विना पौपधशालामां आवी, दर्भनो संथारो करी, ईशान सन्मुख वेसी, भगवान धर्माचार्य श्रींकेशि गणधरने नमस्कार करी, पोते लीधेला छागेला अतीचारोनी सम्यक मकारे आलोचना मतिक्रमणा करीने तेण काल अने सूर्याभ नामना विमानमां चार परयोपम आयुष्यवाळो सूर्याभ नामनो हैं पाछो त्यांथी च्यची महाविदेहमां अवतरीने मोक्षे जहा. भगाणे नरकमां जवाने तैयार थयेला अतिपापी प्रदेशि राजाए जे देविवान प्राप्त ते केशिगणधरतुंज महात्म्य ले. माटे "दुःखतुं निवारण करनार अने सुखने प्राप्त ।नार धर्माचार्योनीज यत्न पूर्वक सेवा करवी " एवो आ कथानो उपदेश ले.

आज हकीकत् गाथा १०३ मां ग्रंथकर्ता पोतेज कहे छे ते आ प्रमाणे-नरयगृहगमणपृडिहत्थएकए, तहृ पएसिणा रन्ना ।

अमराविमाणं पत्तं, तं आयरियप्पत्तावेणं ॥ १०३ ॥ अर्थ-"तेमल नरकगतिए जवातुं प्रस्थातुं कर्या छतां प्रदेशि राजाए जे देवविमान कर्षुं ते आचार्यना प्रभावथील लाणवुं." १०३. तेथी ग्रुक्ती सेवनाल मोटा फळने ारी छे. वळी-

थम्मम्हएाह्ं ऋद्सुंदरीहं कारणगुणावणीएाहं।

पटलायंतो य मणं, सीसं चाएई छायरिओ ॥ १०४ ॥ अर्थ-" आचार्य धर्ममय, अतिसंदर अने ज्ञान दर्शन चारित्र रूप कारण संबंधी ए सहित एवां वचनो वहे (शिष्यना) मनने आनंद उपजावता सता शिष्यने किरे छे-शिक्षा आपे छे." १०४

षर्ममय ते धर्मनी पच्रतावाळां अने अतिसंदर एटछे दोपरहित एवां वचन गां.

जीं ऋं कार्जण पेणं, तुर्मणि द्त्रस्स कालिखें ब्जेण।

श्रिविश्व सरीरं चतं, नय जि(एअ महम्मसंजुतं ॥ १०५ ॥
भीय-'तुरमणि नगरीमां काळिकाचार्ये दत्त राजानी आगळ जीवितव्यनुं पण करीने
पण (मनवहे) तज्युं, परंतु अधर्मसंयुक्त (असत्य वचन) वोल्या निह." १०५ दत्त राजाए यह्ननुं फळ पूछ्ये सते काळिकाचार्ये तेनो भय मात्र अवगणीने
हे शरीर पण तजीदहने 'तेनु फळ नरक छे 'एम स्वष्ट कहुं, पण धर्म विरुद्ध
आध्यो नहि. ए प्रमाणे अन्य मुनिए भयना प्रसंगमां पण असत्य वचन वोल्रवं
भहीं काळिकाचार्यना संवंध जाणवो. २०

काळिकाचार्यनी कया.

प्रमणि नामना नगरमां 'जितशतु' नामे राजा हतो. ते गाममां एक 'कालिक' नो बाह्मण रहेतो हतो. ते ब्राह्मणने 'भद्रा' नामे वहेन हती, अने ते भद्राने'द्त्त' पुत्र हती. एकदा कालिक ब्राह्मणे पोतानी मेळे प्रतियोध पामीने चारित्र प्रहण

ग १०३-नरइगइ. प्रस्थानके कृत, गाथा १०४-धम्ममप्डिं, गाया १०५-द्वृदिमणात्यं कं.

कर्यु अने अनुक्रमे तेमणे आचार्यपद मेळव्युं. तेमनो भाणेज दत्त स्वन्छंदी चूत आदि व्यसनोथो परामव पामी राजानो सेवा वरवा छाग्यो. कर्मयांगे र मंत्रीपद आप्युं. अधिकार मळतां राजानेज पद्भ्रष्ट करीने ते राज्य प्वारी राजा पण तेना भयथी नासो गयो अने गुप्तपणे कोइ स्थानके रह्यो. पछी महा करनारो ते दत्त राजा मिध्यात्वयी मोह पामीने अनेक यक्नो कराववा हा संख्यावंध पशुओनो घात करवा छाग्यो. अन्यदा अवसरे कालिकाचार्य महा समवसर्या, त्यारे भद्रा माताना आग्रह्यी दत्त राजा वांदवाने आव्यो. एर देशना आपी के—

घर्माछनं धनत एव समस्तकामा कामेन्य एव सकलेंद्रियजं सुखं च। कार्यार्थेना हि खलुकारणमेषणीयं धर्मों विधेय इति तत्त्वविदो वदन्ति॥

"धर्मथी धन मळे छे, धनथी समस्त कामनाओ सिद्ध थाय छे अने। नानी सिद्धिथी समग्र इंद्रियजन्य सुख माप्त थायछे माटे कार्यार्थीए तो अव! शोधनुं जीइए, तेथी धर्म करवो एनं तत्त्ववेताओ कहे छे."

आ प्रमाणे सांभळीने दत्ते यज्ञतुं फळ पूछतुं. गुरुए कहुं के 'डवां ' त्यां धर्मना अभाव छे.' कहुं छे के-

दमोदेवगुरूपास्तिदीनमध्ययनं तपः। सर्वमप्येतद्फलं हिंसां चेन्न परित्यजेत्॥

" इंद्रियोनं दमन, देवगुरुनी सेवा, दान, अध्ययन अने तप-ए स हिंसाना त्याग न करे तो व्यर्थ के?"

फरीथी दत्ते यहतुं फळ पूछतुं. त्यारे गुरुए कहुं के 'हिंसा दुर्गतितुं कहुं छे के—

> पंगुकुष्टिकुणित्वादि हद्वा हिंसाफलं सुधीः। निरागस्त्रसजंत्नां हिंसां संकल्पतस्त्यजेत्॥

" हाता माणमे पांगलापणुं, कोढीआपणुं ने हुंडापणुं विगेरे हिसार एक लागीने निरपावी एवा त्रस माणीओनो हिंसा संकल्पाटे पण न कर बटी टने कर के नमें आवी आटो आटो जनर केम आयो छो? पहले हो.

स्य कहो. ' त्यारे कालिकाचार्ये विचार कर्यी के ' जो के आ राजा छे अने मीतिवालो छे ते छतां जे वनवातुं होय ते बनो पण हुं पिथ्या बोलोश निह. पण पिथ्या बोलवुं कल्यांणकारी नथी.' कहुं छे के—

निंदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लह्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् । अयवै वा मरणमस्तु युगान्तरे वा

न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

" नीषुण गणाता लोका भले निंदा करो अथवा स्तृति करो, लक्ष्मी भले माप्त अथवा मरजी मुजद चाली जाओ, मरण आज थाओ अथवा युगने अंते , परंतु घोर पुरुषो नीतिना मार्गथी एक पगलुं पण खसता नथी. " आ मणाणे विचारी कालिकाचार्ये कहुं के 'हे दत्त ! हुं निश्चय पूर्वक कहुं छुं कर्मात एन यहनुं फल छे." कहुं छे के—

यूपं हित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥

" यहरतंभ छेदो, पशुओने हणी अने रुघिरनो कोचड करी जी स्वर्गे जवातु तो पछी नरकमां कोण जहां?" दक्ते कहां के 'ए केवी रीते जणाय? 'गुरुए के 'आजधी सातमे दिवसे घोडाना पगना डावळाथी उढेळी विष्ठा तारा मुख्मां अने पछी तुं छोडानी कोठीमां पूराइश. आ अनुमानधी तारी अवश्य नरकगित हो छे एम जाणजे. ' दते कहां के 'तमारी शी गित थशे?" गुरुए कहां के 'प्रान्त मभावथी स्वर्गे जइशुं. आ ममाणे सांभळीने क्रोधित थयेळा दने विचार के 'जो सात दिवसनी अंदर आ वाक्य ममाणे निह वने तो पछी हुं अवश्य मिरी नांखीश. 'आम विचारी कालिकाचार्यनी आसपास राजसेवकोने मुकी नगरमां आक्यो, अने आखा शहरना तमाम रस्ताओमाथी अपवित्र पढायों काढी ही साफ कराज्या अने सर्व स्थळे पुष्पो वेराज्यां. पोते अंतः पुरमांत्र रहाो. ए मे छ दिवसो ज्यतीत थया पछी आठमा दिवसनी आंतिथी सातमे दिवसे क्रोधित योडा उपर स्वार थइ गुरुने हण्या चाल्यो. तेवामां कोडएक दृद्ध माळी नवानी द्याजतथी पीडा पामवाने लीवे रस्तामांत्र विटा करी तेने पुष्पोयो ढांकीने मे गयो. तेना उपर दृत्त राजाना थोडानो पग पड्यो, तेथी विष्टानो अंश उछळीने ना मुखमां पढयो. एटळे गुरुना वचनपर विश्वास आववायी राजा पाछो वळयो

त्यां एफांत जाणीने जितरान् राजाना सेनकोए तेने एक श लोगो अने गादीए बेसार्थी. पछी सामंतराजाओए विचार्य के 'जो भा जीवतो रहेंने हैं दायी थशे.' एम विचारी तेओए तेने छोषानी कोडीमां नांख्या. पठी वा पर्यंत महान दुःख भोगवतो सतो विलाप करतो अने पोकार करतो ते गत मरीने ते सात्मी नरके गया, अने शीकालिकाचार्य तो नारिवने सेवीने सं

ए भगाणे साधुए माणांते .पण मिशना भाषण न करवुं एवा अ

उपदेश छे.

फुडपागम्मकहतो, जहिट्ट चोहिलाभ मुवहणूइ। जह भगवद्यो विसालो, जर्मरणमहोअही द्यांति॥ अर्थ-" रफुट मगढ (सत्यार्थ) न कहेवाथो यथ। स्थित-सत्य एवा व आगाधी भवे धर्मपाप्तिने एणी नाखे छे-विनाश फरे छे. जीम भगवंत भ क्वामीने (मिरिविना भवमां सस्य न कहेनाथी) विशाष्ट एवा जरा मरण हर महासमुद्र थयो. अर्थात् कोटाकाटि सागरोपम ममाण संसार वधायेरि १९

अहीं भी महावीर स्वामीना पूर्वभवनी संबंध जाणवे। ३१.

प्रथम भवमां पश्चिम महाबिदेहने विषे 'नयसार' नामे कोइ ग्रामाधिव इतो. से एक दिवस फाष्ट छेवाने माटे वनमां गया मध्या इसमये भोजन ते अवसरे साथथी विखुटा पडी गयेका कोइ एक मुनि त्यां आज्या तेने जी घणो खुशी थया अने भावधी श्रद्धा पूर्वक तेने आहार आत्या. आहार ही पछी साधुने मार्ग वताववाने माटे ते साथे गया. साधुए पण योग्य जीव ग देशनाव हे सम्यवत् पाष्त् कराच्युं. पछी ते साधुने न्मीने घेर गया. मरण पामीने ते सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थया. ए वीजा भव थया.

त्यांथी च्यवीने त्रीना भवमां मरिचि नामे भरत चक्रवर्तीना पुत्र धर्वी पभदेव भगवाननी देशना सांभळो, भोगानो त्याग करी स्थविर मुनि ग्रहण कर्यु. पछी अग्यारअगन्तं अध्ययन करी चारित्र पाळतां एकवार तापथो पीडित थइने ते विचार करवा छाग्या के 'माराथी चारित्र पळवुं आ चारित्रधम अति दुष्कर छे, तेथो माराथी ते पाळी शकाय तेम नथी अते ए पण योग्य नथी ? ए पणके ि ए पण योग्य नथी. ए प्रमाणे विचार करीने तेणे एक नवी त्रिदंडी वेष प्रश् परंतु जे केाइ तेने धर्म पूछे तेनी आगळ साधुधर्म प्रकाशित करे अने जे देशनाथी प्रतिवोध पामे तेने भगवाननो पासे मोकछे. आ प्रमाणे तेणे अने

याया १०६-महोअहि.

ैं भातेबोघ पमाडचो. आ स्थितिमां पण मरीचि भगवाननी साथे विचरे छे. विहार किरतां एक वार भगवान अयोध्यामां समवसर्याः भरत चक्री मधुने बांद्वा अने देशनाने अंते पूछ्युं के 'हे भगवन्! आ आवी मोटी सभामां कोई प्ण (यनार) तीर्थंकर छे ? भगवाने कहुं के 'आ त्रिदंडी सन्यासी वेपवारी मरी-मि तारो पुत्र आ चोवीशीमा चावीशमा 'वर्धमान' नामे तीर्थंक्र, महाविदेहने विषे नगरीमां ' पियमित्र' नामे चक्रवर्ती अने आ भरतक्षेत्रमांज 'त्रिपृष्ठ' नामे पहेलो व यशे. ए प्रथम ने पदनीने भोगनी छेन्दे तीर्थंकर यशे. 'ए सांभळी भरते । पासे जइ, त्रण प्रदक्षिणा दइ, नमस्कार करीने कहुं के "हे मरीचि ! आ मां जेटला लाभ छे तेटला वधा ते मेळच्या छे. कारणके तुं चक्रवर्ती, वामुदेव तीर्थकर थनार छे; माटे हुं तारा परिवाजक वेपनी अनुमोदना करतो नथीं; परंतु हो तीर्थंकर थनार छे तेथी हुं तने वांदु छुं. " ए मगाणे कहीने भरत चक्रीना पछी मरी चिए जण चलत पण पछाडी नाचतां नाचतां कर्तुं के 'हुं जण पद िश्व तेथी मारुं कुळ उत्तम छे. 'ए प्रमाणे वारंवार कुळनो मद करवाथी तेणे गोत्र वांध्युं, अन्यदा प्रथम प्रभु मोक्षे गया पछी साधु साथे विहार फरतां तेना ं मांदगी आवी, परंतु साधुना आचारथी रहित होवाने छीधे तेनी केाइए सेवा चा-करी नहि. तेथी ते विचार करवा छाण्या के 'जा हुं साजा थाउं तो एक शिष्य करं.' भमे ते स्वस्य थया. एक दिवस कोइ 'किपळ 'नामे राजपुत्र मरीचिनी देशना बी प्रतिवोध पास्योः त्यारे मरिचिए कहुं के 'हे कपिल ! हुं साधु पासे जह चा-प्रहण कर.' तेणे कहुं के 'हुं तमारो शिष्य थडश.' पछी मरीचिए पोतानुं स्व-पधार्थ कही वताच्युं अने कहुं के 'मारामां चारित्र नथी. ' तोपण किपळ मान्यो अने कहेवा लाग्या के ' शुं तमारा दर्शनमां सर्वथा धर्म नथीन?' त्यारे मरीचिए कि 'आ कपिल मने योग्य मळ्यो छे.' एम जाणी मरीचिए कहां के 'कपिला पि उद्दंषि 'हे किपल ! साधु समीपे महान धर्म छे, अने मारी पासे अल्प धर्म ए ममाणे सूत्रविरुद्ध कथनथी तेणे एक कोटाकोटि सागरोपम ममाण संसारनी करी. तेनी आलोचना कर्या वगर चोराशी लाख पूर्वनुं आयुप्य पालीने ते चोया पांचमा देवळोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवाळो देवता थयो.

त्यंथी च्यवी पांचमा भवमां कोछाग संनिवेष गाममां एंशी लाख पूर्वना आयुष्य-ह्यांथी च्यवी पांचमा भवमां कोछाग संनिवेष गाममां एंशी लाख पूर्वना आयुष्य-हो बाह्मण थयो. ते भवमां त्रिट्डी यह घणो काल संसारमां भटक्या. (आ भवो श्रीमां लोघा नधी, स्यूल भवोज गणेलाले.) छहा भवमां स्यूणा नगरीमां वांतेर लक्ष ना आयुष्यवालो 'पुष्प' नामे ब्राह्मण थयो, ने त्रिद्ही यह मरण पामीने सातमा भवे भधम देवलेक्सां मध्यम स्थितिवालो देन भयो. त्यांभी नम्बी आहमा भन्म निवेष नामना गामममां साड लाख पूर्वना भाषण्यवालो 'परिपोत'नामे भ छेबटे त्रिद्ही थड गत्य पामीने ननमा भी नीना नेनलोक्तमांप गम स्थितियोत्री त्यांथी च्यूबी दशमा भवे महिरमनियेगे साठ लाख प्रतना लागुरमनाळो जिल झाह्मण थयो. मांते त्रिटंडी शह गत्यु पारगे। अस्यासमा भने नीजादेवलोक्षां मध्य बाळो देव थयो.त्यांथी नग्नी वारमाभवमां त्रतास्त्ररा नगरीमां ने।राशीलास् ष्यवाळो भारद्वाज नामे बाह्मण थयो. लेयटे जित्रीपणे मृत्य पामी तेरमाभवे चेथा षमां मध्यम स्थितिवाळो दव थयो पछी घणो काळ रासारमां महकी चादमा नगरमां चेाबीश लाख पूर्वना आयुष्यवाको 'स्थावर' नामे बाह्मण थयो होती थइ मृत्यु पाम्यो. पदरमा भवे पांचमा देवलोकमां मध्यम स्थितिनो दव यर्षे च्यवी सोलमा भवमां एक कोड वर्षना आगुरमवालो 'विश्वभृति' नामे ' थया. ते जन्ममां तेणे वराण्यपरायण यह सभृति मनि पासे चारित्र ग्रहण व तीव्र तप कर्यु एक दिवस मासक्षपणने पारणे मथुरा नगरीमां गोचरीए गय दुर्चछपणाथी एक गायना अथडावाथी ते भूमिछपर पड़ा गया तेने जोड़ने तेन छोक्सो वैशालनदी हास्य करीने बोल्या के 'तुं एक मुष्टिना प्रहारयी कीठा तमाम फलने भूमि पर पाडी नाखतो हतो ते दिवस वयां गयो ?' आ वच क्रोधायमान थइ ते गायने शींघडावती पकर्डा आकाशमां फेरवीने एवं निर ' जो आ तपतुं फळ होय ते। आगामी भवे हं घणो वळवान थाउं.' ए वर्प तप तपी मांते पापनी आलोचना क्यो विना मरण पामी सत्तरमा भवे लोकमां उत्कृष्ट स्थितिवालो देव थयो. त्यांथी च्यवी अहारमा भवे पोत भजापति नामना राजाने घेर पोते परणेली पातानी एत्री जे मुगावती तेनी स्वप्नथी सूचन करायेल 'त्रिपृष्ठ' नामना वासुद्व थया ते भवमां भरताधने सार्थ पाप करी चाराकी कार्य करें पाप करी चाराची लाख वर्षतुं आयुष्य भोगवी ओगणीशमा भवे सांतमी नाकी रयांथी स्यवीने वीशमा भवे सिंहपण उत्पन्न थया.एकवीशमा भवे चेाथी नरकमां न पणे उत्पन्न थया.त्यारपछी पाछो घणा काळ सुधी संसारमां भटक्या. भवे एक क्रोड वर्षना आयुष्यवाले। महुष्य थयो.ते भवमां शुभ कर्मी करी विशेष महाविदेहमां मुका राजधानीमां 'धनंजय' राजाने चेर घारिणी राणीनी लिस्नि स्द्रप्तथी म्चन करायेला 'पियमित्र' नामे चक्रनतीं थये। पांते पे। हिलाचार्य पाने ग्रहण करी एक केरिय वर्ष सुधी चारित्र पाळी पूरेपुरुं चेरिशी लाख पूर्वेतुं १ का भवो पण गणवीमां नथीः

चोवीग्रमा भवे सातमा देवलोकमां देवपणे उत्तन ययो.त्यांथी च्यनी पवीग्रमा निका नगरीमां जित्रान्त राजाने घेर भद्रा नामनी राणोनो क्विसमां पचीग्र वर्षना आयुष्यवालो नंदन नामे पुत्र थयो. तेणे ते भग्नमां पोष्टिलाचार्य पासे लक्ष्य यावज्ञीद मासक्षपण करी वीग्रस्थानकनी आराधनावढे तीर्थकरनामकर्म कर्यु. एक लाख वर्ष सुधी चारित्र पालोने मांते एक मासनी संलखनवढे मा भवने विषे द्रामा देवलोकमां पुष्णोत्तरावतंस विकानमां वीग्र सागरोपमना पवाला देवता थया. त्यांथी च्यवो सतावीगमा भवे चोनीग्रमा तीर्थकर थयां. आ प्रमाणे मरीचिना भवमां तेणे उत्स्त्र भाषणयी कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण नी दृद्धि करी. ए प्रमाणे अन्य जीवो पण जो उत्स्त्र भाषण करे तो संसारनी दृद्धि माटे उत्स्त्र भाषण कदि पण कर्चुं निह, एवो आ कथानो उपदेश छे.

कारुझरुझसिंगार—जावजयजीविअंतकरणोहिं॥
साहू अविश्व भरंति, नय निस्निनिअमं निराहंति॥१०७॥
वर्ध-''कारुण्यभाव, रुदन, शृंगारभाव (हावभावादि) राजादिकनो भय अने
तांतकारी अनुक् गितक् उपसर्गवहे साधु कदाचित् मरण पामे छे, परंतु
ना नियमने विराधता नथी." १०७अर्थात् पूर्वोक्त कारणो प्राप्त थतां प्राण तजी
पण वत तजता नथी-कारण्यादिवहे व्रतनी विराधना करता नथी.

अपहिल मायरंतो, ऋणुसोक्नंतो क्र सुग्गई वहह ॥

रहकार दाण्ळाणुमोळगो—िमगो जह य वलदेवो ॥ १०० ॥ अर्थ- 'आत्मिहत एटळे तप संयमादि तने आचरतो सतो पाणी सद्गतिने छो, तेयन तेने—दानादि धर्मने अनुमोटतो सतो पण सद्गतिने पामेळे.जेम मुनिने देनार रथकार, तेना दाननी अनुमोदना करनार मृग अने तपसंयम आचरनार देव मुनि सद्गतिने पाम्या तेम. " १०८

वळदेवमुनि, रथकार ने मृग ए त्रणे पांचमे देवछोके गया, तेथी तप संयमादि ज दान शीलादि धर्म कर्यो, कराच्यो अने अनुमोद्यो सतो पण वहु फळने आपेछे. विं वळदेव, रथकार ने मृगनो संबंध जाणवो. ३२

वळदेव स्थकारने मृगनी कथा.

हारिका नगरीने वाळी नांखवाहुं जेणे नियाणुं करेळळे एवा दिवायन कृषिए पिरुमारपणे उत्पन्न थइ ज्यारे हारिकाने वांळो त्यारे नात्र कृष्ण अने वलस्य वेज

गाया १०७-निअमयुर. गाया १०८-सोगाय दागु श्रंगु मोइगा.

वच्चा पाभ्या. वीजा सर्व वळी गया.वंने भाइओ वनमां गया. त्यां कृत्णने वर्ण लागी तेथी वलभद्र पाणी लाववाने गया. त्यां वेरीनी साथे युद्ध थतां राशिक अहीं कृत्ण एक दृक्षनी नीचे पग उपर पग चहावीने सुता हता. त्यां कृत्णहं पोताने हाथे थवानुं छे एवं श्री नेमीत्वरना मुख्यी जाणीने जेणे ते प्रपाणे न माटेज वनवास ग्रहण करेलो छे एवे। वसुदेवनी जरा राणीनो पुत्र जराहुमां आव्यो. तेणे फरतां फरतां रात्रिए कृत्णना पगने तळीए रहेलं पद्म दृश्यी देखिं आ चक्षचिकत मृगनुं नेत्र जणाय छे एवं धारी तेणे कर्ण पर्यंत वाण खेंचीने चरण दींधी नांख्यो. पासे आवतां ते पोहानो भाइछे एम जाणी पश्चानाप करती जराकुमार विलाप करवा लाग्यो. ते वस्तते कृत्णो कह्युं के 'हे पापी! तुं अहींथी चाल्यो जा, हमणा वलभद्र आवशे तो ते तने मारी नांखको.' ए प्रमाणे कर्षाण क्यार जार तरतज त्यांथी चाल्यो गया.पछी आयुत्यना मांत भागे कृत्णने क्रोध उत्पत्र तेथी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के 'अरे! जुओ त्रणसें ने साट संग्रीमनो एवो हुं महावळवान छतां मने वाणथी हणीने आ राजकुमार क्षेमछ्यळ न्यो! माणे दुर्ध्यानने वश्च थइ मरण पामीने कृत्ण त्रीजी नरके गया.

ते समये जल छड़ने वलभद्र पण त्यां आत्या तेणे कृत्ण मत्ये कतं के दें में तारा माटे टंड जल आण्युं छे, तुं उट अने जल पी., ए प्रमाणे कहेवामां अलतां कृत्णे उत्तर आण्यो निह त्यारे वलदेवे विचार कथीं के भें जल हार यणो वखत गुमाच्यो तेथी आ मारा वंधु क्रोधित थयेला जणाय छे तेथी हु तेने मायुं.' ए प्रमाणे विचार करी प्रमां पडीने अरज करवा लाग्य के दे वंधु फ्रोधनो अवसर छे ? आ मोटा जंगलमां आपणे वंने एकला लीए माटे तुं उत्तर प्रमाणे वारंवार कहेतां छतां पण ज्यारे ते वोल्या निह त्यारे बलदेव मोहक छता मृत्यु पामेला छे छतां तेने जीवता जाणी पाताना स्कंध उपर हाने वार संग्रामां क्रायां कर्ण क्रायां क्रा

आ गंसाग्यां वण वृम्तु सर्वथी अविक छे. कहुं छे के— नीर्थकराणां साम्राज्यं, सपतनीवरमेव च ।

वासुदेववलम्नेहः, सर्वेज्योऽघिककं मतम्॥

प्रय-" तीर्यकार्नुं माम्राज्य, सपनी (शोफ) नुं वर अने वासुरेव ने वर्षे

पनमाणे मनण पामेला भारने स्कंघ उपर पानण वर्गाने नेनी सेवा करता मना है है है व में एक दिवसे पिछार्थ नामना है वे आवी यंत्रमां रेनीपीछवानुं बनाधीने योग के . इस ने वोज पामपा महि , उत्राक्त मार्मा पामा भाउने मरण पामेली हैं कें

कालिकाचार्यते हत्तीत.

विहा तेनी पछवाडे मारवाने दोड्या,पण देव अहरूय थड् गयो. वली फरीधी ते पर्वतनी शिष्ठा उपर कमल बावतो लोहने वलहे वे कहा के 'दे मूर्ख ? शिष्ठानी र शुं कमलनी उत्पत्ति संभवे हे ११ देवं कहुं के पत्ना तारी मृत्यु पामेलो भाइ उमा तने 'हे भाइ!' ए प्रमाणे कहेशे ते। आ शिलानी विषे पण कमलनी उत्पत्ति धशे." छ एम तेमणे जाण्युं नहि. ए प्रमाणे तेमणे छ मास सुधी परिश्रमण कर्युं. पछी ते शरीरने विनाश पामेछं जाण्युं एटले होडी दीयुं. सिद्धार्थहेव ते शरीरने सम् क्षेपन कर्यु. पछी वह विलाप करता एवा वलदेवने श्री ने भिनाथे मेा फलेला चारण र आवीने प्रतिवोध पमाडया,तेथी वैशायपरायण घडने तेमणे ते चारण मुनि पासे ा लीघी.पछी पर्वत लपर रही लग्न तप करवा लाग्या एक वार माससपणने पारणे भिनी अंदर आहार छेवाने माटे आवतां तेमने छुवाने कांठे उमेछी एक स्वीए जीया. हिंची मेहित यथेली ते स्त्रीए घडानी भ्रांतियी पुत्रना गलामां दोर्हानी गा-ते नाल्यो. ते जोइने वलराम मुनिए कधुं के हे मुखे! तुं आ उं करे हे ! मेाह्यी मा नाल्या. त जाइन वलराम धानए क्षु पा ० छः न के मारा रूपने विकार क्षी के मारे छे ?? पछी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारा रूपने विचार क्षी के मारा क्षी के मारे छे ? ए एकी तेमणे विचार क्षी के मारा रूपने के म पान यहन पुत्रन कम मार छ। पछा तमण विषा सेववीज सारी छे. ए प्रमाणे मि हवेथी मारे नगरमां आववुं श्रेयस्कर नथीं। वनवास नेविवीज सारी छे. क्रांत्र मिन्न करीने तंगिका पर्वत उपर रहा। त्यां पारणाने दिवसे की केहि सार्थ अधवा ायारे। आये छे अने ते तेमने शुद्ध अन वहारावे छे तो ते आहार करे छे.
यारे। आवे छे अने ते तेमने शुद्ध अन वहारावे छे तो ते आहार करे छे.
तपमां द्याद करे छे. ए प्रमाण तप करतां तेमने अनेक लिक्स्यो उत्पन्न यह ानावहे अने क न्या प्रतथा सिंह विगेरे प्राणीओने प्रतिदेश प्राणि अने का सिद्धा-वण तेमनी सेवामांज रहेवा लाग्या त्यां एक अतिमहक मृग देशनाथी मित्रोध ा.ते अहर्तिश तेमनी सेवा करेहे अने वन्मां भमेहे, ज्यां ते आहारना येग जाणहे ते संबंधी संज्ञावहे चलमद्र मुनिने जणावे हो. मुनि पण तेने आगळ करीने त्यां जायहे. ा नापता कापता अरथा मूका तना रतार गर्म आल्या. साधुने आवेला जोह भाषहे मुनिने निवेदन कर्धु. मुनि मृगनी साथे त्यां आल्या. केन्ने नाम ताम आताल करे

ोना जपर पहचायी ते त्रणे जणा काल करी पांचमा देवलोके उत्पन्न धया. त्तार बलदेव साधु,सहाय करनार रधकार अने अनुमोहना करनार मृग-ए १ सरखं फल मेळव्युं. माटे आ जैनयम आच्या हाय,वीना पासे पळाच्या काइ पाळनारनी अनुमादना करी होय ते ते समान पाळ पण आपेछे। तेथी निरंतर धर्ममां उपम करवी, एवी आ कथाना उपदेश हैं।

ज तं कयं पुरा पूरणेन, अइदुक्तरं निरंकालं। जइ तं द्यावरो इह, करिंतु तो सफलयं हुतं॥ १०९॥ अर्थ-" जे ते अनिदृष्कर एवो तप पूर्व निरकाल-पणा काल पर्यत पूरण क्या. ते तप जा आ संसारमां (ते भवगा) दयातत्परपण क्या हात ता ते " थात. " १०९. प्रंतु तेणे करेला तप घणो छतां अज्ञान दोपनाळा हे।वाने " एच्छ फल माप्त थयेछ होवाथी ते निष्फल गयान फहेनाय.

पुरण तापसे तामछी तापसनी जेवो वार नर्व परीत तप कर्या तेने परिणा चमेरन्द्र थयो, विशेष फळ मळयुं नहि. अहीं पूरण तापसना संवंध जाणको. ३१

पूरण तापसना हत्तांत.

विध्याचळ पर्वत पासे पेढाळ नामे गाममां पूरण नामे एक शेट रहेते। हती दिवस वैराग्यवान थवाथी पाताना पुत्रने पाताने स्थाने स्थापीने तेणे तामिरिक पेठे तापसी दीक्षा लीधी. ते हमेशां छट करीने पारणं करेहे; अने पारणाने । चतुष्काण (चार खानावाछं) पात्र छड्ने परिमित्त घरे भिक्षा अर्थ भमेहे, तेर्न अनादि पात्रना मथम खंडमां (खानामां) पढे ते पक्षीओने आपी देहे, बीजा हैं पहुं है।य ते मत्स्यने आपी देछे, त्रोजा खंडमां पड्युं है।य ते स्थलवर जीवीने अ देछे, अने चोथा खंडमां पहयुं होय ते पेरते खायछे. आ प्रमाणे अति उम्र अहाति वार क्षेत्र स्थान बार वर्ष सुधी करी एक मासनी संछेखनाथी काळधर्म पामी चमरचंची नामनी । भानीमां चमरेन्द्र थयोा. आटर्छ तप जा तेणे द्या पूर्वक कर्युं होत् ते तेने वहुं। माप्त थात. माने हान पर्वत माप्त थात. माटे ज्ञान पूर्वक तप करतुं, एवा आ कथानो उपदेश छे.

कारण नीयावासी, सुहुयँरं उर्जामेण जुईयव्वं।

जह ते संगमथेरा, सपाडिहेरा तया आसि ॥ ११०॥ पण अतिशय उद्यमे करीने (चारित्रविषये) प्रयत्नवान रहेवुं. जेम तेवा-चारित्री ज्यमवंत ' संगम स्थविर ' नामे आचार्य ते काळे (देवसानिध्यथी) स्मानि के॰ महात्म्यवाळा होता हवा. " ११०

एगंत नीयावासी, घरस्सरणाइसु जइ ममत्तंपि। कह नपडिंहाति कलिकलुसरोसदोसाण त्रावाए ॥ १९१ ॥

गाथा १०१—पुर्णेण चिरकालं करती होतं. गाथा ११०—नीयावातं. तदा, नाथा १११-नीयायासे. घरसरणाइसु, आयाप-आपदि,

अर्थ-" रोगादि कारण विना एकांत नित्यावासी के० नित्य एक स्थाने रहेनार घर सज्ज करवा विगेरेमां एटछे पोते जे मकानमां रहेता होय ते मकान दुरस्त विगेरेमां जा म्मत्वपणुं घारण करेछे तो ते मुनि किछ के० क्छेश-कळह,कछुप छन आचरण अने रोप के० क्रोध तद्वप अथवा तेना जे दोप तेनी आपदामां र पहे ? अर्थात् पहेज." १११.

अविकित्तिकण जो वे कसा घरसरणग्रैतिसंठप्पं।

अविकि तिछाइ तं तह, पडीं आ असंजयाण पहे ॥ ११२ ॥ अर्थ-' जीवने हण्याविना घरतुं संमार्जन अने घर फरतुं वोड विगेरे नासवा ंरक्षण क्यांथी थाय ? नज थाय. तेथी तेवा प्रकारना वेपधारी जीवधातको अना मार्गमां पहेलाज जाणवा.'' ११२

उपाश्रयने घर करी वेसनारा अने तेनी सारसंभाळ विगेरे करवा कराववा बाळा पिपारीने माटे आ उपदेश जाणवा. तेमने असंयतिन जाणवा.

थोवोवि गिह्रिपसंगो, जुँइणो सुद्धस्स पंक मावहइ।

जह सा वरित्तरिसि, हसीओ पज्जोद्यनखड्णा ॥ ११३ ॥
अर्ध-" योडो पण गृहस्थनो मसंग शृद्ध मृनिने पण पाप रूप पंक के॰ कर्दमब लगाडे छे. जेम ते वार्तक नामना मृनिनी चंडमधोत नामे राजाए हांसी करी के
नैमित्तिक ! तमने बदन करुं छुं. ' माटे मुनि महाराजाए थोडो पण गृहस्थनो
न करवा." ११३. अहीं वरदत्त मुनिनो संबंध जाणवा. वार्तक ऋषितुं बीछं
वरदत्तमुनि जाणवुं. ३४

वरदत्त मुनितुं दृष्टांत.

चपानगरीमां 'भित्रमभ' नामे राजा हतो. नेने 'धर्मधोप' नामे मंत्री हतो ते नग'धनिमत्र' नामे एक अत्यंत राज्यान्य शेट हतो. ते शेटने 'धनश्री' नामे भार्या
तेमने 'छुजातकुमार' नामे अति कांतिवान, रूपटावण्यशी युक्त अने स्त्रीभोने
भिय लागे तेने पुत्र थयो हतो. एक दिनस धर्मधोप मंत्रीना अंतः पुर पासे यहने
तो हतो, तेनामां 'भियंगुमंत्ररी' नामनी मंत्रीपत्नीए तेने जायो. ते छुमार हुं रूपलाजांड मोहित थयेछी मंत्रीनी सर्व स्त्रीओ परस्पर कहेवा लागी के 'हे सखीओ!
गने आ पुरुप धणो मिय लागे हुं, परंतु जे स्त्रीनो आ भोक्ता यहा ते स्त्रीने घन्य
' प भगाणे विचार थयेलो है। वाधी एक दिनसे भियंगुमंत्ररी गुप्तपणे सुन्नातकुमा-

गाथा ११२-अधिकत्तिकण, संदुष्पं, अधिकत्तिक्षायः पर्हियाः अस्संज्ञयाणः अहत्वा पातवाः गाथा ११३-धेर्यायिः बारिसरिसिः पारतिरिसिः नरययणा

रनो वेप धारण करीने शोकोनी साथे पुरुपनी पेठे कीडा करती परस्पर खेला जा मंत्रीए ते सघळं जायुं, तेथी तेना मनमां इच्यी उत्पन्न थइ. ते विचार करता स्मे के ' अरे ! मारी सघळी स्त्रीओ सुजातकुमारनी साथे विल्ञास करेछे ' पछी तेषे। जातकुमार उपर द्वेप राख्यो, अने सर्व स्त्रीओनो त्याग कर्यो.

एक दिवस मंत्रीए क्टपत्र लखी राजाना हाथभां आप्यो अने क्षुं के भा क्टछेख लखनार सुजातकुमारने मारी जांखने। जोइए.' ए प्रमाणे सांभलीने राम विचार कर्यों के ' जो हुं तेने अहीं एकदम मारी नांखीश तो मारी अपक्रीति के एम जाणी सुनातक्रमारने क्रयत्र छखी आपीने 'चंद्रध्वन' राजानी पांसे मोकल्यो पत्रमां लच्यु के ' आ पत्र लावनार सुजातकुमारने मारी नांखवाः' ते वाक्य बी चंद्रध्वन रानाए विचार कर्यों के 'आ पुरुपरत्नने मारी नांखवानुं शामाटे इसे हैं पछी ग्रप्त चर मोकली तेणे सर्व हकीकत जाणो लीघी पछी तेणे पेलो महपत्र साती पोतानी पासे साचवी राख्यो, अने पोतानी बेन 'चंद्रयशाने' सुजातरुमारनी पग्णार्वा तेने पोताना महेलमां राख्यो.चंद्रयशाना संयोगथी सुजातकुमारने रोग उन थयो. तेथी चंद्रयशा विचारवा लागी के 'मने धिकार छे के मारा संयोगयी शार गेर्गा गर्यो. 'त्यारे सूजातकुमारे कहां के 'हे सुलोचना! आमा तारो कांड अधी न्यी, मार्ग अथुभ कर्मनोज आ दोप छे.' इत्यादि वचनोथी चंद्रयशा मितिवोरं क वैगाम्परमागण गुर, अनशन अंगीकार करीने समाधिथी मृत्यु पामी देवपणे उत्पा राजिशानयी पूर्वभव जाणी त्यां आवी अने सुजातकुमारने कहां के 'हे स्वामित्। तथा ध्यादमी में चंडपजानी जीन देव थयेल छं,माटे जे आज्ञा होय ते यमं, गुनान कर के 'यन मार्ग मातापिता पासे पहोंचाड अने मारुं कलक उतार, जेथी हैं इन्द्र इर्ग. देने तत्काळ ने ममाण कर्युं सुनातकुमारने चंपानगरीना उनानमी म अते रत्यम्माण जिला विक्विति चंद्रमम राजाने भय पमाठी कर्षु के हे नाप्र का गुलालन्यार उपर जिल्दा आचरण केम कर्यु ?' तथी राजाए भयश्रीत था दर हे रापारी इतिकृत यथार्थ निवेदन करी अने सुनातकुमारना पगर्भा पडी वा राज्यक साम्याद्वे पण विला सहरी छीथी.पाडी राजाए सुनानकुमारने हाथी देशारी होत्य परीक्षत माथ नगरमां आण्यो, गुन्नातकुमार पिता माथ रे हे इत्राम प्राप्त करित में थे गया.

र्द्रोग रकीने राजाण देशनिकाल सर्थी. तेना देशकराओण तथा भी वर्ण एको किन आलोर ने अपनी अपनीराजगृह नगरे आठवी रथां तेणे स्थीता पर्धि देशनाज्याण सरने देश जी यो अने गीतांव (सुत्र ने अर्थनी जाणनार) वर्षात कार अगरण नरहत नगाज नगामा बरदत मंत्रीने वेर गांचिति माने स्थीत ी दूषपाकनं भोजन छड्ने सन्मुख वहाराववा आव्यो अने कबं के 'हे स्वामी! आ दींप अस ग्रहण करो.' तेवामां ते पात्रमांथी एक विंदु नीचे पहयुं. ते जोइ घर्मघोप ने पाछा वळी गया. त्यारे चरदत्त मंत्रीए विचार कयेा के 'म्रुनि आहारमाटे आवेळ तां आ श्रद्ध आहार तेमणे शा माटे ग्रहण कर्यी निह ! 'ए प्रमाणे ते विचार करेछे नोमां नोचे पढेला द्थपाकना विंदु उपर एक मिलका (मांखी) वेटी, ते मांखीने ज़ाइने ना उपर एक गरोळी आबी, ते गरोळी उपर एक काकोडो आव्यो ते काकोडाने रवाने एक विलाडी दोडी, त विलाडीना वय माटे घरनो क्तरो आव्यो, अने ते गाने मारवाने माटे दोरीने। क्तरो दोड्यो, दोरीना क्तराने घरना नोकरोए मारी रूपो. त्यारे दोरीना छोकोए घरना क्तराने मारी नांख्यो. पठी घरना नोकरो अने रीना लोको वच्चे परस्पर गाळागाळी थवा लागी. तेमांथी कनीओ वध्यो, अने कोघ पी जनायी बाणो अने रहडूगोबडे युद्ध थवा लाग्युं. तें जीइ वरदत्त मंत्रीए विचार र्वी के ' अहो ! आ साधुने घन्य छे के जेणे आवो भावी उपद्रव जाणीने शुद्ध अझ ापतां छतां पण ग्रहण कर्छ नहि. आ जिनधर्मने पण धन्य छे हवे ए जंगम तीर्ध रूप प्रिनो मने केवी रीते मेळाप धशे?' एम विचार करतां तेने जातिस्मरणहान उत्पन्न र्षं पटछे स्घछं पूर्व भवनं हत्तांत दीक्षाग्रहणादि स्मरणमां आन्यं. पछी स्वयमेव चा-त्र घर देवताए आपेलो वेष घारण करी स्वयंबुद्ध एवा वरदत्त धुनि विहार करतां समारनगरे आव्या, अने नागदेवना चैत्यमां कायोत्सर्ग करीने स्थित थया.

म्रसमारपुरना राजा थुंधुमारने 'अंगारवती' नामे अति रुपवती पुत्री हती. तेणे के दिवस कोई योगिनीनी साथे विवाद कर्यों अने योगिनीने निरुचर करी. योगिनीने पि उत्यन थया, तेथी तेणे अंगारवतीनुं रूप चित्रपटमां आलेखीने उज्जिपनीना राजा दिम्योत' ने वतान्युं. तेना रुपयों गोहित थड़ने अने योगिनीना मुख्यों पण ते रूपवती छे एम सांभळीने ते राजाए धुंधुमार राजा पासे द्त मोकली अंगारवतीनी गणी करी. धुंधुमारे कहेवरान्युं के ' पुत्री मननी मसचतायों अपाय छे पण वळा- विष्णे कड़ शकातीं नथी.' ए मभाणे दूतना मुख्यी सांभळी चंडमयोत राजाने अति प उत्यन्न थयो, तेथी मोटुं लक्कर लड़ मुसमारपुर आवीने घेरो घाल्यो. अल्प सैन्य- को धुंधुमार राजा नगरनी अंदरज रह्यों वहार नीकळ्योज नहि. ए ममाणे घणा रसो व्यवीत थतां धुंधुमार राजाए केडि निमित्त्याने पूछ्युं के 'मारो जय घरों के जिय ! ' निमित्त्ये कहुं के ' हुं निमित्त जोड़ने कहीश.' पठी पेटा निमित्त्याए कमां आवीने घणां वाळकोने व्हीवरान्यां: एटले ते वाळको भय पामोने नागमासा- वर्षे का करता स्टिनी पासे गयां. भयथी आक्कल्याकुळ थयेला ते वाळकोने व्हीवरान्यां: भयथी आक्कल्याकुळ थयेला ते वाळकोने व्हीवरान्यां स्टिका करता स्टिका ते वाळकोने स्टिका स्टिका स्टिका ते वाळकोने स्टिका स्टिका वर्षे स्टिका स्टिका ते वाळकोने व्हीवरान्यां: भयथी आक्कल्याकुळ थयेला ते वाळकोने स्टिका स्टिका स्टिका स्टिका स्टिका ते वाळकोने स्टिका स्टिका

काळमांज मूळगुण जे पाणातिपातविरमणादि तेने पण तजे छै-उत्तर गुणनो भा थये सते मूळगुणनो नाश पण थायज छे. कारण के जेम जेम आ जीव मगाद-क्रिकि छता करेछे तेम तेम ते क्रोधादि कपाये करीने मेराय छे. "११७. एटले प्रकार शिथिलता थवाथी उत्तर गुणनी हानि थायछे, पछी कपायने। उद्भव थवाथी मृत्रा णनी हानि थायछे: माटे उत्तर गुण पण तजवा नहि.

जो निच्छेएण गिन्हुँइ, देहचाएँवि नय धिई मुळ १ सो साहेघ सकड़ां, जह चंदविंसओराया ॥ ११८॥

अर्थ-" जे माणी निश्चयवडे-स्थिरताए करीने व्रत नियमादि ग्रहण करे हे के देहत्यागे-माणांत कृष्ट माप्त थये सते पण जे धैर्यने मूकता नथी अर्थात् प्रहित अभि ग्रहने तजता नथी ते माणी पोताना मुक्ति साधनरूप कार्यने साधे हे. जेम चंद्रार्थ सक राजाए माणांत कष्ट उत्पन्न थये सते पण ग्रहण करेळो अभिग्रह तज्ये। नी तेम वीजाए पण मवर्त्तवुं. " ११८. अहीं चंद्रावतंसक राजानुं दर्षांत जाणवुं. ३५.

चंद्रावतंसक राजानुं दृष्टांत.

साकेतपुर नगरमां चंद्रावतंस नामना राजा हता. तेने सुदर्शना नामे राणी हती ते राजा परम श्रावक हता, अने समिकतमूळ श्रावकनां बार ब्रतो सारी रीते पार्की मने। राज्य करते। हते। एक दिवस सभा विसर्जन करी अंतःपुरमां जह सामाण पर्ग पार्गात्मर्गमुद्राप मनमां एवं धारीने स्थित थया के 'डवांसुची आ दीने के ग्गांगुरी मारे कापात्मर्गमुद्रायी अर्हीन स्थिर रहेवुं. 'ए ममाणे पहेळी पहेर गर्वा पारी दीवाने शांसी परेखें। जीइ राजाना अभिग्रहने नहि जाणता दासीए तेमां ते पूर्य. ए महाण यीजा पहार गया. एटले फरीने तेल पूर्यु. ए महाणे तेल पूरा पार पहेर सुधी अपंट दीवो बळयो; अने अखंड अभिग्रहवाळा राजाए पण माता इन् दीरो धोलवाया प्रजीकायात्सम् पायी. प्रह राजा घणा कीमळ होवापी प्रहार मुनी एक स्थाने स्थिति करवाने छोचे घणी वेदना अनुभवी विशुद्ध भाग दाङ क्या देवलोक्मां स्त्यन यथा.

ए प्रमाणे अन्य मनुष्याण पण दहना सख्वी, एवो आ कथाने। उपरेत्र के मीटणहम्बुष्पिवामं, दुम्मिडा,परिमतं किलेसं च। हो महड तस्स धरमा, जो धिडमं सा तत्रं चाड।।???

r re graterie

अर्थ-" जै मुनि शीत परीसह, उप्ण परीसह, धुधा परीसह, पिपासा ते तृपा है। ह तथा दुष्ट शब्या ते तृण संरवारके तदूप परीसह अने क्लेश ते लेशादि काय-तेने सहन करेले तेने चारित्रधर्म हायले. जे पुरुप परीसह सहवामां धृतिमान् के॰ व चित्रवाला हायले तेज तपने आचरेले-आचरी शकेले. " ११९.

यम्म मिणूं जाणंता, गिहिंणोवि दुढ्वेषा किमुं साहू।

कमलामेलाइरणे, सागरचंदेण इत्यु वमा ॥ १२० ॥

अर्थ-" आ जिनभाषित धर्मने जाणनारा-तेने सम्यग् मकारे समजनारा एवा पश्चावको पण दृढत्रतवाळा-त्रत धारण करवामां दृढ होय छे, तो पछी साधु केम जिनाळा न होय ? होयज अहीं कमळामेळाना संवंधमां आवेळा सागरचंद्र कुमा-जिप्मा अर्थात् तेनुं दृष्टांत जाणवुं."१२० अहीं सागरचंद्र कुमारनो संवंध जाणवो.३६ सागरचंद्र कुमारनुं दृष्टांत.

द्वारिका नगरीमां कृष्ण राजा राज्य करेछे. तेमने वलभद्र नामे मोटा भाइ छे, निषध नामे धुत्र छे. ते निषधने सागरचंद्र नामे कुमार छे. ते नगरीमां धनसेन भी पुत्री कमछामेला नामे छे. तेने उग्रसेनना पुत्र नभसेन वेरे आपेली छे.

एकदा नभसेनने घेर नारद ग्रुनि आन्या. ते वखते नभसेने क्रीडामां व्यंग्र वित्त कीये तेमने आदर आप्यो निहः; तेथी अति क्रोधित थइ नारद ग्रुनि त्यांथी सागरचंद्रने घेर आन्या. तेणे नारद ग्रुनिनो विनय पूर्वक घणो आदरसत्कार फर्या सिंहासन उपर वेसाङ्या. पछी सागरचंद्र तेमना पगधोइ हाय जोडो उभो रहीने व्यायो के 'हे स्वामिन्! आपे जोयेळं, अनुभवेळं के जाणेळं आश्चर्यकारी के कोत्यक कहो.' तेना विनयथी रंजित थयेळा नारद ग्रुनिए कहुं के 'हे हुमार! मां कीत्रको तो घणा जोवायळे, पण कमळामेळातुं रूप जे में जोयुंळे ते महा आश्चरक छे. एना जे बुं रूप कोई पण खीं तुं नथी. जेणे ए खीने जोइ नथी ते माणसनो के हथा छे, परंतु तेना मातापिताए तेने नभसेनने आपीने काव अने मणिनी पेठे अयोग्य संवंध कर्योछे." ए प्रमाणे कही सागरचंद्रना मनमां प्रीति उत्पन्न करीने हिन कमळामेळाना मंदिरे आव्या. तेणे पण नारद ग्रुनिनो अति सत्कार करीं अने के 'कांइक आश्चर्यकारो वार्ता कहो.' त्यारे नारदे कर्युं के 'जेबुं आर्थयकारक सागरचंद्रनुं छे तेबुं रूप आ पृथ्वीमां वीजा कोइ प्रक्पनुं नथी. तेना रूपनी उपमा वपर तो नथी. तेना रूपमां अने नभसेनना रूपमां मोटो तफावत छे.' ए प्रमाणे नारद ग्रुनि उत्पती गया.

गाषा १२०-आहरणे-दृष्टांते इय्युषमा-अत्रीपमा.



खानो मेछाप करावनारो तारो काको छुं. माटे आंखो खयाड अने सारी रीते जो. हो ! कामांधपणुं केबुं छे ! कहुं छे के—

दिवा पश्यति न घूकः, काको नक्तं न पश्यति । अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्यति ॥

" पुवड दिवसे जोइ शकतो नथी,कागडो रात्रिए जोइ शकतो नथी, पण कामांच तो कोइ अपूर्व अध छे के ते दिवसे तेमज रात्रिए-कोइ वखन जोड शकतो नथी. " एटलुं कहेतां सागरचंदे काकाने जोया एटले ते तेना चरणमां पट्यो; अने पोतानो भविनय खयाबी लज्जा सूकीने योल्यो के 'हे तात! आप योल्याजो के हुं कमळा- पेलानो गेलाप जरावनार छुं तो ते वात सत्य करो. सत्युक्षा पोतानुं योल्ल पाले छे.' कां छे के-

जं भालंतेणिव लज्जणेण, जं भालियं जुहे वयणं। तद्ययणसाहणत्यं, लप्युरिसा हुंति उज्जमिया॥

' बोलतां बोलतां सज्जनो पोताने मुखे जे बचन बोलेले ते बचन सापवाने-सत्य करवाने माटे सत्युक्ष्पो जन्नमयत होयले.''वळी सत्युक्ष्पो परोपकार करवामां पण क्षेत्रल होयले. कतुं ले के-

सनसि वचित काये पुण्यपीयूषपूर्णाः स्त्रिज्ञवनसुपकारश्रेणिज्ञः प्रीणयन्तः । परग्रुणपरसाण्न् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदिविकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥

" मन वचन अने कायामां पुण्यस्थी अमृतथी भरेला, अनेक मकारना उप-, कारायो आखा त्रिभुवनने पसन्न करनारा अने हमेशां अन्यना परमाणु जेवा अन्य , गुणाने पण पर्वत जेवा माटा करीने स्वहृदयमां आनंद पामता एवा केाइकन सत्-'पुरपा होय हो. " ए कारणथी हे काका! कमलामेलाना मेलाप मने करावो. '

भा प्रमाणे सांपळीने शांवलुमारे ते वात इ.वृष्ठ करी. पछी पोदानी विधाना विश्वाना ते विश्वाना वि

आगळ फरियाद करी के 'हे स्वामिन ! आप समर्थ नाथ छतां हुं अनार 💆 एम जाणी मारी कन्या कोइएक विद्याधरे हरण करीने वनमां मूकी छे. 'ते सांग सेन्य सहित देवकीपुत्र (कृष्ण) त्यां आव्या. तेने आवतां जोड़ नारदनी सारे सन्मुख आवी पिताना पगमां पड्यो अने सर्व हकीकत जणांवी. 'पोताना पुन्ने कृत्य छे ' एम जाणी कृष्ण मौन थड्ने उभा रहा. पछी सागरचंद्रे अभि नभते चरणमां पडी तेने खमाव्यो, पण नभसेने तेने खमाव्यो नहि.

इवे सागरचंद्रे कमलामेलानी सोथे विषयसुख भोगवतां केटलोक काल व्यतीत स पछी एक दिवस भगवान नेभि मसुनी देशना सांभळीने तेणे श्रावकनां बार त्रनो 🗯 कार करीं। दररोज स्वत्रतनुं पालन करता सता एक वखत श्रावकनी पडिमान फरतां ते स्पन्नानभूमिमां जड़ने कायोत्सर्गे र ो. ते वस्तते नमसेन जे हमेशां तेतं व शोधता हता ते सागरचंद्रने स्मशानमां कायोत्सर्गे रहेछे। जोइने विचार करवा हात के भाज बखत बराबर मळये। छे, तेथी मारी फमलामेलाना भोका सागता भाज मृत्यु पमाइं एमाणे विचारीने तेना माथा उपर माटीनी पाळ बांधीते तेव पगपनना रोरना अंगारा भरी ते अन्यत्र चाल्यो गयो. अहीं तेनी वेदनाने सम्ब भावे गहन फरतो निश्रल मनवाळी सागरचंद्र शुभध्यानथी मृत्यु पामीने सार्ग गरी

भा ममाणे आनके पण आचा उपसर्गी सहन कर्यां हो तो साधुए ते।

कति महत्त प्रस्ता जीहण, एवी आ कथानी उपदेश छे.

दें गेहिं कामदेवो, गिर्हीवि नीव चाखिओ तवगुणेहिं।

गलमयंद नुयंगम, रमखसघोरहहासोहं ॥ १११ ॥ अये - कार्य नापना गुत्रस्य आवक्ते पण तप गुणशी मदोन्मच हर्शी भर्ग क्षा कर अहहाम विभिनेभी देवता चठाची शक्यो नहि." अर्थात देवहत वास करण प्रथम हिन्द्र प्रथम हिन्द्र महिन्द्र स्थाप प्रथम नहिन्द्र स्थाप प्रथम स्थाप स्थम स्थाप स्था क र इति उत्ति से रहे राष्ट्र प्रदेश करते. अहीं कामदेव आवकनो संबंध जाणारी 31

फापदेव श्रावसम् हतांत. ्र संपर्ण को निवास शास सम्बद्धाता. इ.स. १९६० में भारीयाँ जिल्हान सामे साजा राज्य करती हती. ते जाती ्रा प्राप्त है हैर्नी संग एक दिवस महावीर स्वापति । इत्त विकास महासार कर करते हु स्वाह । निकास सहित है सा अगारि क

नीय कर्मना उपश्रमादि स्थी अिहंने कहेला जीवादि तस्वोमां सम्पग् श्रद्धा थवी स्पन्तव जाणतुं: अथवा आत्माना शुभ परिणाम एटले झान दर्शन चारित्र रूप प्रण ना अध्यवसाय ने सम्यवत्य जागतुं, कहुं हे के-

अिहं देवो ग्रहणो. सुसाहुणो जिणमयं महप्पमाणं।
इच्चाइ सुहो चावो, सम्मत्तं विंति जगरुरुणो॥
"अिहंत देव, सुसाधु गुरु अने जिनमत ए गारे प्रमाण छे, इत्यादि शुद्ध ने जगत्गुरुथो समक्षित कहेछे." अईतप्रमेशुं मूळ समित छे. कतुं छे के 'श्राव-यार ब्रुवन देखें चोराशी क्रोड, वार लाख, सचावीश हजार, पसा ने वे । यायछे; ए सर्व भांगाशोमा समित्रत पहेला भांगा छे. समित्रत विना बीना एण भांगानो संभव नथी. क्रुं हो के-

मूलं दारं पइठाणं, आहारो जायणं निही। इठक सादिधम्मस्स सम्मत्तं परिकित्तियं॥

" दुष्टक वे.० वार प्रकारना श्रावकधर्मेनुं मूळ, द्वार, प्रतिष्ठान, श्राधार, भाजन निषि सम्पन्तर कहेनुं छे. "

सम्यक्ततं प्रज वा मगाणेअंतोमुहुत्तिमत्तंिप, फासिअं हुक्त जेहिं सम्मतं।
तेसिं अवहुपुग्गल, परिअद्दो चेव संसारो॥१॥
जं सक्द तं कोर्र्इ, जं नसक्द तयंमि सदहणा।
सदहमाणो जोवो, वच्चइ अयरामरं ठाणं॥१॥

अंतर्धहर्त मात्र पण जे जोवने समकित फरस्युं होय तेने अर्ध पृद्गळदरावर्तन
रहें हो- इधारे रहेरा नथी जनादि जे कांड बनी शके ते कर्खुं अने जे न मनी
दि अद्धा राखवी ए प्रमाणे सर्द्द्दनारी जीव पण अनरामर स्थानकने पामे
थाटे समिकि मूळ रूप जना समिकत सहित सारी रीते आगध्यां होय तो
हमीं ने परछोक्तमां बहु फळदायो थायछे "

न प्रमाणे भगवाननी देशना सांभळीने परम संवेग जेने पाप्त ययेल हे एवी हिंद हो। तना उच्चार पूर्वन वार प्रत्यारी ययो. अने जीवाशीवादि तन्त्रनी दिलती संदितास्त्र निवासना साम्यो

एक दिवस सीधर्म इंद्रे तेनां च्लाण क्या के 'कामनेव शावक दृढ्यरी हैते पण तेने धर्मथी चळाववाने सहर्थ नथी. अरे शु तेनु धेर्य छे!' ए महाणे कारते यह पशसा सामळी कोड एक मिथ्याहिए हैव देवेन्द्रनी वाणी अन्यथा वरवाने र कामदेव पासे आव्या, ते अवसरे कामदेव पोसह करी पापण्यालामां कायातम् द्राए रहा हतो. पेलो देव मध्य सात्रए भयंवर सक्षसनु रूप ग्रहण करी हाथमां प किए। जेवुं खड़ लइ पादमहारथी शृगिने कपावता. इस पहोल केरी अहुहास गा फामदेवनी पासे आव्या अने वास्या के 'आ पद्मरुखाणने तु होती दे अने । कायोत्सर्गमृद्राने। त्याग कर. नहितो आ स्टब्स्टरे तारा हुएरे हुण्डा क्यी ना जेथी तुं आर्तध्यानथी अकाछे मृत्यु पामीशः' ए प्रमाणे बारंबार कहे कितां का ने ध्यानंथी चलित थया निह. पछी क्रोध उत्पन्न थव थी ते देवे रू इवर कारी शरीर छेग़ं, जेथी तेने घणी वेदना यदा लागी, एण ते ध्यान्धी क्षोभ पाम्यो ही पड़ो देवे पर्वत जेवुं मोहुं हाथीनं रूप विद्युच्युं, अने शृहने उद्यालतो भगरर हार् रपे रामदेन मत्ये तोल्यो के 'हे कामदेव ? ला बराने छोडी दे अने आ गारे सम्बद्धां दाम कर, निती आ रह नहें नहें जाहो, भी नार पहाड़ी हन्त्र" मधी तने इंदी नासीश.' आ प्रमाण बहेतां क्यां पण ने भ्यान्थी निवत भयो ती रागर में श्रहकों होने हलाशीने प्रशी हपर पह छो उसे वतमहारोशी हैं राग्या; त्रता से जरा ५ण क्षोभ पाम्यो निह अने सन्मां विनार करवा लागी के

> मयंत्रयोऽपि प्रियाः प्राणास्तेऽपि दांत्वधुनापि हि । न पुनः स्वीकृतं धर्म, स्वटयान्यहपमण्यहम् ॥

के स्व प्रकार पाली पाण वहाला होयले पांतु से पण हमणा भले नाती. के स्व प्राप्त पाय पण किंति नहीं में पानी है देव प्रीती हैं कि प्राप्त में पानी है देव प्रीती हैं कि प्राप्त में पानी हैं, तामल ने से ते ने प्राप्त में पानी हैं। तामल ने से प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त हैं। तो तामल के से प्राप्त के प

अत्यल्पाद्प्यतीचाराद्, धर्नस्यासारतैव हि । अंधिकटकसात्रेण, पुनान्पंगूयने न किन् ॥

"अति अत्य अतीचारयो पण धर्मनो निःसारता यह जायछे. पगमां मात्र विचाययो थुं पुरुष छंगडो यतो नथो !" थ।यछे. ए मणणे निध्य आत्मावण्डो नाणोने सर्वस्य देव तेने डस्यो. अत्यंत दुःख उत्पन्न करनारा ते दंगयी काम देवतुं र काळव्वरथी जाणे पीडायछ हं।य तेवुं यह गयुं अने तेने घणी वेदना थवा छागी, ते ध्यानयो चिछत थया निह. ते मनमां विचार करवा छाग्ये। के-

खंडनायां तु धर्मस्यानंतेरपि जवैर्जवैः।

इः खांतो भिनेता नैन, गुणस्तत्र च कश्चन ॥
" धर्म हुं खंडन करवाथी अनंता भनेता भमतां पण दुःखनो अंत आवतो नधी
तेमां कोइ जातना लाम तो लेज नहि."

प्रखं तु प्रप्हनाज्जातं, तस्यैव क्षयतः क्षयेत्। सुकृतात्तरक्षयश्च स्यात्, तत्तस्मिन् सुदृढो न कः॥

"दुःख दुःकृतथी उत्पन्न थायछे अने दुःकृतना क्षय करवाथी तेना क्षय थायछे; तेना क्षय गुक्कृतथी थायछे, त्यारे ते गुक्कृतमां कोण प्राणी सुदृढ न होय?" ए ण कापदेवने शुमध्यानपरायण जाणो देवे पातानुं खरूप पगट कर्षु अने तेने सारी खमाच्यो. पछी ते कहेवा लाग्यां के 'हे कामदेव! तने घन्य छे, तुं शुण्यशालो छे वे जीवितनुं फल मेळच्युं छे. सीधर्म देवलेकमां दंदे तारी प्रशंसा करी ते शब्दा पने श्रद्धा न आववाथा हु अशे तारी परीक्षा करवाने माटे आव्यो हतो, परंतु ने ण इदे तारी पश्चा करी हतो ते प्रमाणेन में गारी ननरे नोयुंछे." आ प्रमाणे स्तुनि करीने ते द्व पाताने स्थानक गया.

पानःकाळे कायात्सर्गने पारो कामदेव अविक समवसरणमां भगवानने वांद्रवा त्यां तेने भगवंते कयुं के 'हे कामदेव! आन मध्यरात्रिए कोड़ देवे तने त्रण मि क्यी ए बान खरी छे?' कामदेवे कयुं के 'हे स्वामी! ते बान खरी छे. पछो भवाने सर्व साधुओ अने साध्वी शाने वालावीने कयुं के "हे देवानुभियो! व्यारे भवाने सर्व साधुओ अने साध्वी शाने वालावीने कयुं के "हे देवानुभियो! व्यारे भवाने कामदेव आवक्षपर्मा रहेतो सतो पण हेवेग् ए करेला उपसर्गाने सहन करेछे तो अन्ता भिष्माभुभोए सो ते सम्यक मकारे सहन करवाज जोड़ए." भा ममाणेनुं मगवाननुं भवा विनय पूर्वक समळा साधु साध्वीए सांभळ्युं अने अंगीकार पर्यु. भा कामदेव धन्यात्मा छे के जे कामदेवनी भगवाने पाताना मुरे पर्शांग कहुं छे के-

धण्णा ते जिळालोए, गुरवो निवसन्ति जस्स हिययांमे। धन्नाण वि सो धन्नो, गुरूणहियए वसई जो ज ॥

" आ जीवलोकमां ते पुरुष धन्य छे के जेना हृदयमां गुरुमहाराज वरेते," ते तो धन्यमां पण धन्य छे के जे गुरुमहाराजना हृदयमां वसे छे.

आ प्रमाणे लोकोथी स्तुति करातो कामदेव भगवानने वांदी पोताने वेर श्रान्त पछी तेणे श्रावकोनी दर्भन आद अग्यार प्रतिमाओने सारी रीते आगधी अने विष् सुधी श्रावकपर्याय पाली छेवटे एक मासनी संहेखणावढे सारी रीते मर्व प्रभानोचना प्रतिक्रपणा करीने काल मासे काल करी माधर्म नामना देवलंकमां आग्राम नामना विमानमां चार परयोपमना आयुष्यवालो देव थयो. त्यांधी न्यवीन मिदिहमां सिद्धिपदने पामशे.

जेवी रीते क मदेवे श्रावक छतां पण भयंकर उपसर्गो सहन कर्या तेतीः मोक्षार्थी साधुश्रोए पण उपसर्गा सहन क वा, एवो आ कथानो उप अ

भोगे अंजुंजमाणावि, केइ मोहाँ पड़ांति अहर गई।

कृषिओं खाहारध्यी, जत्ताइजणस्स दमगुठव ॥ १२२ ॥

भये-" केटलाफ माणोओ भोगने भोगन्या विना तेनो इन्ला वर्ता में।
केट के अलान, ते यको अधोगति-नस्य तिर्येच गतिमा पटेले कोनो जमें।
कालों अर्थ यनमां गयेला लोकोनी उपर (आहार न आपपायी) कर्तावा
करेरा आलारना अर्थी दुमक पटले भिक्षुकनी जेग. " १२२

भग्यहे दृष्यीन चित्रवतायी जेम तेणे दुगतिहरू फळ माप्त कर्गु नेम भीति भाग प्रकेष्टे, अर्ति ने दुमकनो संवय जाणवा, २८

द्रुपफर्नु ह्यांत.

कालगुर नगमने विषे कोड एक उत्पवमां सर्व छोको वेभागिति उपा उक्षे गण दला, ने वराते कोड एक भिक्षक मोजननी दण्डायो नगममां भूषता मेर्वि गणकार्थ जनमा अच्छो न्यां पण ने सर्वत्र बटक्यो, पण अंतराय कर्षता कुर्वते कोडण िया अच्छो नकि नेदी ने स्वीत उपा स्वीता स्वातं स्वातं के

संदर्भ र वर वर्ण देशमें अच्छे परित्र । स्त्राम ।

नगरना लोको अति दृष्ट छे. कारणके तेओ खायछे, पीएछे, उच्छा मुनव भोनन है, परतु मने जरा पण खावानुं आपता नथोः तेथी हुं वभारिगरि उपर चडी शिला गयडांगिने आ सर्व दृष्टोने चूर्ण करी नांखुं "ए प्रमाणे विचार करतो ध्यानथी वैभारिगरि उपर चडयो अने त्यांथी एक मोटी शिला गयडांची ते शिला है। जोड मर्वे लोको नासो द्र गया. परतु तेन भिसुक दुर्गायने लीबे ते गयडती। पनी नीचे आबी गया अने तेना भारथी दवाड जइ तेनुं वधुं शरीर चूर्ण यह गयुं; ते है। इध्यानवहे मृत्यु पाधी सातभी नरके गयों. अहा ! मनने। व्यापार केवा । त छे ! यहुं हे के-

मनायागावलीयांश्च चाषिता चगवनमते !

यः सप्तमीं क्षणार्द्धन नयेद्रा मोक्सेव च॥

" मर्व योगोमां मननो योग वळ्वान छे, ए ममाणे भगवाने फर्व छे. कारणके ।ननो योग अर्थ क्षणमां सातमी नरके छइ जायछे अथवा मासे एग छइ

मन एव मनुष्याणां, कारणं वंधमोक्षयोः।

यथैवालिंग्यतं नार्या, तथैवालिंग्यते स्वसा ॥

"मनुष्याने वथ तथा मेक्षतुं कारण मनज छे. कारणके जेवी रीते भाषीं हुं लिंगन कराय है तेवीज रीते (मळती वखते) वेनने पण आलिंगन कराय है. " रेंतु नेमां मनना विचारनीज तकावत छे).

पर्वा रोते जेम ते भिक्षके रीद्र ध्यानयी नरकतुं दुःख मेळव्युं तेवीन रोते अन्य नरपतुं दु ख मेळवेछे माटे मनथी पण भोगनो इच्छा न फरवी,एवो आ फथानो दश छे.

जवसपुरुहैस्सदुबहे, जाइजुरामरण सागरतारे।

जिएवियणं मि गुणायर, खणमिव माकाहित्र पमायं ॥१२३॥ अर्थ-" हे गुणाकर ! लाखो भवे पण पामवा दुर्लभ अने जन्म जरा मरण रूप हिथी पार उतारवार एवा जिन वचनने निषे भणमात्र पण ममाद न करोग्न." १३. अर्थात प्रमाद तजीने जिनवचन आराधवा योग्य हो.

जं ने बहुइ सम्मत्तं, लद्धणवि जं न एइ संवेगं।

विमयमृहेसु य रक्कड्. सो दोसो रागदो गणं ॥ १२४॥

गाधा १२३-इत्रहे। गाधा १२४-समत्ता न पर्-न प्राप्नांति.

अर्थ-"आ जीव जे सम्यक्तने पामतो नथी, सम्यक्त पाम्या छतांपण जे " पामतो नथी अने विषयसुर जे शब्दादि तेने विषे जे रक्त थायहे ते सर्वे गण, ज दोप छे. " १२४. तथी दोपना हेतु एवा रागद्वेपज तजवा योग्य छे. अ ने वैराग्य-संसार्थी उदासो भाव ने माक्षनो अभिलाप समजवो.

तो वहुगुणनासाणं, सम्मत्त चरित्तं गुणविणासाणं।

न हु वस मागंतटवं, रागद्दोसाएँ पावाणं ॥ १२५॥ अर्थ-''ते माटे वहु गुणनो नाज करनार अने सम्यक्त ते शुद्ध श्रद्धान, ते पंचाअवनिरोध अने गुण ते उत्तरगुण तेना विनाश करनार एवा रागरेग पाव तेने वश निश्चे न आवशुं. " १२५.

निव तं कुणइ अमित्तो, सुद्धुवि सुविराहिओ समध्योवि ज़ें दोवि अणिगाहिया, करंति रागोद्य दोसों ॥ १२६

अर्थ-"जेवो अनर्थ निप्रह निह करेला-निह रोकेला एवा राग अने दंग फरेड़े तेवा अनय अतिशय सारी रोने विराधेळा अने समर्थ एवा पण अभित्र जे करी घरतो नथी. " १२६ अर्थात् शत्रु तो विराव्यो सतो एक भूवमां मरण पन राग्द्रेय तो अनंता जन्ममरण आपे मादे रागद्वेयन तन्ना योग्यहे,

इत्लोग त्रायासं यजसं च कराति गुणविणासं च।

पमवंति परलोग सारीरमणोगग दुख्ले ॥ १२७ ॥ अर्थ-'भागद्रभनां फळ कहेछे-आ लोकमां आवास कें ० शरीर ने मन म ेर तथा भरयम अने गृण ने ज्ञान दर्शन च।रित्र तेना विनाश करेहे अने गाउ इस्स स्वरों ने हन गर्भी दुःस्रो पसरेछे-आषेछे अथीन् सगद्वेष नाहिल्या अस्ति होताची तेमन अनवमूळक होताची परकोकमां पण अनेक मकारणीं

हिहि छहा खेकानं, न नाणंतोवि रागदो्नेहिं। पत्र मंउतं केषुत्रामं, तंत्रव निमंत्रण जीवा ॥ १२८ ॥ १.- अर् महा अप्यक्तारी आ अकाय छे! विहार है विहार र इने कि ने अर रावेद्यते (प्रा अत्यक्ताम छ प्रम) जामती मती अते भूति । इ.स.च्याचा प्रत्याचात्राचात्राचात्राच्यात्राच्

एाक) अतृष्ठ (विस्तीर्ण) अने अति कहवां छे एम एण नाणतो मतो तेनेज ते हैं एनेज अथवा तेना फळने जीव (अमृतरसनी बुद्धिए) फरी फरीने सेने छे. " : तेथी आ ससारवानी जोवोने विकार छे!

को प्रकं पाविज्जा, कस्सवि सुख्खेहिं विहाओ हुज्जा।

को निव लिजिङ्झ सुद्धं, रागदोसा जह न हुज्जा॥ १२९॥

धर्य-" जो रागद्वेप न होत ते। कोण दुःख पायत ? के।ने सुखे करोने विस्तय
? (के बहो बा महासुखी छे) अने काण जीव मोस न पायत ? अर्थात् सर्वे।
। मक्षे जात." १२९

भाणी ग्रहपिंडणीत्रो, अण्थ्यभिरिको अमर्गचारीय। भोहं विदेहजालं, सा खाइ जहेंव गोसालो ॥ १३०॥

अर्थ- ' जे जिट्य मानी (अहकारी ', गुरुनो मत्यनिक (गुरुना अपवाद 'नारो), पोताना अशृद्ध स्वभावधीज अन्धना भरेटो अने उत्स्व मरुपणास्य उन्पा-अमार्ग चालनारा होय ते ज्ञिष्य फोगट अनेफ मकारना हेश (जिराधुंडन संयमादि) हने भोगवेछे. अर्थात निष्फळतप संयमादि फप्टने सहन करेहे.गोसाळानो जेम."१३०

भगवंतना शिष्याभास गोसाळे जेम फोगट तर संयमादि कष्ट भोगन्युं. उपर विला दोषवाळो देवाधी तेने तर संयमादितुं कांड एण फळ माप्त थयुं नहीं, तेम नवुं.

कलहेण कोहणसीको, जंमणसीको विवायसीको ये। जीवो निच्चुडजलिखो, निरथ्ययं संयमं चर्ड ॥ १३१ ॥

अर्थ-" ने जीव कळह करवाना स्वभाववाळो होय, क्रोध करवाना स्वभाव-छो होय, भंडन करवाना स्वभाववाळो होय अने निवाद करवाना स्वभाववाळो होय नित्य स्टबळित रहेले तेथी ते निर्धक चारित्रने आवरे छे. " १३१ घर्णात् क्रोध द्यान्त्रिना विनाग यायले अने आ वया क्रोधनान मकारछे, तेथी क्रोधने तनीने निव पान्तुं तेन श्रेयकारी छे.

[ा]धा १६९ विद्विचा। ग्रीजना । लभेजन । गागरीमा. गाया १३०-मीघ-रवर्ष । ब्या र्भुवते.

प्रस्पर राडी पाडीने घोल्छुं ते फळह समजनो. पान्का गुणने महन न शक्तव ने। रें, विभाव ते जोधनशीळ समज्यो, यष्टि मुष्टि विगरेथी युद्ध कर्गाना ते भाव ते भड़नशील जाण वे। अने वचनवडे वादिववाद करवे। ते विवादशील जह वणद्वो वर्णं, दवदवस्स जिल्छो खणेण निहरइ एवं क्लायपरिण्छो, जीवो तब संजर्भ दहंइ॥ १३२॥ अर्थ-' जम बनमां लागे । दाव नळ उनावळा उतावळा उवित गुर माहमां आखा वनने बाळी नाखेछे तेम कपाण्यन्णित कपाय परिणाम वतता तपमंयमने पण जाघ्र वाळे छे-नाज पमाडे छे. " १३२. तथी समतान चानि मृज्छे एम समन्यु.

परिणासवसेण पुणां, अहिं आ कणयरउ व्व हु ज ख्यां। तहि व ववहार मिसेण, जलह इसं जहां थूवं ॥ १३३॥ अर्थ-' वळी परिणामने वही एटछे जेवा जेवा परिणाम थाय ते प्रमाण भी

अथवः आछो तपसंयमनो क्षय थाय छ, तथापि व्यवहार मात्रे करीने आ रहेव यह किया करात्रे करीने आ रहेव यह जेम स्यूळ क्षय यायछे. १३३. परंतु ने व्यवहार मात्र करान मा गर तो कणग्रामा मोजन नक्ष्या १३३. परंतु ने व्यवहारनयनु वनन समत्रतुं. निश्चा तो क्यायना तोत्रतर परिणामे करोने चारित्रनो तीत्रनर क्षत्र थायडे अने मंद परिष् भंद क्षय थायछे, तेथी जेवा जंबा परिणाम ते अनुमारे क्षय थायछे एम जार

फरम्बंयणेण दिणतवं, अहिरख्वंतो हणइ मांसतवं।

विस्तित्वं सवमाणो, हण्ड् हणंतो अ सामन्नं ॥ १२४ अर्थ-"वरण वचन कहेवाथी-गाळ देवा विगेरेथी ने दिवसना कंटा तार पुन्यने हणे हे अय प्रमाहे हो), अधिक्षेप एट छे अतंत कोच करीने नाति रूळ मनाभिता मनो पहिनाना तपनंयमनो अय करेछे, 'तारुं भाव अशे। यगे 'ए देनो मनो वर्ष पर्यतमा तपग्यमने हणेछे अने यिष्ट्र खट्गादि वहे परने। प्रात मता जनम पर्यतमा आदण्यने (अमणपणाने) हणे छे. ११३१.

का यथा व्यवहासिक यचनो समजवा.

यह जीविअं निकितंड, हंत्ण् ये संजम् नहां चिण्ड। जीना पमायवहुत्हों, परिभमंड जेण संमारे ॥ १३॥ ॥

राजा १३० द्वह्यस्ति न हाँखडाँ च उठह । गाया १३३ वीरण। राज्य १३० द्वस्य वर्णमा । अहिनियनो । गाया १३० ह्यूला ।

दृहमहारी तुं दृतांत.

अर्थ-" अय एटले क्यायनां फल कहांथी अनंतर प्रमादनां फल कहेंसे-वहुल एटले वहु प्रमादवालो (प्रमाद्गरवश्च) संसारी जीव संयम रूपी तने हणेले जने संयमने हणीने पापकर्म रूप मलने पुष्ट करेले, जेणे करीने ते रमां परिश्रमण करेले. " १३५. तेथी प्रमादने परिहरवा—त्यजवा. अहीं संयमना—पांच आश्रवनो त्याग, पांच इंद्रियोनो निग्रह, चार कपायनो अने ज्ञादहनो विरति रूप सत्तरभेद समजवा.

अक्षेत्रण तक्तण् तामणा, अवमाण हीलणाय्यो अ।

मुणिणों मुणियपरत्रवा, दृढण्पहारिव्य विसहंति ॥ १३६॥ अर्थ-' केमणे अंग्रतन-परभवतुं स्वरूप जाण्युं छे एवा मुनिओ आक्रोश, तर्जना ना, अपमान अने दिलणा विगेरे दृढमहारीनी जेम सहन करेंछे." १३६ जेम दृढमहारीण सहन कर्युं तेम अन्य वीनाओए पण सहन कर्युं आक्रोश ते श्राप , तर्जन ते भृष्टु विभंगादिव है निभंत्सना करवी, ताडन ते लाउडी विगेरेथी कृटवा, मान ते अनाद्र अने हीलना ते जात्यादिनुं उद्घाटन करीने निद्वा-ए भमाणे नयुं, अर्थात् ए सर्व सहन कर्युं एवो आ गायानो उपदेश छे. अहीं दृदपहारीनुं हरण समज्युं ३९

दृढ महारीनुं हत्तांत.

गार्नेदी नामनी मोटी नगरीमां समुद्रदत्त नामे एक ब्राह्मण बनता . तेने समुद्रदत्ता नामे भार्या हती. एक दिवस तेणे एक पुत्रने बन्य पो. ने पतिदिन वधतो सतो सेंकडो अन्याय करेछे. युनावस्था पाप्त यतां ते बोकोने छे, खेडं योछेछे, चोरी करेछे, परस्तीममागम फरेछे, भस्पाभस्पना विवेकने ति लेखे, कोइनी श्रीखामण मानतो नथी, मानापितानी अवद्या करेछे, ए म्याणे अन्यायावरणां चतुा एवो ते शहरमां भम्या करेछे एक दिवस राजाए तेना अन्यायावरणां चतुा एवो ते शहरमां भम्या करेछे एक दिवस राजाए तेना यो स्कोकत सांभळीने आ अयोग्य छे एम जाणी दुर्गपाळने वोळाबीने कहुं के बेरस यानियो वगाडतां आ अथम बाह्मणने शहरनी वहार काडो मुका ' छोकोए ए वावतमां अनुयोदन आप्युं. दुर्गपाळे ते ममाणे कर्युं. ते बाह्मण एण मनमां ए वावतमां अनुयोदन आप्युं. दुर्गपाळे ते ममाणे कर्युं. ते बाह्मण एण मनमां दे हेप राखी नगरमांथी नीकळी भीछपछीमां गयो. त्यां ते मिछपितने मळपी. ते हेप राखी नगरमांथी नीकळी भीछपछीमां गयो. त्यां ते मिछपितने मळपी. ते स्वाप्त कर्यो अने पेताना प्रमो सपळो नंपति तेने स्वापीन करी. ते तरापणे विवरेणे. त्यां रहेनो चना ने चना जीराने निर्म्यपणे मारे छे तेयो छाकमां हागे ग नाव्या त प्रमा सपळी स्वापीन सरी हे तेयो छाकमां हागे ग नाव्या त प्रमा सप्ती स्वापीन करी. ते स्वापीन करी स्वापीन करी हागे ग नाव्या त प्रमा सप्ती स्वापीन करी हो तेयो छाकमां हागे ग नाव्या त प्रमा सप्ती स्वापीन स्वापीन करी हागे ग नाव्या त प्रमा स्वापीन स्वापीन

गायार्३६-उ कीसण । ताउणाउ।

एक दिवस ते मे। इ घाइं छड़ने कुशस्थल नगर छुँटवाने गयो. ते बसते नगरमां देवममा नामने। एक दरिद्री बाष्यण वसती हती. ते दिवसे घणा मनोर पूर्वक नेषे पोताना घर आगळ शीरचुं भानन रंघाच्युं हतुं, अने पेाते सानार्ग नही गया हता. ते अवसरे केाड एक चोरे ते बाह्मणना घरमां दाखक थड ते शीरनुं भार इराइयुं, ते जोडने स्दन फरतां फरतां ते बाह्मणनां वालकोए नदीए जड तेमन न्दिन ने क्युं सुवातुर थयेल ने बालाग पण जलदी चेर आवी क्रोपित गां मोटी मागन लड माग्वाने माटे ते चार पासे आच्या. वंने पास्पर लडवा लागा वस्तरे देशा इत्रमहारीए आवीने खद्गयी बाजणने मारी नांख्या. तेने भूमिपर पहेले ने अने हो बादेशयी परवश यह पाताचुं प्रहाद उंचुं करी ते बाल्यणना मरेनी गांग ते रहमरारीने मारवाने मादे दादी पातु इहमहारीए भयं कर परिणाम पूर्वक ते गापने पण रको रोतो. हे सबगरे पात्राना पतिने मरेला जाउने आंतु पाइती, विलाप भगो क्ते हर कार करते वाल करते ने जाय मनी समर्भा सी त्यां आही. तेने पण ते रहरण्यां कर्यों कर्यों केना पेट चपर महत्व करताथी तेनी कृतिमां रहेती गुण करत है वे के कार परवें। वे संभने भीम उपर तरफ़दते। जीउने ते निर्देष हैं। न के कि कार कार पार पहर में विभाग लागों के " अरेरे । जिल अपन र रहत है है है है के प्रतिस्थान का अनाव अने मर्भवती अवस्थि मार्थ अने इंटोबर्ड ते गळा सुनी ढंकाइ गया. छेबटे पोताना श्वास कंघान छे एम जाण्युं खारें कार्योत्माने पारी ते बीजे दरवाजे जड़ने काडमग्ग करी उमो रह्यो. त्यां पण वेणे तेज म्याणे परीसहोने सहन कर्या. पछी बोजे दरवाजे गया पछो चोये दरवाजे गयो. त्यां गाळ, मार अने महार विगेरे सहन करतां जेणे चतुर्वित आहारतुं पच्च- स्ताण कर्षु छे एवा ते दृढवहारीने छ मास व्यतीक्रम्या, परंतु ते पोताना निपमयी बरा पण चिलत थयो नहि. विशुद्ध ध्यानयो तेतुं अंतःकरण समावडे निर्मेळ थयुं अने पातिक्रमने। सप थवाथी तेने केवळहान उत्पन्न थयुं. पछो घणा जोवोने मितिनोच प्याही दृढपहारी केवळी मोक्षे गया.

ए मगाणे बीजा पण जेओ आक्रोश आदि अनेक प्रकारना उपसमेनि सहन करेछे रेभो अनंत सुखना भागवनारा धायछे, एवो आ कथाना उपदेश छे.

खहमाह्योत्ति नय पडिहेणंति, सत्ति नय पडिसवंति ॥ मारिज्जंतावि जइ, सहंति सहस्समट्खुव्व॥ १३७॥

अर्थ-" मुनिओ आणे मने हण्योछे एम जाण्या छतां पण तेने हणता नथी, काइए श्राप दीघा छतां पण तेने सामो श्राप देता नथी अने मार्या छतां पण ते सहन करेछे. सहस्रमह्छनी जेम. " १३७

अहीं हण्योछे एटछे पीडा उपनानी छे-सामान्य महारादि करेलछे एम समनतुं जेम सहस्रमल्ल साधुए महारादि सहन कर्या तेम योनाए पण सहन करना. अत्र सह-समल्लनुं दर्शन जाणवं, ४०

सहस्रपटलनी कथा.

शंखपुर नगरमां कनकथ्वन राजा राज्य करती हता तेनी समामां वीरसेन नामने। केाइ सुभट राजसेवा करते। हता. राजाए तेने पांचसे गाम आपवा मांडया छतां तेणे ते लीघां निह तेणे कहीं के 'हे राजन्! मारे आपनी सेवा पगार पग लीघा वगर करवी जोइए आप ममन्न यशा तो मघळं सारुं यशे. 'ए पमाणे करों हमेंग्र राजानी सेवा करेछे हवे ते बखते कालसेन नामना ते राजाने। एक दुर्नय धन्न हो, ते कोडनायी वश यतो नयी. अनेक गामां ने शहरोंने ने चपद्रव करेंहे. एकदा समामां बेठेला राजाए कहा के 'एवा कोड यळान छे के जे कालसेनने जोवता पकड़ोंने मारी पासे लावे?' राजानु ने वचन सांमळाने मघळा नीन रहा, कोड़ बाल्युं निह. एटले वीरसेन चेल्यों के 'हे राजन्! आप बाजा अने शामाटे कहा हो।' मने बाहा करों ते। हुं एकलो जइ तेने पांचीने आपनो समक्ष लावुं. 'राजाए आहा

गाया १३७-एजर सदस्समहन्य, सहस्समन्द्रय । अदंशाहतः इति । इति ।

आपी एटछे उपर ममाणेनी राजा पासे मितज्ञा करी तैयार थड़ने मात्र खड़ छ। छोज कालसेननी सामे चाल्येा. कालसेन पण पातानुं लक्कर लड़ सन्मुख आ मोडुं युद्ध थतां कालसेननुं स्वळ सैन्य नासो गयुं. एटले बोरसेन एकला र कालसेनने बांघोने राजानो समीपे लाल्येा. राजा पण बोरसेननुं तेवुं वल जे आश्चर्य पाम्या, अने 'जे लाखो माणसोथी जीती शकाय तेवो नहोतो। तेने ही मात्रमां आणे पराजित कर्या 'ए प्रमाणे कही सभाना लेखे। पण तेनी प्रमा काल्या.संतुष्ट ययेला राजाए तेने लक्षद्रन्य आपी सहस्रमल्ल एवं तेनु नाम न्यापन अने तेने एक देशना राजा बनाल्या. पल्लो कालसेन पासे पण पातानो आज्ञा मना तेनुं राज्य तेने पालु संबिद्धं.

सहस्रमहाने पाताना देश उपर राज्य करतां केटलाफ दिवसे। व्यतिक्रम्या एक धर्मनाचार्य कहेळा धर्मना श्रवणयी तेने वैराग्य उत्पन्न थये। तेथी तेणे राज्यत दाने वारित्र प्रहण कर्यु.ते सामायिकथी मांडीने अगियार अंग भण्ये। अनुक्रवेन कित्र पान्तां तेणे निनकल्पविहार अंगीकार कर्यो. ते प्रभाणे विहार करतां एक्टा काम मेन गानाना नगरनी समीप भागमां कीयोत्सर्गमुद्राथी रह्या.कालसेने तेने जी बाल्यानाः एटो 'आ पापीन मने जीवता पकडीने कनकथ्यन राजा पासे लड़ गण हो। एव विचार्ग तेना पर रूष्ट्रमान शहने ते दृष्ट कालसेने सहस्रमण्ड मानुने जी हो। इस विचार्ग तेना पर रूष्ट्रमान शहने ते दृष्ट कालसेने सहस्रमण्ड मानुने जी हो। इस पानाणादिना पहारो कर्या चटे अति करणना करी। प्रमानुने जी हो हो। इस पानाणादिना पहारो कर्या चटे अति करणना करी। कर्या ने का हो। इस पानाणादिना पहारो शहन पानामां तन्ता रह्या. अनुक्रमे ते का हो। इस पानामां तन्ता पहारो प्रवेश प्रमान काल कर्या प्रमान कर्या प्रवेश हो। अनुक्रमे ते का हो।

्राण्यम् होतंत्रा, वयणगारा पुत्रकम्मेनिम्माया। गण्या ते न दाणा, स्वेतिफलयंवदंताणं ॥ १३८॥

र के त्रकोरकोर प्रश्नी है। मिन्छ । विकास कर को सर्वा र विस्तास ॥ १३९ ॥

The state of the s

मर्थ-" पथ्यरथी हणायेलो कतरो पथ्थरने करडवाने इच्छेछे अने सिंह बाणने भीने अर्थात पोताने वाण लागवाथी वाण तरफ न जोतां शरोत्पत्तिने एउले आ प्रतिपत्ति वाण लागवाथी वाण तरफ न जोतां शरोत्पत्तिने एउले आ प्रतिपत्ति वाण्छे ते स्थानने अथवा वाण मुकनारने जुएछे-हो। थेछे, " १३९, मिन पण दुर्वचन रू ी तीरने पामीने ते वोलनार तरफ द्वेप करता नथी पण आ वचन- शरभाग पूर्वायार्जित कर्मनुं फल छे एम विचार करी ते कर्मीने हणवा मयत्न करेछे.

तह पुँठिवं किं नक्यं, न वाहए जेए में समध्योवि।

रिण्ह कि कस्सव क्रिप्प-मुत्ति धीरा अणुष्पिच्छा॥ १४०॥
अर्थ-"धीर पुरुष एवी रीते विचार छे के-हे आत्मा! तें पूर्वभवे शामाटे एवं
कि) न कर्यु के जेथी मने समर्थ एवी पुरुष पण वाषा करी न शके ? (जो भूभ कित को तने कोण वाषा करी शकत ?) हवे अत्यारे शामाटे कोडना उपर कोष कि ? (कारणके पूर्वना अश्वभ कर्मनो उदय थये सते पर उपर क्रोध करवो ते व्पर्ध ... आम विचारीने ते कोइना पर क्रोध करता नथी ?' १४००

अणुराएण जइस्सवि, सियायपरं पिया धरावेइ।

तह्विय खंदकुमारो, न वंधुपासोहिं पडिवक्षो ॥ १४१ ॥

अर्थ-" यति थयेला एवा पण पोताना पुत्रना अनुरागे करीने तेना पिता । पर भेत छत्र (सेवको पासे) धरावेले, ते छतां पण स्कदकुमार नामना सुनि अवो स्नेह छतां वंधुवर्गना स्नेह रूप पासे करीने वंधाणा निहः" १४१. अर्ही सुमार्त्रं दृष्टांत जाणवं. ४१

स्कंदकुमारनुं दृष्टांत.

शावस्ती नामे एक मोटी नगरी हती. त्यां तमाम शत्नुमंडलने धूमकेत जेवो किंदे नामे राजा हतो. तेने देवांगना करतां पण अति छंदर एवी मछपछंदरी नामें राजा हतो. तेने देवांगना करतां पण अति छंदर एवी मछपछंदरी किंदी. तेमने संतदकुमार नामे माणपीय तनुज (इ.मार) हतो अने मनुष्योंने किंदी आपनारी छुनंदा नामे पुत्रो हती. रूप ने योवनधी गर्वित यनेली कांतिपुर नगरमा राजा पुरुपसिंहने आपेळी हती. एकदा श्रावस्ती नगरोए किंवित्र नगरमा राजा पुरुपसिंहने आपेळी हती. एकदा श्रावस्ती नगरोए किंवित्र नेसी पथार्था. संतदकुमार परिवार सहित वांदवाने आव्यो. गुरुप रेवना आपी के हे भव्य जीवो ! आ संसार अनित्य छे, आ सरीर नाश्चित छे, किंथो नष्टतरंग जेवी चंचळ छे, योवन पर्वतमांथी नोफळती नदीना मयाह जेवं

गाया १४० इन्हि । कन्मयि । कुटवमुत्ति । गाया १४१-सिआयवर्त-सीतमानपर्य-स्वेतस्त्र ।

हें, मादे आ कालहर विष जेवा विषयगुराना आगादधी थें! कतुं हे के-

संपदो जलतरंगिवलोला. योवनं त्रिचनुराणि दिन शारदाचामिव चंचलमायुः, किं धनेः कुरुन धर्ममिनः " संपत्तिओ जलना तरंग जेनी चपळ हो, गीनन मान नण चार दि छे अने आयुष्य शरदत्रज्ञत्ना मेघ जेवुं चंचल छे, तो धनथी थुं विशेष छे एवो धर्मज करो. " वळी-

सन्त्रं विलवियं गीयं, सन्त्रं नहं विहंवणा। सब्बे आजरणा भारा, सब्बे कामा दुहावहा ॥

" सर्व गीतो विलाप रूप छे, सर्व नृत्यो विडंबना रूप छे, सर्व प्रकारमा। रणो भार रूप छे अने सर्व मकारना कामो (विषयो) परिणामें

इत्यादि गुह्नी देशना सांभुळीने स्कंदकुमार प्रतिवोध पाम्प इधी मातावितानी आज्ञा छइ तेणे श्री विजयसेन सूरि पासे चारि दिवसथी आरंभीने राजाए पण स्नेहथी पोताना पुत्र उपर श्वेत छत्र अने सेवा करवाने माटे तेनी पासे सेवको राख्या. ते नोकरो मार्गमां क होय ते आधा फेंकी देखे अने परम भक्तिथी सेवा करेछे. अनुक्रमे ते रूपी समुद्रना पारगामी थया. गुरुनी आज्ञा छइ जिनकल्पमार्ग एकछा विहार करवा छाग्या. तेमने अति उम्र विहारी जाणीने सर्व सैवा स्थानके गया.

एक दिवस विहार करतां कांतिपुरीए आव्या. त्यां महेलना झहल पति साथे सोगठावाजी रमती छुनंदा नामनी तेमनी बहेने तेमने जोगा. भ नथी तेने अत्थंत हर्ष थयो, आंखमां हर्पनां आंध्र आव्यां, अने वृष्टियी कदंव पुष्पोनी माफक तेनां रोमराय विकस्वर थयां. ते मनमां विवार करवा। 'आ मारो सहोदर हुशे के निह ?', ए ममाणे वंधुमेमथी नेत्रमां हुएअश्रु बार्स दाने स्कंद्रमुनिए ओळखी, पण तेणे तेना उपर जरा पण स्नेह आण्यो नहिं। वंनेतुं स्वरूप जोइ भाइबहेनने। संबंध नहि जाणतो होवाथी मनमां विवार भा मुनंदाने आ साधु साथे अत्यंत राग होय एम जणाय छे. ' ए प्रमाने का साथ कर्यात राग होय एम जणाय छे. ' ए प्रमाने का साथ कर्यात साथ कर्यात साथ जणाय छे. ' ए प्रमाने क इर्वेदियी रात्रिए कायोत्तर्गमुद्राथी वनमां रहेळा स्कंदऋषिने राजाए मारी न

हमां हो द्वीपी लाल ययेली मुहपत्तीने कोइ पक्षीए चांचमां लड्ने राणीना अंगणामां नांखी, ते मुहपत्ती जाइने राणीन मनमां शंका पडी, पटले त्रतज गेलाबीने ते संबंधी पूछ्युं टासीए कहुं के 'आपे गर् काले जे साधुने जीया साधुने कोइ पापीए मारी नांख्या हाँय तेम जणायछे. आ तेनीज सुहपत्ती ते सांभन्नीने राणी मृर्जित यह अने वजयी हणाइ होय तेम भूमि उपर शीतळ उपचाराथी तेने सावध करी एटले रुदन करती सवी ते बोलवा "क्दाच ते मारा भाइ इझे तो हुं छं करीश ? कारणके मारा भाइए दीला वं समळाय्छे,अने ते साधुना दर्शन्धी मने पण वंधुने जावाधी जेवो आनंद आनद थया इती." एवं विचारी तेणे एक सेवकने पाताना पिताना घरे रर मंगाबी. ते उपरथी ' याते घारेल ते सपछ खह छे' एम जाणी नेई दुःखधी भराइ आच्युं. त मोकळे कंठे स्दन करवा लागी के "हे वंधु ! हे होदर | हे बीर [तुं मने मारा माण करतां पण वधारे बहाछा छे. तुं ? तारुं स्वरूप मने पण जणाव्युं निहं ? तें तो आ पृथ्वी विद्यार करीने नावीछे, पण हुं ते। महा पाप करनारी छुं कारणके तारा उपर मारी दृष्टि निवित्ते तारी घात थयोछे. मारु शुं यशे ? हुं वर्षा जाउं ? शुं करूं ? " ए क मकारे विकाय करती मुनंदाने मत्रीओए अनेक मकारना अपूर्व नाटक वीने लांबे चलते शोकरहित करो.

गणे नीजाओए पंण स्कंदक मुनिनी पेटे निर्मेहपणुं धारण करवुं एवी आ

युर्तरो अइगुरू, पियमाइअवचिषयजणसिणेहो।
तिइझमाण ग्रविलो, चतो अइधम्मितिसिएहिं ॥१४२॥
1-" गुरु के॰ घणो, गुरुतर के॰ तेथी वपारे, अतिग्रुक के॰ तेथो पग
पितामाता पुत्रादि अने नियनन ते सी तथा परिननादि तेनो अनुक्रवे
18 ते विचार्यो सतो ग्रविलो के॰ महा गहन छे-अनंत भवना हेतुभून छे
पर्मना अति तृषित के॰ धर्मना अत्यंत इन्ज्रक एवा माणो मोए तेने तृजो
एण के ते धर्मना श्रुभूत छे. "१४२ एम नाणोने चीना पण धर्मना
प वंधुन्मना स्तेहमां न मुंझाता तेने तृजो देथो.

णियपरमध्याणं, वंधुजनसिणेह्वइयरोहोइ । गयसंसारसहार्व-निच्छयाणं समं हिययं ॥ १४३ ॥

१६६ राष्ट्रपात्रः । विवसायः । नितिज्ञासाराः । अतिप्रभेत्रितिः । १६३-वेपक्रमः । तिच्छ्यपाते । व्यतिकरः-सयधः ।

अर्थ-" नथी जाण्यो परमार्थ जेणे एवा माकृत माणी योने ज वंधुननना संवंध थायहो अने जेणे संसारना स्वभावनो निश्वय जाण्यो हो तेष्ठं हृदय ते।

जिणे संसार हं स्वरूप जाण्युं नथी. एवा मंद चुिं ओने वंधुननोनो करनार थाय हो, पण पंदित बुद्धिवाळा के जेओए संसार में स्वह्नपनाणां हो संसारनो संवंध तजी दीधोछे तेमना हदयमां तो शत्रुमित्रपर समान भाव ह तमने वंधुजननो स्नेह मतिवंधकारक थतीज नथी.

माया विया य भाया, त्रजा पुत्ता सुहीय नियमा य । इह चेत्र वह विहाई, करंति जयवेमणस्ताई॥ १८४॥ अर्थ- भाता, पिता, भाता (भाइ), भार्या (ही), पत्र --- । प्रतिकारा प्रतिकार क्षेत्रकार का क्षेत्रकार क्षेत्रकार क्षेत्रकार अने निजकाः एटले पोवाना भावा (भाइ), भाया (ला), भरणादि अने वैमनस्य ते मन संवधीओ ते सर्वे आ भनमांन वह उत्तर करेले.

मांया नियगमङ्गिनित्यंमि, अत्थे अपूर्माणंमि युत्तस्त ङ्ग्णड् वस्तमं, युल्णी जह वंभदत्तस्त ॥ १ भर्ग- ॥ योतानी युध्धिवरे विचारेला पोताना अर्थमां (कार्यमां)

करेतां निक्त प्रायेत्री अर्थाव श्वास्त्रा पाताना अथमा (कारणा) प्राची प्राचेत्री अर्थाव पोतानं धारेतं कार्य परिवर्ण जेने थयं नथी। चेम जन्मिक सम्बद्धित स्थाप भिन्नामा माथे निष्यामक्त थये छी चुळणाए बहादत्तन क्षेत्र । जन्म इन्सी फोम कार्त्रा नाम्यतानि चिन्ने प्रमानिक प्रोताना चित्रयती भूगा सम्बद्धी कार्यानिक स्थिती चुळणीए पोताना चित्रयती भूगा इल वर्त्य भी पाय विषयामक्त थयेळी चुळणीए पोताना चक्रवता यणा महत्र प्राण्यो. चक्रवता वणाविषयो माणांत कप्टमां नाल्यो. अहीं गुर मन्द्र माम्त्रो.

मारित्रपृतं नारमां स्थानां राणानु दृष्टातः स्थान्यः हो स्थानमहे स्थान प्रमाहितोः तेने सुद्धणा नागं स्थान प्रमानामे संभान स्थान प्रमानामे समुद्धणा नागं स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान अवस्थित प्रमानामाम वीना पाचन पुत्र अन्याः तस् वेशव्यः विकास कार्याः तस् विश्वव्यः विकास कार्याः विक हर्ता है देव हैं के लिखा है ती. तेशी श्रीणमात्र पण गर्म श्रीतिशा । राष्ट्रिया श्रीमाम्साण । गुल्या-सियात्रि। सितार मानाण

ा ब्रुकता नहोता. ते पांचे जणा मतिवर्ष अनुक्रमे एक एकना बहेरमां जरूने एकडा

ुष मगाणे एक वखत पांचे राजाओ कांपिल्यपुरमां एकटा मळया हता. ते वर्षे ब्रह्म ी। मस्तकना न्याधियी परक्रोकवासी यया. ते बखते ब्रह्मदत्त कुमार बारवर्षनी **क**ष्टु-िनो हतो तेथी चारे मित्रोए विचार्ध के 'आपणा मीतिपात्र परम्मित्र त्रहारात्रा पंचत्व ^{रि}षा छे अने तेनो पुत्र नाने। छे, माटे आपणामांथी एकेक जणे दरवर्षे आ राज्यनी ा करवा माटे अहीं रहेवुं. ' ए ममाणे विचार करी दीर्घराजाने त्यां मृकी भीना त्रण मात्रो पोतपोताने नगरे गया. दीर्घ राजाए त्यां रहेता सता ब्रह्मराजाना कोठार अने तः इरमं जतां आवतां एक दिवसे चुलणी राणीने नवयावना जार, तेथी ते कामरागयी राधीन थया. चुल्ली पण दीघ राजाने जोइने रागवती यह, वंनेने परस्पर बातचीत प्रान कामराग उत्पन्न थया. तेथी ते वंनेने परस्पर अरीरसंबंध थयो. अनुक्रमे ^{पैयं राजा पोतानी स्त्रीनी माफक चुल्ली राणीनी साये भोग भोगववा साम्यो. तेले} ीरनो भय गण्यो नहिं, छोकापवादनो हर पण तनी दीघो. घनु नामना इद् मंत्रीए ंब्धी हकीकत जाणी, तेथी ते मनमां विचारवा छाग्यो के 'अरेरे ! मा दुए दीर्घ राजाए ति अविचारी कार्य कर्युं. अन्य प्रण मित्रोए पग शो विचार करीने आने राज्यनो विकार सेांप्यो ? एमणे पण विपरीत कार्य कर्यु आदीर्घ राजा पाताना पित्रनी सीनी ^{|पे} प्यभिचार करतां छज्जा पण पामतो नयी.⁷ ए ममाणे विचारी घेर आवी पोताना ^{त प्रा}पतुने आ इकीकत जणावी. तेणे जड़ने ब्रह्मदत्तने आ खपर कही. ते सामगी भद्त अति कोधित यह रक्त नेत्रवाळो थया. पछी दीर्घ राजा समामां बेठे। के ते ^{कृते} समामां जड़ने कोकिला ने कागढानो संगम करावी ते कहेवा आग्या के ' अरे ! काग ! तुं कोकिलनी स्त्री साथे संगम करे छे प अति अयुक्त छे. आ,वारं अयोग्य विरण हुं सहन करीश नहि.' एम कही कागने हायमां पकडी मारी नांख्यो अने छोक-का कयं के ' ले के।इ आबं दुए कार्य मारा नगरमां करे छे अयवा करते हेने इं वि करीय नहि. ' ए सांभळीने दीर्घ राजाए चुळणो राणीने इमारनी है स्कीकन मरी. त्यारं जुलगीए कहा के 'ए तो बालकोटा छे, तेनायी थं बीमो छै। ? माटे स्व-माओ. ' ए ममाणे केटकाक दिवसा व्यतीत यतां फरीयी बदादते दीर्थ राजानी म इंसी ने बगलाना समागम करावी पूर्ववत् जनसमृहनो आगळ कबुं. भगयी आ-ष्येका दोर्च राजाए जुकणोराणीने फयुं के 'तारा पुत्र आपणा बेना संबंधनी विष्य नाणी हो, तेथी आपणो निःशंक नमागम हवे केवी रीते यह शके ! माटे दं भारी नामः जेथी आएणे निर्भयपणे विषयरसनो आस्वाद अनुभवीए । पृष्टणीर ₹\$



मध्य रात्रिए सर्व लोको मुइ जतां चुछणो राणीए आवीने लासागृहने आग लगाडी, ग्रक्षागृहने चोतरफथो वळतुं जाइने ब्रह्मदत्ते कहुं के 'हे मित्र ! हवे शुं करहुं ? ' रं बायमुए कहुं के 'मित्र! चिंता शामाटे करे। छो ? आ जग्या उपर पगनी महार ि पछी ब्रह्मद्ते पगना महारथो सुरंगन्नं वारणुं उपाइयुं. वंने जण पेलो स्वीने न रहेवा दहने ते गार्गे नासी गया. सुरंगने छेडे मंत्रीए पवनवेगी वे घोडा तैयार आ हता. वंने जण ते वे घोडा उपर स्वागी करीने भाग्या. पचास योजन गया विने योडा अत्यंत श्रमित यह जवायी मरी गया. तेयो ते वंने जणा पगे चालीने 👫 नगरे गया.त्यां कोड् ब्राह्मणने धेर भाजन लीघुं अने ते ब्राह्मणनी पुत्री साये हरत पर्ण्यो. पछी चणां शहेरा अने घणां गामोमां कोइ ठेकाणे गुप्त रीते अने ह देताणे प्रगटपणे फरतां फरतां ते ब्रह्मदत्त अनेक खीओ परण्यो. ए प्रमाणे हिंसी वर्ष भम्या. अनुक्रमे कांपिल्पपुरमां आवी दोर्घ राजाने मारी नांखीने पोतानुं म्ब छोधुं. पछी छ खंड साघीने ते वारमी चकी थयो

एक दिवसे राज्यनं पालन करतां पुष्पनो गुन्छ जोइने ब्रह्मदत्तने जातिस्परण्-न पयु. पूर्व भवनो भाइ चित्रनो जीव प्रतियोध पमाहवाने त्यां आव्यो, परंतु ते निशेष पाम्यो नहि. साळ वर्षतुं आयुष्य बाफी रहेतां कोइ गोवाळी आए तेना मिना डोला फाढी लीया, अर्थात् आंखो फोडी नाखी. 'आ वर्षु एक बामणतुं रित्र है' एम जाणी त्राह्मगोनां नेत्रा कढावतो सतो रीद्र ध्यानवर्ट घणां अग्रुभ कर्वाने भी, सानसे। वर्षतुं आयुष्य पूरुं करी सातमी नरकमा अमितष्टान नरकायासामां

क्षप्ट स्थितिए उत्पन्न थयो.

आ सघळो सेवंघ वधारे विस्तारयी ज्वएस सहस्सेहिं वीति ए गाधाना त्रिवरणयो गित्रा. अहीं तो आ ममाणे मातानो स्नेह कत्रिम हे, एवो आ गायानो उपदेश है.

सद्वंगोवंगविगत्तणाळो, जगडण विहेडणाओ अ ॥

कासीय रङ्जितिसिखो, पुत्ताण पिया कणयकेछ ॥ १४६ ॥ अर्थ -" राज्यनो तरझ्यो एवो फनककेतु नामनो पिता पोताना पुत्रोने सर्व बोयाग हेदयं करीने कटर्थना अने विविध मकारनी यातना जे पीडा में करतो को. माटे पितानो संबंध पण कृत्रिम छे. " १४६

कनकतेतु राजा राज्यना लोभपी तेमां अंघोटड जवायी पोताने जे पुत्र याय नेना

गाधा १४६-वि हर्नना-छंदनानिः जगढग-एडर्यना, कासी, विदेदना-विविधा

कतना-योदाः काकापितः

हैं हैं हैं देवाबरे शस्पने अयोग्य करती हती. तेनुं विशेष चित्र के 50mm 18 1/2 1/2.

कनककेतु राजानी कया.

हैं है ही पुर नगर्गा कनक के तु नामें राजा हतो. तेने पद्मावर्गा नामे रेड़े अने नेन्छी युत्र नामे यंत्री हतो. ने कार्मारीने पोहिन्छा नामे अति बहा र्ट, राष्ट्रप्युत्व योगवनां क्रनक्रकेत्वने घर युत्रनो जन्म थयो, ते वसते राजा प्रका कार्यों के 'शा पुत्र मोटो यतां मार्ह राज्य छड़ छेडो.' एवा भययी ते १ फ कारी नांच्या. वाजा छोकरो ययो तेना पगर्काण नांच्या. ए प्रमाणे म श्रीकरा प्रत्यस्य यनां कोइनो अंगछेद करों, कोइनी आंगळी कार्या नांकी,कोर्य कारी संख्युं कोइना कान कापी नांख्या अने कोइनी आंख कादी नांसी आ म रक्षा के के किया कार्य हिंद्राम् स्टिन्स्यी स्चित गर्भ थारण क्यां. ते बखते मंत्रीनी की पोड़िल् । राव प्रारण क्यों, तथी पंत्रीने बोलावी राणीए कर्युं के 'मुस्तप्तयी मृति में। आरम मार्थ छ, पाट तेना जन्म बखते आपे छड़ जड़ने ग्रप्त शते तेनं सम्बन्ध कार् नेशी ने राज्याधिकारी याय अने तमने पण आधारभूत थाय. १ मंत्रीए कर्न में योग्य समये युत्र मसच्यो मंत्रीए ग्रम रीते ते युत्रने पोतानी सी पोष्टिशने में भने ते वावने पोहिष्टाए मसवेली पुत्री राणीने आपी. पली दासीए राजाने जा के ' राणीने पुत्री जन्मी छे.'

वहीं मंत्रीने घेर राजपुत्र मोटो थतां तेत्रं कनकथ्यत्र नाम पादयुं. अनुक्री योजनवपने माम थयो. ए अवसरे कनकते राजा मृत्यु पाम्यो. तेथी सर्व गांगी राजा चिना फरवा छाग्या के 'इने राज्य कोने सेांपन ?' ते नसते मंत्रीर गर्मा रथी हकारत जाग्या के 'हवे राज्य कोने सेांपञ्ज ?' ते वस्तत मणा प्रया अने तेने सोला जाना कि काम प्रता प् यया अने रोने मोटा आहंबरथी राज्यगादीए बेसाडयो.

पाइयान करता लाको प्राप्त स्वतः स्वतं है 'वर्ष हें पण पत्मान करता छाग्यो घणा आनंद्धी राज्यनुं पालन करतां कें के कि व्यक्ति यथो. अन्यहा मंत्रीनी स्त्री पोटिखा जे पहें संत्रीने माण करतां के विश्व करतां करता िय हर्न ने कोड वर्षना क्षेत्रीनी की पोटिखा जे पहेंद्रा मंत्रीने माण करता का कि के देशों पोटिखाना कार्या अभिय यह पटी. तेथी मुत्राण तेनी वर्षा के के होती पीटिकाना मनमां घणे हुःग्व थवा लाग्युं, कर्युते के-

याज्ञाभंगा नरेन्डाणां, ग्रेरणां मानमर्दनम् । प्रथक शय्या च नाराणामशस्त्रवध उच्यते ॥

" राजाओनी आज्ञानो भंग करवो, गुरुओना मानतुं मर्दन करवुं अने स्त्रीओनो ी बय्या करवी-ए ब्रह्म वगरनो वध छे."

भर्तारना अपमानयी पीडित ययेछो पोट्टिला विशेष मक्तरे दान विगेरे धर्महत्यो जा छागी. ते समये तेने धेर एक स्रवता नामना साध्वी आहारने माटे आव्याः ते सन्धल जह, श्रद्ध आहार वहोरावी, हाय जोडीने पोट्टिलाए कयुं के 'हे भग- ते कें कंइक करो के जेथी मारो भर्तार मारे वश यायः परोपकार एज मोहं में है, कयुं छे के-

दे।पुरिसे धरइ धरा, अहवा दोहिं वि धारिया धरणी । उवयारे जस्स मई, जवयारो जं न वीसरइ॥

"वे पुरुष उपर आ पृथ्वी घारण करायेळी छे अधवा वे पुरुषोए आ पृथ्वीने रण करीछे. (ते वे पुरुष कोण?) एक तो जेनो उपकार करवामां बुद्धि वर्ते छे— कार करवामां जे तत्पर छे, अने बोजा जे उपकारने विसरतो नधी—कोइए उप-र कर्यो होय तो ते भूछो जतो नधी "

प ममाणे पोहिळानुं कहेनुं सांभळीने मुत्रता सान्त्रीए फणुं के—"आ तुं शुं नी? उत्तम स्तीए आत्री महित करवी योग्य नथी. कारणके मंत्र विगेरेयो पिनने करवो ए मोटो दोप छे, अने अमे तो सर्वविरित ग्रहण करेळीछे, तेयो फामण गेरे करवां ए अमने तो जिवतन नथी. तुं जे भोगो भोगववाने माटे वशोकरण वा इच्छेछे ते भोगो सांसारिक दुःखोना कारणभूत छे. विषयो किपाक फळनी मार्थभा रम्य छानेछे पण परिणामे अति दारुण छे. छांचो वग्वत तेनुं सेवन पिणो पण तेनायो छित यती नथी. तथी आ विषयनी अभिलापाने तर्जा दहने नोहित शुद्ध धर्म आचार के जेथी तने सर्व मकारनो सिद्धि मान यहा. "पोहिष्ण ते बात क्रव्छ करी अने पोताना भर्तारनी आहा लड़ने तेणे चारित्र ग्रहण थे. मनीरे एण कोधरहित ग्रहने कर्यु के "तने घन्य छे के ते आवो उत्तम पर्व भिक्तों, हवे तुं देवी रुप घडों, माटे देवी ग्रहने तारे मने मिनवोच पमाडवाने माटे का भावां, "तेणे ते क्रव्छ कर्युं. ते पोहिला पृथ्वी उपर विहार करवा छागी, अने मात्रां सुधी निर्देष चारित्र पाळी देवसोकमां उत्तम गर्द.

पछी अवधिक्रानधी पोतानो पूर्व भव जाणी पूर्व भवना भवीरने प्रतियोग करना है ने पोहिलाबेन मंत्री पासे आच्यो, तेणे पणी उपदेख क्यों, पण ठेतकोषुत्र मयान

पित्रवोध पाम्यो निह. तथी देवे विचार्यु के 'आ राज्यमोह थी पित्रवोध पामतो ने पछी ते देवे राजा छुं चित्त प्रधान उपरथी फरवी नां छुं. एटळे मंत्री ज्यारे सभा आब्यो त्यारे राजा पराङ्मुख थइने वेठो, मंत्रीने दर्भन आप्युं निह. तेयी तेत की विचार्यु के "राजा मारा उपर रुष्टमान थया छे. कोइ दुष्टे मारुं छिद्र तेमने के जणाय छे. आमां खवर पडती नयी के राजा मने शुं करको ? अथवा कया पका मरणथी मने मारको ? तथो आत्मचात करीने मरचुं एन वधारे सार्ह छे." ए मम परणथी मने मारको ? तथो आत्मचात करीने मरचुं एन वधारे सार्ह छे." ए मम विचार करी घरे आवीने तेणे गळामां फांसो नांख्यो. देवना माहात्म्ययी ते खुटी गयो; एटळे विप खांधु ते पण अमृत जेवुं थइ गयुं. त्यारे तरवारथी पो मस्तक कापवानो आरंभ कर्यो. देवे खदगनी धार वांधी छीधी. वळी अप्रिमां मस्तक कापवानो आरंभ कर्यो. देवे खदगनी धार वांधी छीधी. वळी अप्रिमां करवा तैयार थयो. ते अप्रि जळहप थइ गयो. ए ममाणे देणे छीधेला मरणन उपायो ते देवे व्यर्थ कर्या. पछी मगट थडने पोष्टिलादेन चोल्यो के 'आ सब कर्युंछे, तुं ज्ञामाटे आत्मचात करे छे ? चारित्र ग्रहण कर. 'ते सांभळीने तेत प्रधाने चारित्र ग्रहण कर्युं. राजा आवीने तेना पगमां पडयो. घणो काळ प्रधाने चारित्र ग्रहण कर्युं. राजा आवीने तेना पगमां पडयो. घणो कोळ प्रधाने चारित्र ग्रहण करी, चौद पूर्वनो अभ्यास करी, घातिकर्मनो क्षय थवाथी केवळान तेतलीपुत्र ग्रुनिमोक्षे गया.

विसयसुहरागवसओ, घोरो भायावि नायरं हणेइ।

आहा विओ वह्ध्यं, जह वाहुव लिस्स भरह वर्छ ॥ १४७ अर्थ-" विषयमुखनो जे राग तेना वशपणाथी घोर के० (शसादि प्रहण हावाथी) भयंकर एवो भाइ पण भाइने हणे छे. जेम भरतपति (भरत चर्र वाहुवळीना वुधने माटे दोडया हता तेम." १४७ आ हष्टांत प्रथम आवी गर्य

ज्ञावि इंदियविगार-दोसनिक्या करेई पहुपावं।

जह सो पए सिराया, सृरियकंताइ तह बहिओं ॥ १४६ अर्थ-" इंटियोना निकार संबंधी दोपथी विइंबित थयेळी भार्या पण प्रिन्तिने मारी नाखवा रूप पापने करे छे. जेम ते मदेशी राजाने तेनी मामनी राणीए विप देवा विगरे वट मारी नांख्यो तेम समनवुं. " १४८ इस पूर्व आर्वा गयेळ छे.

गादा—भातरं । आधावितो वधार्व । ताहुबलम्स । गादा—प्रयाव । प्रतिपाप-प्रतिसिद्दारुषं पापं.

सासयसुरुखतरसी, नियर्अगंतसुरुजवेण वियपुत्तो । जहं सो सेणियराया, कोणियरन्ना खर्यं निज्ञो ॥ १४९ ॥

अर्थ-" हवे पुत्रना स्नेहनुं पण व्यर्थपणुं बतावे हो. जेम शास्तर मुख मेळववाने हुक एवो ने श्रेणिक राजा भगवंतनां ववनमां रक्त अने क्षायक समस्तित्रारों तेने गाना अंगथीन उत्पन्न धयेला अने भिय-वहाला एवा पुत्रे कोणिक राजाए क्षय । इयो-विनाश पमाडयो तेम." १४७ अर्थात् पुत्रनो स्नेह पग एवो व्यर्थ समजवो. कोणिकराजानुं हृष्टांत जाणवुं.

कोणिक राजानुं द्यांत.

क्रोभायमान घरोथी भरपूर अने नगरमां प्रसिद्ध एता इभ्यननोनी श्रेणीयी पूर्ण राजगृह नामे एक शहेर हतुं. त्या जिनभक्तिमां रक्तचित्तव को श्रेणिफ नामे राना य करतो हतो, ते श्रेणिक राजाने उत्तमशील अने लावण्ययो भरपूर, छंदर रूप-ी, अत्यंत भीतिवाळी अने निर्मळ गार वर्णवाळी चिहला नामे पट्टराणी इती. कि राना साथे पूर्व जन्ममां जेणे वैर बांध्युं हे अने जेणे पुष्कळ तर कर्यु हे एसे नीन छीपनी अंदर जैम मोती उत्पन्न थाय तेम चिल्लणाना गर्भमां उत्पन्न थयो.पर्छा णाने गर्भनाषभावधी बीजे गहिने पोताना पाणनायना हृद्यनुं गांम खाबारु । अप्रम ि उत्पन्न थयो, तेथो ते घगी द्र्वेळ यती गइ रागाए राणीने द्वेळना संबंधी आग्रह-पुछपुं त्यारे तेणे पोतानो दुष्ट विचार जणाच्यो. ते मांभळी कामरागवडे रानाए तेने हैं 'दै कपलाक्षी! हुं करा स्वस्थ था.' पछी राजाए ने वात अभय कृपारने फरी. नेजे ना हद्य उपर अन्य माणीतुं मांस यांघी, छरीधी तेने फार्पाने राणीना दोहद र्ग पूर्ण फर्यो. ते कुशांगीए क्रमे करी धुवने जन्म आप्यो अने ने जीयता धुवने वाडीमां कोइ द्वलना मूळमां मूलयो. ने चान दासीमृज्यी मांबळीने रामाण् नि ने पुत्रने छह आबी पालो राणोने माध्यो राजार इपयो पयन ने पुत्रनुं नाम चिन्द्र पाइयुं. परंतु शुरुषाए तेनी आंगळोने दंग फर्पी हनी नेयों ने याळक रंपने क्षीये कोगिक नामयी बोलसावा नाम्यो ने भागनीनी चेदनायी ने मोटेयो रहवा लाग्यो. तेथी राजाए वे आंगळी पांबाना गुण्यमी राज्योन देने रेसेजो क्यो. यान्यास्ता व्यतीत यतां नेले अन्य समध्योनो साये पालिय-^{भू} अने नेनी साथे विषयगृत्व भागवता लाग्यो.

णा १४९-माज्यसंसीक्वन्यरिस

फोणिकने देवसदश हल अने विदल नामना वे नाना भाइओ यया हता.भे राजाए कुंडल, हार अने हस्ती रूप दिन्य वस्तुओ पोताना नाना पुत्र हु वि आदी. तेथी इर्पा उत्पन्न थवाने लीधे कोणिके पोताना विताने काष्ट्रता वितरामां न अने पोते राजा थयो. पछी ते दररोज कोरडाना मारथी पिनाने महार करवा ल अन्यदा कोणिक राजानी पत्नी पद्मावतीए एक छंदर पुत्रने जन्म आप्यो ते । वर्षनो थयो त्यारे कोणिक राजा तेने पोताना खोळामां वेसाडी पुत्रना मुत्रभी अन्न खावा लाग्यो. पुत्रना भोहने लीधे तेने जरा पण जुगुप्सा उत्पन्न या नी तेणे पोतानी मातानी पासे जइ ते बात कहीने पूछ्युं के 'हे माता! मने ग केवो भिय छे ?' ते सांभळीने माताए कखुं के 'हे क्रूरमते! आ तारो ते बो हे ? तारा पितानो स्नेह प्रथम तारा उपर आ करतां पण अत्यंत विशेष रतो. भमाणे पोतानुं पूर्व हत्तांत पोतानी माताना मुखथी सांमळीने पोताना पिताने गृहमां नांखना रूप पोताना निय कभेने निदतो सतो ते कहाडो छड्ने जन्मी राने भागवा माटे चाल्यो. पोताना पुत्रने एवी रीते आवतो जीइ भयशान क अंशिक राजा तालपुट विपना मयोगथी पोताना आयुष्यने पूर्ण करी समि धामपी भगाउ गांवेली पहेली नरक पृथ्वीने माप्त थया,, अर्थात् पहेली नरके रंकिर गता पोताना पिताने मृत्यु पामेला जोइ अत्यंत रुदन करना काणी है कि कि कि स्वार पत्री तेना मुख्य सामंतोए अनेक प्रकारना प्रयोगीयी की राणने बोक्पी निरंग क्येर.

ण महाणे पृत्रेते स्मेर पण कृषिम छे, एवो आ कथानो उपदेश छे. यूणा सकतात्तिआ, सुहिणावि विसंवयंति कपकता। इत चंदगुनगुरुणाः पद्वयओ घायत्रा राया॥ १५०॥

कार कार कार कार्य कार्य

मान् १०० चार्यकृषाः साम्यः स्वरूपः स्वरूपः

विनावयं नामना मंत्रीए (पोतानुं कार्य यह गया पछी राज्यल्यपणाथी पोताना विवा) पर्वत नामना राजानो घात कर्यो." १५०, अहीं चाणाक्यनो संबंध को. ४५.

षाणावयनुं हत्तांत.

वगक नामना गाममां चणी नामे ब्राह्मण वसते। इते। तेने चणेषरी नामें ब्री मंने जैन हता अने जिनभक्तिमां भीतिवाळा हता. एक दिवस तेमने दांव सामे बन्यों, तेनुं नाम चाणाक्य पाइयुं, ए समये तेमने घेर साधुओं आव्या, एटखे ाच्छने साधु महाराजना चरणमां मूफीने चणी मटे पूछछुं के 'हे भगवन्! मारे ना पुत्र दांत सहित जन्मया छे तेनुं शुं कारण ? तेनुं महातम्य शुं हुने ? 'माधु राजे कहें के 'ते राजा यशे.' त्यारे मातापिताए पिचार कर्यों के 'आ छोकरों वस्त सुधी राज्यमां आसक्तिवाळो थवाथी जरुर नरके जर्श 'एवं जाणी तेजाए व दांन घसी नास्या पछी फरीने मुनिने पूछतां मुनिराजे कयुं के 'दांत पसवाबी म राजाने। मंत्री यशे अने केाइने अग्रेसर करीने पाते राज्यपालन करहो.'पछी भय केटलेक काळे मोटो धवाधी, सर्व विद्यामां इञ्चल यया. यावनावस्या मास वन्भ दिनपुत्रीनी साथे पाणिग्रहण करी सांसारिक छख भोगवना लाग्या. एक । चाणाक्यनी पत्नी पाताना भाइना छग्नमसंगे पिताने घर गड,परंतु सामान्य वेष-ने धनरहित होवाथी पिताने घेर पण तेने योग्य सन्मान मळ्युं नहि तेनी मीजी र्यां आवेली हती. तेओए घणां घरेणां अने छंदर कपडां घोरण करेलां होनाची तेमने वह सन्मान आप्युं. 'अहो ! आ जगतनुं मूळ कारण घनन हे.'कबं छे के-जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याप्यधो गच्छतां शीलं शेलतटात्पतत्वभिजनः संद्यातां विद्वना । शोंयें विरिणि वज्रमाञ्ज निपतत्वथोंऽस्तु नः केवलं पेनकेने विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥

ं नानि रसातलमां जाओ अने गुणसमूह तेथी पण नीचे जामो, शीक पर्वतना उपस्थी नीचे पटेा. सगांवहालां अन्तियी वली नामो,शूरवीरपणा उपर नक्दी हो, परंतु अमने मात्र धन मलो; फेमके एक धन विना आ समग्र गुणो दनकर है, "

ति वेनोने तेनो भार सघळा काची निगेरेमां पण पूछेके, परंद बाजानवनी के बोनानी चेन तेनी तो साम्रं पण जाती नथी; नेची ते सेद करती सनी

क्रीगों हो. ? ' चाणावये आंगलीनी संज्ञाधी सरीवरमां रहेला चंद्रग्राप्ते कराम पर्वाने माटे घोडा उपरथी उतरीने ते स्वार लुगडां ने शलो उतारी जनमां करे से तेवामां चाणावये उठीने ते स्वार सुं मस्तक तेनाज खड्गधी सेदी नांन्यं चंद्रग्राप्ते नोलावी तेना घोडा उपर बेसाडीने तेओ आगळ चाल्या. मार्गमां मार्च्यमने प्रस्युं के 'हे तत्स! में ज्यारे तने अंगुलिसंज्ञायी बताव्ये। त्यारे त विचार आव्ये। ? 'चंद्रग्रप्ते कर्ण के 'हे तात! में विचार्य के आपे जे कर्ण मार्जनीत्र कर्युं होते. 'ए ममाणे सांभळीने चाणावये चितव्युं के 'आ चंद्रग्रं नियन्ती पेठे आजांकित यहें.'

मारतस्य अने चंद्रग्रप्त ए ममाणे वातचित करतां चाल्या जता हता. तेनाम र्का स्वार देणोनी पालल आल्या. फरीथी पण चंद्रग्रप्तने सरोवरमां रामीते दे के चारी ने भय देशाडी नसाडी सूक्तीने चाणाक्य पोरी घोनी बनी तमार्ग पोर रके द नाते फोरेम्बारे आतीने पूछ्यं के ' चंद्रग्रप्त करां के ?' त्यारे नाणारंग र्यम्बरं बर्गा रेले न नारमां नताल्या अने मथम ममाणे तेतुं पण माणं काणी नीक के चर्चेर केरा उपर क्यार शरू आगल चाल्या मध्याह चंद्रगतने भग आगी र रहत रहत वहार गरी वाणावय गाममां भावनी, ते वखने तेनी सामी भ का दें के का भाषाण महिला, पाणावणे पूछमं के अरे भटती ! आगे में * दें अवन के भंदर्शियान सापा हो, 'पानी नाणार में विशा े प्रश्निक शामित अभी बार छामजी, तेशी बह गमाना पार् कर कर कर कार वा भी भागी गांता; मारे मा ब्राह्मणाई मेर श्रीत ही • • । । । । तार्वा लग विज्ञानी ते नपाण कर्ता ते विधाने । भारता अर्थ अर्थ मध्ये गर्धत्याः त्यां निशा अर्थ निकारिता * * * * * * * * * शर्म त रहात मानानी नाळ हो ते नेता गान मेरिक हैं। म म न नामवा ताथ भीवाभी वरणा ने स्वर्ग में A THE STATE OF THE

नी मार्ग मेत्रो करी. केटलाक दिवस गया पछी पर्वत राजाने अर्धु राज्य आपत्रं कि करी मोहं सैन्य मेलवी आसपासना अनेक देशोने साधीने पछी चाणावय कि कि आव्यो. नंदराजानी साथे मोहं युद्ध धयुं. तेमां नंदराजा हार्यो. तेथी तेणे किए मागी लीधुं, एटले पोताने नीकली जवानो रस्तो आपवानी याचना करी. शिक्ष ते वात स्त्रीकारी तेथी ते रथमां वेसी पोतानी स्त्री, प्रत्रो अने योहं सारभृत है हा नगर बहार नीकली गयो.

निषय ते बात स्वीकारी तथी ते रथमां बसी पोतानी छी, पुत्री अने योह सारम्त कर नगर बहार नीकळी गयो.

ते बखते रथमां बेठेली नंदराजानी पुत्री नगरमां मबेग्र करता चंद्रगुप्तन्तुं लावण्य ते मार पामी. नंदराजाए ते जाण्युं, एटले चंद्रगुप्त उपर पुत्रीनो स्नेट जीइ नंदरा- ति तेने पोताना रथमांथी उतारी मृकी. ते तरतज चंद्रगुप्तना रथ उपर बढी गइ. ते ति रपना नव आरा भांगी गया. ते जीइ चंद्रगुप्ते चाणान्यने कयुं के 'हे पितानी ! एमंत्र बखते का अपश्रकन थायछे.' चाणाम्ये कर्ष्म के 'हे बरत! आ श्रम श्रकन भारणके रथना नव आरा भांग्याले तथी तारुं राज्य नय पुरुप ग्रुची (नव पेटी कि रपना नव आरा भांग्याले तथी तारुं राज्य नय पुरुप ग्रुची (नव पेटी कि रपना स्वास्त्र अवस्त्र आया अवस्त्र क्यां के 'वाणा- विश्वना राज्यमहेलानी अंदर एक रुपवती विपकन्या मृकी गयो हतो. तेने चाणा- विश्वनायो दोषबले दुपित जाणीने पर्वत राजानो साथे परणावी. तेना अंगना विश्वनायो जापले राज्य मेळल्युं ले अने आ मित्र मरी जायले, पाटे तेनी कि सहायथी आपले राज्य मेळल्युं ले अने आ मित्र मरी जायले, पाटे तेनी कि सहायथी जाएले राज्य मेळल्युं ले के 'विकित्सा करवायी सर्युं, ओपथ विना विश्वने अरवी जोइए.' चाणावये कर्युं के 'विकित्सा करवायी सर्युं, ओपथ विना विश्व निर्णे अपने कि मार्गो कार्य साथी मरता मित्र मत्ये तरन चंदरकारी बवाबी. के मित्रसने ह पण कृतिम ले, एवो आ क्यानो उपदेश हैं.

निययांवि निययको, विसंवयंतिमि हुंति खरफरसा।

जह राम सुज्ञमकओ, बंज खत्तस्स आसि खत्रां ॥ १५१ ॥
भर्ष-" पोताना स्वननो पण पोतानुं कार्य विषयमान यये सते अर्थात् पार्णां
भाणे निद्ध निह स्यये सते खर के० रीष्ट्र कर्मना करनारा अने फरम के० फर्बार्थ
भो बोह्यनारा यायहे. जेम राम ने फरमुराम अने मुभूम चक्रवर्तीनो परेलो पाप्यां।
भे भिष्योंनो सप य्यो तेम." १५१. परश्रुरामे सात बखत निःसत्ती पृश्वी गरी,
भिष्ये एकत्रीण बखत अल्लाहाणी पृथ्वी परी. पोताना कार्यनी मिदिने पाटे मा
भागे मोटो सप कर्यो, जेमां पोताना स्वननोनो पण सप् यह म्यो. माटे स्वतनभाग स्थर-निषयक्त-निषयक्तां र्यास्परम्या स्थम, राम-परहर्गम.

परशुराम अने सुभूमनी कथां.

सुधर्मा नामना देवलोकमां विश्वानर ाने धन्वंतरि नामना वे मित्रदेवो (व पहेलो जैन हतो अने वीजा तापसभक्त हतो.ते शो परस्पर धर्मवार्ता करता सता पत पाताना धर्मने वरवाणता.तेना निर्णय करवा माटे धर्मनी परीक्षा करवाना हेत्यीते मृत्युलोकमां आव्या. ते समये मिथिला नगरीनो राजा पद्मरथ राज्य होडीने श्रीता पूज्य मुनिनी पासे चारित्र ग्रहण करवाने जता हता.नवीन भावचारित्रवाळा तेने जी जैनदेवे कहुं के ' पथम आपणे आनी परीक्षा करीए, पछी तमारा तापसनी पी करी छं. 'पछी भिक्षाने माटे अटन करता ते नवीन भावचारित्रीने अनेक प्रकार उत्तम रसवती वतावी, पण ते भावसाधु सत्त्वथी चिलित थया निह.पछी वीजी हैं। जतां तेना मार्गमां चारे तरफ देडकोओ विक्वर्वी अने वीजे रस्ते कांटा वेर्या. पर भावमुनि मंडुकीवाळो मार्ग तजी दइ कांटावाळा रस्ते चाल्या. ते वखते कांटा प भेंकावाथी छोहीनी धारा बहेबा छागी अने अत्यंत वेदना थवा छागी. परंह के जरा पण खिन्न थया निह, तेमन ईर्यासिमितिथी चालतां लेशमात्र पण क्षोप पा नहि. पछी त्रीनो वार देवे निमित्तियो थड़ हाथ जाडी विनय पूर्वक कर्तुं के भगवन् ! तमे दीक्षा छेवाने जाओछा, पण हुं निमित्तना प्रभावथी जाणुंहुं के ता आयुष्य हज्ज छांचुं छे अने तमने युवावस्था प्राप्त थइछे ते। हमणा राज्यमां रही मकारना भाग भागनो, पछी दृद्धानस्थामां चारित्र ग्रहण करजी; कारणके ते व सारं छे.वळी आ सरसं विषयोने। स्वाद क्यां अने रेतीना कोळीआ जेवो आ योगमार्ग क्यां ?" त्यारे भावसाधुए कर्ष्युं के 'हे भव्य ! जो मार्ह आयुष्य लांडुं के तो वधारे सारुं, हं घणा दिवस सुधी चारित्र पाळीश, जेथी मने मोटो लाभ चळी धर्म संबंधी डयम ते। युवाबस्थामांज करवो जीइए, आगममां पण कर्ष्य के

जरा जावं न पीडेई, वाही जाव न वट्टई। जाविंदिआ न हायंति, ताव सेयं समायरे॥

" उपांसुघी जरा पीटा करे निह, ज्यांसुधी कोइ मकारनी व्याघि थाय निह, ज्यांसुधी कोइ मकारनी व्याघि थाय निह, ज्यांसुधी कोइ मकारनी व्याघि थाय निह, ज्यांसुधीमां धर्म आचरनो," द्यावस्थामां प्रमाण मनुष्य टंटियो निर्वळ थवाथी धर्मकरणीमां उद्यम केवी रीते करी शके ?" कर्ं हैं

दंनिम्बालितं धिया तरिलतं पाण्यंविणा कंपितं हरन्यां कुरुवितं वलेन लुलिनं रूपिश्रया प्रापितम्।

प्राप्ताचा चमञ्जूपतेरिहमङ्गधाटचा जरायामियं तृष्णा केवलमेककेव सुन्नटी इत्पत्तने नृत्यति ॥

" यम राजानी कोटी घोटस्य आ इद्धावस्था प्राप्त यहां दांत हाले छे. युद्धि नष्ट त हायपम कंपे छे, नजर क्षीण घायछे, वल जतुं रहे छे अने रूप तथा स्वादण्य आपछे, मात्र तुर्णा एकलीजं सुभटतुं आचरण करती सती हृदयरूपी नगरमां जी रहे छे. "

ग मगुणे ते भावमुनिनी इस्ता जे।इ बने देव सुधी थया अने मधंसा फरवा मछी जन्देवे तापमदेवने क्यूं के 'जैने नुं स्वरूप जी मुं? इवे आपणे तापमनी परीए.' ए प्रमाणे कही तेजी बनमां गया त्यां तेजीए एक कटावारी हद्ध, तीव ति। अने ध्यानमां आरूट धयेलो यमदम्रि नामनो तापम जोयो तेनी परिक्षा फ-हे ते देवो चकला चकलीई रूप धारण करी तेनी दाहीनी अंदर माठो वॉधाने ाठी चक्रको मतुत्पवाणीधी बोल्या के 'हे चाला ! तुं अत्र सुख्यी रहे.हं दिमा-वते जड़ने आवुछं.' त्यारे चकलीए कगु के 'हे माणनाय! हुं नमने नमा दश्य गरण के तमे पुरुषो ज्यां जाओही त्यां लुक्य यह जाओहो. जी तमे पाछा न तो मारी शी गति याय ? हुं अवळा एकळी अहीं केम रही गहुं ? तमारो वियोग े केवी रीने सहन यह शकें ?' ते सांग्ली चकलाए कपुं के 'हे बाला ! तुंशामादे करेहे हैं जलदी आदीश. जी हैं आहें नहि तो मने बाधणनी हीनी, याद-ै गायनी इत्यानुं पाप लागे.' त्यारे चकलीय क्यू के 'हुं सोगनी माननी नधी. ा तमे न आवो तो यसटिश तापसनुं पाप सन्तक उपर धारण फरो तो हुँ तमने र्डिं स्वारे चपलो बोल्यो के तुं एम बोल नहि एनं पाप कीण अंगीकार परे नो मांभळीने उमदति ध्यानधी चलित धयो अने लोधवरा या चल्ला चयरीने कहेवा लाग्या के 'मार्च शुं एटलुं दर्व पाप हो ?' चप्रलीए पर्व के ' हे सुनि ! न्से निट. आपनां घर्षशास जुत्री, रास्य के-

अपुत्रस्य गतिनीस्ति, स्वगं नेव च नेव च। तस्मात् पुत्रमुखं दृष्टा. खगं गच्छंति मानवाः॥

ं हुन विनाना साणसना स्ट्याति यती नगी. अने म्यांणी गो नेनी गति ऐक नेपी माणसी सुत्रहुं मृत्र लेक्डिने स्ट्यांणी लायके. "

में अप्रादित है। तो तमारी शुभ गवि देशी रीते माय है तेथी तमार्ग पाक

मोहं हो. ' ए प्रमाणे कही परीक्षा करीने देवो पोताने स्थाने गया, अने मि

तेमना गया पछी यमदिशे पण पिक्षना मुखनां वचनो सांभकी विचा छान्यों के 'एमणे यद्दी ते बावत खरी छे, तेथी कोइ खीनी साये पाणि पुत्र इत्पन्न करं तो मारी शुभ गित याय. 'ए प्रमाणे विचार करी कोड़क राजा जितजञ्ज समीपे जड एक कन्या मागी. त्यारे राजाए कर्यु के 'मारे सो छे, तेओमांथी जे तमने पसंद करे ते कन्या तमे ग्रहण करो. 'ते सांभजीने कंतःपुरमां आव्यो. त्यां रहेजी सर्वे कन्याओए ज्वाधार्रा, दुर्वळ,मळ्यी मर्की वाळा अने विपर्रात स्पवाळा यमदिश्चेन जोड़ने युगुकार कर्यो (युंकी). ' कोषवण यड़ने ते सर्व कन्याओने कुन्जा करी नांखी. पाछा वळतां तेणे पांगजामां पुलमां रमती एक राजपुत्रीने जोड़, तेने तेणे वीजीकं कतांगुं। केवाने तेणे लांवो हाय कर्यों, तेथी तापसे राजा पासे जड़ने केंगुं के '' मने उन्होंते.' एम कहीने तेने ग्रहण करी. भय पांगेळा राजाए हजार गांमोने काराजीची महित ने पुत्री तेने आपी; तेथी प्रसन्न ययेका ऋषित के काराजी काराजी पेळी मर्व कुन्जा राजपुत्रीओने सारी करी. ए प्रमाणे काराजी राजा पाला पालाने लड़ने ते बनमां आव्यो त्यां एक शुंपटी यनावीने ते

 सिद्ध यथा. पछी देवताथी अधिष्ठित ययेळी परश्च (इहाडी) ने स्टर्ने अनस्य ते ज्यां त्यां फरवा कारयो.

भन्यदा परशुरामनी माता रेणुका हर्स्तानापुरमां पोतानी बेनने मळवा अर्थे गई. वेतानी बेनना पित अनतवीर्यनी साथे संबंध यवाधी तेने गर्भ रहारे. अनुक्रमे लेने विषे प्रमान पित अनतवीर्यनी साथे संबंध यवाधी तेने गर्भ रहारे. अनुक्रमे लेने विषे प्रश्ने पुत्र सहित रेणुकाने यमदिष्ठिए पोताना आश्रममां आणी परश्राने पाताने तित आणी पोतानी पुत्रवर्ती माताने मारी नांखी आ खबर अनंतवीर्यने पदवाधी स्थां आवी यमदिष्ठिना आश्रमने भांगी नांख्यो.तेथी क्रोधित ययेखा परश्रामें श्री अनंतवीर्यनुं स्टक्क छेदी नांख्युं पछी तेनो पुत्र कीर्तिवर्य राज्याधिकारी ययो. पितानुं बेर वाळ्या माटे परश्रामना पिता यमदिष्ठिने मारी नांख्यो. तेथी परश्रामना पिता यमदिष्ठिने मारी नांख्यो. तेथी परश्रामें आई परश्रमा प्रभावधी कीर्तिवीर्यने हणी हर्स्तानापुरनुं राज्य छह छीधुं. ते ते बीद स्वभयी मुचित गर्भ जेणे घारण कर्यो छे एवी फोर्तिवीर्य राजानी वारा की बीताना पितना मरण समये नासी गड.से बनमां नापसोना आमने आवी पर्दी-स्थां आह तेणे तापसोने पोतानुं सर्वस्य (हर्त्वान)कर्तुं द्यायी आई चित्रवाळा तापसोर्य एम रिते भोयरामां राखी.अनुक्रमे तेने स्यां पुत्र पंयो.तेनुं नाम मुभूम नाम पाद्रयं. अमे ते मेहो यवा छाग्यो. परश्रामे सित्रयो उपर क्रोध करीने सात वार नसत्री त करी मने मारे सित्रयोनी दाहोने एकडी करीने एक पाळ भरी मूत्रये।.

पक दिवस फरनो फरतो परशुराम पेला नापमोनी छपढीए आव्यो,न्यारे परशुनी हाथी ज्वाला नीकळ्वा लागी. तेथी परशुरामे तापमोने पूज्युं के 'रागं बोको कोइ किश्व अहीं छे? कारणके मारी परशुगांयी अंगारा वर्षे छे.' त्यारे वापसोए कर्युं 'क्ष्मे क्षित्रयो छीए. परशुरामे तपस्त्रीओ धारीने तेमने छोटी दीधा. ए ममाणे सर्व क्षोने मार्गने ने निष्तंटकपणे हस्तीनाष्ट्रग्तुं राज्य मोगावा लाग्यो. एक दिवसे देगमें कांड निमिनियाने पूल्युं के 'मार्च मृत्यु कानायी यशे?' निमिन्तिके कर्युं के ने रिष्टियी आ क्षत्रियोनी दाडो कीररूप यह जशे जने नेत्रुं मोगन जे करणे ते वे बात्यो.' ने सांमळीने परशुरामे पोताना मारनारने मोळल्या माटे एक नकांडा बंधायो अने त्यां सिंहासन टपर दाडोनो याळ मृत्यो.

भी देनाड्यवासी भेयनाद नामना विद्याघरे निमित्तिवाना करेवाणी पोतानी विशे कर मुभूम घटो एम जाणीने त्यां आबी सुभूमने पोतानी पुत्री अर्थन कर्मा, अने में हैनों मेक्क धर त्यां क्यो. एक दिवस सुभूमें पोतानी माताने पुत्र के दे माता ! विश्व बारबीन से ? ' एका पुत्रना मन्दों सांमजीने नेवमां असु लागी गद्गद्

मोटा श्रीवार्यमहागिरिस्रि वार्यमुहस्तीस्रिने गणितिक्षा (ग्रन्छनुं शितण (ग्रन्छ) में।पीने पाते विशेष वेराग्यधी जिनवरूपनी तुलना करवाने माटे इप्तव कला विवरवा लाग्या. ते विशेषयो कियामां उपमवंत रहे है. स्यारे शार्य- । स्रि गामनी अंदर समवसरे हे त्यारे श्रीशार्यमहागिरि गामनी वहार रहे है, इपनी निश्राप विहार करे है.

एकदा श्रीसहस्तीस्रि विहार करतां पाटलीपुर पपार्या. त्यां आर्यमहानिरि । छ विभाग करीने पांच पांच दिवस सुयो एक एक विभागमां भिक्षार्थ जायले गिरस आहार ग्रहण करे छे. एक वस्तत श्रीभार्यमहानिरि वसुस्ति नामना ना कुटुंबने मितवीप करवाने माटे तेने घेर गया हता अने वर्षदेशना आपना हता. । में श्रीआर्यमहानिरि अजाणतां वसुस्तिने वेर भिक्षार्थ आज्या. नेमने जाड़ आर्यो श्रीसिए उभा यह विनयपूर्वक चंदन कर्यु. एटले आर्यमहानिरि भिक्षा ग्रहण कर्या गणा वली गया. वसुस्ति श्रावके आर्यमहानिरि भिक्षा ग्रहण कर्या गणा वली गया. वसुस्ति श्रावके आर्यमहान महाराजने पृष्युं के 'जेमनो आटले विनय कर्यो ए महामृति कोण छे ?' त्यारे आर्य सहस्तीम्रिए कर्युं भिल्याने वसुस्ति श्रावके बीजे दिवसे आत्वा नगरमां वये उत्तम जाहार परावयो. विलयके बीजे दिवसे आत्वा नगरमां वये उत्तम जाहार परावयो. वहांगिरिए तेने अकल्य जाणीने ग्रहण क्या नगरमां वये उत्तम आर्योने नेमणे भिरिने ओलंभो आप्यो के 'तमे वह विल्य आत्या कर्युं के वसुस्तिने घेर अन्युत्यानादि विनय कर्यो. तेम करवाची तमे सर्वत्र अग्रुज आहार करो टीचाले. हवे आज्यो मारे तमारी साथे एक क्षेत्रमां रहेतुं उचित नथी. 'ए मनाणे करी वर्णिरिए जुदो विहार कर्यो अने गच्छनो आश्रय छोटी दह एकाको नरमंपम स्त्रों गया. ए प्रमाणे वीजाए पण मितवंश करवो निह, एवो आक्यानो द्यदेशले.

रेनेण जुट्नंणेय ये, कन्नों सुद्देहिं वरसिरीए ये।

नैंय हुँदैनंति सुविहिया, निर्देरेतणं जंत्रुनार्मेति ॥ १५३ ॥
अर्थ-' रूपे करीने, ये।वने करीने, गुणवती कत्याओणी, सांमारिक सुगोणी
अप्ट एवी टक्ष्मीथी सुविहिता-सापु पुरुषा-उत्तम नना लोमाता नयो. अर्थो
सम्मान सुनिन्नं निदर्शन के॰ दृष्टांत जाणवुं. '' १५३. नंतृस्वामीन्नं दृष्टांत पूर्वे
दे थे तेथी अर्धी सुन्यु नयी.

उत्तमकृर्लपस्यां, रायकुलवडिंसगावि मुणिंवसहा । यहुजर्णेजईसंघदं, मेहकुमॉन्टव विसेट्ंति ॥ १५४ ॥

मता १५६ - कृषान । कताहि । पर्यामीवदि । निर्दारमण । शेवनामृति । राजा १५५ - मेह्यमारम्य ।

अर्थ-" उत्तम कुळमां उत्तरन यपेला, राजकणमां मुगट समान एता मनि छनिश्रेष्टो अनेक कुळमां उत्तरच ययेला घणा मुनिजनोनो संघई मेयहुमारनी जैंग मकारे सहन करेले. "१५४, अहीं मेघहमारचुं उल्लंग जाणहं, ४८

मेचकुमारचुं द्रष्टांत.

मगधदेशमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करते। हतो. तेनी व नामे राणी इती. तेनी कुक्षिने विषे कोड जीव उत्पन्न थयो. तेना मभावयी तेने मेघनो दोहद ययो. अभयकुगारे अहमभक्तायी केाइ देवने आराधीने नेनी सहा दोहद पूर्ण कर्यी, उत्तम समये पुत्रनो प्रसव यथा. स्तरनने अनुमारे तेतुं नाम मेर पाडयुं. अनुक्रमे तेणे युवावस्था पाप्त करी. श्रेणिक राजाए तेने स्वस्वती कन्या एक छग्ने परणावी. ते स्त्रीओ साथे विषयसुख भोगवतो मेवकुपार वीरमभ्र त्यां समवसरवायी वांदवाने गया. मभुनी देशना सांमळी तेणे माप्त यवायी चारित्र ग्रहण कर्यु. भगवते तेमने शिक्षा ग्रहण फरवा माटे स्यातिर स्रीन पासे मोकल्या. हवे रात्रिए पारुपी भणाच्या पछी संवारा करतां दृद्ध (नाना माटाना) व्यवहारथी मेघमुनिनो संयारो सर्व साधुनी पछी उपाश्रयनी भाव्यो. त्यां रात्रिए जता आवता साधुना चरणना प्रहारयी अने तेमना अवडाता रेथी मेघमुनि वह खिन्न यया. ते विचारवा छाग्या के "अरे! मारे। सुखकारी अ चयां ! मारी केायळ पुष्पशस्या क्यां ! अंगनाना अंगसंगधी उत्पन्न यतं सुल अने आ कटिन भूमिमां आळोटचुं क्यां ! आ साधुओ मथम तो मारा मित आर हता अने हवे ते। तेज साधुओ मने पग विगेरेना संघट्ट करे छे, तेथी जा आजनी मुखे मुखे जाय तो मातःकालमां वीरमभुने पृछी रजाहरण यादि वेप पालो सेर्वि मारे घेर चाल्ये। जइश."ए ममाणे चितवी मेघमुनि मातःकाळेमभु पासे आव्या. म ने येघमुनिना वाल्या पहेलांज कहुं के 'हे मेघ! ते आज रात्रिना चारे पहोर अनुभव्युं छे अने घेर जवानो विचार करेछे। छे आ इकीकत खरी छे ?' मेम फहां के 'ए हकीकत खरी छे,' त्यारे भगवाने कहां के "हे मेघमुनि! आ दुःस व छे। पण जे दुःख तें आ भवधी त्रीजे भवे अनुभवे छे ते सांभळ-पूर्वे वैतार्य तनी भूमिमां खतवणीं, घणो उंचो अने एक हजार हाधणीना टोळानो अधिर्ण दांतवाळो सुमेरुपम नामनो हाथी हतो. एक दिवस वनमां दावानळ लाग्या, ते भय पामी द्यातुर यह बनमां भटकतां थाडा पाणिवाळा ने घणा कीचडबाळा सरी पेठो. त्यां हं की चदनी अंदर खुती गयो. हं जळ सुधी पहें। च्यो निष्ठ एट हे तने

यं निर, अने बहार पण नीकळी शक्या नही. पछी घणा वैरी टायी ओए आबीने तने इंडिंग महार कर्या. सात दिवस सुधी पीडा अनुभवी सा वर्षनुं भायुष्य करी काल करीने तुं विध्यभूषिमां चार दांतवाळा, रक्तवर्णवाळाने सानसे हायणीनो । मेरूमम नामे हाथी चया. त्यां पण अग्नि छागेछा जाेड जातिस्मरथी तें तारा पूर्वमव ग. पडो दावानळथी भय पामीने ते एक योजनममाण भृमिनी अंदरयी तुग फाष्ट हि सर्व दूर फंकी दोधुं, अने नवा उगेला तृण यहो अंग्ररो विगेरेने शृंदवढे परिवारनी द्यी मृल्यांथी उखेडी नांखवा लाग्ये। एक वखत फरीथी दावानक मगटया. ने ति दंपरिवार सहित पेछा एक योजन ममाणवाळा मंडळमां आवी गया. यीजां पग ां बनचर माणीओ त्यां आव्यां. ते पुत्तते ते शरीर खणवाने माटे एक पग उंना र्त, तेवामां एक ससळो कोइ जग्याए तेने स्थान नहि मळवाथी तारा पग नीचेनी गए भावीने उभी रहा. पग नीचे मृकतां तें ससळाने जीया; एटळे तेना उपरनी ने डीवे तारुं मन आई धवायी तें तारी पग उंचा ने उंचा राख्यो. ए प्रमाणे अदी ष ग्रुपो एक पग उंचा राखीने रुयो. दावानळ शांन यतां सर्व माणीशो पावपानाने ने गया. एटछे पग नीचे मृकतां शरीर घणुं स्पृळ होवायी परेनतुं शिलर हुटी पढे दं पदी गया, अने घणी वेदना भोगवी, सा वर्षमुं आयुष्य पृरं करी द्याना परि-मणी अभ कर्म बांधी श्रेणिक राजानो पुत्र यया. हवे तुं विचार कर के समक्रितनो माभ मलयो नहाता ते वखतमां तिर्यचना भवमां ये। इं फए सहन फरवायों ने मनु-🕻 अायुष्य वांध्युं, ते। चारित्र प्रदण कर्या पछी कष्ट सहन करवायी नो मे। इं कळ मळेते: मा भा जीवे घणी बार नरफादिनां घणां दुःखो मोगच्यां छे. तो तुं भा सातुमोना मिष्ट्यी उत्पन्न ययेटा दुः लयी जा माटे दुमाय हे ? सामुना चरणनी रज पण के तथी आ चारित्र तजा देवानी तारी मनारय योग्य नथी. प्रविमां भगेष फरवी. ती, विषद्भं भक्षण करतुं सारुं, पण प्रद्रण करेका बतना भंग करवा ए मार्न नहिः" गरि भगवंतनां कहेळां वचनायी मेघमुनिने जातिस्मरणकान इत्यन्न पृष्टुं, पृष्टछे सपहूं शि बहेबा ममाणे जीयुं. पछी भगवानने बांदोने मेयग्रुनी बोल्या के "हे भगवन! विषयां पड़तां तमे मारे। बचाव करोछि, जानयी मंदिने वे चसु शिवाय मीना व कंगनी मारे शुश्रुवा करवी नहि एवी हुं अभिग्रह करूई, आ मुगाणेनी अभिग्रह ि स्रिंग पानित्र पाली, गुणरत्न संवरसरादि करी, निर्वळ प्यानवढे पेशानुं भाय-के करी, ममाधियथी मृत्यु पाभीने वितय नामना अनुगर विमानने विषे देव-बेन्स्य बंधा. स्यवी महाविद्दहर्सप्रमां मनुष्य घर्ने मेछि ज्हाँ.

अवन्यत्रेत्रंबाहे. दुंगसं तुच्छ मरीरंपीमाय। सारण बारंण चोषंण, गृहजणवार्यसया ध गेंगे।" रहे

निर्मा निर्मा प्रस्था, पुरुष्णानाय प्रमा के मन्त्राणं भार भरे हें का निर्मा निर्मा के मन्त्राणं भार भरे हें का निर्मा निर्मा के मन्त्राणं भार भरे हें का निर्मा के मन्त्राणं भार भरे हें का निर्मा के मन्त्राणं के का निर्मा का निर्मा के का निर्मा का निर्म का निर्मा का निर्म का निर्

--- र ने पन्ने, मन्तेमा मिल्पास्या

शिनन तेनाथी तेने निरंतर भय रहा करे छे। अने बहु मुनिना मध्यमां ते। अकार्य हुं मन पण करवाने शक्तिवान धवातुं नथी ते। अकार्य करे ते। शेनोज ? माटे अब्धी मुनिओने एकाकी विहार युक्त नथी. " १५८.

उचार पासवण वंत पित्त मुच्छाइ मोहिओ इको।

सहव भायण विह्थ्था, निर्हिखवह कुण्ह उड़ाहं ॥ १५ए॥ १६- "उच्चार ते प्रराप. पासवण ते प्रथवण (लघुनीति), यांत ते वमन अने रूर्ण विगेरे—आदिशब्दधी वाय्विकार विश्विकादिनुं ग्रहण फरवुं. एवा व्या-कृष्णी व्याकृष्ठ थयेलो एकलो साधु पाणी सहित जे भाजन तेनाणी व्याद- हो होतो सनो जो ते भाजन हाथमांथी मूकी हे तो संपम विराधना—आसम् ना याय. अने जो ते भाजन हाथमां रहेवा दृदने उच्चार (वही नीति) विगेरे । शासननी एड्राह (लघुना) थाय.तेथी मृतिने एफला रहेवुं कोई रीते पोग्य ॥ १५९

एगदिवसेण बहुआ, सुहाय छासुहाय जीवेपरिणामा। इको छासुहपरिण्छो, चइउझ छारुंवणं खर्कुं ॥ १६० ॥ अर्थ-"एक दिवसमां पण जीवना परिणाम श्रम अने अश्रम एवा पर मकारना ते तेथी एकलो मुनि अश्रम परिणामवालो पयो मतो पांस्क आलंबन-भारणने चित्रिये नभी देले अथवा अनेक मकारना दोप छगाउँछे." १६०

सव्यजिलपिडकुरं, ऋलवंध्या घेरकर्पंजेओअ!

रैको अँ सुहाबतोवि हाएँड तर्वसंजमं छाईरा ॥ १६१ ॥

प्रथ- प्रकारतेषणे विचरतं सर्व विनेत्राण करेटं है. वळी तेषी अनवस्था

पर्यादानो भेग थाय है अने स्थियरोने। पन्य है आनार नेनो भेद पायहे,तेथी
हैं। संदें अयुक्त हो. वळी एक्लो सुभ आयुक्त के नाह आचारपुक्त होय नेपद । कृष्यों तथ अने संवपने हणी नाहे हैं. अर्थात् नेमा होप लगाहे हैं. १६१

वेसं जुझकुमारिं, पडश्यवद्भं च बालविद्वं घे।

पानंडरोह मसई नवतर्राणं घरनजां ने॥ १६२ ॥

नावा १५९-किल्लाम् । मामा १६०-वर्गानिकामः । वहरा ।

^{*.}फ. (६६-प्रवाडसोबि । प्रदारमाबि । परिश्व -निविद्य । महान-अविसान

सविडकुञ्जमस्वां, दिट्टां मोहेई जो मणं इध्यी। ष्ट्रायहियंचितंता, दुरयरेणं परिहरंति॥ १६३॥

अर्थ-वेदया, रुद्ध कुमारिका एटले मोटी उम्मरवाली कुमारिका, प्रदेश गरे पतिवाळी स्त्री,वाळ विधवा एटछे जेने। पति वाल्यावस्थामांज मरण वामेहो है अति कामविद्यल स्त्री,पाखंडत्रते करीने जेणे विषयना रोध करेलो हे एवा सीन सणी ममुख,असती ते व्यभिचारिणी स्त्री,नवयीवना, द्वाद्धः भत्तरिनी भाषी शुभ अ सायने दुर करी दे एवा उद्भट रूपवाळी अथवा विकार सहित मनेहर हुन अने देखवा मात्रधीज जे मनने मोहित करे एवी स्त्री-आटला प्रकारनी आत्महितने चितवनार पुरुष् अति दूरथीज त्यजी दे छे." १६२. १६३.

सम्मदिद्वीवि कयागमोवि, छाइविसयराँगसुहवसछो।

जवसंकडंमि पविसङ, इथ्यं तुह सच्चइनायं ॥ १६४॥ अर्थ-"सम्यग् दृष्टि छतां अने सिद्धांतना जाण छतां अतिहाय विषयता जे मुख तेना परवशपणायी भवसंकटने विषे मवेश करेहे, अर्थात वह भा करेछे. ते संवंघमां हे जिप्य ! तारे सत्यकी चं उदाहरण जाण चं. "१६४. अशी विद्याधरने। संबंध जाणवा. ४९

सत्यकी विद्याधरनी कथा.

विशाल लक्ष्मीवाली विशाला नगनीमा चेटक नामे राजा राज्य करते। तेने गुज्येष्टा अने चिछणा नामे वे पुत्रीओ हती. ते वंनेने अरस्परस घर्गात हतो. अभयकुमारनी सलाहथी ते वन्ने कन्याओए श्रेणिक राजानी साये पी करवाना अभिग्रह कर्यो हतो.पत्री अभयकुमारे एक सुरग खोदावी,अने ते स श्रेणिक राजाए विशाला नगरीए आवी वन्ने कन्याओने लीघी. सुरंगना मुख अ।वतां चिछणाण विचार करों के 'सुडपेष्टा रूपमां मारायी अति श्रेष्ट है,तेथी राजा नेने वहु मान दर पट्टराणी करका.' ए ममाणे विचारी चिह्नणाए हुन्ये। के 'हे भगिनों दें पाछी जड़ने मारो रही गयेलो घरेणांना डावलो जहें ल ण् ममाणे यही गुज्येष्टाने पाछी मोकछी. पछी चिछ्रणाण् श्रेणिक राजाने क स्वापित ! अर्दीयी जलदी चालो.जो कोड जाणजे ता बहु विपरीत यदो. गुप्रा इताबीने तेश्रो सुरंगमांथी यहार नीकळी गया त्यार पछी आवेळी सुर्वेष्टाप के "भागथी पण बवारे मिय एवी बारी बेन चिछ्णाए मारा उपर श्रातं क

टे बेंड्स रहाईमां रघीपची रहेल इट्डवर्गथी मुद्दी, अने सर्पनी फणा जेना निप्ने रे पण दिवार छे." ए ममाणे वैसान्य थवाथी गुज्येष्ठाए पाणिप्रहण न करतां विकास साध्वी पासे जड़ने चारित्र प्रहण कर्यु.

मह इस आदि उने स रकारनां तप फरतां ते एक दिवस आतापनां प्रदेश रे रहेशी हो. एवे समये पेदाह नाम्ना दिशाधरे स्यांधी जतां तेने जाह. एटके दमां दिशारना हास्यों के 'आ सती भ्यानमां स्थित थड़ छे अने ने महा रूपवती हैंथी जा हैं आ सांध्वीनी वृक्षिनी कंदर पुत्रने उत्पन्न परुं तो ते पुत्र मारी कि पात्र थाय.' ए ममाणे दिशार परीने विद्याना घटधी अंधकार विदुर्वी ते ने एवी रीसे अमरह रूप करी तेने भोगवीने तेनी यीनिमां वीर्य मृक्यु. पंछा इक्षिने दिये दरदस यहेलों तेने भोगवीने तेनी यीनिमां वीर्य मृक्यु. पंछा इक्षिने दिये दरदस यहेलों जीव अनुस्रमें वधवा हास्यों, तेथी छुच्छेश साध्वीने संदेह हत्यन्न थयों. तेणे ते संवंधी प्रानीने पूछ्यं एटछे झानीए तेना संदेह ने कहं के 'एवा तारो दोप नथीं. तुं तो मता हो. अनुस्रमें ने साध्वीने पुत्र तेष्ठें नाम सत्ययी पाहवामां आह्युं. ने साध्वीना उपाधयमां मोटो ययों. त्यां ना हत्यथी आगमोर्से अदण करना तेने सर्व आगमों मुख्याट यह गयां.

े कि दशह देशों में श्रेष

।पाँग्नी ्

.

(कपाछ) यतारयुं. रोहिजी विषा सरावर्मार्गयी अंगमां पेठी, अने हरामी हिला स्टारमं कि स्थान एतपन्न थयुं. पछी तेणे प्रथम पोताना पिता पेटालनेज सार्पाता व्रतने कि करनार जाणी विषायन्थी मार्यो. यापर दीएक निषायर सह्योंने विषाय दुर्जय जाणीने मायाथी त्रिपुरासुरतुं स्वरूप धारण कर्राने नासी गयो, अने स्वतन्ति स्ट्रमां कर्ने पाताद्यय दक्षमां पेठो. स्रोक्षनी अंदर प्रवी सिद्धि थर्द के आणे विषाय स्वतने पाताद्यय दक्षमां पेठो. स्रोक्षनी अंदर प्रवी सिद्धि थर्द के आणे विषाय

धरने पातालमां पेसाडी दीघो, तेथी आ सत्यकी अग्यारमो रुद्र पेदा थयोडे. पछी सत्यकी विद्याघरे भगवाननी पासे समिकत अंगीकार कर्यु, अने देखाने अत्यंत भक्त थयो. त्रणे संध्याप ते भगवाननी आगळ नृत्य करेहे. परंतु अत्यंत कि मुखमां छोलुप होवाथी राजानी, मधारनी वे कोड ळापारी विगेरेनी हपर्वत होते हैं जिल्ला के तरहल ने के नान ना खुए के तरत्ज तेने गाड आर्रिंगन आर्पाने ते भोगये छे. तेने वारवाने मारे की मान शन जन्म मान थतुं नथी. एक दिवस महापुरी एक विनीमां चंडमधीत राजाना अंतःपुरमं की फरीने तेणे पद्मावती शिवाय बीजी तमाम राणीओने भोगवी. तेथी वंडम्बीत राजी कि कि महाम ने फोधित यह कहेवा छाग्यो के 'जे कोड आ दृष्ट्यर्थी सःयर्थाने मारी नांस्को तेने कि भन्नांकित अर्थान्य ? ---मनवांछित आपीझ.' आ ममाणे पटह बगडावीने तेणे लोकोने जणाव्युं. ते बहते हैं हैं नगरमां रहेकारी कर्णाव्युं. ते बहते हैं कि नगरमां रहेनारी एक उमा नामनी वेड्याए बीडु झडायु. पड़ी एक दिवसे उमा बोतानी घरना गोख्यां ने कि घरना गोखमां देडी इती ते बखते तेणे सत्दर्धाने विमानमां देसीने आकाशमां की जी कार्य के के कि जोड़ क्युं के 'हे इत्रिशिमणि! हे सुरूपण्डमां ह्याट रूप! हे तेज्यी स्पने बीव ह नार! तुं मितिदिवस ग्रुग्धा (विषयरसनी अजाण) सीओने चाहे हैं। परंतु अगा। जेवी कामक कार्या करार की जेवी कामकळामां कुशळ स्त्री तरफ दृष्टि पण करतो नथी. माटे अजि तो मार्ह असि कतार्थ कर करे कृतार्थ कर, अने एक वस्तत तुं अमारुं कामचातुर्य जा.' इत्यादि वचनीयी रिक थयेलो अने कटाक्षविक्षेषथी जेन्नं मन आकर्षायु छे एवो सत्यकी विमानमांथी जती ते नायिकाना प्रकार करें ते नायिकाना घरमां गयो.ते वेद्याए पण अनेक पकारना कामक्रीडाना विनोहवी ते मन आधीन करी नोक् के कि मन आधीन करी लोधुं. तथी ते तेने लोडीने अन्य कोइ स्थाने जतो नथी। हमेरी त्यांज आवेले. नेपन्त त्यांज आवेछे. तेमनी वच परस्पर घणीज मीति थइ गइ छे. आ ममाणे अत्यंत विश्वास पमाडीने तेणे एकवार सत्यकीने पूछयुं के 'हे स्वामिन्! तमे स्वेच्छाए पाडीने भोगवों छो एक तमने कर्ना भोगवों छो पण तमने मारवाने कोई शक्तिमान थतुं नथी ते कोना वल्यी? ता सत्यकीए करें ते के के

सत्यकीए कर्ं के 'हे संदर लोचनवाली स्त्री! मारी पासे विद्यार्ज वल है, के मानवर्धी मने कोड मारतं नधी. 'फरीथी चेड्याए पूछ्युं के 'तमे ते विद्याने की मानवर्धी मने कोड मारतं नधी. 'फरीथी चेड्याए पूछ्युं के 'तमे ते विद्याने की विद्याने की विद्याने की विद्याने की विद्याने दर राखें छं. 'ते सांमळीने ते जमा वेड्याए जर्र गुली

मं के 'सत्यकीने मारवानो एकम उपाय छे. परंतु जो तमे मारो बचाव करो तो नि सुन्नोयी मारो.' ए ममाणे मस्तावना करीने तेणे सर्व इकीकत कही बतावी. पछी विश्वामा उदर उपर कमल्पन्नो रखावी तेणे ते कमल्पन्नोने छेदी नांख्या, परन्तु क्याना उदर उपर कमल्पन्नो रखावी तेणे ते कमल्पन्नोने छेदी नांख्या, परन्तु क्याना अरीर उपर जरा पण खड्ग लाग्युं निहः एम करी 'आवी रिते तारो बचाव कर्ये' पन्नो विश्वास उत्पन्न करावीने तेने घेर माकली.पछी रान्निए पोजाना नेवकाने क्रिने मारी नाखवानं समनावी तेने घेर माकल्या. ते सेवकाने वेदयाए गुन रीते क्याना सत्यकी आव्यो अने उपा साथे विषयसेन करवा लाग्यो. एटले गुप्त रिका राजसेवकाए आवीने वंनेनां मस्तका छेदी नांख्यां.

सत्यकी विद्याघरना नंदीश्वर नामना गणे ते इकीकत सांमजी, एटले वे काचित कर्न सां आव्यों अने आकाशमां शिला विकुर्वीने कहेवा लाग्यों के 'तमें मारा स्थाएकने मार्या छे, तेथी जेवी स्थितिमां तेने मार्या छे तेवीज स्थितिमां तेनी मृति नाक्षीने जो तमें सर्व नगरजने। पूजशा तो तमने सपलाने लोहीश, निह तो आ अविश्व पूर्ण करी नाखीश.' एवं सांभिलीने मयभीत पर्येष्टा रामा आदि सर्व में कोष तेथीज स्थितिवाली युग्मरूप मृति करावीने एक मकाननी अंदर स्थापी, अने प्रकार के पूना करवा लाग्या. सत्यकी काले करीने नरकभूमिमां गयो. पत्नी केटलेक काले का जाना उत्यादक मृतिने जीडने ने काई। नांवी तेनी जग्याप लिंगनी स्थापना की. माटे विषयमां अनुराग न करवो एवो आ कथाने। उपदेश हो.

सुत्वेस्सियाण पूर्या, पणाम सकार विणयकडेजपरो । वंद्विप कम्ममसुद्दं, सिद्धिलई दसारनेयांवा ॥ १६५ ॥

अर्थ-"शतपस्ती-भळा चारित्री-महाश्वनित्रोंनी पूत्रा ने बसादि भारई, मनाम बस्तकत्रदे बंदन करखं, सत्कार ते तेमना गुणतुं वर्णन करखं, अने विनय से लेको वर्षे प्रष्टे उमा यखं-इत्यादि कार्यमां तत्पर एवी पुरुष, बांचेलं-भान्य मदेशनी विके श्रिष्ट करेलं एखं पण अध्भ--मध्यम जे कर्म नेने श्विपिळ करे हैं. कोनी जेम ? श्वारंत्रता जे देशारना स्वामी कृष्ण तेनी जेम. " १६५ अर्ही कृष्णने। संक्षेत्रपी विक भागवा. ५०

भीकुरण मर्वेष.

भावा १६६-पुत्रा । इसारनेवक्ता । दशासीनां इत ।

वांदवाने माटे श्रीकृष्ण परिवार सहित आव्या तेने मनमां एवी इच्छा थइ के आव था अहार हजार साधुओयांना दरेकने द्वादशावर्त वंदनथी वांदु.' ए प्रमाणे नि पाताना भक्त वीरा साळवीनी साथे सर्व साधुओने उपर प्रमाणे वंदन करवायी आ थयेका कृष्ण, भगवान पासे आवी वेल्या के 'हे भगवन्! आज हुं अहार र साघुओंने वांदवाथी अति श्रमित थयो छुं. में आज सुधीमां त्रणसे नेसाठ गुढ़ी तेमां कोइ वलत हुं आटछो श्रमित थयो नहोता.' ते वलते भगवाने कहुं के महानुभाव ! जेम वंदन करवाथी तुं घणो अमित थयो छे तेम ते छाभ पण घणो च्यो छे. कारणके वंदनदानथी ते शायक समिकत मेळच्युं छे अने तीर्थकरन चपार्जन कर्युंछे. वळी संग्राम् करीने सातमा नरकभूमिने योग्य जे कर्म बांध्युं हा स्पावीने त्रीजी नरकभूमि योग्य रहेवा दीधुं छे. एटले। लाभ तने थयोहे.'ते भीने कुछ्णे कहुं के 'फरीथी अढार हजार मुनिने वांदीने त्रीजी नरकभूमि वेग पण सपावी दं.' त्यारे भगवाने कहुं के 'हे कृष्ण ! हवे तवो भाव आवे नि इवे तमे छोभमां मवेश करेलो छे.' कुष्णे फरीथी पूछयुं के 'मने ज्यारे आठा छाभ थयो छे ?' त्यारे मारा अनुयायी वीरा साळवीने केटलो लाभ थयं भगवाने कहुं के 'एने तो मात्र कायक्रेश थयोछे, कारणके तेने तो मात्र तारी रित्तियीन वंदन कर्यु छे, तेथी भाव विना कांइ फल मलतुं नथी.' आ प्रमाणे भोप साधुओनी पूजाभक्ति विगेरे भावपूर्वक करवी.

य्यतिगमण वंदण नमंसणेण, पडिपुच्छणेण साहूणं। चिरसंचियंपि कम्मं, खणेण विरलत्तण मुवेइ॥ १६६।

अर्थ-"अभिगमन ते सन्गुख जत्रुं, वंदन ते वंदना करवी. नमंसण के॰ न्यस्कार् कर्वो,अने पडिगुन्छण ते दारीरना निरावाधपणा विगेरेनी पृच्छा कर्वात्माप एटरा बानां वरवायी चिरमंचित के० घणा काळते बहुभवते उपार्नन करेले क्रियं धनुदाप्रमां-योटा काळमां विरुष्ठपणाने पामेछे अर्थात् पापकर्मनो क्षय याय्ये ।

केंट सुमीता मुह्मींट् सर्जणा, गुम्जणस्मिव सुसीसा। विंडतं जींगि मैकं, जैह मी सी चंगमहेंसेस ॥ १६७॥

अर्थ-''कोश्स सुबील के विमल स्वमाववाला अने सुवमी के अतिश्रय पर्में स्रोते माल्य के व्यवनी उपर प्रश्नीमायपाळा एवा सृशिष्यो, गृहजननी-पोताना । सारा १३३ सुरस्मा

दाने विस्तीर्ण करे छे, अर्थात आस्तिक्य छक्षणवाळी अद्धाने दृढ करे छे. को नी-बुद्दस्द्र आधार्यना शिष्यनी जेम. चंडस्द्र आचार्यनी अद्धा तेना शिष्ये दृढ नेम." १६७. अहीं चंडस्द्र आचार्य ने तेना शिष्यनो मंत्रंघ जाणवो. ५१

चंडमद्राचाय फया.

महापूर्ग उज्जियनीमां अन्यदा चंडम्झाचार्य समवसर्या, ते अन्यंत ईपीछ अने दिना, तथी ते पोतानुं आसन शिष्योथी दूर राखता दता. एक दिवस एक नवो हो बिणमपुत्र पोताना मित्रोधी परिवृत यडने त्यां आव्यो अने तेणे सर्व सापुर । गोपा, पछी तेना बाळिभित्रोए हांसी करी के 'हे स्वामिन ! आने नमे शिष्य करों.' बनियोप क्युं के 'हे महानुभाव ! जो तेने दीसा ग्रहण करवानो मनोरय होय का दर बेठेला अमारा गुननी पासे जाओ.' तेथी ते वालिविशे विणक्षपुत्र महित शासे आव्या त्यां पण गुरुने बांदीने तेओ हास्वधी चाल्या के भहारात ! आने म गापी.' ते सांभळीने आचार्य मीन रणा. त्यारे वाळकीए फरीयी फर्छ के 'हे विन्! भा नवा परणेला अमारा मित्रने आप शिष्य करो.' छतां पण गुरु तो मान र न्यारे तेओए त्रीतीवार पण तेज ममाणेक्ष्यं, एटळे चंडरुद्राचार्यने क्रोय चड्यो है रुष्टात्कारे ते नवा परणेला वालकने पकडी, में पगनी वच्चे राखों वेना केएनो क्री नांख्यो.ते जोइने बीना सर्वे वालको त्यांथी नासी गया ने क्षे विचार परवा मा के 'भरे ! आ शुं ययुं !' ए ममाणे विल्ला पढी तेओ जाया पण हमा नहा क्षणी नवदीसिन जिप्ये गुरुने फखुं के हि भगान ! इवे आपणे अहीं यो जन्य ति बात्या नइष. कारणके मारां मारापिता तथा श्वमुख्यस विगेरे जी त्रा यान वहें को तेथों अहीं आयी तमने मोटा उपद्रव फरड़ी, त्यारे गुरुए कर्ं फे 'हूं रा-अवाने अक्षक्त छुं.' त्यारे ते नवदीक्षित शिष्य गुरुने पोतानी सांच उपर बेगारी भाषी पान्यो. अधारी रात्रिए चालतो तेना पत देवी नाची भूमियर पटनायी क्रियाप कोपिन यह तेना मस्तक उपर इंडनो महार करवा साग्या-तेथी वेना माथा-्रिको क्षिर नीकळ्युं अने घणी वेदना यदा कागीः पण नेना गनमा छैन मान पर हीय उत्तम थयो नहि, ते तो तेमां धोतानील मांक माने हे अने विचार परे हे के में गार्गने पिकार है। कारण के आ गुरु मारे छींचे कह भोग है है, मधम नौ गुरू-भाग भाषार छ। कारण क आ एए नार्मा नेने में दुन्हें गापिर समाना, भाषणी है केवा कीते मुक्त यहन ! जा प्रमाणे एम भावनाने भावती एन क्षा प्रतिकर्भना सप करिने में क्षेत्रह्मान पाम्पा. पणी ना मर्पय मकान प्रशासी ते सारी रीते सरळतायी चाळवा ळाग्या. एटळे गुरुए पूछ्युं के 'हते हुं कें रिते चाळेछे ! संसारमां दंडमहार एज साररूप जणाय छे दंडमहारने लोगे कें सरळतायी चाळे छे. 'त्यारे शिष्ये कहुं के 'हुं सरळ गतिए चाछुं छुं ते मिसाद छे.' एटळे गुरुए पूछ्युं के 'तने कांइ ज्ञान थयुं छे ? 'त्यारे किये 'हा, स्वामिन ! मने केवळज्ञान थयुछे. ' एवुं शिष्युनं वाक्य सांभळी गुम्ते पत्राचाप थयो के 'में अति विरुद्ध कर्म कर्युं. केवळीनी आशातना करनार ए पत्राचाप थयो के 'में अति विरुद्ध कर्म कर्युं. केवळीनी आशातना करनार ए पत्राचे ए प्रमाणे पत्राचाप करतां गुरु, शिष्यना स्कंघ उपरयो उत्ती प्रमाणे पत्राचा पत्राचा पत्राचा पत्राचा प्रमाणे वांवार प्रमाणे पत्राचा पत्राचा पत्राच स्वमावता विश्वद्ध ध्यानथी तेमने पण केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. के केवळीपणे छांवा पत्रत सुधी विहार करीने मोक्षे गया. आ प्रमाणे मुणि केवळीपणे छांवा पत्रत सुधी विहार करीने मोक्षे गया. आ प्रमाणे मुणि करतां प्रमाणे स्वीत स्वीत सुधी विहार करीने मोक्षे गया. आ प्रमाणे मुणि

ध्यगारजीववहंगो, कौइ कुँगुरू सुसीसप्रैरवारो ।

मुमिणे जड़ाहें दिछी, कोलो गयकलहपरिकिझो॥ १६ भरे-''भंगास (कोयला) रूप जीवने। वध करनारो (अजीवमां जोत संबाते स्प कॅंट इट्टूट (हुनामनायक ग्रम) सुशिष्योथी परवरेलो तेने स्वममां मुनियीए इट्टू इंट्यूट (हुनामनायक ग्रम) सुशिष्योथी परवरेलो तेने स्वममां मुनियीए इट्टू इंट्यूट (हुनामनायक कोट केट शुकर छे, एवा स्वममे दीटें। '' १६८.

मं उपानत्रसमुदे, सयंवरमुवागएहिं सएहिं।

अंग्रें। यम्प्रमंतिओं, दिली पोराणसीसिंहं ॥ १६॥॥ अः - ते कुली एव एवा नवसग्रमां (पिन्नमण कार्या) भाषी । १८॥॥ वर्षा पुरा पुरा प्रा (पिन्नमण कार्या) भाषी । १००० दिस् । प्रा वर्षेत्र त्रेत्रीण मुकारगो). ११ १६९, पत्री वित्रेण स्वान्य । अर्थे

धगानपरंकाचार्य कथा.

भार प्रश्चिति । साथ प्रति हता तैयना विश्वीत गावित हत्या। वल इति इति १ ४१६१ प्रश्चित नाम के विशेष मानामाण्या तैत्रीत ग्रुपी विशेष

र्न कुर्य त्यारे शरए विचारीने कहुं के 'हे शिष्या ! आजे कोड अभव्य गुरू में जिप्योधी परिदृत यह अधीं छादको, ए प्रयाणे तमार्क स्वष्म फिल्त यहा, ' मर्भा तो रहटेव नामे आचार्य पांचसे हित्योधी परिष्टत यदेला त्यां आच्या. वित्र साधुकोष तेमन्तुं व्यातिथ्य, वर्ष्ट, पटो वीजे दिवसे अभव्य गुरनी परीक्षा माने माटे माष्ट्र यरवा जवाना (दिशाच परवाना) स्थानके (रस्तामां) विश्वय-मिन्य पोताना कि त्यो पासे ते स्ट्रेंब सृति न जाणे प्वी गीते कायसा पय-गाराष्ट्रिय से अभव्य गुरुना शिष्यो लघुइंफा करवाने माटे बट्या तो हेमने परे 💌 द्राया,तेथी शब्द यतां तेथी 'आ फोयला छे'एचुं नहि माणवायी पद्माचाप िसाग्या के ' अरे ! अधकारमां अमे अजाणतां कोई जीवने चाँपी मांग्या ' ए ेणे वही हुनः पुनः विषया दुरकृत देवा लाग्याः अने पछी संघारामां फड़ने छड · प्रामां रहदेवाचार्य पोते रिष्ठुशंका करवाने स्टया तेना चरणयी पण कोयला पा. पटछे तेनो इन्द सांभद्धी वधारे वधारे चीपना लाग्ण अने मुखेगी मोल्पा का अहतना जीको दवायाथी पोकार करे हे ' एवं वचन विजयसेन मूरिए सीभ-, तेथी तेणे मात:काळे रुद्रदेवना जिप्योने वर्ष के 'आ तमारा ग्रुर अभूष्य छे, ्रिमारे हेने छोडी देवा काडए.' ते सांभकीने तेओए रहदेवने गुर्छनी बहार ीं, पछी ते पांचसे विषयो निरिवचार संयम पाळी मांने समापियी मृत्य पामीने ने उत्पन्न थया.

स्यांथी स्थानि तेशी वसंतपुर नगरमां दिलीप राजाने घेर पांचसे पुत्रो थया.

क्रमे तेशो युवावस्था पाम्या. एक नखन ने पांचसे राजपुत्रो गजपुर नगरमां

क्रमे तेशो युवावस्था पाम्या. एक नखन ने पांचसे राजपुत्रो गजपुर नगरमां

क्रिक्त राजानी पुत्रीना स्वयंवरमां गया हता. ते बराते अंगारमर्टकाचार्पनी

देवनो) जीव संसारमां पिन्न्रमण परतां उंटपणे उत्यक्ष थयो हता. ते पण त्यां

को रतो. भारना आरोपण घराते अति तीत्र शब्द फरना ने उंट अत्यंव मारयी

को वर्षनो होतायो मोटा वरादा पाटे हो. त्राणे पूर्व भवमां शुं अशुन कर्ष कर्यु

को भगणे वारंबार चितवन परतां ते पांचसे राजपुत्रीने जाविष्यरण अतः

का वर्ष, तेथी तेओए पानाना पूर्व भवनुं स्वक्ष्य जीत्रं, जेयो नेकां बोल्या के

के का अमारी पूर्व भवनी अभव्य गुरु उंटपणे उत्यक्ष पर्याहे. पर्वती गविष्यक्ष

के का अमारी पूर्व भवनी अभव्य गुरु उंटपणे उत्यक्ष पर्याहे. पर्वती गविष्यक्ष

के का अमारी पूर्व भवनी अभव्य गुरु उंटपणे अन्यक्ष पर्याहे. पर्वती गविष्यक्ष

को ने भाषा अवस्थाने माम ध्येणो हो, अने हन्न ते अन्या प्रत्यक्ष करहे.

व्यों ने पांचमें राष्ट्रको विचारका छात्या के 'आ गंतार अनित्य छे.किराकना

फळ जेवा अने चिरपरिचित एवा भागथी सर्धे. हंस्तीना कर्ण जेवी चंबळ जा एश्मीन धिकार छे! 'आ प्रमाणे वैराज्यपरायण थइ तेओए चारित्र प्रस्थ प्रांते सर्वे सद्गतिना भाजन थया.

आ मेमाणे छिषिष्यो अन्य भवमां पण उपकारी थायछे.पवा आ स्थाने उ

संसारवंचणा निवि गणंति, संसारस्क्षरा जीवा । सुमिणगएणवि केई बुझ्झंति पुष्फचूलावा ॥ १७०॥

अर्थ-" संसारने विषे आसक्त शुकर-भुड जेवा जीवा संसारनी वंबनां नथी (विषयासक्त जीवा विषयनेज सारभूत गणे छे); अने केटलाक (जीवा) स्वप्न पथ्ये देखवा मात्रथी पण पुष्पचूलानी जेम प्रतिबेध पामे हें जेम पुष्पचूला नामे राजी स्वप्नमां नरकादि स्वरूपने जोइने प्रतिवेध पामी, . केटलाक जीवा होय छे. ५३

पुष्पचूलानी क्यां.

 करीने देवपणे उत्पन्न धइ.पुष्ण्वेतु राजा ५ण अनुस्रमे परलोकमां गरे। प्रष्टे पुरु हुमार राजा थयो.तेणे पोतानी परणेटी येन पुष्पच्टाने पहराणी करी अने सामे विषयमुक्त भोगवता सते। घणा पाळ व्यर्गत फर्यो.

रह समये हेमनी मातानो जीव जे देव यथा हे तेण अवधिकानयी जायुं, एटछे क्षे भवना पुत्रपृत्री उपर मीति उत्पन्न घवायी ते मनमां विचार फरवा लाग्या के गारा पूर्व भवना पुत्र अने अत्री आवा प्रकारते पारफर्म करी नरकमा जरो, वेशी मने मितवोध प्रमाई. एमं विचारी तेणे पातानी पुत्री पुष्पचृताने रात्रिए स्वपनी निरक्तां दुःखो देखाडयां.ते जाउने ते भगभीत घर गर. सवारमां तेणे रामानी क स्वप्ननी रक्षीकत कही। राजाए पण नस्यनु स्वरूप पूछवाने माटे अन्यदर्शनी भिभी विगेरेने यासाव्या अने नरवनुं स्वरूप पूछगुं त्यारे गेओए जणान्युं के 'रे त् । ज्ञाकं,वियोग,राग अने भागमा परार्घानना विगेरे नरकमा दुःस्तो जाणकार । पुष्पम्ला राणीए कर्युं के भें जे दृःखो रात्रे स्वप्नमां जीयां छे ने सा भिन्न छे. । अणिकाषुत्र आचार्यने घोळावीने राजाए पृष्युं के 'दे स्वामिन! नरकर्ना दृःस्तो िरायछे ?' नेना उत्तरमा आचार्य राणीए जेवां नरपना दुःखो स्वप्नमा जीवा नेबीज यही बताच्यां ते सामकीने आशर्य पारेकी गणीए प्राप्त के 'हे स्नामी ! रे एकं शुं एवं स्वप्न की घु छे ! के जिथी में स्वप्नमां जेवां नरपनां दृश्यों जीवां निवान आपे क्यां.' आचार्ये कर्यु के 'अमे स्वप्नमां है। जायां नयी पण आग-म बदमधी ने जाणीएं छीए.' पछी राणीए पृष्टगुं के 'पया पर्मधी एवं दुल्लो । यायचे ?' गुरुए पर्धुं हैं। 'पांच आश्रवना सेवनधी अने पान फ्रोप निर्मारे पापा-वर्षी प्राणीओंने नरपर्ना दुःग्वो पाप यावले.' इत्यादि प्रधीने गुरु पोताने रणानके ". परिथी बीजे दिवसे पुष्पप्लानी मानाने। जीव के देव हुने। नेचे राज्येने स्व-में देखाओनां सुख बताव्यां.मानःकाळ राणीए ने मार्ट्स एकारन गलाने वही. मै राजाए अन्य दरीनीओने बोलावीन पूर्ण्य के 'प्रयोगी मूटा नेवी दौराहे ! ? बोर बंध के 'हे राजन' उत्तम प्रवासनां मोरान, श्रेष्ट नवपरिभान, वियतनभेषान, कुष अगमाओं साथे विलास स्त्यादि स्वर्गमां मुखी ने, स्वारं स्वर्णेण कर् के कि वर्ष क्षत्रों से स्वयमां जोयां है नेमने मादे मागारती हो एरेनां गुर्दी जर्ने-शामें भारते यह आयो रावतां नवीं, 'पारे प्रक्तितारू" प्रापार्थने यो पापीने स्वर्ग मह समय पूछ्युं, मेंने स्थीत काला कार्यना करी केरीन कर्मनी मही वर्ष मानीय पूर्व के 'वर्ग माने देश की रेगलय " मुरूर कई के ' पुलिस विश्वो केल्की स्वाप्र पटी परंतु सर्व शत्य लाग्यानी प्राणीयाने रेराय

चरपद्म थया, तथी तेणे चारित्र ग्रहण यरवाने माटे पहिनी आहा मागी त्यारे राजी क हुं के ' तुं गने अतिमिय हो. गाराथी तारी वियोग सहन थइ शकरो निह, होते हुं तने दीक्षा ग्रहण करवानी आज्ञा वेवी रीते आणी शक्तं ?' राणीए घणा उपले बहे राजाने वाल्यो, त्यारे राजाए यहुं के 'जो दीक्षा ग्रहण करी अहींज रहे जो 1/1/2 मारा घरनी भिक्षा छे ते। हं तने टीक्षा उपण यरवानी आहा आएं. राणीए ए मानत कबुछ यशी अमे अधियाएन आचार्य णारे दीक्षा छीधी. पछी ते खांज खी राजाने घेरगी दररोज शुद्ध भिक्षा छेछे अमे शुद्ध चारित्रधर्म पाठेछे. एक हिसस अर्णियापुत्र आकार्य द्याप वर्षकी हरणाळ वहवारं जानवरे नाणी स

यतिओं में एटी एटी टिकाक्षीरां रोय ही टीधा अने कोने निर कारी श्ववायी सा

रहा दुरद्द्श सार्श्वा दररील शुर ने आहार सार्था आहे है अने तेमनी पितानी मार्ड है बा बरें है .ए इ हा जे इ हि हि इ रू र ति प्राहण परे ता ए रण्ड लाने शुभ ध्यानना ये। गर् बेहरू हाम एरएक रहा हो एक है कर के आहार हिने ने सार्वी कापे है, एक वसत मेंब बरसती हती. छमां पण पुरपच्छा भिक्षा छड़ने आवी. तेने गुरए कहां के के का अपन मुं का शंबरे हैं एवं दी ए एवंदशान्ता हु, वीज ए का वीनी आपे ही आही । प्रदेश वर्षे हुने १एवं दी ए एवंदशान्ता हु, वीज ए का वीनी आपे हैं। आही प्रदेश शंत्राचे कार्यन कर है हतां रण हं आहार हार्या में आहे. के अहि है ते शंवित कर कर के कि कार्य है अहि है अहि है के अहि है करें छे ?' त्यारे पुरदक्षाण वर्ष वे 'हे स्वार्धा! आ मेघ अचित हे.' गुरप कर्ष के ते तो वेवसी होग हैल करने — तो वेबकी होय तेज जाणे, लारे एरण्ड्छाण यह के 'स्वामिन ! आपनी कृषायी ते मन मने पण छे.'ते सांभ्रळीने आचार्य प्रशासाय दरवा लाग्या के 'अरे! मने विकार है में हे मार्थी के मार्थिक करता है। के की के में देवलीनी आज्ञातना करी.' आ प्रमाणे के ट वर्गाने हेणे मिथ्यादुरकृत दीघो.पणी साध्वीण तम्म के 12 --उत्तरतां के बळकान पागा मोक्षे जक्षो. रे ते सांभळो ने गुरु गंगाने कांठे आवी नावनी अंत पेठा,तेटलामां पूर्वभवना वरी कोड देवे आवीने ज वाजुए गुरु वेठेला छे ते भागने जन्मी हुवाववा मंडियो त्यारे गुरु नावना मध्य भागमां वेठा, एटछे आखी नाव युडवा हागी। ते कोड अनार्य क्रोकोल एक्ट है ते जोइ अनाय लोकोए जाण्यु के 'अरे! आ यतिने लीवे मघलाओं हुं मरण यरी। प्रमाणे जिल्ली के के कि ममाणे चितवी तेओए मळी आचार्यने उपाडीने जळनी अंदर नांखी दीधा ते समये वेशी देखे आचीने नेनिर निर्मे किया देवे आवीने तेनी नीचे त्रिश्ल धारण क्युं अने ते वहे अणिकापुत्र आचार्यने वींभी शीर ते वखते पोताना क्यांग्याने वींभी ते बखते पोताना शरीरमांथी नीफलता रुजिसने जोड आचार्य मनमा विनार कार भाग्या के 'अरेरे! आ मार्ग रुधिरथा जलना जीवोनो विराधना थाय है.' ए भा अनित्य भावना भावतां घातिकर्मनो अय थवाथी केवळज्ञान पामीने मोक्षे गयाः ह

अणिकापुत्र संवंध.

रिष भावीने तेनो महिमा कर्यो. तेथी छाकीए जाण्डुं के 'जे गंगामां मरेछे वे के भायहे.' पछी ने स्थाने भयाग नामना तीर्धनी छाकोए स्थापना करी.

जो अविकलं तवसंजमं च, साहू करिक्क पच्छावि । अन्नियंसुयव्य साँ नियग-मद्दमचिरेण साहेष्ट् ॥ १७१ ॥

अर्थ-" जे साधु अविकळ के० संपूर्ण एवं तप (वार प्रकारनो) अने संयम मंत्र भीनरसा रूप सत्तर मकारने। पत्रात् एटले हद्धावस्थामां पण करेने-माधिने ते हिटाबस्यामां धर्म करनार) अणिकाषुत्र आचार्यनी जैम पोताना अर्थने एटछे पर-नैक्ना साधनने अचिर के॰याँडा फालमां पण सामेहे." १७१. अर्थात् जे योजना-स्वामां विषयामक्त होय छतां अंतकालमां पण घम फरेछे ते आत्माइं हिठ माधी वरेंग्रे. अहीं उपरनी कयामां कहेतां अविशिष्ट रहेले। अणिकापुत्रनी मयमनो संबंध वाणी छेवो. ५४.

अणिकापुत्र संवंध.

उत्तरमधुरा नगरीमां कोड व्यापारीना कामदेव अने देवदन नामना पे पुत्रो ना हता, ते वंनेने परस्पर अति गाड गित्रता हती, तेशो एकदा पोतानां माता-नाना आहा छड्ने व्यापारार्थे दक्षिणमधुराए गया त्यां नेमने जगमिह नामना एक निष्णुत्र साथे मैत्री थड़. जयसिंहने अर्णिका नामे येन हती. ये पणी रूपवर्ता हती. हिरस नयसिंहे पातानी वेन अणिशाने क्युं के 'आज सरस स्माह बनाव,कार-कि मारा में मित्र फामदेव ने टेवद्स आवणे त्यां भोजन पर्याना है. तेथी अर्लि-हार उत्तम रसाड पनावी. पछी मोजनममये अणे मित्रो एक पात्रमां मेळी लमना का. अणिकाए मोजन पीरस्युं, पजी ते अर्जिका तमनी पासे सभी रशने पोठाना भाना सेरापी बायु नारावा लागी. ते वसते तेना रायना कंदणनी रणन्यार, देनी नन, उदर ने कटिपदंत्र तथा नेत्र ने घटननो विन्हाम जोशने देवदत्त अत्यंत कामा-इर क्यों. तेमन घीना पात्रनी अंदर मितियियित यथेलु तेनु रूप नोहने ने भित्र काम-गहशी परवश बनी गयो. तेने मोजन विपर्त ययूँ, तेथी तेले पंड पण सार्थ महि . अने असटी उठी गयी.

बाजे दिवसे तेणे पोठानो अभिवाय कामदेवनी मारजन अथियाने जनाम्योः नारे नवितर करं के "दे किय ! मार्ग आ देन मने अनिदिय है अने नवे नो बाईजी कारेबी नेनो नियोग माराधी केवा शेने सहन यह समें हैगाने से कोई आ अणिकाई

नामा १३ म्मससेवर्ध । सनिवस्तवन्द । किवनमह्न निवर्श हत ।

२५७

उपवैश्वमाद्या.

मोहने की धे हंगेशां दुःखी थइः तो कृत्रिम अने एकतरफीः स्नेहने विकास कोण अने माता पण कोण ? आ सर्घ दुनिया स्वार्थनीज सगी छेः कोइने वहाछं थथी." आ रीते अनित्य भावनाने भावतां घातिकर्मनो स केवळकान पामी अतर्भ्रहर्तमांज मोक्षपदने पाम्याः 'आ मरुदेवी माता प्रथम एम कहीने देवोए तैयनो देह क्षीरसागरमां नांख्याः

आ इष्टांत लड़ने केटलाएक माणसो एम कहे छे के-"तप संयम किंगे कर्या विना जेम मरुदेवी माता सिद्धिपद पाम्या, तेम अमे पण मोस वामी आहंबन ग्रहण करे छे, पण विवेकी पुरुषोए तेष्ठं आलंबन ग्रहण करना का

किंपि कहिंपि कयाई, एगें लक्षीहं केहिवि निर्नहें। पत्तेखबुद्धवाना, हवंति खच्छेरयब्जूयाः॥ १^{००।॥}

अर्थ-" अर्थ केटलाएक (मस्येकचुद्ध) पुरुषो, कोइक वलत, कांइक कोइक स्थानने विषे, आवरणकारी कर्मना क्षयोपश्चम रूप लिखबडे करीने, विषय (वळद) विगेरे वस्तु जोवा रूप निमित्तवडे मस्येकचुद्धपणे सम्यक् विवादिकनो लाभ प्राप्त करे छे ते आध्यर्थभूत छे, एटले तेवां दृष्टांतो योदां करें के ते अध्यर्थभूत छे, एटले तेवां दृष्टांतो योदां करें के ते अध्यर्थभूत छे, एटले तेवां दृष्टांतो योदां करें के तेन अध्यर्थन प्राप्त करें के ते अध्यर्थभूत छे, एटले तेवां दृष्टांतो योदां करें के तेन अध्यर्थन प्राप्त करें के स्थाने करें के स्थाने करा स्थाने करा स्थाने करा स्थाने करा स्थाने करा स्थाने करा स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने करा स्थाने स्

माटे तेतु आछंवन पण ग्रहण करवा येगुग्य नथी," १८० निहिं संपत्त महन्नो, पिडच्छंतो जह जणो निरुत्तपो।

इह नासइ तह पत्तेअबुद्धलिंड पिडिह्नंतो ॥ १७१ ॥ अर्थ-" जेम आ जगतमां (निधिने) इच्छतो पण तेने छेवा माटे (गी

रुप) उपमने नहीं करतो एवो अधन्य एटले अपुण्यशाली माणम ते भा (रत्नमुपणीदिकयो भरेला) निधिने पण नाश पमाडे छे, तेम प्रत्येक बुद्धाणानी पालतो एवो पुरुप पण तप संयमादिक बिलियान नहीं करवाथी मोत हा नाश पमाटे छे." १८१

सोजण गई मुकुमाहियाए, तह ससगभसगन्नयणीए।

ताच न चिससीयट्वं, सेयटीधम्मीखो जाव ॥ १०२॥
जर्थ—" तथा मसक अने भसक नामना वे भार्थोनी पहेन स्वाम गण्या १८३—हर्षात । कर्य । अच्येत्यभूया । किंद्रिधिनिर्मार्थ केंब्रिद्रित

भावा १८१-पत्थितो-पश्चितो । निष्ठत्तपो निष्ठ्यमः । गावा १८१-पत्थितो-पश्चितो । निष्ठत्तपो निष्ठ्यमः । गावा १८६-मुहुमालियाह । सेयदि घम्मिको ।

-भवस्या सांप्रक्रीने ज्यांसुधी रुचिरमांसपी रहित्यणाए करीने जेना अस्य (हा) भेत एटछे उज्वल ययेलां छे एवा पार्मिक (धर्मस्वभाव) याप त्यांसुधी पण
परागादिकना विश्वास करयो नहीं. अधीत द्वरीरमां रुचिर तथा मांस शुष्क बढ़
। अने हाहकां श्वेत थाय तो पण धर्मवान् साधुए विषयादिकना विश्वास कर्यो
। १८२, अहीं सद्भाष्टिकानी कथा जाणवी, ५६

सुकुपाछिकानी कथा.

वसंतपुर नगरमां सिंहसेन राजा राज्य करता हता. तेने सिंहण नामना राणी । वे राणीनी कृष्तिथी उत्पन्न थयेष्टा ससक अने भसक नामना तेने ये पुत्री इसा. करने क्षार क्षार योद्धाओंना परात्रय करे तेया बढवान क्षा. ते करनेने एक-विद्या नामे भनि रुपवान एक वहेन हती. एकदा केाइ आचार्य पासे अनुपून गर्टी अमृत सर्खी पर्मदेशना सांगळीने ससक अने भसके पारित्र प्रदूर रुपूँ. में अनुक्रमे गीतार्थ मुनि थया एटछे तेमणे प्राचीने पातानी बहेन सहमानिकाने रेषोप क्यों, तेथी तेणे पण चारित्र प्रदण कर्युं. पठी ने मार्थीओर्ना समीपे रहीने अहम विगेरे आतापना सहित तप फरती मनी पाताना नीद्येना द्वेने दबन रा हागी। ते। पण तेना अनुषम रूपयी मोह पामेळा अनेक कायी पुरुषो त्यां आधिन ं स्त्यूख पेसी रहेता हता, अने तेनी साथै विषयनी प्रनिछापा बरता हता. एक । पण तैना सगने तेश्रो मुकता नहीं, ते जाणीने बीजी माप्बीभीए तेने इराध-रे ह सस्ता मंदी. नेपण नेना रूपयो मेह पामेला कामी पुरना स्पाधवना भाषीने पेसी रहेगा लाग्या, अने तेना हराने तेगानी छादमाणी उन्नणनों पहचा छात्या, नेयो फटाडोने सार्धाबोद नाते आवापने कह के "हे सार्था! श्रमाजिक्षाना चारित्रनुं रक्षण जनागायों यनतुं अग्रवय है. क्रेय के कायमेशाना विका युवानों उपाध्यं आवीने उपट्राों करें हैं, देजोंने अने हो गैने निवारी विका युवानों उपाध्यं आवीने उपट्राों करें हैं, देजोंने अने हो गैने निवारी विकास समक्ष्में स्विधाने स्विधा ने सुद्धािक होना मात्रभी समक समकने बोकावीने के-" है बत्में। विने सार्धाने उपाध्ये आओ, भने क्ष्मारी चेननी तहा करें। किम्मन तेने सहाय राजाणी तसने मोटो छान छे." आ पनाने पृथ्य गारव करें के पन्ने बाइओं त्यां नहने पहेनती स्ता करना नत्या, देवाया यह बन का साम्राहित होते होते होते के पह पह के के कि साथ के पह के हैं हैं। कि साम्राहित के के कि के कि माने की ने के कि माने कि माने कि माने कि का मानी पृथ्वेशनों कार्य ने मान पढ़ पहाले के कि माने सुद्धानिकार के कार्य के भित्र मुद्दे विदेश के हैं है है हो साब अधान से देव में मान मान है पान मान है पान मान है पान मान है पान मान है

चपदेशमाळा.

विगेरे मूकीने हेश सहन करे है; तो हवे हुं अनशन ग्रहण करीने जे बरी आ कामी पुरुषा ताप पामे छे ते शरीरनो त्याग करुं." ए रीते विचारीने र शन ग्रहण कर्युं. तेथी मारुतीना पुष्पनी जैम ते थोडा दिवसमां करमाइ (मूक तेनुं शरीर क्षीण थयुं, अने एकवार तो श्वांसनुं रुंघन थवाथी ते मूर्छा प जोइने तेना भाइओ तेने मरेली जाणा गाम वहार जह वननी भूमिमां परहती पछी ते वन्ने गाममां आव्या अहीं थोडी वारे अर्ण्यना शीतळ वायुथी सुकुमा चेतना आवी. तेथी ते उभी यइने चीतरफ जीवा छागी. तेवामां त्यां कोइ वाह आच्यो. तेना सेवका जळ अने काष्ट छेवा माटे वनमां भगता हता. तेल वनदेवता समान स्वरूप जोड़ने तेने छड़ जह सार्थवाहने सोंपी. ते सार्थवाह तेने तैलमदनादि करावीने रूज वरी. अने पथ्य भोजन।दिक करावीने पाछी योवनवाळी करी. पछी तेना रूपथी मोड पामेळा सार्थवाहे तेने कहा के "हे हर आ ताई शरीर पुरुपना भोगव्या विना शोभतुं नथी जा वदाच विषयस्यता स्व तने विमुखपणु होय. तो तारु आवुं अनुपम स्वरूप विधिए शा माटे कर्युं ? हे स्म समान नेत्रवाळो ! तने जाया पछी मने वीजी स्त्री रुवती नथी. जैम कलपढ़ी वांछावाळे। भ्रमर वीजी वर्छीनो मनोरथ करतो नथी, तेम तारा रूपथी जेतुं मन की पामेलुं छे एवं। मने वीजी स्त्री गमती नथी. माटे मारापर कृपा कर अने कामरा ह्पी समुद्रमां इयी गयेलो जे हु तेनो उद्धार कर." आ प्रमाणेनां सार्थबाह सांभळोने सुकुमाळिकाए विचार्यु के ''आ संसारमां कर्मनी गति विचित्र छै।' विछासनी संभावना थइ शकती नथी. कहांछे के-व्यवितवदितानि घटयति, सुवदितवदितानि जर्जरीकुरू विभिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नेव चिन्तयति॥१॥ ' विभिन्न (निधातान) अयोग्य संयोगवाळा पदार्थीने एकत्र करे के, भने भिते कोम्याकी मयोग पामेळाने जर्निरत (जुदा) करे छे. पुरुष जैने मन

हो: अप्रत विभवतो नथी तेने ते विविन संयोगी करी दे छे. " भा बनाजे के। विधानानोन विखास न होय तो मारा भाउत्रोम मने परेणी ने का मारे जनमा मुक्ती है ? अने आ मार्थनाहनों संबंध पण शी रांते वाप ! रें हैं के होता को का ना ना माथवाहना संवय पण शा राग गर्म हैने इन्हें हैं को को का पण भेगक में भोगवर्त्तु वाको रागु छे, बजो भा गर्म हेन के हो है है है है है है है है जैसी मारा सगम माटेनो तेनो प्रसिन्धा है है

विवारीने मुकुमालिका सार्थवाहना चरणमां पटीने दाथ जोर्श पेल्ली के "हे शित्रा मारी देहलता तमारे आधीन है, माटे आ स्तनहर्धा वे गुरुउने प्रदेश अने तमारो मनेत्रय पूर्ण करो." ते सांबळोने दर्पित वपेटी सार्वसद तेने ाना नगरमां छद गया, अने त्यां तेनी साथे निःशंहपणे रिपयपुत्व अनुवासी यनो काळ व्यनीत ययो.

भा अवसरे विहार करना फरता ससक अने भसक मृनि चेत्र नगरमां अञ्चा. शर छेबा माटे नेमणे नगरमां प्रवेश कर्यो;कातां करनां वर्षयांने नेमणे सुरुपा-मनेत्र येर जर्ने धर्मलाभ आप्यो. टेमने जाइने मुर्माविकाए तो पालाना भोने श्रोळख्या. एण भाउश्रोण नेने वसवर श्रोळखो नहीं. तेवी चेत्रो नेना 🛊 त्रीया साम्याः एटले स्तुमालिकाए पूछम् के ''हे मृतिसन ! वने मार्ग मन्सून्य मने केम उभा छो ?" तेओ बाल्या के "तारा देश जमारे एक येन पहेलां इती." सम्बीने नेत्रोमांथी अश्रुपात फरती गृहमाजिकाए पूर्वनुं सर्व ब्रुवांत भादनीने उर्त्युः हों के भार्त्रोए सार्थगाइने मित्रीय पमाठीने नेने वृहवामधी विकास कर्म दीता ार्सा. ते भुद्ध [निरनिचार] चारिवनुं भाराधन वर्ग अंते भुद्र आगोदना पूर्व ह

ल पार्वाने स्वर्ग गड. भा मुक्कमालिकानी प्रथा सांभळीने पर्दवान पुरुषे विषयतेना विधाव दर्वा कीं अने 'हुं जरायस्थायों जीर्ण यया है, मादे हो मने विषया है हस्याना है है

₹ ६ई। पण विचारम् नहीं. खरकरेह्तुरयवसहा,मचर्गयंदा वि नाम देम्मंनि ।

ईको नविरि ने दमेंगई, निरंकुंसो छत्वणो अव्या ॥ १८३ ॥

भग-"नघेला, इंट, अथ, हमम (बाद) अने सदोन्सम मलेखी एम इसे अवाप ए इसम् छे, परतु एक निरंद्रच पूर्वा देश्याचे माला पर इसकी वर्षा ' १८३

में में थांचा देता, संजनल तेंजल व

मीं 'हं 'परेहिं 'दम्मंतो, 'वंघणेडिं ''दंहिं 'ध्य ॥१८८॥ मुक्-"मारें। (प्रातानी) आस्या संद्यनदे अने कार्यदे इपन कार्यसे दाव ें बेड़ के, पांतु क्षाविमां गर्वेखों है किया कुलामा हैन्सा कर विकेशन निष्दे अने हार्स्य कीरेंगा महास्वें दमन इस्पेकी ने ध्याराप्यों है हर विषेत्र हे बाद ले सेंड नभी, पर्धात् लेस न पार के र्राटन

चपदेशमाळा. विगेरे सूकीने क्रेश सहन करे छे; तो हवे हुं अनशन ग्रहण करीने जे क आ कामी पुरुषा ताप पामे छे ते शरीरनो त्याग करं." ए रीते विचारीने शन ग्रहण कर्युं. तेथी मार्ट्याना पुष्पनी जैम ते थोडा दिवसमा करमाई (ह तेनुं शरीर क्षीण थयुं, अने एकवार तो श्वासनुं रुंघन थवाथी ते मूर्ज जोइने तेना भाइओं तेने मरेली जाणा गाम वहार जइ वननी भूमिमां परह पछी ते वन्ने गाममां आव्या अहीं थोडी वारे अरण्यना शीतळ वायुथी मुकुर चेतना आवी. तेथी ते उभी यइने चोतरफ जीवा लागी. तेवामां त्यां की वाह आत्यो. तेना सेवका जळ अने काष्ट छेवा माटे वनमां भगता हता. तेल वनदेवता समान स्वरूप जोड़ने तेने छड़ जड़ सार्थवाहने सोंपी. ते सार्थ तेने तेष्टमदेनादि करावीने रुजा वरी. अने पथ्य भोजनादिक करावीने पार यौवनवाळी करी. पछी तेना रूपथी मोह पामेला सार्थवाहे तेने कहा के "है। आ ताहं शरीर पुरुपना भोगव्या विना शोभतुं नथी. जो वदाच विषयस्यता ह तने विमुखपण होय. तो तारु आवं अनुपम स्वरूप विधिए शा माटे कर्युं ? हे व समान नेत्रवाळो ! तने जाया पछी मने वीजी स्त्री रुवती नथी. जेम कलक यांछावाळे। भ्रमर वीजी वर्छीनो मनोरथ करतो नथी, तेम तारा रूपथी जेतुं मन पामेछं छे एवं। मने वीजी स्त्री गमती नथी. माटे मारापर कृपा कर अने काम रूपी समुद्रमां हुनी गये छो जे हु तेनो उद्धार कर." आ प्रमाणेनां सार्थनाहनां वि सांभळोने सुकुमाळिकाए विचार्यु के ''आ संसारमां कर्मनी गति विचित्र है. विधीती विछासनी संभावना थइ शकती नथी. कहांछे के-

अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते। विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नैव चिन्तयति॥१॥

" विधिज (विधाताज) अयोग्य संयोगवाळा पदार्थीने एकत्र करे छे, अ ति योग्यताथी संयोग पामेलाने जर्जरित (जूदा) करे छे. पुरुष जेने म होइ नखत चिंतवतो नथी तेने ते विधिज संयोगी करी दे छे. "

आ मगाणे जो विधातानोत्र विलास न होय तो मारा भाइओन मने मरे चा माटे वनमां मुक्ती दे ? अने आ सार्थवाहनो संबंध पण श्री रीते थाप? है हिं छुं के इन्न मारे कांइक पण भागकर्म भोगवनुं वाको रह्यं छे. वळी भा सी ग मारो मोटो उपकारी छे, तथी मारा संगम मानेको केको क्रिकाव हं पूर्व

रिवारीने मुकुमालिका सार्थवाटना चरणमी दर्शने दाध जोश पेंदली के "है ों मा मार्ग देहलता तमारे जापीन छे. माटे आ स्तनत्यी दे गुरुउने बहुन अने तमारो मनेत्रथ पूर्ण करो." ने सांपळाने टर्पित यपेता नार्यवाह सेने ता नगरमां छद गया, अने त्यां तेनी गाये निःशंस्थणे दिपयपुर्व अनुस्रती पनो काळ व्यनीत धयो.

भा भवसरे विद्यार करता परना सतक अने महक पृति नेव नगरमां नात्या. धर छेवा माटे तेमणे नगरमां प्रवेश क्योंक्यका फरवां वर्षयोगे तेमणे सुरुमा-एतेन पेर जड्ने धर्मलाम आध्यो. हैमने जात्ने मुद्रमाणिकाण को पाठाना क्शेने ओळस्या, पण माइओए जेने बरावर औठमां नहीं. तेपी तेनी तेना 🛊 भीता साम्या. एटले सुरुमालिकाए पूछमु के "दे मुनिमान ! वर्षे मार्ग मन्सून्य को केम उभा छो ?" तेनो पाल्या के "तारा देश अगारे एह देन परेणां इती." मोंक्श्रीने नेत्रीमांची अञ्चलत करती मुद्रमारिकाष पूर्वने मह हाति माह तेले उर्जू. में के भाइओए सार्थवाइने मितवीप पमार्टाने तेने इंडवासपी देशवारी क्रांत देशवा र्षा, ने शुद्ध [निरतिचार] चारिष्टनुं भारापन पर्श भंते भृषु आरहेपना पृश्य ल गर्वाने स्केत गड.

भा गुरुपालिकानी कथा सामछीने प्रश्वान पृथ्ये विषये ने। दिपाल उस्ते। 🅦 अने हि जरावस्थायों जीर्ग यथा है, मादे हो मने विस्ती ए प्रशास है है 🔻 प्रें। एन विचार हे नहीं.

् सरकरेह्नुरयवसद्ग्मनगयंदा वि नामें देन्ति। ईक्का नविरि ने द्रेमेंइ, निरंहिता छब्यणो अव्या ॥ १८३॥ अर्थ-"ग्वेदा, वेर, मध्य, रूपन (बच्द, अने दर्शकत बहेररी) वन द्या ६ स्व े क्ये-"ग्रांदेश, तेर, मध्य, रूपन (य=द) त्रण प्रतासित काला त्य स्थाप न्या प्रतासित काला त्या स्थाप न्या प्रतासित

र्श में खंदा देता, संतमेण तेरंग थे।

भी हे 'पोद्धि ''द्रमांती, ''कंगोदि ''बर्टि ''य धार ॥ मंत्र-''वारी (केलिनो) अहमा सरवारे पने बनके इनन काले हैं। यान विश्व कें, बंद द्वारिक्ष गरेजों है होता दुव्योगी हान है है है है जा भारते असे भारती कीरोदेना नहाराने दलने वशक्तिही है है । कारानुवर है नेप क्षिक ह बाद के बेद्र तथी, अवंत् लेख न बाद के रोक, है है का

ेळाप्पा 'चेव 'दमेथव्वो 'अप्पा 'हु 'खबु 'हुइमो । 'अपा 'दंतो' सुद्दी 'होइ, 'अस्मि 'होए ' परत्य ये' ॥१०॥ अर्थ-"निश्चे करीने आत्मा दमन करवा योग्य छ-वश करवा योग्य छे. के (पक) आतमा ज दुर्दम [दुःखे करीने दमन थाय तेवो] छे. ते आत्मातुं दमन होय तो ते आछोक्मां तथा परछोकमां सुखी थाय छे. " १८५. निचं दोसंसहगद्यो, जीवो द्यविरहिय मसुहपरिणामो । न्वरं दिन्ने पसरे, तो देइ पमाय मयरेसु ॥ १८६ ॥ अर्थ-" नित्ये द्वेपनी साथे रहेळा एटळे रागद्वेपनो सहचारी थयेळा एती जीव निरंतर अशुभ परिणामवाळो रहे छे. ते आत्माने जो मसार आप्यो है।य पर जो तेने मोकळो [छुटेा] मुक्यो होय ते। ते आ संसारसागर मध्ये छे।कविरुद म आगमविरुद्ध एवां कार्योमां विषय कपायादिक ममादने आपे छे. " १८६. अचिय वंदिय पूरुअ, सकारिय पणमिओ महर्ग्घविद्यो। तं तह करेड जीवा, पार्डेई जह खपणो ठाणं ॥ १०७॥ अर्थ-"गंवादिकवडे अर्चन (पूजन) करेलो, अनेक लोकाए गुणस्तुतिवडे र्वर करेछो-स्तृति करेछो, बस्रादिकवडे पूजेछो, उभा यद्यं विगरे विनयवडे सत्कार करे मस्तक्तवर मणाम करेळी अने बाचार्यादिक पद आपीने महत्व पमाढेळी एवी जीव गरि यहने ते ममादादिक अकार्याने एवी रीते करे छे के जेथी ते जीव पाताना महस्वरा स्थानने पाडी देहे, एटछे आचार्यादिक महत्त्ववाळा स्थानथी ते श्रष्ट थाय है."। सी बद्ययाई जो बहुफलाई, इंत्ण्य सुद्व म्हिलसई। भीइडुव्यक्षो तबस्सी, कीकीए कार्गिणि किणई ॥ १८८ ॥ अर्थ-" मनापबरे दुर्भछ-असमर्थ (मंतोष विनानो-अतुष्त) एशे में नाष भैवासी स्रामोधादिक वणा फळो माध्य यायछे एवा चीछ ते सदाचार अने त्रत ते ह सद्दाद्भ तेने द्वाने-तेना नाच करीने विषयसेवनहृष सुसनी अभिकाष करें कोशे द्रन्य अपीने क्योभाना एशीया भागत्य काकिणीने खरीद करे है." १८५० त्रीको तद्दामणसियं, द्वियइत्रियपस्थिणहिं मुक्ते तेंभेंडः । न नीरई, जावजीवेण सद्वेण ॥ १८९

-" भा संसारी जीव मननी अभिजापाने असुरुष्ठ अपवा ने प्रमाणे पननो होष ने प्रमाणेनां दितकारक, इच्छेळां अने पार्थना करेळां एवां स्त्री विगेरेनां इसोने सर्व जीवन पर्वत अनुभव क्यों छतां अर्थात् ने सुन्यों भोगच्यां छतां क्षेत्र पामवाने समर्थ यतो नथीं; एटछे जावज्ञीय निरंतर अनुभयेण विषय-

रण आ तीर संतोपने पामतो नयी." १८९. मुनिणंतराणुजूयं, सुक्खं समङ्ख्यियं जहा निधि। एक्सिमं पि अईयं सुद्खं, सुमिणोवमं दोई॥ १९७०॥

वर्ष- 'जैम स्वप्त मध्ये अनुभवेलुं सुख नायृत थया पछी होतुं नभी, नेम भा अनुभवेल्डं विषयसुख) पण वर्तमान हाळ तुं उच्छं पन प्या प्रो प्रछे मोनवी की स्वप्नती उपमावालं एटले स्वम तुल्यन याय है, माटे ने विषवतुत्तका

ए प्राप्ती नहीं." १९०.

पुरनिद्धमणे जक्तो, महुरा भंगू तदेव सुविनद्सो। गोहेई सुविद्यजणं, विस्रह वहें च दियाएण ॥ १०१ ॥

मं-"नेपन श्रुवनी एडछे सिद्धान्तनी परीताना निरुप एटडे हमें।दीना पा-हुन अशांत बहुभुत एवा भंगू नामना आवार्ष मधुरा नगरीयां नगरनी स्वान असमामादमा) वसपणे उत्पंज थया। अने पछी ने सुविदित जन प्राप्त माप्त । (पानाना जिल्लाने) कोष पमादमा जान्या अने इद्यमा पणा और काना ण पुरक्षे विषयोने बोच करनां पोताना इद्यमां भत्यत्र गोक करता दशान्ते बात चानी गामामां कहेवामां भावती). "१०१ भही दंतृ भावादेनी संस्थ शामकी. ५०

वंतृप्रिनी ह्या.

रिमा भूतक्षी अजना मागरकर गुगमधान धीमन नामगा आवार्ष मणुग नग-भाषीते अवरीमां युना पनाइय सावधी वरेना इना देखी सामुलानी अन्दर्व कि शासान इता. तेथी तेथीए ते आवादनी वणी भेना इसी. सामादेशन नाल कि रक्षांबास नेवा क्यांतवास क्षेत्रण भाग्या, तेवी नेवल भारकार्य विषय नव का ब्रायक रेमा संपूर्णण भीक मंदिर

कार दिकासमार्किया संस्थित अस्तिवास्त्रात्त्र क्या १९१०-पूर्णसङ्ग्राहेन्यमा अस्ति स्थान हो।

१श्व

भात उंचा मकारनी जोइने तेओ एम विचारवा छाग्या के " आ म्रिने दिकतुं दान करवाथी आपणे भवसागरनो पार पामीशुज.'' एम जाणीने त्यांन तेमने मिष्ट अने सरस आहार आपवा लाग्या. तेवो आहार भोगवतां आह लोलपता थइ.एटले तेमणे विचार कर्यो के " जुदे जुदे स्थाने विहार क आहार कोइ पण स्थाने हुं पाम्यो नथी वळी अहींना श्रावको पण विशेष म करेछे;माटे आपणे तो अहींज स्थिरता करवी योग्य छे." एम विचारीने स्थानवासीपणाए करीने [एक स्थानेज रहेवापणाए करीने] त्यांज. रहा. यथस्थीओनी साथे परिचय वधतो गयो. तेथी मिष्ट आहारना भोजनवडे,अ शय्यामां शयन करवावडे अने मुंदर उपाश्रयमां रहेवावडे ते आचार्य रसगृह आवश्यकादिक नित्यक्रिया पण छोडी दीधी, अने मनमां अहंकार करवा 'मने श्रावको केवो रसवाळो आहार आपेछे ? ए प्रमाणे ते रसगौरव कर अनुक्रमे त्रणे गौरवमां निमन्न थइने सर्व जगतने तृण समान मानवा लाग्याः पण कोइ कोइ वखत अतिचारादिक लगाडवावहै शिथिल थया.ए प्रमाणे मुधी अतिचारादिकथी द्पित थयेला चारित्रतु पालन करीने छेवटे तेनी कर्याविना मृत्यु पामी तेज नगरना जळने नीकळवानी खाळ पासेना यक्षाउँ उत्पन्न थया, त्यां तेणे विभंगज्ञानवडे पूर्वभव जाइने पश्चात्ताप कर्यों के " मुर्खाए जिहाना स्वादमां लंपट थइने आवी कुदेवनी गनि पाप्त करी। "पह शिष्यो वहिर्भूमिए (स्यडिछ) जइने पाछा आवतां ते यक्षनी नजीक आव्या उदेशीने ते यक्षे पोतानी जीहा मुखयी वहार काढीने देखाडी ते जोइने ते स मन इंढ राखीने तेने पूछ्युं के-'हे यक्ष ! तुं कोण छे ? अने शा माटे जीवा काढे छे?" यस वोल्यो के हुं तमारो गुरु मंगू नामनो आचार्य जीहान पराधीन यहने आवो अपवित्र देव थयो छुं. में गृहनो त्याग करी चारित्र जीने वरे कहेला घर्मनी आराधना न करी अने त्रण गौरववढे आ आत्माने म चारित्रनी चिथिळतामां समग्र आयुष्य गुमान्युं, हवे अधन्य, पुण्यरहित विनानो एवो हुं शुं करुं ? आ भवमां तो हुं विरति पाळवाने समर्थ नथी आत्मानो हुं शोक करुं छुं. आ पाषी जीव वीतरागना धर्मने पाम्या छतां प सम्यक्त मकारे पाछन नहीं करवाथी घणो काळ संसारमां भटकशे. माटे रे तम श्रीजीनवर्षने पामीने रसलपट यशो नहि, जो कदाच जीहाना स्वा थशो तो मारी जेम पथात्ताप करवानी वखत आवशे." आ भमाणे पोतान विष्योने उपदेश भाषीने ते यक्ष अहहव थयो.पछो ते साधुओ शुद्ध नारि म्हिने पाम्याः भा दृष्टांतसांभळीने सर्व फोईए तिन्धाना स्वाइनी त्यान दर्गो. इसे के ममाणे शोक वर्षी वे नीवेनी गायामां वतावे है.

निगांतूण धराओं, न कओ चम्मो मण् जिण्याओं। इहिरससायगुरुयसणेण, न य चेह्य्यो खप्पा॥ १९२॥

*रं-" में गृहथी वहार नीवळीने पण निवासस्थान, उच विनेरेनी सुद्रियी भारत, मिष्ट आहार।दियाना रसयी रसगारच अने वेश्यळ दृश्यादिकता गुरस्पी गार-प्राप् प्राणेने विषे आदरपणाए करीने प्राटे तेवनी नादर होते ने तो कहें हो पर्म पर्या नहीं (पाठवी नहीं), अने माग अध्याने ने ने विच-

सन हों। नहिं, " १५२.

श्रोहत्त्रविहारेणं, दा जदं झीणंसि ओड्डण हरेवे।

कि काहामि अहत्रो, संपद्द सांयामि खप्पाणं ॥ १९३॥ भ्य-" करें ! जे मकारे चारित्रविषयमां दिवित स्वाहार त्रावित्र मार्व मार्व कृष कोई-कीण धनु, तो इये अधन्य-निर्भाग्य एको हूं तुं करे है हुने तो माय बाता

मानं जे तात करें. " १९३

हो जीव पाप भिनिहित्त, जाईजोणीत्तयाई बहुयाई।

भवसपसहस्सहस्रहं पि, जिणमयं एरिसं छलां ॥ १९२॥ ्र गयतपसहस्स इस्ट्रांस । भीत ! सो स्त्रार (कास) वर्शवहं पर दूर्वन सर्वना हे पापी (दुशासा) भीत ! सो स्त्रार (कास) वर्शवहं पर दूर्वन क पापा र दुशाला) गान का विश्व प्रीतिनमन जिन्मित पर्धे पानाने विश्व) अने आयो अविश्व विशादणी हृहत्व भ्रीतिनमन जिन्मित पर्धे पानानि जीव

िरेनी भागानमा नहिंकरवाधीत्। परिद्वादिक मानि अने छोतानादिह बील

्षा वेदरात्रीम् भटरीयः 🖑 🐫 🖰

नयो प्रमायवसको, जीवो संसार हज्जनुः जुनो । रागेदि न निविद्यो, मुक्तेदि न वैन परिनृद्धे ॥ १९५ ॥

्र कुर्णशान् न (नापन्ना, पुनर्वात । कुर्णशान् भने प्रमादने का प्रमेशी तथा समारमा का सापना स्थेत । भागा होता अने असदम वर्ष प्रदेश । तथा गामा । भागा है व दुस्कें दे दे दे असे असे त अस्ति होती बोराइसे कर्ष पर के बिहें दुर्हिसे

पाम्यो नहीं (जेम जेम दुःख पामे छे तेम तेम पापकर्म वधारे करेडे), अने मुलारहर सुखे। भोगवतां पण परितृष्ट (संतृष्ट) थयो नहीं (केमके जेम जेम सुख मले हैं तेण नवां सखनी बांछा करे छे.) " १९५.

परितिष्पण तणुळो, साहारो जइ घणं न उज्जमह।
सिणयराया तं तह, परितष्पंतो गओ नरयं॥ १९६॥
अर्थ-" जो (तप-संयमादिकने विषे) घणो उद्यम न करे, तो (मार्ग)
तापबहे एटछे पापकर्मनी निंदा, गई। अने पश्चाचापादिकवढे थोढोज आधार मार्था लेथी छघुकर्मानो क्षय थड काके छे, पण महाकर्मीने। क्षय यतो नयी.
करीनेज श्रेणिक राजा तेवा मकारनो (हा इति खेदे! में विरित न करी एवो)पी कर्या छतां पण नरके गयो. (अथवा आ श्लोकना पूर्वाधने। अर्थ करवो के ' जं संयमादिकने विषे घणो उद्यम न करे तो मात्र परितापवढे कर्म छघु थतां नथी, ए गई।दिक करवाथी शिथछ कर्मनोज नाक्ष थाय छे, पण इढ वांघेढां कर्मनो नाक्ष यतो नथी.) " १९६

जीवण जाणि विसङ्जियाणि, जाईसएस देहाणि।
योवेहिं तओ सयलं पि, तिहुयणं हुज पिहहत्यं॥ १९७
अर्थ-" जीवे (पाण धारण करनारे) एकेन्द्रियादि सेंकडो जातिओने
पूर्वे ग्रहण करी करीने जेटलां शरीरो त्याग कथा छे तेमांथी थोडा पण शरीरोणः
(सर्व शरीरवेडे नहीं) सकल त्रिभ्रवन (प्रण जगत) पण संपूर्ण थाय एटले व
भ्रवन भराइ जाय तेटलां शरीरो जीवे पूर्वे ग्रहण करीने मूक्यां छे, तो पण तेजीव
पामतो नथो. " १९७.

नहदंतमंसकेसिट्एस, जीवेण विष्पमुकेसु।

तेसु वि ह विक्त कहलासमेरुगिरिसिन्नमा कूडा ॥ १९८ अर्थ-'जीवेपूर्वभवोगां प्रहण यगिकरीने मुकेला (तजेलां) जे नल, दांत केश अने अस्थिओ, ते सर्वने विषे पण एटले ते सर्व नलादिकने एकत्र करीए तो वि (हिमवान), मेरु अने वाजा सामान्य पर्वतो जेवडा पुंत-हगला थाय. माटे तेने पण प्रतिवय करवो नहीं. " १९८.

माथा १९७-जीवन । जाणि उ । पडिह्यन्य=पिरण्णैम् । माथा १९८-ज्ञेत्रा राज्यि

हिमैवंतमलयमंद्रदीवोद्दिधरणिसरिसरामीओ ।

अहिअयरो ऑहारो, देहिएणाहोरियो होर्जा ॥ १९९ ॥

प्रय-" अधिन धयेला (भृत्या) एवा भा जीवे हिम्बान प्रयोग, इक्षिण मं रहेको मख्याचळ पर्वत, मदर (मेठ) प्रत, प्रयुद्धीप विगेरे भन्त्वाना द्वीयो, तम्द्रादिक असंख्य समुद्रो जने रस्त्रभादिक सात पृथ्वी से-तेमले सेवरा मोडा शक्रीयी दण (तेटला मोटा दगला उतीप वा देखी दन) अनि अपिक आसार न तिगेरे) महण परेखों छै: मधीन एक जीडे अनेना हुद्गाल द्रव्यो यक्षण क्या

वित्ता नेनो भुवा शांत थर नयी. " १९९

जंग्रेनं जलं पीयं, घम्मायवजगनिष्ण तं षि' ईईं।

सैक्वेमु वि' श्रेगटतखायनईसमुदेमु ने नि उन्ना ॥ २००॥

अथे-" पर्न प्रीष्म पत्तुना आतपपी पीटा पामेला ना लोगे से तक रोण्डे के भै रीपेट प्रस भा संसारण प्रत्य प्रतीए नो पेटन तक सर्वे ह्या, हवाबी, गुमान स्वीको भने खन्मादिक समुद्रोगां पन न होयः प्रधान एत नीहे पूर्व के लब ते हैं के की कलाध्योता कल्यी दश भवतायु है, " २००.

्षीयं श्रेणयच्छीरं, सागरमेलिलाब्या दोज्ज बहुन्जवरं।

ं संसारंनि छोणंत, मार्जणं अर्बनवाणं ॥ २०१ ॥

श्री- भा भी ने नेता पंत तथा एग क्या समाम्या वित्र वित्र पाश मोतु ्रिस्तरने दूर राष्ट्रमा अस्त्र से पन पहुंचर (अनेनाम्) देश्य प्रयोग सह्या भी क्षा भनवाण तुप ना जीते पूर्व भरोमी नहीं पूर्व मन्त्री नहीं हैं. "रेन्डेंट

प्तां ये कामनोगा, कांजभोतांने के लंड करेणा ।

श्रेपुरवंति वे संसर्व, नद्विय जी में में में स्ट्राम १६० ॥

अपन्ति काले अने संस्थिति अनेत स्थान होते जो के जानेत र सामन से लेखने प्र ं कार्रेस का की उस सरस्वास अने राज्य का जान है। इंक्टिस का की उस सरस्वासिक एक में महिन राज्यकी स्थाप की स्थाप की स्थाप ्रिक के के बोबान के समाप्त के दिशायादिक र अस्ति करती आहे के तहीं है के सहित्री के स्वार्त के स्वार्त के स्वार् वर्ष

The set wis parties of the set of

· 新李·明宝字 好女 对"东京"和"李特" 李 千里城市

人工作为了一场,在公司 (1)年 1月 村上的本人的工作,一个时间,一一一时间,在一个首次下的工作。

अर्थात् जाणे पोते पूर्व कोइ दखत ते सुख भोगव्युंज नयी-नवुंण छे एम माने छे. '' २०२.

जांणइ जहाँ जोगिहिसंपया संव्यमेवं धम्मफेलं। तहंवि द्रमूढिहियछो, पाँवे करेंमे जाँणो रमेंई ॥ १०३। अर्थ-" आ जीव जाणे छे के ' भोग-इंद्रियाथी उत्पन्न थतां मुली राज्यस्थिमी अने संपदा-धन धान्य दिगेरे-ते सर्व धर्मनु ज फळ (काय)है घरं रूप काः णथील भोगादिक कार्य माप्तथाय छे.'तोपण हृहमूह के० अत्यंत र नथी ह्याम ने इदग है सं एवा आ जीव पापवर्ममां रमे छे-क्रीडा करे छे (पाप व इन्हक थाय है: अर्थात जाणता छतां पण अजाण्यानी जेम पापकर्ममां प्रवर्ते

जाणिक्क चिंतिक्कइ, जम्मैजरामरणसंनवं दुवलं।

नं य विसंप्सु विरक्षंई र्छहो सुवद्धा कर्वमगंछी ॥ व भर्भ-" जन्म. जरा अने मरणथी उत्पन्न थगळा द खने आ जीव गुरुन मांभवनाथी जाणे छे तथा मनमां चितवे छे (विचारे छे), तोपण आ जीव विषे निरक्त यनो नथी. अहो ! कपटग्रथि (माहग्रंथि) वेबी सुबद्ध (के हिश्च वरवाने अक्षय) छे ? ते मेाइग्रंथिना वशवर्तिपणाथील आ जीव भामक याय है. " २०४.

जाणेह ये जह मरिक्क ह, अमरतं पि जरा विणासेई ने य उ दिवग्गो लोखो, छोंदो रेहरसं सुंनिम्मायं ॥२। अर्थ-" तळी लोको जाणे छे के ' सर्व माणी पोतपोताना आयु मरनाना ज हे अने जरा (द्रद्धावस्था) नहीं मरेछा (जीवता) माणीने पमाह है. ' नोपण छोका उद्देग एटछे संसारथी वैराग्य पामता नथी. अह कार्थर्य ! का गहम्य केवु गृप्तपणे निर्माण करायुं छे ? " २०५

टुंप्पय चर्ज्पयं बहुंपयं, चं अपयं सीमद्रमहणं वीं। याग्वकण विकयता, हैरइ हैयासी खेपेरितंती॥ अरे-" हमी आदाओ जेणे एवी क्रतांत (मृत्यु) मनुष्यादिक वे प

रायः २३४-६चद्रगरी=१पटवविष्रीहेववि ।

म या २०६-उभिमनो उडिया-संसागत विन्त ।

भ २१ २-६-अण्यक्यः जनसङ्गेषि-अपरायमतरेणापि । अपरितर्गा अपरिक्रिल दश्यवद्याव ।

य निगरे चार पगवाळाने, भ्रमर विगरे पना पणवाजाने भने पण तिन्तानों ते तथा पनाळाने अने अपन ने पनरितने ने मन स भवे पति मूर्त विगरे लिया पनाळाने अने अपन ने पनरितने ने मन स भवे पति मूर्त विगरे पताप विना पण अश्रांतपणे—यापया तिना-छेदरहित परने हणे छे—यारे छे। मताप विना पण अश्रांतपणे—यापया तिना-छेदरहित परने हणे छे—यारे छे। मताप विना ने मुत्युने फिचित्पण छेद पटळे अम जागना नथा। '२०६ मताप न महाप हो हिया वायसेण सटेपण । श्रीसापासपरको, न करेइ य जे हिया वायसेण सटेपण । श्रीसापासपरको, न करेइ य जे हिया वायसेण सटेपण । श्रीसापासपरको, न करेइ य जे हिया वायसेण सटेपण । श्रीसापासपरको, न करेइ य जे हिया वायसेण नथी। अर्थात् करेप दिवसे के बालते। नथी; पण सप्त जीवोण अपने कर्मने कर्मने वायसेण छेपणे व्याप हो। अर्थान व्याप पटेपणे पर्योग हो। अर्थ व्याप पटेपणे पर्योग व्याप पटेपणे पर्योग हो। अर्थ व्याप पटेपणे पर्योग व्याप पटेपणे पर्योग हो। अर्थ व्याप पटेपणे परेपणे हो। अर्थ व्याप हो। इस व्याप पटेपणे परेपणे हो। अर्थ व्याप पटेपणे परेपणे हो। अर्थ व्याप हो। इस व्याप हो। इ

में ऐंडो प्तो आ जीव जे हितकारक पर्णानुष्टान ने ने करना क्या. '२००. संसरागजलयुक्त्योवसे, जीविए अ जलविंद्वेचले ।

हुन्नण य नष्ट्वंगसंतिमे, पात्रजीय किसयं ने युधानि ॥६०८॥
भर्म- वळी जीविन संध्याकाळना याना धारा रंगर्ना वया अवना ६४४६ भर्म- वळी जीविन संध्याकाळना याना धारा रंगर्ना वया अवना ६४४६ भोगा) नी उपमानाळ [शिमिक] छ, देमन (दर्भना नव्यकाट पर रहे ११ उपना भी हो चंचळ छे; तथा युवायस्था नदीना था जेळा [बारो काल संद्याताण] भिक्ष इंपाया शिव! ने मन जाणना छतो पणतुं छेज मनि स्थापन स्थाप स्था । १८८८

नं सं नजाइ यामुई, लज्जिनाइ, एन्टिपिज नंयि।

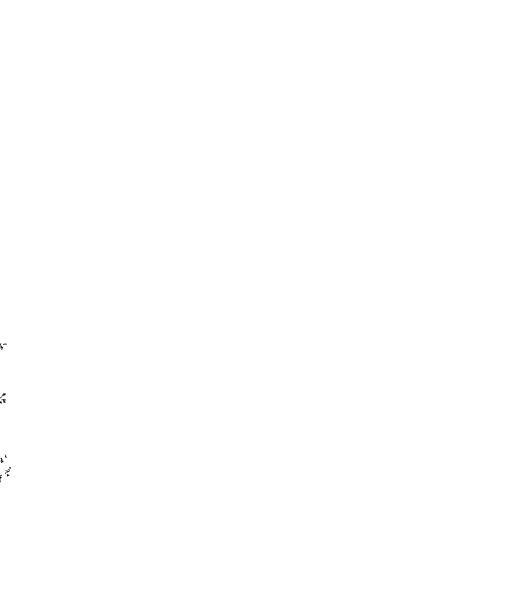
तं नं सम्माङ् द्धंमं, नवरमणंगृत्य परिगृत्वा ॥ १०१५ ॥
तं नं सम्माङ् द्धंमं, नवरमणंगृत्य परिगृत्वा ॥ १०१५ ॥
तं नं सम्माङ् द्धंमं, नवरमणंगृत्य परिगृत्वा ॥ १०१५ ॥
ते कं-एके के कंग अग्रुपि नणाय है, के कंग विशानों द्धारा नावे हैं, विगानों पृष्ट एस्स
तिना करवा द्वायक छे-एवा नीकोना प्रवन्ति हैं विगानों पृष्ट एस्स
तिना करें छे, हे मात्र पनिगृत्व [३३०१] ए॥ धानदेशना द्वायने क्रायेन
तिना करें छे, हे मात्र पनिगृत्व [३३०१] ए॥ धानदेशना व्यक्ति स्वनद्ध

पत्रमदाणं पत्रवा, सद्मानंग सद्ययेसपाव हो। भाषणाता दुरुपा, तेण तिज्ञूयं जमं सद्ये ॥ ३१० ॥

२५२ चपदेशमाळा. अर्थ-'' सर्व ग्रहोत् (जन्मादोत्) जत्पत्तिस्थान, महाग्रह (मौटा उ अने परस्तीगमनादिक सर्व दोषोने मवर्तावनार कामदेवरूपी ग्रह एटले का थयेळो चित्तभ्रम महादुष्ट छे के जेणे आ आखुं जगत पराभव पमाडयुं छे-पं कर्यु छे. माटे कामग्रह ज दुरत्याज्य (महाक्ष्टे तजी शकाय तेवा) छे. " जी सेवंइ कि बहइ, थींमं हाँरेइ ईव्वबो हीइ। पैविह वेमें जरसं, इरकी णि के के कित्तदोसेणं॥ २११॥ वर्थ-" जे पुरुष कामने [विवयने] सेवे छे ते शु पामे छे ? ते क ते पुरुष पोताना ज दोपथी बीर्यने हारे छे-ग्रमाने छे, दुर्वळ थाय छे, अने (चित्तनी उद्वेगता) तथा क्षय्रोगादिक दुःखोने पागे छे." २११ जह कच्छव्वो कच्छं, कुँउयमाणो दुहं मुणइ सुक्सं। मोहाउरा मणुस्सा, तह कामदुहं सुहं विति ॥ २१२ ॥ अर्थ-" जेम समवाळो माणस समने नसाग्रे करीने सणतो छतो दुःसने हप माने छे, तेम मोहवहे आतुर-विद्यळ थयेला मनुष्यो, जेतुं रुधिर विरुत थर छे-विकार पाम्युं छे तेवा अंगवाळानी जेम विषयसेवनना दुःखने मुस विस्यविसं हालाहलं, विसयविसं उक्कडं पृयंताणं। िसंगविसाइनंपिव, विसयविसविस्इया होई॥ २१३॥ भव-"भन्मदिक विषयो रूपी विष [सयम रूप जीवितनो नाश करतार होती भी देश इंडाइ इंडाइन मार्ग लगा जिए समान छे, अने उज्यल एउ कामसेल

ं देश इंस्ट्रें ते का अन्य मालनार विषयान छ, अने उउपल ५३ भग इ.स. १८३८ हैं के का अनु विषयान है, ते विषयुं पान करनारा प्रते में इत पर नानों नोते जीत में स्व हरेकों ने जिपयछपी विषयी, स्था जारार हरा। हेर्न तरान यात्र तेम निवनक्षी निधनो पण निधनिका [अजीर्थ] साथ है; तेशीर्थ, पंच चुं वंचं है आगंबिहें ग्य मागणित् राणुसमयं।

चंद्रगण्डनुहोरोतं खानुपरियहेति होगारे॥ ११४॥ के के किन्द्र के के के भागत कर कर कि है। अस्ति कुछ ता मान्यत्व । के क्षिणि के के किन्द्र के किन के कि के कि किन की मार्थिक के अस्ति की किन्ति की स्थानिक की किन की किन की किन की किन की की



For Theorem & The Control of the Con Trans. पर-महरूर भारत है। इस के प्राप्त के किया है। इस के किया है किया है। इस के किया है किया है। इस के किया है किया ह भारति कि हे कि स्था - , कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कि स्थाप के कि स्थाप के कि स्थाप के कि स्थाप के कि

मनीयृष्ठि विकेषे वन र्वतने वन, रामकार राज्या कर सह है। काला गाँ त्रने विषे, पांच रहिमाना रक्षा विष्, गांच तथा भाषामा । त्राणीताले, गे दिक कारणे निविद्य सम्बन्धा करता । प्रतारते । ता प्राप्त प्रदेश केंत्र, काळ अने वावत्य नार फकारना प्रध्यक्ष होता वया यहा पुरक्ष भानार विषे अर्थात् पूरोक्ति प्रशिक्षित्र व साथा । अवस्था । अस्य प्रश्न प्रश्न । अस्य प्रश्न । अस्य प्रश्न । अस्य क्षेत्र । अस्य चरण मोधने सापनाह गरु नगी. "हेर् हे हे-

क्रियाश्चरम्यं यो भागो, भागन्यस्य या किया।

अनयोरन्तरं इष्टं, भानुमागानगामि।॥

"कियारहित पुरुषनो भाग भने भागहित पुरुषनी किया, ए क्लेमां स्व अने खयोत (पतंम) ना नेटल्ड अन्तर जायेल हे, अयांत् नेटल्ड अंतर छे. क्रियाश्रस भाव मुर्य जेवो छे अने भावश्रन्य किया राजुमा जेती छे. "

"माटे ते सर्वने विषे (संयमने विषे) श्रद्धाप् क आनर्ण करवामां निरंत मबाब्व अने एपणा एटछे बंताबीश दोप रहित एवा जाहारनी शुद्धिमां रहेख साधुने मत्रज्या भवसागरनुं तारण याय है (अर्थात् ते साभु भवसागर तरे है. तेनीज दीक्षा अने मनुष्यजनम सफल छे. एवा गुणोथी रहित मनुष्यनी दीक्ष जन्म वन्ने निरर्थिक छे. " २१८-२१९.

जे घरसरणपसत्ता, छँकायरिक सीकंचणा अंजया।

नवरं मुर्जूण घरं, वेरसंकमणं कैयं तेहिं ॥ २२०॥ अर्थ--" जे यतिओ गृह (जपाश्रयादिक) ने सज्ज करवामां आसक्त छे, छ जीवना शत्रु छे, एटछे पृथिन्यादिक छ कायना विराधक छे; द्रन्यादिकना परिग्रहर्स

गाथा २१८-दमउस्सम्गुयवार् । गाथा २१९-उञ्जत्त । गाथा २२०-सर्किचण असज्ञया । अज्ञया=असंयता-असंयुतमनोवाक्।ययोगाः ।

का इत करन अने कायाना योगनं संयम करना नयी नेओए देवज पूर्त पर माध्येयना मिपथी वृहस्त्रमण एटछे नवा यसने विवे भवेदान क्यों वे पम बातु बांड कर्यु नथी. " २२०

उम्हत्तमायरंतो, वंधेइ कम्मं मुचिकणं जीयो ।

हैसीर ने पैवहुइ, मायामोसे ने क्रिंइ य ॥ २२१ ॥

थ-" हा जीव उत्मूच । मृत्रीक्ट्र) आचरण फारो मतो अन्येन विकता विके परले अनि गाँउ निकाचित एवां ग्रानावरणादि क्ष्मेंने नात्माना परेगों ंशियु करे हो, तेमल स्सारने उद्घटमा हे हो, प्रतेमायान्या प्रशेष माया महित भाषम् (क्लारम् पापस्थान) परे छे; अर्थात् हेन इत्यापी से अन्य समार-ક્રમતે છે. " રસ્ત

तंइ गिंडइ वंयलोवी, श्रहव ने गिंडइ नरीरगुच्छेश्री।

पासायसंगमो वियं, बर्द्धावा ता वरमसंगो ॥ ३२२ ॥ भंग-" तो पाहत्याण आणेळा आहागदिवने [सुनि] प्रदण हरे ने बतनो र सावतनो) खोष भाष हो, अभवा ने। ते प्रश्य न परे ता वर्गानो स्पत्ते र वाद छे (इन्ने रीते पृष्ट छे:) पृथ्य खारे पाछ वातो सग मात्र प्राथानी स ना कोष बाब हो, त्यारे की वे प्रसत्यांकी प्रतेन हरेगा (का न पर्नी) देख के. " २२२, भवान् वर्गानी व्युक्तीर भन्ने पाभी का पास्तवानी मग न में ए कराव है.

भाराची संवासी. वीसेनी संधवी पर्सेगी अ। हीणायांगहिं समं, मध्यतिंगदिं पिठ्हों ॥ ३३३॥

अपना रीम भागासामा पारत्यादिकते हावे असार-सार्वीत सहस्य Miner the fifte-feets trade und erfent trade und beide विषेत्र क्षेत्रे हे: असीन् पास्त्वादिकत् सान् वृत्तिकोत् सान्त्वादिक सेते पत्त कार्यकार ME WELL " 1922

युक्तवंधिपृद्धि, इसिएडिसिएर्सि विस्तार्था । गमलमञ्जानांत पंजिति के बहुती होई ॥ स्तर ॥

में के कि लिस के की बच्च की देखाँ के कि

अर्थ-" अन्योन्य भाषण करवा वहे एटणे विकथादिक करवा वहे अने शिली द्विणित एटछे हास्यथी रोमोद्गम करवा वहे पासत्थादिकनी मध्ये रहेळो साधु तेपास तथादिके ज वळात्कारे भेरणा करायेळा सतो व्याकुळ थाय छे: एटळे स्वधमेयो श्री थाय छे, माटे ते (पासत्थादिक) नो संग तजवा योग्य छे." २२४

लोए वि कुसंसम्मोिपयं जणं दुनियत्य महेवसणं।

निंद् निरुक्तमं पियकुसीलजणमेव साहुंजणो ॥ २२५॥ अर्थ-" लोकमां पण जेने कुसंगति भिय छे, जे दुए-विपरीत वेषधारी है । जे अतिन्यसनी एटले अत्यंत यूतादिक व्यसन सहित छे तेवा जनने होको निर्दे तेम साधुजन पण निरुव्यभी एटले चारियने विषे शिथिल आद्रवाला अने इशीह जन जेने थिय छे एया कुवेषधारी साधुने निर्दे छेज." २२५

निचं संकिय जीखो, गम्मो सर्वस्स खिवचारितो।

साहुजणस्स छाठवमओ, मओ वि पुण पुगाईं जाई ॥ २२६। अर्थ-" केाइ मारुं दुए आचरण न देखो एम निरंतर शंका पामेछो, अने मारी आ माठी मटित रखे जाहेर करी देशे एम भय पामेछो, सर्व वालकादिकने गम्य एटले पराभव करवाने योग्य अने जेणे चारित्रनी स्खलना-विराधना कर्र एवा, कुशीलियो साधु [आ लोकमां] साधु जनाने अनिष्ट थाय छे, अने म

पण परलोकमां दुर्गित पामे छे; माटे माणनो नाश थाय तोषण चारित्रनी किरा कर्रा नहीं ए तात्वर्य छे." २२६. पारिसुळापुण्फसुळाणं, सुविहिय ळाहरणं कारण विहें हूं। विज्ञा सोलविगले, उज्ज्ञय सीले हिविज्ञ जई ॥ ११७॥

अर्थ—" दे मुविहित-सारा शिष्प ! गिरिशुक [पर्वतमां-पर्वत स्वीपमां नारा भिल्लोनो पोपट] अने पुष्पशुक (वाहीनो पोपट) नुं उदाहरण गुणदोणतुं के छे, एटछे उत्तम अने अधमनो संग अनुक्रमे गुण अने दोषनुं कारण छे ते वता छे एमजाणीने पितण शीलिकल एटले आचाररिहत साधुओने वर्जवा, अने शील-बारि जना आचरणवां उद्यक्त-उद्यमपान थवं " २२७. अहीं ते वे शुक्रनुं हुष्टांन जाणवं पर्वः

माया १२६-दुवियन्य दुष्ट्यिपरीत वेषवारिष् ।

भाषा २२३-अवस्तो । दाग्गर । अन्यनको न्यवस्तता जीनदी ।

विविधुक अने पुष्पमुक्ती प्रथा.

म्बंद्र नार्मां फनफरेतु नामे राजा हतो. ने एउटा उनकीता हर स चारे वार नीकळ्यो. प्रभार स्वार यहंने राजार अभ ठोटाच्यो. एउटे थे दियांत अभेको प्रस् प्रति त्यराणी दोटीने प्रतिशा नंगलपी राजाने वह गया छेवद है अभ एक स्थाने उभी रहीं। एट रे राजा पण पाकी गर्वछी है। वार्थ नेमा परयी हे के भरत्यमां एकलें। जाम तेम तत्वा लाग्यों, नेवामी योदे तृह येचा मानसी-काइस मांपजीने विधास छिया माटे राजा ते तरफ जान्यों. बेरडामां प्र । इ.सापर चंत्रका बंग्यामां रहेले। एक चेत्रक बेग्यों के " जो निती ! दोशी। ी कीर केटिंग राजा आरे हे, तेने पहुँच स्वो, तेथी नमने हार हरीआ भारते." ध्यात्रं पायय सांभळीने पणा भिल्लो राजा गरत हो है। हेवने भावता जाहने ी रण पान सरका बेगवाला पेला अथवा स्वांर पहने एकदम माध्ये पद लग में हे बूद कोण्य दृर जाते। त्यों, त्या पेटी एह नामती भावन जाती, दें अस्ती करती एक मुंदर वाटी श्री. मेमां एक उच प्रश्न पर वाली सरकारे हैं हैं। भ रह बीदद दुरोत्ती सहाता बाताले के त्यन अपनी नेशके बोहपा के " को । जाता, आयो। समारा अध्यास साम अध्यास ता अधिक आये थे। हेरी रे देशभीन प्रदेशी आजः विश्वतः व्यान सभी दर्शित प्रदेशा हर्षे विकेश सम्बन्ध प्रदेश ते शामाने के तमा के कार्या करता अने स्थान संहत्या दिस्के भि स्टब्रिके प्रतिनिक्त सन्दित प्रशासक प्रतिनिक्त स्थापनिक स्यापनिक स्थापनिक स्थापन विशि ग्रह परि १ पए पने पने मार्गाए पहरीने जा सहिता राज्यों, रेखे में के प्राप्त हैं है अपने परें बार्ग कि पास है है है । क्षा है। यह ताल प्राप्त मारे हें शाला ! वह देव अने कड़ेब रेगिल साराह स्थान Maria are de l'

मद्द्रवायसंतर्गः, तस्य नोवितितास्यमः। गंगाप्रविद्यानांन्, विद्यापि गंपने ॥

" मोटा माहारम्यवाळानो संग केानी उन्नतिनुं कारण यता नयी ! सर्वेती जन्नतिनं कारण थाय छे. जुओ के गंगानदीमां मळेला शेरीना जळने देवो पण गंग करेछे.' वळी फख़ुं छे मो---

वरं पर्वतदुर्गेषु, च्रान्तं वनचरैः सह ।

न मूर्खजनसंपर्कः, सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

" पर्वतना दुर्गामा वनचरो (भिछ विगेरे)नी साथे भमवुं ए कांइक ठीक वे परंतु देवेन्द्रना भवनमां [स्वर्गमां] पण मूर्खजननो संग सारा नथी."

वे सांभळीने राजा प्रसन्न थया. तेटलामां राजानुं सर्व सैन्य के जे पाछन

आवतुं हतुं ते आधी पहें। द्युं. तेनी साथे राजा पोताना नगरमां गये। आ प्रमाणे संगतिन्तुं फल जाणीने यतिओए सृष्टाचारीनी संग तजी तपस्याम

यत्न करवो. सिद्धांतमां वह्यु छे के-

वरमिंगिमि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मुणा मरणं।

मा गहियदवयजंगी, मा जीयं खिलयसीलस्स्॥ "अग्निमां मवेश करवो श्रेष्ठ छे,अने विशुद्ध कर्म जे अणसण तेवहे एटछे अणसः"

अंगीकार करीने मरण पामबुं ते श्रेष्ठ छे. परंतु ग्रहण करेळा त्रतने। भंग करवी नथी, अने हेनुं शील स्वित-भ्रष्ट्र थयुं छे एवा साधुनुं जीवयुं ते श्रेष्ठ नथी."

य्योसन्नचरणकरणं, जङ्णो वंदंति कारणं पष्प ।

ज़े सुविइयपरमत्या, ते वंद्ते निवारंति ॥ १२<u>० ॥</u>

अर्थ-" यतिओं कारण पामीने पटछ निर्वाहादिक कारणनी अपेक्षा रास्ती जैमनुं महात्रतादिक मूळ गुणरूप चरण अने पंच सिहत्यादिक उत्तर गुणरूप कर्ष

अवसन-निधिछ-भ्रष्ट्र थयु होय तेवा शिथिछाचारीने पण वंदना करे छे. पर जेओए सारी रीने परमार्थने जाण्यों छे, एउछे के आपगने सुविहत [उतम

साधुश्रोने वंदायवा ते योग्य नथी.' एम पोताना दोपने जेओ जाणे छे तेबा वास त्याओ पोताने वंदना करनार साधुओने निवारे छे: अर्थात् 'तमे अमने वंदना कर्य नहीं' एम कही तेषने अटकावे छे. " २२८

मुविहिय वंदावंतो, नासेडू व्यर्पयं तु सुपहाव्यो । दुर्विद्यद्विप्यमुको, कहमप्य न याणइ मूढो ॥ २२७॥

भाषा २/८ उत्तन्त । सुधिर्व । । भाषा ११९-मधितिस ।

क्षं-" सुविदित साधुनोने वंदापनार (पासन्धादिक) एटछे बांदनारने निरेष कानार पासन्यादि सुपयथी (कोशमार्गणी) पोताना आत्यानो न नाव करें थे। शंते प्रकारना (साधु श्रावक नामना) मार्गणी सह ध्येन्त्रो ने मूर्च केय दोशाना शंते प्रकारना (साधु श्रावक नामना) मार्गणी सह ध्येन्त्रो ने मूर्च केय दोशाना शंते प्रण नाणनो नथी के हुं येने मार्गणी सह था। है, नेपी मार्ग को गरित !" २२९.

हते श्रावराना गुग वर्गेदे हे.

वंदैइ उभेच्या काँखं वि', चेड्याइं धर्टमूईपरमो । जिंणवरपडिमाघरभुवपुष्फगंषचणुःजुनो ॥ २३०॥

क्यं-" जे चेत्योने (जिनवियोने) यन्ते फाळ पन पटना करे हैं: मूटमां 'अरि'
म्ह इच्यों छे, माटे मध्यान्द फाळ पन लेको एटले पण काळ दिना करे छे. स्वर्ध
एक भक्तामर विगेरे स्तरन अने पूर्व एटले मंगारदात्र दिक स्तृति, तेमने विभे महान
एक स्त्रा अने स्तृति फानारों तथा तिनवहनी महिनानो अने हेमना दैग्योने विभे
मह स्मूस पूप, मालती विगेरे पूर्णों अने सगन्त उच्योत हरीने मर्चन (पूर्ण) कर-

गुविणितियणगमइ, वेम्सेनि अनंतर्भयो अ पुगो । न ये कृतेमणमु रेहाइ, पुश्वयवाद्यरवेषु ॥ स्ट्रा

अये-" जिन्नाचेने विषे तुविनितित एको निवार वहाद विश्वादो बने देने " विशेष विश्वाद विभिन्न नकी तेशे आहर वृत्वीतर ज्यादन के पूर्वीतर विश्वाद " विशेष विश्वाद विभिन्न नेकी तेशे आहर वृत्वीतर ज्यादन इष्टासीने विषे " विश्वास प्रवीद सम्माने होत्या रोगाणी जनाई चौहाजा (वस्त्व-इष्टासीने विषे " विश्वास प्रवीद सम्माने होत्या रोगाणी जनाई चौहाजा (वस्त्व-इष्टासीने विषे

पहुंचा कुलिमीलं, नंसवार मुख्यता विकित । परंसाको से नीविक्ति, देनिंद, सर्वपदि विकास विकास कर्म कर से- पर्वपद जीवपान केवलिका क्यान हैंदन किया प्रतिक्रिक विकास क्रिके क्रिके क्रिके क्यान किया किया क्रिके क्र

वंदेई पिमपुँहर, पन्जुवासेह सौहूणो सय्यम्वे । पढँइ र्सुणेइ ग्रेंणइ खें, जर्णंस्स धेरमं परिकेहरू ॥ २३ अर्थ-" श्रावक निरंतर मुक्तिमार्गना साधक एवा साधुओने वंदना तेमने पोतानो संदेह पूछे छे, अने तेमनी पर्युपासना [सेवा] करे छे. वळी ते स धर्मशाह्मभणे छे, ते जिनभाषित धर्मने अर्थथी अवण करे छे, अने भणेलानो विचार करे छे, तथा अज्ञान जनोने ते धर्मशुं कथन करे छे; अर्थात् पोतानी बुद्धि

वीजाओने बोघ पमाडे छे. " २३३. दर्दसीलव्यानियमो, पे लह्डावश्सएसु अवस्वियो।

महम्मामसंपन्धि हराह विकास पेशिकंतो ॥ २३४॥ अर्थ-'' श्रीस्र ते सद्दाह अर्थ ह ते अथ्र दा नेनो नियम जेने दह होय, जे पीपच (धर्मत्तं पोपण वस्तार होत ना पानच). अने अवस्य करवा लायक म यिक विगेरे छ आवश्यक (शितिक्रमण)े विष अस् पहित-अतिचार रहित है मध, मद्य (मिद्रा), मांस अने बद्धां, खबरा विनेरे पांच प्रकारना व नीव्याळा फळो तथा वहु वीजवाळा द्यतांक [शींगणा] विगेरेशी निद्यत्ति पा पटछे अभस्यादिकना त्यागवाळो होय, ते श्रावक कहेवाय छे. " २३४. पर्वनीने निषे सावयत्यागरूप नियम विशेष ते पै।पध कट्टेवाप छे; अने व टक भारत कराना होगाशी मतिक्रमण ते आवस्य ह कहेवाय छे.

नाहेम्मकम्मजीवी, पर्चवखाणे छौजिक्स्वर्वुउनुसी।

मृतं परिमाणकर्म, अवरङ्कह "तं "ि संकृता ॥ १३५ ॥ नर्थ- । श्री आह पन्नर महारना क्षमीबान पेनी कोड पण प्रकारन इसदो नानीविहा हालो न होय, पृत्छे भुद्ध-निदीप व्यापार हर्तो होय, व ५ हो । सन्यात्यातमा निर्वर त्रथमियात होय, वळी उने सर्व पत्र वास्य र इंडिइइन ने इंडिय, परेंड जे परिष्रहर्मा ममाणाली होय, अने जे जानि म को निर्मा के के प्रमुख्या कर के प्रमुख्य हैं। अभी की कि अप के कि अपी की कि अपी कि अपी कि अपी कि अपी कि अपी कि अपी दर : तम नेदा (डी पम ता ठोषण खड्मे व दावनी मुद्र-मुक्त वाप. (१

हे - देल हम गनिवाण जनमञ्हात्या नंदेउ जिलाणे। ्रे रहरू च देरहें हैं। है अहा अग्रेस र गांवा रेटर्स करते करोड़े में वर्ष रेहरू चाहितगा है ंड कहाँचड । गाः । क्रांचित

"बळी श्रावक निनेधगोना निष्यमण (दासा) देवच्यान, विकीय विकास मि त्व बन्याणक स्थानीने वंदना करेंछे, अर्थात् र्रार्थवापानी करनारी रं वीता पणा गुण होय-पणी जातनां उच्यादियनी माहिनो नापन रेाय. प्रायुजन रहित एटछे सायुजनना विहास्तहित थेडमां उपने नथी." ६३५ तित्ययाण पणमण, उच्नावण खुल्ल निर्मानं वे।

कोरं सम्माणं, दृष्णं वि जियं चे वेज्ञेह ॥ २३७ ॥

-"वळी आवर वीद्ध वादस विनेरे पार्ताविकीनु मनदन । १६वा रम्भ । । (पीत्रानी पासे ते तीना गुणनी मधेसा काफी), स्वान (के बीटादिशनो ता देवनी स्तृति कर्या), भिन्द्रांग (नेदने दृष्यान अप्रू, सन्दार वसादिक आपतुं) सत्मान (रेओ आपे त्यारे उमा यह मान आरह) रान मुपाननी वृद्धिमा भोजनादिक आपण्), तथा पाद्यभावन विलेशे क्लाने विनय ने सर्वनो त्याम करे है। अर्थात् प्रसां वानी हवते। नधी, " १२० है धावण गुपारकी चुद्धिभी मोजनादित होने आपे हे ने रहे हैं।

पड़ेसे जेईण दाउँण, ख्रव्यणी पणिसदणे पेरिट्र।

थसंदेख मुविहिचाणं, 'तुंनेइ कवेदिसालोध्यो ॥ २३० ॥

४५-[॥]श्रादक मधम यतित्रोने (इंटियोर्च १६न कर्ताना घरण्यात्र मातुनीके) प पृथ्टि आर्थाने पती थोले भोजन परे हैं. प्रदान नागुमा न होय तो है पहिल मत्यू भोती दिशानी आधार कार्या वर्ता भेड़ान और है. इस्टेंड माधूना ने ह बाद विश्वता होप में दिया कर जाहते और माहूओं आहे हैं सार, उस एके पेंद्रम बहुत देने हैं (बायन हरे हैं). " शहर.

सारुण करपंणिकों, के निव दिसे केलिप किन्दि नेलि। भीति बहुनकेर्रोती, तुसावेगा भे भे "दुर्वति ॥ २३९ ॥

स्रोता सामुकोन प्रवासीय-प्रातीय होती यह है यह प्रवाहित के ता का ति क्षेत्रकार के स्थापन प्रकार के ति हैं हैं के प्रकार के ति हैं कि क्षेत्रकार के लिए में सामुक्ति संदर्भ के ति हैं

果佛皇 高菱跳 经数据增 星 星年碳磷酸 墨蒙古语,或者不安。据 摩尔瓦士共和亚 人

en an artist the state of

छे तेज प्रमाणे वर्तनारा सुश्रावको वापरता नथी; अर्थात् साधुओने आपा कोइ पण चीज पोते वापरता नथीः जे वस्तु मुनिमहाराज ग्रहण करे ते वर वापरे छे. " २३९.

वसहीसयणासणभत्तपाणनेसज्जवस्यपत्ताइ।

जैंइ वि नपर्जीत्तथणों, योवा वि हु थोवेंयं देई ॥ विश्व अंप-"यद्यपि (कोके) नथी पर्याप्त-संपूर्ण घन जेने एवा एटळे संपूर्ण नहीं होवाथी संपूर्ण आपवाने असमर्थ एवा कोइ श्रावक होय, तो ते पातानी योडाभांथी पण थोडं एवं वासस्थान, शयन (सुवानी पाट), आसन (पाद्पी भक्त अन्न, पान जळ, भेपज्य-औषध, वस्त अने पात्र विगेरे आपे छे, पण संविभाग कर्या विना वापरतो नथी " २४०.

संवच्छरैचाजम्मासिएसु, ऋठाहियासुँ ऋ तिहीसु । सञ्वायरेण लग्गईं, जिर्णवरपूयातवग्रणेसु ॥ २४१ ॥

अर्थ-"वळी सुश्रावक संवत्सरी पर्वमां, त्रणे चातुर्मासमां, चेत्र आसी अहाइमां अने अष्टमी विगेरे तिथिओमां (ए सर्व शुभ दिवसीमां) विगेषे सर्व आदरवटे (सर्व उद्यमवटे) जिनेश्वरनी पूजा, छह अहमादिक तप अने इ गुगोने विषे छागे छे एटले आसक्त थाय छे. " २४१.

बडी आपक शुंकरे छे ते कहे छे-

साहुण चेइयाण ये, पर्मणीयं तेह अवस्वायं च।

जिलापवराणस्स छहिछां, सदवरथों मेण वार्रई ॥ २४२ ॥
नय-" मा मुनोना जने नित्य एटले जिनमासाद तथा जिनमतिमात्रीन
नोकन-अद्भाव करनामे तथा अवर्णपाद एटले कुरिसत वचन वोलनारने
केडिनामें) नने जिनवामनना अदिन करनारने (अपूने) सुजावक वेति
कड़ामा बढ़े करिने निवारण करे छे. पण ' वीना पणा नण छे ते मंगाठ
पत्र कारने तेना उत्ता करता नथी. " २४०.

विष्यां वंशिवहायां, विष्यां निर्दे च खिल्यवर्गणायां विष्या चोषिद्रांखां, विष्यां पादार्गमणायां ॥ २५३ ॥

स्ति । प्रदेशक इन्तरिन्द्र । निर्देशक । स्ति । प्रतिकारिक स्ति । विद्रास्ति ।

त्रजी सुश्रावको हंमेशा माणीवण धकी विरति पामेश होए छे, अबीह ॥ भाषण थकी विरति (निष्ठचि) पामेळा द्वीप छे, बोरीबी विरति पामेजा ने परसीगमनयी निरुत्ति पामेला है।प छे." २४३.

या परिगेहाओं, अपेरिमियायों खेणंतनहाओं।

द्रोससंकृताओं, नरर्यगङ्गमणविधात्र्यां ॥ २४४ ॥

" इही ते मुत्रावको जेतुं परियास कर्ये नथी, जेनाथी नर्ने र इष्माद्योन प छे, ते पणा वप वंघनादिक दोषोधी महुल-मरेत्रो छे, तथा ते नरह गाना मार्गहर छे, एवा धनवान्यादिक नव प्रकारना परिवर पनी विस्ति ાવ છે. ^છ ૨૪૪.

का हुज्जणिमनी, गहियां गुरेवयणसाहुपिवनी। को परविरिवायो, गहिओ जिणदेसिओ धन्मो ॥ वथ्य ॥ रं-" ने श्रावकोष दुनन (लड) ना मेंभी-दोर्स मृद्यों है, नेभोष नीर्ष-पुरुषा वनननी सारी (शोनावारी) मनिवृत्ति [देनिहा] प्राण वर्ग छे. क्ष शरिकाद-परना अपनायन (परनियान) रूपन मूर्ना दार्प हो, भने क्षेत्रीय

 ब्रिकेश्वरे फरेला पर्म प्रश्न कर्मों हो." २४% तर्वनियमसीलकित्या, मुसीयगा 'च देवेनि इदे मुगुणो ।

'निर्म ने' दुन्त्वहाई, निर्वाणिवसाणस्वरवाई ॥ २४२ ॥

महन्ता भा सोबमां जे सुपावशा बार महारमां तप, नियम ने सनप्रश्चार्थित

रेक्ट पान अने जील के स्थानार नेपी एक उपा माना गुलीक, का हाय थे. के विश्वील (सुक्ति) असे विभान (श्वती) सा गुर्खा दू विन्यू कार्य नर्जार भवीत् ।

विश्वास पूर्ण योग्रजीने अनुबने सुन्ति पन याने हैं. १ २ /ई.

भींड क्यावि गुरु, 'तं वि मुसीना मुनिकत्मन मेरिं।

भी हंशीन पुणार्थि, तेंत् संवेगवंचना नीपं ॥ २४५ ॥ भेर क्षाविष्ठ पुरति कर्षेती विकित्साने सीचे क्षेत्र वृक्षित हो।

中野ートンの 日本を大大き は ながら ま かたおよ そまない 大大き ま かけがら サ モルトン

संयममार्गमां स्थापन करे छे, एटछे जत्पथमां गयेछाने सन्मार्ग लावे। आचार्य अने 'पंथक' शिष्य ए बेनुं ज्ञात (ह्यांत) अहीं जाणवुं, " २ सेळकाचार्य अने पंथक शिष्यनी कथा.

कुवेरे वनावेछी श्रोद्वारिकापुरीमां 'श्रीकृष्ण' वासुदेव राज्य करता ते पुरीमां एक 'थावचा' नामनी सार्थवाहनी स्त्री रहेती हती. तेनो 'य नामनो अति ऋषवान पुत्र वृत्रीश स्त्रीओनो पति हता. ते पोताना घ्रमां व जिम पोतानी सीओ साथे विषयसुख भोगवतो हता. एकदा श्रीनेमिना नगरीनो वहारना उपवनमां समवसर्या. ते खबर जाणीने थावचाकुमार यांद्वा गयो. त्यां तेणे भगवानना मुखयी संसारनो नाश करनारी देश तेथी संसारनी अनिस्यता जाणी यातानी आहा छड् श्रीजिनेश्वर पासे एक ! सहित सेणे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तेणे चाद पूर्वनी अभ्यास कर्यो. पर्छ श्रीनेमिनाथनी आधा छड्ने पोताना हजार शिष्यों सहित विहार करता म्रिनि सेलक न।यना पुरमां आव्या. ते पुरनो राजा 'सेलक' म्रिनिने गांदन मुनिना मुख्यी देशना सांभळीने मितियोध पाभेछो सेछक राजा तेथावचापु पासे वार त्रतधारी श्रावक थया. त्यांथी विहार करीने आचार्य सागंधिका नीलाशोक वनमां प्यार्था. ते नगरीमां 'सुदर्शन' नामनो श्रेष्टी शक नामना परि परम भक्त रहेतो हता. ते श्रेष्ठी थावचापुत्र आचार्य पासे गयो, त्यां तेणे पामीने मिथ्यालनो तथा शौचमूळ धर्मना त्याग करीने श्रीजिनभाषित विनय अंगीकार कर्यो. ते वातनी शुक परित्राजकने खबर थतां ते पोताना हजार शिष्य त्यां आव्यो, मुदर्शन श्रेष्ठी पासे आवीने तेणे पूछ्युं के "हे सुदर्शन ! अगरा मुल धर्मनो त्याग करीने तं आ विनयमूल धर्म कोनी पासे ग्रहण क्यों ?" जवाव आप्यो के ' में विनयमूल धर्म श्रीयावचापुत्र आचार्य पासे ग्रहण क अने ते आचार्य महाराज पण अहींज छे." ते सांभळीने शुक परित्राजक आह स्पर्धार्थी सुदर्शनने साथे छड़ने आंचार्य पांसे आव्या. त्यां बादमां आचीर्ये तेने नि क्यों. एटले विनयमूल धर्मने सत्य मानीने इजार शिष्यो सहित शुक् परिवान आचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे द्वादशांगीमो अभ्यास कर्येर के जोता जा थावचापुत्रे आचार्यपद आप्यु, अने पोते श्रीशत्रुंजय पर जड़ने हज एक मासनी संछेखना करी मांते केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया.

एकदा श्रीगुकाचार्य दमार शिष्या सदित सेलकपुर गया. बादवा आम्यो. तेमना मुख्यी धर्मदेशना सांमळीने मतियोध पामेव मार पुत्रने राज्य मेंथि वंधक विनेते यांचमा यंत्रीया महित पारिय पार मुहर्ने सेल्क मृति दृद्यागीने पारण प्रसार पणा. देवने नेगद आग्री द्रांदे स्थापन करीने शीनुकाषाचे रजार मा रूत्रो महिन शीनद्रानः वसार्थः वें कृतिको सहित अनवन ग्रहण करी मासने भरते है । इसन वासीने मोधे गया. लार श्री श्रीमेळकावार्पना घरोरमां नीरम बने एता आहारने छीवे गरा को उत्तम पया. ने श्यापिनो जन्य इता, नोरन मेन हानमें इस्तर भ बयुत रहेता इता. एकदा विद्यारना इते नेश्री नेश्र पहुर भारता. वेशने श्रीना के महत राजा बंदना करवा आप्या. त्यां गृतना मृत्यभी वर्षदेशमा प्राम करी र गर्मा भीकाश्रीपादिक नर तन्तीना श्राहनार प्रयोग पर्छ। पंजाना निश क समर्पिनुं करीर रुपिरयोग रहित गुण्क पद गपे दे ते।इने नर्ह सनाय विव्रति के " है जामी ! आपने समीर रेमाधी जनरित उत्ताय है. ने। अहींन मारी मान-ण्यां भाग रहो। क्षेत्री हु गृद भागपपदे तथा पटा भीतमस्टे हानतु हरीर नीही करं." ने सोमजीने भाषामें मेर्नु क्यन अंगोहार दर्श नेनं पानवाजाओं क्य हवीं, राजाद शिववादिक्रणी नेवनी विक्रिया क्यारी, नेवा पानारेन िम्होती रेक्को नष्ट थया. परंतु रामाना रात्रात्वा भाराम पेशा वे आहार्व राष्ट्रस्थ • का. पूर्व ने जोण् कांगी वर्षा कर्ता वर्षा वर्षा पर्वे प्रदेश करिएको प्रवे के निर्मा म स्वा स्वीते वीजा मह जिल्लाप्ता । विहास हो। वर्ता श्र हेरहाबारे केर्दा अधित विकार्यके दिक्षेत्रस्य है। नार्यन्त्रीय स्वाहेन्स्य स्वाहेन् विश्वादों पुर मधाः है । स्वर्भ पर भारते नेसार ही रहित्यम् सार्थ प्रस्ति ने भारत्वे केंद्राती प्राविकामी सामान हरेशे त्या, देना बलेले युर्व केंद्र कर्म तथा प्रथम भारत के अवस्था प्रथम कर प्रश्निक के प्रथम कर्म तथा के प्रथम के प्रथम के अवस्था के प्रथम क THE WAR WELL WAS A STREET WAS A

्रिक्ष क्षेत्र त्रिक्ष स्थापन क्षेत्र भवसागरमां पडतां एवा मने आजे ते उद्धर्या (तंचीकाढणो) छै. " एम ममाद द्र करी शुद्ध चारित्र ग्रहण कर्यु. ते वात सांभळी सर्व शिष्या पासे आव्या, पछी चिरकाळ सुधी विहार करी घणा भव्य जीवाने मां डीने पांचसा शिष्यो सहित सिद्धाचळपर अनशन ग्रहण करी सेळकाचार्य पाम्या. आबी रीते सारा शिष्या पाताना ममादी गुरुने पण सन्मार्गे छा

द्स द्सं द्विसे द्विसे, घम्मं बोहेई ऋहव अहिऋः इअ नंदिसेणसत्ती, तहविय से संजमविवत्ती ॥ २४०

अर्थ-" दिवसे दिवसे (हंमेशां) दश दश पुरुपोने धर्मने। वोध करं तेथी पण अधिकतर माणसोने वोध पमाडे, एवी निद्येण मुनिनी शक्ति-वर् (देशना छिडेव) हती, तेषण ते नंदियेणना चारिश्रनी विपत्ति थई (विनाश ए उपस्थी निकाचित कर्मने। भोग अति वळवान छे एम समजवुं ' अहीं नंदियेणनो संवंध जाणवे। ६०

थीनंदिवेणनी कथा.

। जपायमी गुप्त रीते प्रमत्तो ने जीत्वी हरे. यते प्रातेम[हावियांता प्रेडायें] ते भाष." एस विचारीने ने दाधिमी पोर्शनित एड पो जनशियाने बाउसी वेषों क्रीह बसत एक पहारे ने पाताना तूमने बेगी पनी होह बगड़ है रहेगे हा रखत एक दिवसे थती अने जाई वत्यन वे दिवसे पूर्व नेती वर्ता रूपवाले बमकाठ गमोर जावेछ। जागोने ने तृशने। पूछा छईने हेन्द्र अपनेतन स्था महत्त्वा नेणे पुत्र (हावो]ने जनन आप्यात्यको नार्धाने पात्राना क्य नेवी गारणो दस्रोत प्यती पाठक सीने वापसीना भायनवा कर देलाना सक्ती सम करावी पाछी पूर्व भेगी प्रवीत्वी संतं ने बाटकतुं देशे प्रोपन पर्युक्त सर्व रहेला इस्तिराजमनु नापसे।ए पुत्रनी जेम पाउन हुए, वेसी रे इसमा म बीतियात्र थयो वाडो न तापसानी सगतियो ने हाथी पण वे। प्रती पूर स पार्च । शरीर प्राप्तमनां द्वेशने पाणी पाचा लाग्या, नेवी अपनाय नेवु रेजनद गर्व क्षेत्राम् पादगुःते सेननः अनुक्रमे इदि पाना महा रक्षान पर्या एवटा से बन्ध मा मत्या हता, तेवामां तेणे पेछी पुपत्तावी के वे वावाना विधा हो। वेते क्षेत्र के पूर्विष् पत्र तेने जीवा तेवा ने इन्तेने वस्तर पुत्र पर्वेक्ष पहा मान देसके बेलाना लिले वस्थारे केल्प्यो सार्व सम्बंधी, वर्ग को हुए के बंग नहीं ने बन है बनहीं विचान है "तेम माने में पाए मने हो लेटे हने में क्षिति वर्ष कृषि भवा, नर्भ श्री भी भी भी है। भारत प्रमाण करा प्रभाव करा, वस प्रश्नियदे, पूर्व दिवार्गाने के के कहा है। भारत प्रमाश्चिति में मार्गाने वृत्यति यदे, पूर्व दिवार्गाने के कि कहा है। भित्रं विश्व विषया ने वसने नापत्रोप विषय करें। हैं। वहां को के के कि वहां दे की भी भारते को पुतर्ना जेम मेनू आहम्माहने होते नने हेरी के पहा कि दे अवस्त भिष्टे अने आपने केह पहारमा रहता नावार, "उन विनास के कारणाई े कि साथ पाने महत्ते हते हैं तमा है कहे के देखते हैं देखते हैं है आहे हैं भारता पाने महत्ते हते हैं कि एवं गाम है कहे के देखते हैं देखते हैं है कि जान कि केल पह इस्मिल्य के मारे में आपने देश हैं से मेरे के के कार्याने ्र त्रव प्रवासी नहीं, प्रशिक्ष सहस्रोत है के प्रवास कर कर के अपने के प्रवास है के प्रशास कर कर कर के अपने के प कि को को को के क्षेत्री हैं के कि को क कि के के कि को कि क किन्द्रेश के बाल वह स्थारिक अधारकार व्यापकार के द्वारा की यह तह की जाता है जा के स्थार किन्द्रेश के बाल वह स्थारिक अधारकार के द्वारा की वह तह की जाता है जा कि स्थार

तेने पांचसो सीभा माये पाणिकात है। ते, ए से से नाइ वे जिल्लाम्ब ववा लाग्या.

एकदा श्रीवर्धमान मार्गाने नगर । धर उपानको समार्गश्रा नार्ग कुमार भगवानने बांदवा गयो. म मुने चादीने निर्णेण पळपु हैं हे भगवान! सेचनक हाथीने मारापर स्नेड केम उत्पन्न थया ''' त्यारे भगवाने ते वन्नेन सर्व द्वतांत तेने क्युं ने सांभळीने नंदिगेणे विचायु के " ज्यारे सावुगोने आपवाथी आटलुं वधुं पुण्य थयुं त्यारे दीक्षा ळडने जे। तमस्या करी हीम तो मोडुं फळ मळे. "ए ममाणे विचारीने नेणे भगनानने निप्तति करी के "है। आपीने मारो उद्घार करो. "मभु बोल्या के "हे बत्स ! तारे निकाचित भाग वाकी रहेलुं हे,तेथी तुंदीक्षा न ले." ते वखते तेम ममाणे आकामवाणी पण य नंदिपेण दृढ चित्तवाळो यइने पांचसो तीओना उपभागनो त्याग करी चारित्र करवा उद्यक्त थयो. एटले भगवाने पण तेचा मावीमान नाणीने तेने दीक्षा आ स्थिवर साधुओने सोंप्या.त्यां तेणे सामायिकथी आरंभीने दश पूर्वनो अभ्यास ते नंदिपेण मुनि जेम जेम छह, अहम, आतापना विगरे तपस्या पूर्वक महाकष्ट ळाग्या अने उपसंगी सहन करवा छाग्या तेम तेम तेने घणी लव्यिओ पाल ध साथे दिनमतिदिन कामनो उदय पण दृष्टि पामवा लाग्यो नंदिपेण मुनि मनमां ज हता के "देवताओए तथा भगवाने निषेध कर्या छतां पण में दीक्षा ग्रहण करी छे कंदर्ष [कामदेव]ना प्रत्त्रपणाथी मारां त्रतनो भंग न थाओ." एम विचारीने १ देवथी भय पामतां तेमणे आत्मघात करवाना हेतुथी शस्त्रघात, कंठपाश (गळाफां विगेरे अनेक उपायो कर्या;परन्तु ते सर्वे शासनदेवीए निष्फळ कर्या. एकदा अति उम्र काम व्याप्त थयो. ते वखते ते अंपापात करवा माटे पर्वत पर चर्ड पडवा गया. तेवामां शासनंदेवताए तेने झीली लड़ कहां के "हे महानुभाव! आ प्रमा आत्मघात करवाथी शुं निकाचित कमेनो क्षय यहाँ ? नहीं थाय माटे आ तारी विच ह्या छे. तीर्थकरोने पण भागकर्म भागव्या विना सर्व कर्मनी क्षय धतो नयी, व तारा जेवाने माटे शुं कहेवुं !" ओ मंगाणे ज्ञासनदेवीनुं वचन सांभळीने नंदिपेणधि एकछा विहार करतां करतां एकदा छठने पारणे राजगृही नगरीमां गया. आहार माटे उंचा नीचा कुळामां भमतां अजाणतां चेश्याने धेर जड्ने धर्मळाभ आत्यों में सांभळीने वेदया वोळी के "हे साधु! अमारे वेर तो अर्थळामनी जहर छे, अने तमें तो रांक अने घनरिंदत छो, "ते वचन सांभळतांज मुनिने अभिमान आर्ख, तिथी तेणे तेना घरनुं एक द्रुण संचीने पोताना तपनी छन्धियी सादाबार

ोह हेर्नियानी दृष्टि करी। अने पर्यु के 'तो नारे पर्यक्षाननु बरोहर न होय ना भा को अधि प्रता कर, रूम पोटोंने ने मृति याण वजी ने हिन्द्रश आपणे, डेटबासी रिष्टा वेश आएक आर्थाने मुनिना उसनो जेंद्रा पट्टी जेंगे प्रसारित हैंसा कि है भी प्राणित ! जा पन छे हैं अपने पटते नहीं, हम है अमें उत्पादना हैं? र डीए,परछे के जमे भगारा देशके पुरुशनि सुन्य उत्त्रप्त सीने वेते किन श्री पछी नेत्रोष् पोतेन स्पानन स्थिने भारेन्द्र पन भने द्रदन क्योद जीन. हे बा पन तमें छह जाओं, जयरा तो अहीं रहीने आपनादे वार्ग मार्चे स्तर रून कोई नाय ! जा तमारी गुवारस्था स्वा ! जने जा तरने काल पत्ती । जा पन. जा हराया भने ना मार्ग मुंदर आवान-ने सर नहेंचे भाग पर्ये हु जैने चेहावस मा है, तेने पार्वाने प्रयोग मुन्यतन नपस्यादिकतो हो। नरन हो। देहने दोवन हो। षु क्रमालेनां भरपंत के। प्रद्र ने वेश्यानां त्यानां नामाधीने मांपद्रमेना उद्यने जारे हे िरण देनात पर्मा ग्या एसी हमेशां दय इव पुरणाने पनिया पनादशनो अनियर 🗷 श्रीक्षण नितेरं सापुना वेपने उंची र्सिश् मूर्छ ने वेट्या नाचे दिवस्तृत्व नाग-म्बद्धानाः द्वरतेत्र पातः हा केद्व पुरुषोने प्रतिवाच प्रशादसर्विता ने पेरहाना हुन्दर्व मा का संविधा नहीं, असे तेओंने ने पितिष प्रवारता ने स नगरें। पासे भारति किरागकर्ता. एममाणे वेटवाने पेर रहेती तेमने बार को मार्ग क्यों सह वर्षने अते अधिकतर पूर्ण मित्रीप पान्यात्यमा गीनी बच्चे। ने इप गैरे विशोष पान्यो भीतम उक्को निविधाने हहेता नाग्यो है" वये वाताने परिशेष हमें हो। इस इसेन क्षिमी नाम क्षीने अही देशाने भेर होग रहा और एम ने भी एन करती भेरा भारती पण प्रतिकोष पास्ती नहीं ने पार्वते हेट्टा इत्य रखनी कार है क्रिक्स के बेर के बेर के बोधारना आनी अने बहु है। दे बहुत नहीं है है क्षेत्रक माने क्षेत्र कर्मा हुन्। नार्क्षेत्र कर्म हुन् ना क्षेत्र करना मुख्यने नार्कान कि स्मा नहें हैं." एवं तरिये में बारी बारी, मेरी हो करते औ क्ष कार्रा में ते प्रमाण संवादन आहें। वे वसर या अवना के प्राप्त करा गाँउ क्षेत्र का क्षेत्रका आधि, जो क्षेत्र के क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक े करा कराज्यक मानस्थ का कराज्यक है। इस स्थानस्थ कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्य के कराज्यक स्थानक स्थानक स्थानक स्थानक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक कराज्यक ा कर नमस्तित प्रविधान स्टिश्च क्षिति । स्वाप्ति क्ष्या विश्व क्ष्या क्ष मा अवस्थित प्रदेशक में स्वार्थिकों हैं विदेशों के तरि वह में से मार्थिक के विदेशों के तरि कर में

मुकेछो पोतानो यतिवेष धारण करी ते वेश्याने धर्मछाभ आप्याः ते बतते बोछी के " हे स्वामी ! में तो हास्यथी कहां हतें; माटे मने एकछी मुक्तीने त नाओ हो। ?" नंदियेण क्षां के "तारे ने मारे एटलोज संवंध हतो." एम कहीने महोतीरस्वामीनी समीपे आवी तेमणे फरीथी चारित्र ग्रहण कर्युं.पछी शुद्ध निर्रात चारित्रतुं मित्ववालन करी, छेवट अनशन ग्रहण करी मृत्यु भामीने देवलोके गर

आ ममाणे ते नंदियेण मुनि दश्पूर्वधारो हता, तेमज देशनानी अपूर्व। वाळा इता;तोपण ते निकाचित कर्मना भाग थकी मुकाया नहीं, तो बीमार्ग वात करवी ? माटे कर्मनो विश्वास करवी नहीं.

क क्षिक्यों अ किट्टीक्यों या, खयरीक्यों मिलिणियों या। र्कम्मोईं एंस जीवो, नाउएँ '°वि मुँजाई जेण ॥ २६ वर्ष-' जे कारण माटे आ जीव ज्ञानावरणादिक आठ कर्म

में ने जेम [जगो ज्ञाप्त गयेलुं जळ पंक्तिल (कादववालुं डेालुं) ? होता है है। जाने जेम हाट नके तेम हिद्दाकृत-फाटााळों हर हा है। नाम पाहमों हो पूना मोदक जुदा स्तभावने पामे (गंप भाग (अनाहित रित) स्वभावने पान्यो है; कर्जी हें हैं हैं हैं हैं हैं हैं जा किया है के स्थापन पाल्या है, इस है है में अप में में जान (मिलन पाप है ते हैं में अप अपने हैं जानी आ नीत नामतों होतों पण पोड़े हैं . 91 हे हिंदी है। क्लिनोन रोप छे,)" २४०.

क्षांत्र वक्षांगामानि, गउनेद्रणो अने पंतिपृद्धो में हैं है। विद्धांना, में देश यालाहमां क्रांग्रे॥ स

भी स्था अपना अमिति वृद्ध सावित स्थानो साउ भी कार्या अमिति वृद्ध सावित सम्पानो साउ ्रेष्ट्र में पूर्व कामी उना पूर्व स्थापक सम्बद्धाः स्थापिक स्थापिक स्थापिक स्थापक स्थापक वासेसहस्सं (प जेड़ कार्जणं संयमं सुविडें पि।

भंत कि विंहिनावा, ने विमुंब्बई किन्तीउन्य ॥ २५१ ॥ कं-" हेडरीकनी जेम" नेणे पर्या पर नम्या करी नोदल अने विद्राह परि-क्षां नाके गयो) कें।इ पण यति हजार पर्ण सुपी पण भी। विदृष्ट गपन लीह) हतीने (पाळीने) पण जो द्वाच अने विज्ञानाव (प्रमुख रहिनाव) इन्ते ने विश्वक्र धनो नथी, प्रयांत् ने क्रमेंसय करों शहतो हास, अने इनिजिने 黄素 2 3142.

अध्येण वि कालेणं कई जेहामहियसी सतानता।

मीहति निययंकाः पुंकरीयमहारिनि देव जेहा ॥ २५२ ॥ अर्थ-" जेवा भावे प्रश्न करेले होच नेवान मावशाई तेयने वाल-नशासा भने न्य-बारित्र छे, प्रा देरलाप्य सानुवायुक्ते स्मराज्यिके श्वर पुरशे स्वरा-र द्वारा काळ्यांत्र सह्यति पास्या तेम) भव्य काळ वरीने भ प्रताना (पाधवापन े कार्यने गाये हैं. है २५२, विस्तारणी तेनो होने हाथ उपवश्यन हो सहा वही केंद्र अने पुरसिहनों संबंध जानतों. ^{६१}

इंटरोक अने पृंदरीकर्नी हवा. • इरीयना महाविदेश केयमी आवेखा पुरस्यावर्थिति वर्गो प्रेरोसियो सामे था। कि है, में नगरीयां महादय नामें राजा राज्य रहते हती. विमेच प्रांस की अपने राजा कि मुर्शामी द्विभी भागत प्रमेश पुरश्च अमे हर्गाह नार ने में इसे कि. देशकी मेल पुर्वकिन गारपार स्पापन हरीने येने हरशहमे पुरवस्तरहे भारते दशक्ष शताय स्परिताति याने पारित्रद्वाण हो। ते दशस्त्र होने स्ती स्त भारत वर्गके अनुसार हैवायहान पानी कोने गुनार पुरतिह सुन्नी हार ने राजने के प्राथम के अधिक संभाव के किया है। के किया किया के किया करें, असे बंबोर्ट्स किया किया के किया · 我们 李月经 · 我 经现代股份 如此 我们是 "这一个,我们是这个人的。" " 我们是我们是我们是 我们是 我们是 "我们",我们是 "我们",我们是 "我们",我们是 "我们",我们是 "我们",我们是 "我们",我们是 "我们",我们 · 医中心性 化硫酸 有种性 化甲基 网络 有种 医皮肤 医皮肤 有意 医皮肤 化氢化 化氢化

新新 man m 安存 高端薄皮 车

कर्युं. अनुक्रमे ते अगियार अंगने धारण करनार थया. स्थविरम्रनिओनी । करतां अने नीरस तथा ल्खो आहार करतां कंडरीक मुनिना शरीरमां ज्त्पन थया. एकदा कंडरोक मुनि स्थविर साध्योनी साथे विहार कर्तां पुंडर रोए आव्या. ते वात सांभळीने पुंडरीक राजा तेमने वंदना करवा गयो. प्रथम वंदना करी, तेमनी पासे धूर्म अवूण करीने पछी तेणे पोताना भाइकंडरीकने व ते वखते तेना शरीरमां रे।गोत्पत्ति जाणीने राजाए तेमने पोतानी यानशालामा त्यां कंडरीक्षनी शुद्ध अपध्यी चिकित्सा करावी, तेथी ते अनुक्रमे नीरीगी थया स्थिवरोए विहार करवा गाटे राजानी रजा मागी. परंतु मिष्ट खानपानमां मूर्जीप कंडरीके राजा पासे विदार करवानी रजा मागी नहीं. स्यारे युंडरीक स्थविरने वंदना करी पोताना भाइनी मशंसा करवा लाग्या के "है म तमने धन्य छे, तमे पुण्यवान छे। अने तमे कृताथ छो, तमे उत्तम मनुष्यम अने जीवितनुं फळ पाम्या छो। केमके तमे चारित्र प्रहण करी तप अने संयमनुं अ धन करो छो, अने हुं तो अधन्य छुं अने अपुण्यनान छुं, केमके राज्यमां मूर्जा पाम रहेलो छु. " आ ममाणे राजाए ते कंडरीक मुनिनी घणी स्तुति करी, पांतु ते मन जरा पण आनंद पाम्या नहीं, तो पण तेणे छूजित थड़ने राजानी आजा हा ह विर साथे विहार क्यी. ए ममाण एक हजार वर्ष सुधी कंडरोक मुनि चारित्रतुं पान करी छेवट भ्रष्ट परिणामवाळो थया. तथी ते एकलोज गुरुनी आहा लीगा निर पुंढरी किणी नगरीमां आव्या, अने राजाना महेळनी पासेना अशोक वनमां अशो द्यमी वासापर पोतानां जपकरणो मुकीने ते द्वक्षनी नीचे दुभायेला मनवाली वे नितानुरपणे येठा. ते वलते तेने रानानी धान्यमाताए जीया, एटछे तेणे आर्थि पुंडरीह राजाने ते ब्रचांत क्युं, ते सांभळीने राजा तेनी पासे गया. तेने जीवनी गेंग तेनो अभिवाय जाणी छींचो एटछे एक्रांतमां राजाए तेने पूछ्युं के "हे भार तने भोग भागव गानो अभिलापा यह छे ? ? ते बोल्या के दा, मने राज्य भोग । यानी इच्छा थई छे." ते सांभळीने पुडरीक राजाए पोताना कडंबीओने बोडाबीरे हडरी हने मान्याभिये ह कथी, एटले कंडरीक राजा थयो. तेन दिवसे कुश शरीखा ते रहिरोके भी गरामाठो आक्षार क्यों। तेशी तेना देहमां महा नेदना उला यह कि तेन केन काहण का कि निर्मा केन कि निर्मा कि निर्मा केन कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्म क भूरोने गान्य प्रश्न क्रयुँ है, ते अपने नं गुल आपनानो हतो ?" भा प्रमाण वर्षा है न्दरें का सबनो निवह हवीन "प पमाणे भत्या रीद्र स्थान हातों तेत्र ॥ १९ हेर्नु र वर्षि ने महाबी नम्ह नेबीय वामास्मार व्यापन

भा नमाणे ने केंग्र वारियनो स्थाग हमीने विषयनी पविकास करें है हर-े देम दूर्गतिने पापे हे.

हर्शकते राज्य आगीने तरनत पुंदरीक पीतानी मेळे नार महावानी उचार ते हंदरीकर्नात उपतरणों सह, स्वतिन्ते बंदना क्यों यजी त आहार हैताना ह हरी, परमांभी पदार नीक्ष्यमें, पर्णमां हांद्रा नवा हां हरता उत्कोंने परन ति पुररोक्त मनमा विवारिक के "हुं स्थवित वहाराज्ञाने व शहे बहुवा बर्गाए हैं" गीयान्तरे बाजनी बाने दिशमें ने पृंदेशेट न्यसिर सनि याने जानी नहीं न्या. ंद्रमा करीने करीयो नेपनी पाने चार पराप्रतो उच्चा. पत्री उद्देन पारणे ल्ली बीरम खेबी तैंकी नाहार क्यों, तेथी मध्यमधिने सबसे तेना इरोहनी दश करता म हा. नेने १८ परिणामणी महन कर्म, विष्ट्र शानमं रहें, नेन रतने हान नि मंत्रीर्वेषिक नामना परा विमानमा नेबीच मानरोपनना बायुण्यना म देन े. मांबी वर्शने पराविदेश धेरवी उत्पत्न था निद्धित्त्रने पावले.

"मा ममाणे अला गमग पन ने शुद्ध संते नावि रहे मित्राजन को छे हे हुइ-

इतिनी तेव अक्षय गुग्बने गाये है."

क्षी हरवीरपूंचीहणेः वंदरण ५ ६१ ॥

काडेणं संकिलिट, सामंत्र रुद्ध विनोहिर्यणं।

मेंदिया दिवयमें, देविय मेंद्र उद्भाव की ॥ भ्यो ॥

मंदेन पोनी भादत्व 'बारिश में नेनिया (बंदिन क्रीने प्रशाने बार्डिक भारतके विक्रीतिक द्वारे के एक के तीन वर्ष कर्म के ले का बाद के हैं के तीन भविष्यो विस्पृत्य जार्यो पर्ये स्वर्थको स्थाने द्वारित अन्तर शहर वर्षे

THE HARLE WITH A CONTROL OF THE REAL PROPERTY.

भारती हेर्द्राप्त में सहिते हरू है जाति । ते ही

The was alled a ferring a specific करवाथी चारित्रने खंडित करे, तथा क्षणे क्षणे नाना मकारना अतिनारे करीने रित्रने मिलन करे एवो अवसन (शिथिछ) अने सुखलंपट साधु पाछळथी पण न त्रने विषे उद्यम करना शक्तिमान थतो नथी-उद्यम करी शकतो नथी.'' २५४

अवि नाम चैकवटी, चईंज सैठवं भी चक्केविंसुहं। नै यं ओर्सन्नविहारी, दुँहिओ ओर्सन्नयं नैयई ॥ २५५॥

अर्थ-" वळी छ खंडनो अधिपति एपो चक्रवर्ती सर्व एवा पण चक्रवर्तीना सुल त्यान करे छे; परंतु शिथिल विहारी पुरुष दुःखी थया लतां पण शिथिलपणानोत्या फरतो नथी. एटले चिकणा कर्मवडे लेपागेलो होवाथी तजी शकतो नथी." २५५

नरेयत्थो सैसिराया, बेहु भणइ देहैलालणासुहिओ। पीडिओोम भए आओअ, "हो। में जीएअ' तं देहं॥ २५६॥

ार्थ-नरफगां रहेलो शशि (शशिमरा) राजा पोताना थाइने घणुं कहे छे के 'हे भाइ ! हं देहनं लालनपालन करवाथी सुख पाम्यो (गुखलपट थ्यो), तेथी भा भवमां नरकमां पडियो छुं. माटे मारा ते (पूर्वभवना) देवने तुं पीडा कर. [पीडा पमाड-कदर्थना कर]. " २५६. अहीं शशिमभ राजानी कथा छै ते नीचे प्रमाणे-

शशिमभ राजानी कथा.

क्रमपुर नगरमां 'जितारी' नामे राजा इते। तेने ' शशिमभ ' अने ' मुरमभ' नामना वे पुत्रो हता. तेमां मोटा शिश्मभने राज्यपर वेसाडी नाना सुरमभने युवरान आपी जितारी राजा धर्मकर्मगां जयमी थयो. एकदा त्यां चार ज्ञानने घारण कर श्रीविजयघोप सूरि समवसर्या. तेमने वंदना करवा माटे शशिमभ अने सुरमभ ग गुरुना मुख्यी धर्भदेशना सांभळीने सुरमभ मितवोध पाम्या. पछी धेर आवीने मुस् शशिमभने कहां के "हे वंधु! आ संसार असार छे, तथी विषयमुखनो त्याग क चारित्र छइ तपसंयमने विषे उद्यम करीए; जेथो स्वर्ग तथा मोक्षनी पण प्राप्ति याप ते सामळीने शिशम क्यु के 'हे भार ना है तु की इ धूर्वथी वंचना करायो (उनाये। देखाय छे. रोमके माप्त थयेलां निषयमुखोनो त्याम करीने आगळपरनां (भविष्यनां म्रुसनी वांछा करे छे, माटे तुं महा मूर्ल छे; भविश्यनां सुख के।णे जोयां छे ? धर्मर फाड गरी (मळरी) के नहीं ते केाण जाणे छे ?" त्यारे एरमभ नोल्यों के "हे भार

आ तमे शुं कनुं! नर्मनुं फळ निश्चित मळेग छे. केम के पुण्य अने पापना फळा पर्या गावा २६५-उसन्न विद्वारि । उसन्तय । चपर ।

माबा २५६-पट्ट । भाउत्र । जापद्र । जापत्र=यातय, पोउयेत्ववै ।

स्मार हे. तुना, एड और नेवा. एड नीरेवो. १६ ७ स्वतं एड इल्ली. एड मान, गृह निर्मन, अने एक वान, रासर, संस द्वारसान, इपार्वेश अरे कृष स्वयंत्रके " प्रीति स्वेह पत्ति केर वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष क्षित्र भी । पार्षी नहीं, स्थारे मुहदने मृहदाम् हीमा प्रान हो। इने व्यवेषणेन महाना क्षिते अनुकाने मृत्यु पानी नजहां भारती एका रहाने पानन हानी म्मे विकास माने रहेजा प्रतिस्थान को क्यान्यान विकास एके वार्यान शाले भारते बार ही बदो. पड़ों स्ट्रान देरे अस्तिकारे पाताना हरन्यना बार ने नाहना संभा मानी पूर्वना स्नेटने छात्रे नरहरूदियां नार्श वेशी पान वेशा प्रवस्तु १६४३ भं आ ने देव पालों के "दे बाद! पूर्व बात इन्द्री बही बादे माना हार् कृत्वस्त वर्गाः " ने सोनजीने जीवनमे पन अन्ती पालना पूर्व परतू वर्णन मन्द्रियों ने नरहमां रहेळा शींतरने मुख्य देशने हुई है । ने नहा हुई बिहर स्मान तह प्रयोग में प्रवृत्त नार कि नहीं, त्यों हूं कर हना परवा है। दूर्व है मा भाने मारा शरिरने पीडा उत्तर कर. विकार रहेडा मारा पूर्व नहना श्रीरनी भारत के जेमें हु सर्वाम संग्रह है। संस्थान सहस्र में हु हु हा

क्षेत्रित जीवरीत्या, लेखे जाउप कुंच कुंगे।

सर कि कि बिला कि केंद्र के लिए ते । १९० ॥

अस्ता है नहीं देश पालक कार्यक्ष (ज्या कार्यक्ष व्यक्ति है है से स्वाह) महित्र प्रतिस्ती हैं हैं जो तन की दूर्ण भी हैं जे हैं है है है है है है है ेब्द्र स्वार्ध क्षा है। है। इस्ता तर स्वार्ध हैं। है नहीं

म देहें के प्रदेश करें हैं एक बंधक पान दुन्त हैं जिन्ना अभाग देहें पूर्व में स्वरंद स्वरंद में के क्यांची महिलाई की प्राणित की स्वरंद स्वरंद की प्राणित की स्वरंद स्वरंद की स्वरंद स्वरंद मारीय के दुश्यक पर दक्षणान है है। विदेश में प्रतिन के प्रतिन के प्रतिन के प्रतिन THE WITH ME

विश्व के विस्तित के विश्व के व भेद मेरिक मेरिक मे सिलाम है कि हिंदे जा इस

migrame of the time of the control o 野野 一大手は ないばいま かって おけないは 本 からます 一学 みないちゃっさ から では ま ち をです तपसंयमादिक अनुष्ठान कर्षः । १० में अत्यास्य समाने जैसे आहे हस्योत्रा अर्थात् पछोशी सोक करमाना ।रातः ।।। ।।। १४ (वर्षः "४५८)

॥ इति भागमन् सम्मानः ॥ १२.

धितृष नि सामनं, संजम जोषम् तोरं जि मितिको। पेंडइ जइ वंयणिको, सोकेइ के में ओ हुँदोनं॥ २५१.॥

अर्थ-' जे (मनुष्य) श्रामण्य (नारिन) ने मुहण हर्नाने एण संग्रायोगने विषे [चारित्रनी क्रियाना समुहने चिते] चिथिल [प्रमादो] याय छे, ने यति त्रा छे।हर्मा वचनीयता (निंदा) पामे छे, जने प्रभवमां कुदेवपणाने (क्रिलियपणाने) पाम्यो क्रिले जीव शोफ करे छे, तेने शोफ कर्रनानो बखत आते छे, " २५१

र्जुचा 'ते जिंअलोए, जिंणवयणं 'जे नंरा न याणंति। रेजुंचाण 'वि ते' सुचीं, जी नें। जणं नें 'वि केरंति। ॥ १६०॥

अर्थ-" जे मनुष्यो अविवेकीपणायो जिनवचनने जाणता नथी तेशो उ जीवळोकने विषे (अरे! तेओंनी शी गति यशे ? एथी रीते) शेक करवा छायक है अने ज पुरूपो ते जिनवचनने जाणीने (जाणता छतां) पण ममादने छोथे करता नथे (ते ममाणे आचरण करता नथो) तेओ शोक करवा छायक मनुष्योना मध्ये प विशेषे करीने शोक करवा छायक छे. जाणता छतां ममादपणाथी ए ममाणे न वर्तन्

प महा अनर्थनो हेत छे, ए अहीं तात्पर्य छे. " २६० द्वांवेऊण धणिनाहिं, तेसिं' उप्पीडियाणि औच्छीणि। नांऊण वि जिजैवयणं, जे ईह विहेंस्रांति धम्मधणं॥ २६१॥

क्रथं—'' आ संसारमां जेओ तींथंकरे भाखेळा वचनने जाणीने पण ते धर्म रूपी धनने ज विफळ (निष्फळ)करे छ तेओए रंकजनने रत्नसुवर्णादिकथी भरेको धननो निधि देखाडीने पछी ते रंकजननां नेओ उपाडी (काडी) नांख्यां छे—काडी नांस्या बराबर कर्ष्युं छे एम समज्ञ . '' २६१.

गाया २५९-जोवसु । जर्द । सोयर्द य । गाथा २६०-सुवा=शांच्या; शोचनार्दाः ।

क्षणे डेन्च्चवेरं, मर्झ हीणे चं हीणेतरमं वां। नेण निह्न गीनिन्नं, निहां 'वि 'ते निमिन्ता 'तेर्दे ॥ १११ ॥

" " देवले हत्वी उप, मेलनिक्य अन्तर्भित ईर्डे, स्मृप्यक्रि अने विष्याविद्या जीन अस्या नहस्मितिहर होन्दर स्थान अस्वे । वे स्थान स्थाने के बीदे (बीदने) वसन् छे वे जोतने (पुरुषे के देहा पर वेशन प्रजासनी] साम है. जन्ले में भार महिम प्रशासनी ने भार माला लेश्याप् इतात्र वाय ने-प्रेचित्यानते प्रसारे, २०२.

क्षित पुरुष्ति पंतिनवो, साहुनु अने। परंति देवता नुर्द्धाः। ानों वे क्षेणिदलासी, अहिलीसी कुंगई ऐसी ॥ २१३ ॥

भि ते पुराने पुरने भिर पील्यानमाझ जल्यार । प्रेश्व, के आलेख स. १६ ने लिए बनाइर दीप, जैने कुछ (बोड़ी) धना देख नने केने हिला किया प्रसा यितकाने तिरे भननिजाय । इत्यासीहत्त्वन्-मनित्या । हेर ने हिर (क्षेतिना मीमकाप प्राथमाति क्षेत्री स्वाने क्षेत्रे, एवं सन्दर्भ ५०० संगिरमाणसाणं, दुरंगमदन्साम वसेजपरिसीया।

नेशंहतेण सुणिणा, सर्गगईई निर्ह्मित ॥ २३३ ॥

महेल्य क्रीर विरेषा जने कम विष्ण दलारे हु रूपा व्यवन है वह करने हैं है लंका प्रतमस्यानेका) ग्रेनीमा निकामकाले ने महते इसने हाराहरी के के लिए र पर है है . (साम मंजारीय प्रस्ता देश नहीं नहीं है हैं है हैं है हैं है

कुणाईसमाप्रदेवं, नांगं दितसा दूरम दिनंदवे ।

में ने पुल्टिएणे, दिने विभास्य निर्धारिक ॥ ५१% ॥

म्ब्रेल 'बेश्वरहो स्थादिता सार्वे द्वस्त कर्यादे ३ ५१% राज ने केले भारत बहुत्वाच्या काराव के केंद्रवान होने आहाने हैं के कार्य के के कि के कि के कि क्षित्र महिल्ल आहर बाहर कर हो हो है । बाहर सहित हो कर है है ।

Broke Kilds F & Late Charles Age of the way of the way of the case of the case

पुछिंद (भिछ) नी कथा.

विंध्यवनमां पर्वतना एक गुफामां के।इ व्यंतरथी अधिष्ठित थयेली भिव (मा देव) नी एक मृतिं हती. तेनी पूजा करवा माटे नजीकना गाममां रहेनारो एक मुग्ध नामे माणस हंमेशां त्यां आवतो हता. ते आवीने मथम ते स्थान वाळीने साह करता. पछी पवित्र जळवडे ते शिवनी मूर्तिने पखाळी केसरमिश्रित चंदन विगेरे म गंधी द्रव्योवहे पूजा करतो. पछी पुष्पमाळा चहावी, घूप दीप विगेरे यथाविधि करी। एक पगे भूमिपर उभो रही ते शिवनी स्तुति व्यान विगेरे करी, मध्यान्ह समये भे जह भोजन करतो. ए रीते ते मितिदिन पूजा करवा आवता हतो. एकदा ते मुख पूज करवा आव्या, त्यारे पोते गइ काले करेली पूजाने (पूजासामग्रीने) काही नांसी कोइए धत्रा अने कणेर विगेरेनां पुष्पावहे यूजेळी शिवनी मूर्तिने जीइ तेणे विशा कर्यों के '' अहा ! आ अरण्यमां एवो कयो पुरुष छे के जे मारी करेली पूना है। द्र करीने हंमेशां शिवनी पूजा करे छे ? ते। आजे तेने हुं जोडं तो खरा." एम कि चारीने ते ग्रप्त रीते त्यां रह्योः तेवामां त्रीजा महरे एक भिछ त्यां आन्याः तेना बरीर ने। वर्ण क्याम हता, तेणे डावा हाथमां धनुप घारण करेछं हतुं, जमणा हाथमां भारतीय डानां, धत्रानां अने कणेर विगेरेनां पुष्पो विगेरे पूजानी सामग्री धारण करी हती अंगिरे मुख्यां जळ भरेछं हतुं. एवी रीते भयंकर मूर्तिवाळो ते भिष्ठ पगमा पहेरेळा ब्रोह निम्हि सहित मूर्ति पासे आव्या. पछी तुरतज तेणे मुखना जळथी ते मूर्तीने एक पगवडे पराजं आकडानां अने प्रवासने पराणे करान्यं के के के के कि तने भोजन तो मुख्यो मळेछे के ? अने तुं विश्वरहित वर्ते छे के ?" आ ग्रमण मुलगा निष्ण ताना भक्त पूर्व के भरादेवे तेनी संवाळ कोषाः त्यारे भिक्त वोख्ये। के हे स्वामी भागे एके भाव मारा पर महाव छो, त्यारे भारे वी चिता होय. एम कहीने ते भीक वाल्यो "। वेति विका के स्वामी का कि वाल्यो "। वेति विका को एम कहीने ते भीक वाल्यो "। वेति विका को एम कहीने ते भीक वाल्यो "। वेति विका को एम कहीने ते भीक वाल्यो के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों के कि वाल्यों के कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों के कि वाल्यों कि वाल्यों कि वाल्यों कि वाल्यों कि वाल ें शहें में हूं तने देखादीय," ने सामझीने ने सूरव पेताने पेर गये।, श्रीवे विक्षाने सुर्ग शिवपूना करमा नाच्या. ने प्राप्ते द्वित देशान् प्राप्त (बोड) (साववां) रहेलुं नेने सहय की ने जाने ने मुख्या करते होड़ अपने। मोरे । भा भू पर्व ? केवर पार्वप मा प्रतिभाग भागनी नहें हुने ब हाते क्षाय है। एवं क्षीने ने मेहरे हारे द्वन इस्स नवन प्रश्ने पूर्वी पूर्ण धर पुत्र क्षेत्रे प्रजो सेणे पुत्रादिक लिला हुन्य हुन् मेहा पूर्ण दिन प्रणान से ६ देने पम चित्रतं प्रायनेत ने में नहीं, एडंड देने उर्जात हो हर होने हा ज ग साम्बद्धे प्रात्तानु पदा नेज कार्याने किर्मा भाष्ट्रमा चार्यान् कार्यान् कर्म कार्य रही, रही होने नित्त्वा नियन बनाने हैं । होते, ने इस्से निय उत्तर पाने तके पहें अने नार्ग विक्री ह स्पन्न द्वा है बाहे होता जे दर्श के प्रति हैं के स्थान के के देश के देश के ते हैं के के को विक्रों मुख्या के का का कि के कि है। जारे मुख्य के साथ प्रकार रे प्राप्त का बाद्य परिवर्ष प्रवर्ष का है । ए पूर्व कर्म है इस विकास कर । जन्म भिति है विते विस्ती भाग ग्रीहरण में हवा में में अवसे बन

म् अ दुर्जी सीन्त कार्या, ए जा तथानु समझ हो.

um Gradu 142.

मिशासणे निर्मननं, सोवानं सेनिया नर्मान्ये। वित्रं मनाइ कीजो. देव नाइनामन वित्रोत्ताची प्रदेश करें-त सिरोधनात साम्म र सार्था हिल्लाहरा स्थाप र महिला मान पर PRESIDENCE SERVICE STATE The old still the was the second of the seco

李智清學問題養 有色体空管 四月間 一次有意 想, 有成善 不注了心情 一次成本 原作的是 不作之情 不可可是 1. 新聞電音 Tight 1 4 mm () 1 mm

The state of the s 京 草的 明美的 家庄 人名英 年

चिछणा हर्ष पामी. ते वाडी सर्व (छण्) छतुओनां फळ अने पुष्पा सहित रे वे वाडी फरता राजाना सुभटे। तेनी रक्षा करवा माटे रात्रिदिवस रहेता ह ते वाडीमांथी एक पांद इं पण छेवा कोइ शक्तिगान थतुं नहोतु.

हवे ते नगरमां के।इ एक विद्यावान चडाळ रहेती हती. तेनी सीने गर्भना कार्तिक माममां आम्नकळ्लं भक्षण करवाना तेतह थया. तेणे ते देाहद धणीने जणावया. ते सांभळीने चंडाळे विचार्यु के "आज अफाळे आम्रफ राजाना देवनिर्मित उत्थानमां वर्ते छे; वीजे केाइ वण स्थाने वर्तता नथी। विचारीने राजिने वखते ते चंडाळ ते उद्यान तरफ गया. फिल्लानी अंदर चेाकी है ते किल्लानी बहारज उभा रहारे. पछी तेणे अवनामिनी विद्याना वळथी आष्र आगा नीचे नमायी फले। तेरडी छीघाँ, अने पछी उन्नामिनी विद्यावढे पाछो हतं शार , उं , । करी दोधी, ए शते ते फळे। छड्ने तेवडे पातानी स्त्रीना दोहद तेणे कर्ये। भाताको जाचफळ विनानी झाखा तथा तेनी नोचे किछानी वहार माण पगन्नां जोड़ने रक्षकोए ते द्वतांत राजाने निवेदन कर्युः राजाए सर्वत्र तेनी (वेगर शोध करावी, पण चोर हाथ लाग्या नहीं; एटले राजाए अभयकुमारने बालावीने के "आम्रफळना चोरने पकडी छाव." अभये कहुं के 'वह सारुं, छातुं छुं.'। कहीने अभयकुमार चैाटामां गया. त्यां घणा छोको नटनी रमत जीवा माटे एक थयेळा हता. तेमनी पासे जड़ने अभये कहुं के ''हे छोका ! आ नट ज्यां सुधीमां नाट शरु करे नहीं तेटलामां हुं एक कथा कहुं ने सांभळो. " छोको सर्वे सांभळवा लाग एटळे अभयकुमारे नोचे प्रमाणे कया कही.

पुण्यपुर नगरमां गावधन नामे श्रेष्टी रहेता हता. तेने युवावस्थाए पहोंचेली संदर्श नगरमां गावधन नामे श्रेष्टी रहेता हता. तेने युवावस्थाए पहोंचेली संदर्श नगनी सुमारिका पुत्री हती. ते संदर्श स्वरूप अने युवावस्था थी अत्यत संदर्श लागती हती. ते हंमेशां येग्ग्य वरनी माप्तिने माटे केग्इएक वाडोमांथी छानी रीते पुष्पी छड़ने तेवहे कामदेव नामना यक्षनीपूजा करती हती. एकदा ते वाडीना माळीए तेने पुष्पी खंटती जीइ. तेने हाथ पकड़ी, तेने माथे चारीनुं कळंक मूकी माळो बेलियो के "हे सी! जो तुं मारुं कहेंगुं कवूछ करे ते। तने मूकी दं, नहीं तो राजा पासे छड़ जदश." त्यारे ते चालो के "हे मिन! कहे." माळो बेलियो के "तारे मारी काम के कोड़ा संबंधी बांच्छा पूर्ण करवी." कन्या बाली के "सांमळ, हजु सुनी हुं कुमारिका हुं, आजयो पांचमे दिनसे मारा लग्न थमाना छे, ते दिनसे हुं परण्या पठो तहत मन्य तारी पासे आयो पछी मारा स्वापी पासे जदग." माळीण ते वात कवळ करी, परणे ते

· श्री ने मुंद्री पनि पासे गड़, त्यारे इथम नेले माठी पाने क्रोड़ी क्लिश ही-सार्वादे विरोधन होते. ने सांबर्धने तेना परिष्य केने मन्द्रमारी आर्थी ही ग्या अर्थी, एटले ने नेमानी नर्प नामग्री लड़ सुद्रग देव भावन हरीने ५ व लें महरे परवश्र नीहरी वानर्ना पश्र अनी रसामी देने द्वाप पड मन्या. रेंगे नेने तर्रे आग्रागोथी भूति और नृहसानक्ष्मा नार्रे हे ऐस्टार्ट ठेवनी म्ब्र बार्यायांने प्रचा नविभी नवे इनोंद ननापीने हुई है है पूजा ही बारीया है स्पने मई अंदराशदिस जाते आर्थेष भेनांच्याने बेहीय देने मन्यस्त लीते प्रशासीची. आगळ नहीं हैने एक शतम महती, में हेने लाह हहा के मह शेष्टिने क्या मा उत्तार प्रशिक्ष पाठा नारमने कर कही है से भारते कुलिन्ति नीति न ते ते ने ने ने नियं ने ना ते ने नियं है हैं। मैंमरेली, नेपा वीपनाची नेते नवार नेतन न्याण वेते ज्याने हैं वर्ण िंद क्षेत्र, नेके रेले पुरस्के के अपने हैं हुए नेपसीर स्था है है अपने स्टिबर्ट सर्के मने भी देश नार्थों । पार्ग नेदें की मार्थ कर्न महारोग के तमा की सर्वे व्या मार्ग में भी तर इनो र प्रति व साम होने सार्थ क्रिया है है । वहीं भागे सामाने कि ने रचनी वैश्वेती महिल्ला के विकास करें भेक्षे अस सामाने यस वसन आधीते वहीं वार्त आसे असी असी असी हैं। भीत भोरोप पूर्व संबंध मुर्ज निर्ध लाह जाहे दल वा लव्य तथा से ने दली भी शिक्ष के पूर्व किया किया किया किया है जिल्हा है जाते कर है कि पूर्व के भेड़े हैं के पार्त के किया है जा मा मा मार्टिस सुरक्षे के हैं। उन्हें किये कि किया है कि किया है किया कर्तिक प्राप्त हत्। वसक्ति साथ विक्री है जर्म न हर्मा है

THE REAL PROPERTY AND ASSESSED AS THE PROPERTY OF THE PROPERTY प्रथम संगम वखतेज परपुरुप पासे मोकली. पली परस्रीलंपट कामा पुरुपो बोल्या के "माळी दुष्कर काम करनार कहेवाय. केमके तेणे रात्रिने वखते निर्जन मदे शमां जातेज सामी आवेळी सुंदर स्त्रीनो त्याग करी पोताना मनने कवजे राख्युं. माटे धन्य छे ते माळीने ! " पछी जेओ मांस खावामां छुट्ध हता तेओए राक्ष-सनी पशंसा करी अने तेने दुष्करकारी कहारे. छेवट पेलो आम्रफळनो लेनार बोर वोल्यो के " ते त्रणे करतां चोरोज दुष्कर कार्य करनारा कहेवाय. केमके तेओए आभरणोथी भूषित थयेली अने समीपे आवेली ते स्त्रीने मुकी दीधी, अने छुँगी नहीं. तेथी तेओनेज घन्य छे।" ते सांभक्रीने अभयकुमारे ते चंडाळने पकडी ळीथो. पछी तेने एकांतमां ळइ जइ अभये कहां के " तुंज आम्र फळनो चोर छै, माटे सत्य वात कही दे; नहीं तो तारो निग्रह करीश. "त्यारे चंडाळ वोल्यो के " हा, में फळो ळीघां छे. " अभये पूछ्युं के " शामाटे अने केवी रीते छीयां?" त्यारे तेणे पोतानी स्तीना दोहदनुं अने विद्याना सामर्थ्यनुं स्वरूप यथार्थ निवेदन कर्युं. एटछे तेने लड़ने अभयकुमार श्रेणिक राजा पासे आव्यो. राजाए ते चोरने मारवानी आज्ञा करी. त्यारे दयाछ अभये क्युं के "हे स्वामी! एक वार एनी पासेथी विद्या तो ग्रहण करो; पछी जेम करबं होय तेम करजो. " ते सांभळीने राजाए सिंहासन पर वेटावेठाज हाथ वांधीने आगळ उमा राखेळा चोर् पासे विया शीखवा मांडी ते चंडाळ विया शीखववा लाग्यो; पण राजाना मुखे प्र असर पण चड्यो नहीं. त्यारे अभयकुमारे कर्षु के ''हे राजा! ए प्रमाणे विया आवडे नहीं. विनयथी विया पाप्त थाय छे. माटे तेने सिंहासनपर वेसाडी, अने तम हाथ नोडीने सन्मुख वेसो. "ते सांभळीने राजाए तेम कर्यु, एटछे तस्तन विया आवडी, पत्नी फरीथी राजाए तेनो वध करवानी आज्ञा करी, त्यारे अभू-य रुपारे क्युं, के " हे राजा ! ए आपनी आज्ञा अयोग्य छे. केमके एक अक्षरती पग जे आपनार द्वाप तेने जे गुरु तरीके माने नहीं, ते सो बार कुनरानी यो निमा जन्म लड छेउट चंटाळगां उत्पन्न थाय छे, एम नीतिशासमां कर्ण छे; तेथी ना चंदाक नापनी विद्यागुरु थयों छे माटे तेने केम मराय ? इवे तो ते आपने प्रय वयो छे. " ते मांबळीने राजाए ते चंडाळनी वणी भक्ति करी, अने धन वश विषेरं आश्वाबंद तेनो सकार करीने तेने वेर मोकल्यो. तेन ममाणे विष्ये पण भित्रदर्शक एह पामे विवानो अन्यास करवी ए जा कथानुं तालपं छे. वळी वीते । भक्तरे भित्र यनीत बहुपणा करे छे:—

[॥] उति चंडाळ इष्टान्तः ॥ ३४.

विश्वाए कास्त्रमंतिआए, द्राम्अरो मिर्हि पंता। र्गहिओ मुंनं वंपंतो, मुंजेनिहागा इय अपिया ॥ २६७॥

अर्थ-"रहत्तर के होइविहान सान रानार विदेश हाराव हेण इपत्ये कोंग्री विवासी लक्ष्मीन पार्मी हती; पंत्र प्रशिव मृत्रा (अवना, बेह्मार्सी पर्ध क्यारियामुक्तो अवज्ञाव करमाणी नेपाली-नष्ट विवास अध्यक्ति एते होती प्रक्षे भारते जागीने अनिन्हाणा हानी अगीत् अनदान भाषनाच्नी भारता वन्ते व मध्य एउंछ क्रमेंस्पी रोगने स्टि कानार है एस मान्स् ' २६ %.

विदंदिनी कथा-

संबद्ध नगरणं एक चंडिल नामें अति हुन्य दलान गहेना दती. ते विद्याना क्षा स्थापन प्रशित ने प्रसान प्राप्ताची अस गलनी हती. प्रदेश केर्न्य विशिष्ट ने क्ष्मापनी प्रभाव नीयों, नियों विश्लीप वे इतापनी प्राप्त कराति । वर्षाने ले के अने भी ने प्रिया प्रध्य करी. प्रभी ने दिशी करती करती ने स्वार (अन्तिकार्ड) मैं भागा, ने पाने त्यां पदारा राग राग हरने हों, है पूर्व तरने हैं े किसे बंदाना विदेशने आहायमी नपर सन्दर्भ सम्बंद ने तेसने पार अंकी - श्रश्चिति विश्वति पूना (केला) करता जाता. वे पूना गतार एवं को हे न की मांबन्त् त्यारे वेले नेना पानी पटीर पराव परी) रिका पूर्वक रही हैं देशाबी ! तो भा विदेशने भाषाधनी गार्ग के, वे की पान में के अभी प्रश्नम है ? बिहेरीय समय साम्यों है है मता है भी विषये महामार्थ ्यांची मनार पूर्ण के पहला क्षेत्री वाहेची से विनने का क्षार करता श्चा के क्षेत्रण हैं जाहें ने विदेश कर तह ती है हैं हैं जा केंद्र नहीं. संबद्धित प्रशास आर्थों के पहुँ सामा दूर्व के विवास प्रशास करें क्षित सहस्ति भाषापता को इसी. दे ति है दे हुन के को भार करें की भाग्यसं विद्या आधीरती. वेदी सरदारी दांदी विद्या है है है है है है है है है रें कुछ क्यार रक्षेत्र के देनी दूसरे हीने

त्र श्रीत विस्तित्र संस्थान त्र विस्ति

संयलंमि विं' जियेलोए, तेर्ण इंहं वोसिंओ अभावाओ।

इँकं पि जो दुईत्तं. संत्तं वोहेई जिणवयणे ॥ २६८॥ अर्थ-"जे मनुष्य एक पण दुखार्न (दुःखथी प डित) सत (प्राणी) ने क्रिन वचनने विषे (जिनवचनोवडे) बोज पमाडे छे, ते पुरुषे अहीं (आलोकमां) गायका ं सक्छ जीवलेकने विषे (चीट राजलोकने विषे) पण अमारी पट्ट गांगणे

ममंनद्यगाणं. दुर्णंडियारं भवेसु बंहुएसु।

मच्चंगुगमेलियाहि वि', ज्वयांरमहस्स होडोहिं॥ २६१.॥

अर्थ-" रंगा भवीने निर्म पण सर्वपुणनिन्तिन एउटी (गुरुष ह्रोटी राह्य वी । वे गरा,वग गमा, चारगमा, एम करतां कातां सर्वभागा (अनाष्णा) ए॥ भ हर्ने हर हो उत्हारीय हरीने पण समहित आपनार गुहनो श्रीकार (पर्पुपकार) उन्हें उन्हें हैं। उन्हें जे मुक्ष समिति भाषीने उपकार क्यों हे तेनाथी जनवणा। पर राज्यक्रमीत करीने पण तेनी पत्मुपकार करी शकानी नवी, (यह शकनी नवा क व हे तर देवर व यक्ते मोधे भक्ति करती " २५%.

\$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$ \$\$

र कर है। देश देशाई नर्शनिरिशदासई।

र १८८ व एस ए व. भोगहतुमहं वेहोणा है। २७०॥ के कि आहर कार्य में (स्थार वर्षाकर वाद वार

ं कर हम इस्त कर बहु जात है है। मोर सुपर बन्ध erst film that the after 11 2° is the it

े अस्ति । अस्ति the state of the s

the second and the second state and s 1 - 1 1 1 5 5 1 11 1 3

र्म वर्ग मुख्य (१५४)

The state of the s and the state of the state of the state असीने मधन करनानं (नाश करनानं) एत् संपतित सुरिश्त अति विश्व होत्र केरे कुरको जातने विषे अधीत प्रश्नार्व ज्यान शामक है एकान को वस (समार) र स्वर (नाम) करनार्व चर्ना (यथालपान चारित्र । मान पाच ने. (रेश प्रान ने क्तिको उद्य पाय है). वर्षीत् मपिटा न हेल. तो अन न हेर की अन न रेक्स मोत मनी धारे नहीं. बाट मो जो मुख्य हतन सर्वाहरत है. " ० है.

मुर्गिन्छियममनो, नांगेणाठोडयत्यनभावे।।

तिर्वणवरणावतो. ईन्द्रियम् थं पनां हइ॥ २७२॥

अप-"धुपरितिन के मंगीदन जेन पूर्व (एर सर्वाहरू के के प्रमान क्षेत्र) के प्रमान के स्थापन के प्रमान के स्थापन के स्था . क्षेत्रांते के, भोने विकास विकास की वास की की कार्य की भि भाष्ट एक्के निर्मियार पारित्या कार्रेस में के वे वे वे विश्व कर्षे े भने १र प्या मोतसुरा स्थी अपने मार्ग डे-मिन्न हो है-दान हो है, है रहे-

र्षे बनावधी समिति चीजन भाव हो, हे रहाहे प्रश्नेत वशहे है

तेंद्र मुलेनाणए पंचुर्गम, दुःवंत्रगगदेनीहैं।

शेमेंच्या पडंमोरा. इंह मामने पर्माण्डि ॥ ३५२ ॥ अंद्रेश आप नेत्र सूत्र तालामां . सुनामा वंद्रा हुन्। क्षेत्र देखेर विसेश्वा नेपूर्णेष क्षिमें क्षेत्री क्षेत्र किसी के व्यवह कार्य के मार्थ करिन साहित पत्र तिस्त्य क्षेत्रम् भाव है। तो हर्नात्रम् भाव करिन साहित्रम् भाव करिन साहित्रम् भाव करिन साहित्रम् भाव करिन साहित्रम् हरिन साहित्रम् । स्वतंत्रम् हरिन साहित्रम् साहित्रम् । स्वतंत्रम् हरिन साहित्रम् साहित्रम् । स्वतंत्रम् हरिन साहित्रम् साहित्रम् साहित्रम् । स्वतंत्रम् साहित्रम् साहित्

नांग्सु मुखांमु य. जा वंग्ड मांगतानं रहे।

परिजोत्तमाण बेंग्इ. कादिसहस्तानि दिक्सेण ॥ २००॥ THE WINDS AND THE WASHINGTON THE STATE OF TH THE THE PARTY OF THE STATE OF THE PARTY OF T

करे छे. माटे प्रमादना आचरणनो त्याग करीने निरंतर पुण्य उपार्जन करवां उद्यम करवो, ए आ गाथांनु तात्पर्य छे. " २७४.

पर्लिओवमसंखिज्जं, भॉग जी बंधंइ सुरैगणेसु । दिवसे दिवसे वंधंइ, सै वासैकोडी असंखिज्जा ॥ २७५॥

अर्थ-" जे सो वर्षना आयुष्यवाळो नरभवमां रहेळो पुरुष पुण्याचरणः देवजातिना समूहमां पल्योपमना संख्यातमा भागने (तेटळा अल्प आयुष्यने) व छे, (ते पुरुपने मितिदिन केटळा करोड वर्ष आवे ? ते उत्तरार्ध गाथामां करें छे ते (देवगितमां पल्योपमना संख्यातमा भागपिरमाण आयुष्यने वांधनारसो वर्ष आयुष्यवाळो) पुरुप दिवसे दिवसे (मत्येक दिवसे) असंख्याता करोडो वर्ष (वं आष्प) वांधे छे. एटळे के जो पल्योपमना संख्यातमा भागना वर्षीना विभाग करीने वर्षना दरेक दिवसमां वहंचीए तोते दरेक दिवसे असंख्याता करोड वर्ष आवे." र

एंस कैमो नैरएसु विं, बुंहेण न्रांकण नाम एंयं पि ।

र्धंममंमि र्केह पमांओ, ''निमेसमित्तं पि' कींयव्वो ॥ २७६॥

अर्थ-"आज क्रम .नरकने विषे पण छे (जाणवो). एटछे के पापकर्म करर सो वर्षना आयुष्यवाळो पुरुष मत्येक दिवसे असंख्याता करोड वर्षतुं नरकाषु वांघे छे. ते-पूर्वे कहेछं पुण्यपापने उपार्जन करवातुं स्वरूप (नाम प्रसिद्धार्थक है जाणीने पंडित पुरुषे क्षांत्यादिक दश मकारना घर्मना आराधनमां एक निमेपमात्र प्रमाद (शिथिछता)शामाटे करवी जोइए ? सर्वथा प्रमाद न ज करवी जोइए." २५

दिव्योलंकारविभूसणाई, र्यणुज्जलाणि य घराँई।

रूवं भोगंसमुदओ, सुर्रलोगसमो कओ ईहयं ॥ २७७॥

अर्थ-आ (मनुष्य) छोकने विषे मुख्लोकनी जेवां दिव्य अलंकारो (सिर सन, उत्र विगरे) अने मुकुटादिक आभूषणो, रत्नोए करीने उज्जळ (निर्मळ एरो, रूप (बरीग्नुं सीनाग्य) अने भोगसप्तदाय एटले भोगनो संयोग (ए सर्व प्यांभी होष ?" अर्थात् मर्वथा नज होग. माटे धर्मकार्यने विषे उद्यम कर्ष्य जेथी तेवां मुख्य भाष थाय. ए आ गाथानो उपदेश छे. " २७७.

देवींग देवलोण, 'जिं सुंएकं 'तं नरी सुंभणिओ 'वि।

नं भंगइ वाममंग्ण वि, जस्में वि जीहांमयं हुंज्जा ॥ २७८॥

म या-+३३ मुहत्रायसभी। ऋती-कृत ।

अर्थ के (कोड परा) पुरुषने सो जिला होय नेपो पुनित (सावाड) माणन को से करीने (पण) देवलोडमां देवताओंने ने मुख्ये हैं। मन ोक्दी अर्थीय मी निदाबाळी पाचाळ पूर्ण नी की नुवी है। अनी न मृत्रहूं व ल हवीं की, तीपणते मृत्यना वर्णननी पार आहे नहीं, तेट शंब शंतुरव दें हरी है ये हरों की हो सामारण पांगम तो ते मृत्यतुं प्रीत श्री गीरेन हमी अहें हैं रेडल

नाएंस जाई अईकख्लडाई, दुर्वनाई परंग निरकाई। को वेंत्रही नाई. जीवनी वामकाडी वि ॥ २०६॥

मप-"नरकोन निपे भनि करेन (दुन्पर) अने विवाहनी देवनार करीने पर ेल बीट तीहन एमो खुमा जुना पारमध्यादि दृश्यों है, ते दृश्यों ने क्लीड महे चुनी कोस्तो पूरो हता पनुष्य प्रांत करता छन्दियात है। हो इब छन्दियात नहीं। जन्म भिने दू:सी सनन करोड गोरी मुत्री फरेनी पन हड़ी महाप हैंड इंबरी, " + 35,

रत्रदंदाहं मामलि असिवण वेयरणि पहरणमण्डि ।

्र अञ्चलांत्र पाँचति, नारेया ति अतम्महते ॥ २८० ॥

सर्थ- भारती में करिय शह (अतियो क्या का कार्यान्य कार्यान्य कार्यान्य र्भारिक प्रार्त हेरत), प्रमित्त (मह तेस कारों होत है देस ह स्थान मा बर्गा, वेतरणी (विनरणी नावनी नदीना उत्तरेण सीना है। उन्तरे ् भारत् । सारणा (वतस्या नामणा प्रश्ना । वर्षा १८ ५१०००-१० वर्षीने भारत् । स्व दुश्यादितमे तही सामिना वस्त्री (प्रश्नी १८ ५००० । ४०००० केश्वरमा (पीक्षमा) पाने हो. हे सर्व नवर्षते । इसे विकास के है है स्वीतीन मिन्। एवं भागां, "२८०. हो विवेदानिती दृष्योत् स्वेत हो हे-

तिरिया कमेन्द्रसागनिवायवहवेधगमारयनवारे ।

न निद्धंये पांचेता, पांच्य जंद निर्वामिया देनों ॥ २०० ॥

क्रिके विके (धरी, जेश, छ। हिंहें) स्क्री (धरी, केरहाज रेडम्ब्रिक पाटा समित्र है। इस र हेस्ट्रिक है सार्ष ५ देखा र जीवर प्राप्त है। ति श्रीकेष्ट्री अने ब्राह्मण एक्ट्रीहरूको नहीं है है सने हैं के क्ट्री के हरे हैं। ब्राह्मण た 本本書 福 智能書 いんはない 本書 本書 本書 ないます とかます しんさん まま かんしん

An tien Medicial Minist, gigu, dali, gegen, fueld.

आजीवसंकिलेसो, सुंस्कं तुंच्छं उवहवा बहुया ।

नीर्यजणसिङ्गा विये, अणिङ्गामी अ मां पुम्से ॥ २८२ ॥

अर्थ-" अपि च (वळी) मनुष्यभवमां नावजीव (जीवन पर्यत) संहेर (भननी चिंता), तुच्छ-असार-अल्प काळ रहेनारू एतुं विषयादिकनुं मुस, अि चौर विगेरेथी उत्पन्न थता वणा उपद्रवो, नीन (अवम) लोकोना आक्रोशांकि दुर्वचनो सहन करवांअने अनिष्ट स्थान परतंत्रताथी ासगुं. ए सर्वे दुःगना हेतुओं छे.

चारैगरोहवहवंथरोगधणहरणमरणवसणाई ।

मर्णसंतावो अर्जसो, विगंगोवणया यं मोणुस्से ॥ २८३ ॥

अर्थ-''वळी मनुष्यभवमां कोइ पण अपराधने लीचे काराग्रहमां रुंधन, टंडाहि कना मार, रज्जु शृंखला विगेरेथी वंघन, वान पित्त अने कफथी उत्पन्न यता रोगो, धन हरण, मरण अने व्यसन (कष्ट), तथा मननो संताप (नित्तनो उद्देग). अपवश (अ कीर्ति), अने वीजां पण घणा प्रकारनां विगोपनो (वर्गाणां) ए सर्वे ज्यां (मनुष् भवमां)दुःखनां कारणो छे; त्यां (त मनुष्यभवमां) शुं सुख छे ? कांइन नथी." २८

चिंतांसंतावेहिय, दास्द्विञ्ञाहिं दुप्पंउत्ताहिं ।

लध्यूण वि^र माणुस्सं, मंरंति केविँ सुनिव्विण्णा ॥ २८४ ॥

अर्थ-"मनुष्यभत्र पामीने पण केटलाएक पाणीओ कुहुंवना भरणपोपणा कनी चिंताए करीने अने चौरादिकथी उत्पन्न थता संताप करीने तथा पूर्वभव करेळांदुष्क्मीए घेरेळां एवां दारित्र (निर्धनपणुं) अने क्षयादिक रोगोये करीने सु विंण्ण एटछे अत्यंत निर्वेद-खेद पाम्या सता (खेद पामीने) मरण पामे छे. बाटे ए रीते चिंतादिके करीने मनुष्यभव निष्फल जवा देवो योग्य नथी; किंतू अमूर्य म ध्य जन्म पामीने धर्म कार्यने विषे उद्यम करवो योग्य छे ए तात्पर्यार्थ छे. , २८ हवे देवता भोने पण सुख नथी. ते वात कहे छे—

देवां वि´ देवेलोए, दिव्वा भरणाणुरंजियसरीरा ।

जं पिखंडंति तंत्तो, तं दुरंक दारेंगं तेसिं।। २८५॥ अर्थ-"देवलोकने विपेदिव्य अलंकारोधी अनुरंजित (अलंकुत-शोभायमा छे शरीर जेमनां एवा देवो पण जे ते (देवलोक)थी पाठा पडे छे-चवे छे, एर

गाथा २८२-वहया । नीचजनाक्रोशनम् । गाया २८३-चारगनिगेद् । चारके कारागृहे रोध: निरोधः । अयसी । -. for xfMil

मेरोद्यी वर्षीन अधिवयी अरेडा एवा गर्भोतामणं आहे हैं, वे देवीन अति हास्त े (१९९१ कुटा है; तेथी देवजोडमां पन नृत्य नणी, 'प्रथ्य.

त्रं मुर्गितमाणनिभवं, चिंतिय चवंणं चं देवलोगाओ ।

क्रियं नियं ने नि व प्रद्धे नयमकं हियं।। ३५॥

भर्थ-" ने (अभिद्ध एटडे अनीन अपूर) देव रेडटना विवस्ते (येपवेंने) अने स्थोकपकी चानने मनमां विचारीने (निनिय-दिविज्यानी वारोने प्रदर्श माडा पृथ्ये होस्सीनी पूर्व खेळी लायान्स त्यावे दरीने सने हेबाले महेब के। परंत्र के सुरविधाननी नेना पर्या ? अने हो भीष स्थानमं पन्यू शहना गर्या-का) दक्तां मुक्यों ? एशे विकार क्षीने ने सेलें इटच तेली इतीन में कुछरे को सहा। यहने) पाटी धनं नधीन, ऐसी हमिने भी बन्धन-भी करणव है दू ल हे, पन कोन्य नभी; अर्थत दर्भ भन्देद यह नहें लेखा. पर है है है है # 3. 7 3.6E.

इतियो देशानिना प्रस्ट द्वागतुंत्र स्तेत होये-र्नोतिमायमयको हमाणमायान्त्रोमहि एवंगार्हि । को वि समित्रिया, नीने कता मृहं नाम ॥ २००॥

अपे-' देशे पन रेंप्से प्रस्ता पताप कीता हैशेज रहेजा प्रस्किती है है जैने भेशे विश्वत, पर (अर्थान, अर्थितिक क्री. मानावाना वेन्द्र स्वान्त्रपुर्वा भागामि भने जो (एडि-सामित) हिल्ली विकास विकास है के वेह समान 14 m. " 263.

में वि नाम नाईण, रोन पुल्या महीन पुल्याने । नोमिने मोहीण, को "नोग होस्टन ग्रामने ॥ ५८०॥

冬 城市 在一点 素城特色是 A 中京大學 育 精液性衰萎 TX 一般 在 有年7年元 中外市

^{* * * *} I There & weeking I have an if \$ 1 th to the in

सर्वे समान अवयवोने धारण करनारा छे. (आज्ञा करनारमां ने आज्ञा उठावनारमां अ यवनो कांइ फेरफार नथी). स्वामीपणुं पोताने स्वाधीन छतां कयो माणसदासपणुं (गीकार) करे ? कोइ न करे. एटछे वीजानी आज्ञा उठाववानी जेम जो श्रीजिने वर आज्ञा उठावे, तो तेओ सर्वगुं स्वामीपणुं पामे तेम छे, माटे जिनमरूपित धर्मनी आ मानवी जोइए " २८८.

संसीरचारए चौरए ब्वै, आंवीलियस्स वंधेहिं'। उँब्विग्गो जर्रंस मंणो, सो किर्रं औसन्नसिद्धिपहो॥२८९॥

अर्थ-" कारागृहनी जेवा: आ चार गतिवाणा संसारना भ्रमणमां कर्मरूप वं नोए करीने पीडा पामेळा (वंधायळा) एवा जे पुरुषनु मन उद्देग पामेळुं होय, ते रूप निश्चे आसन्नसिद्धिपथ (जेने सिद्धिमार्ग नजीकमां रहेळो छे तेवो) जाणवो, परिमित संसारीनुं (जेना संसारनुं प्रमाण थयुं छे तेनुं) लक्षण छे. " २८९.

ओसन्नकालभवसिष्टियस्स, जीवस्स लर्वखणं ईणमो । विसंयसुहेसु ने रंजजइ, सञ्चत्थामेसु उंजजमइ॥ २९०॥

अर्थ-' जेनी अल्पकाळमांज भयथकी-संसारथकी सिद्धि (मुक्ति) धवानी एवा जीवनुं ए छक्षण छे के-तेवो जीव पांच इंद्रियोना शब्दादिक विषयोगां रंजित-सक्त थतो नथी, अने सब्व के० सर्वत्र (तप संयमादिकना अनुष्ठानमां) पोतानी विक्ति छे. '' २९०. अहीं गाथामां प्राकृत भाषा होवाथी तृतीयना र्थमां समिनी विक्ति छे.

हुँज्ज वं नं वं देहेवलं, विइंमइसत्तेण जैंइ नं उंडजमिस । अतिथिहिमि चिरं कोलं, वेलं चे कीलं चे सोअंतो ॥२९१॥

अर्थ-" है थिष्य ! देहनुं वळ-दारीरनुं सामर्थ्य होष के न होय, तोषण नं रित (मननी धीरन), मित (पोतानी बुद्धि) अने सत्त्व-साहसवटे हरीने (वर्ममी) उ करीन नहीं, तो पाउणयी वळने (एटले बरीनुं सामर्थ्य दाल नयी एम) तया ही (एटले जान वर्ष करवानों काळ नथी एम) बीच करनी (जिचार करनी निरहाल म सनाम्या पदीन-अवग करीन-नारे अपण हरतुं पडने; अर्यात् वर्ष नहीं करान्यं

राचारदर्चारवद्या आवि हीयन्ताचार हृद्व-हारावारे द्वाआवीलियन्त-आपीदित हिर्दे-'हेंद्र) राचारर रेद्रगमी इद्वर) सञ्चलामेशु सर्वेन्याप्रा आहे हे सकुर्तागीये स र प्र' १९९ विद्युत्र स्तित् । अस्विद्दिन-प्रसादकी । सावता ।

कर्मा का सार मुर्ग बीह हमें न हे हो ने प्रक्रियों मान वे न है । उस कें के ह्यानी क्यर आपने, "२१%,

्रविद्धियं चं 'बोह, अंकितो नोगयं चं पन्धितो।

सिंगई गोर्ड, लभीत कंपरण मेंहनं॥ ११३॥ अथ-" दे पूर्व ! आ भवे बात रहे जी की की देने होने साहित उसी का हो

धरों) प्रते बनागन एकछे आपता वह मेंदेवी पर्वनी प्रतिनी पावला अपसे ्यों हे बीना भागी ने प्रोतिने हमा मृत्ये होते प्राचीप है न्यूर्त मा क विनेपाल्या उर्वाचेनुं जागपन हाती नहीं, तो जाता जानी हुं हो है।

1 " 323. र्श्या अर्थना अध्यमग्रित पुरुपाने अपदेश आहे हे---

ाग कालक्लरम्माक्तालंकगारं चिन्तं।

वं वियं निर्यमपुरं, निरुज्ञमाओं पमुन्ति॥ २५३॥ को । निस्तानी (आवस्य गला) नमुद्दी होत्वन (स्वेडे कुट्टाना है। सन्दर्भ

भन्ती । स्वत्रास्त्र प्राप्त भेषे । बार (प्राप्तस्य हैं है है है है है है है है है क्षा भाग पंचार भाग में हैं। भी केंद्र केंद्र हैं सं या यही) यह रोग्न आने स्त्रीत वहन हरिते क्रिया राजे व्यवस्था मेर किया, पर विकोर सब विवसती हैं होते (आप ने पीप के कार्य करी के कार्य हैं जिस हैं अर्थवार के हैं पीप सार्थ के के सबसे बड़िये कार्य करी के कार्य हैं।

मं सद्भवा विद्याः ५००

स्थेल ने परिवारी, नेपमजोतींड नीच दिनाई ।

संदर्भाष्ट्राचे, सह जाना संतर् आरे १८०, ॥

सैमिईकसायगाखइंदियमयवंभचेग्गुत्तीमु । सज्झायविणयतवसत्तिओ अं. जयंणा मुविहियाणं ॥२९५॥

अर्थ-"सारुं (शोभन) छे विहित (भाचरण) जेमनुं एवा गुविदित साधुओने(साधु ओए) इर्यादिक पांच समितिनुं पाळन करनुं, कोधारिक कपायनो निग्रह करवो, ऋदि रस अने साता ए त्रण गारवनुं निवारण करनुं, इन्द्रियोने वशकावी, जाति विगेरे आध् मकारना मदनो त्याग करवो, नव मकारनी ब्रह्मचर्यगृप्तिनुं पाळन करनुं तथा वाचना दिक पांच मकारनो स्वाध्याय करवो, दश मकारनो विनय करवो, वाहा अने अध्यंतः भेदे करीने वार मकारनुं तप कर्नुं, तथा पोतानी शक्तिनुं गोपन करनुं नहीं. इत्यादिक् यतना करवी जोडण. " २०५.

हवे यतनानुंज निरूपण करे छे.

जुंगमित्तंतरिद्धी, पैयं पैयं चर्दखुणा विसीहिंतो । अंव्वित्त्वित्ताउत्तो, इरिकासमिओ मुंणी होई ॥ २९६ ॥

अर्थ-"युगमात्र (चार हाथ प्रमाण) क्षेत्रनी अंदर दृष्टि राखनार, पगछे पगछे चक्ष वहे पृथ्वीनुं विशोधन करतो एटछे सारी रीते अवलोकन करतो, तथा शब्दादिक विषयोमां व्याक्षेपरहित (स्थिर-मनवाळो) होवाथी धर्मध्यानमांन रहेळो एवो सुनि

(त्रिकाळने जाणनार) ईर्या (गमन) ने विषे समित एटळे सारी रीते उपयोगवाळी (ईर्यांसमितित्तं पाळन करनार) कहेवाय छे. १२९६. कंडजे भीसइ भीसं, अणवज्जमकारंणे ने भीसइ ये। विभेगहिवसुत्तियपरिवज्जिओ अं जेंइ भासेणासमिओ॥ २९७॥

अर्थ-" ज्ञानादिक कार्य सते (उएदेशादि-पठनपाठनादि निमित्ते) अनवग्र (निर्दोप) भाषा (वचन) वोछे, अने कारण विना वोछेज नहीं, तथा चार विकथा अने विरुद्ध वचन वोछवा (चिंतववा) ए करीने वर्जित (रहीत) एवो यति भाषा सिमत एटछे वोछवामां सावधान कहेवाय छे. " २९७.

वांयालमेसंणाओ, भोयंणदोसे चं पंच सी हेइ। सी एसणाई संमिओ, अंजिवी अर्न्नहा होई।। २९८॥

गाथा २९५-इदिअ । गाथा २९६-विसोहंता ।

(- ते वैताकोश कतारती एवणा (पादास्ता तेष । ने तथा नेशेक्स व पहारना योजनना डोपीने भूद हो है, एस्ट्रे देश डोपरीश नहार ्षात्) प्रया (आधार) ने विषे यदि (अप्रेक्सन) हरिया है. र्गीक बहुतान है), जनाथा परने प्रशुद्ध अने होत्रणी दृह पर्वेने अहार है, के रे प्राणीनिमानीविद्याहारी हरेगा है, एटंड मोहने देव पारत ंसाइट प्रा नीविष्ठा (उदर्शनकोट) स्थान होताप है। ५०८.

पृथ्व बंदम् पंतिस्तिय, पमंज्जितं जी हेनेइ गिंद्ध ना। भाषाणमंडनिक्वेवणाइ, निमिओं मुंगी होईँ॥ २००॥

त्यं-'ते (पृति) प्रथम बना प्राय तर्षा परेता) वर्षे क्षेत्र क्षेत्र शर्ष होते बोरने) पत्री रजोडरणादिस्संदे स्थातना काले (पूर्णने) होत रत म र्रकार स्थापन करें (मृक्ते) हैं, अपना निकार में बान तर हैं. है इति स्थान (कारी वस्तुने प्रश्य) जेते बोध्या (प्राह्मण्या) विशेष (व्यक्ति । त्रास्त्र) कृति मिन (माक्यान) होत्र छे. अवान पाना (अवस्य होते होते प्रा भूतं बात् बातो प्रथमा मुक्तो साम् भारान विधेयनामस्ति करेगाव देशे रहे

उन्तारासवगावलज्ञहिम्बाण ए व पांचविदी । मुतिगरु गर्से, निमिनी होई नांसिम्जी ॥ ३००॥

म्प्रेन्याकार् (पर्वामीतः), प्रवास (क्यूनीः), वेंद्रतः कृतेने वृत्रत्याः भी) अह (द्वीपनी मेल); यन विशास मामिकामी है के शह ब दाई होती मधीकार समा भोग (पराना कार्य) महत्त्व बेंद्र तन क्रिके हे अने हीन त् भी भारता हे तीन विभिन्न पूर्ण मिला है। कि स्थान के स Higgs is "less.

रेंग्रे भागो नेता लोगो तमो है प अह पा भी भेर्व देवेद्यान्तंत्रात्वां से बंदे ॥ १०३॥

以称,于更加以外在人类 在 zhu 哲美 z z zh 在 正 正 zh z y

ずこうで エストアはなるない 人はなるないかいはまなす かいきしゅう

उपदेशगाळा.

दुगुःसाः ए सर्वे साञ्चात कलि-हेशहप छे. ए दशेने-हेशहप नागवा, " र०!. नयन क्रोपना भेट (पर्यायो कई है.

केही क्लेही सारी, अवस्परमच्छरी अंशुमओ अ। चंडनगमगुंबसमो. तामसभावी अ संतावी ॥ ३०२॥

निच्छोडेण निष्मंछेण, निरोयुवत्तित्तणं असंवासो ।

हेंयनामी अ अंमरमं, वंबेंइ घगंचिकणं केमं॥ २०३॥ गुगमन्॥ अर्थ- रहेव अतीति मान्), हळः (जननवी मारामारो) सार (हेशा इंड न उन राजका), वरन्यर मन्सर (मांडोनांई मत्सर-अदेखाइ वास्य कार्ग)

रद्वार । स्वात्तार रहते कोर हरताभी पालकभी पंथाचार भाग है, भारे बहुत । के हो न के होताक), बंडव (मुख्यि चक्रासी-संती कारो ५ सुरण इंट्रेंड्रें म्या प्राप्ति मार्गों है), सायम भाग (समेगण सामों है) भी

व्याद न वह हो उस प्रतिनिवित्ता के १ अन्तर प्रति । अपनी

इंग्डें इंग्डें भाग ने ना श्री-ने वार्त्ती, असमा के पारेशार भाग के व र त्राहरू हो कि ते बाहे प्राधित पण कार्या प्राधित के साहे है। ज

्र राज्य से अवस्था महाराष्ट्र का स्थापन स्थापन स्थापन है। जन्म स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन The state of the party of the party of the

े विकास सम्बद्धाः विकास

· Continuental

. म. . . . भाष्मामा

1 1'11

> 11 1

1 1

1' A

लींश (राजानी निवा करती) अपया (यीवाना एनीने विषे केये व्यव हरता-होती आहेत रहती) ३०४. हीजा (शैनानी हीन मानि कोर महत्र पति हैने रिका हरती), निरम्धारित (जोको पम उपला क्रिको नहीं है) निरं जात्वरी र महा-प्रदूषणुं-अन्यता), प्रतिवय (प्रति हेकी उन्ना न प्रा, अवन हिंको न

), प्रति प्रमुक्तप्रदास्याः (सेवाना अन्तिकः मृतील् सर्वास्य स्मृत वा ने .. मा मोरे मानरप अवशा यानवा कत्रकर हो एवी नानवा पर्वार्थ है. रेश क्रमाणी है से बाली सेले चल्लीह रूप संसारमां यह है ज्यांचे हैं। यह हुन हाम हरनार देशापी (धनुस्य रोजापी) वसमा केल्प है, है अन्तर,

वे भागाना पर्याची करे छैन गया कुंद्रीम पच्छत्रपावया, कुंद्रस्यद्भंचनवा ।

ग्रवंथअमस्मात्री, पेरनिरुवेशाहागे अं ॥३०६॥ कुँठ छोमें संबद्धिया, गृहीयाम्नणं मेड कुँदिया।

रोनंभेयायणं विर्वे. भये हो डिमण्यु विः ने इति॥ ३००॥ युग्यः ॥ अर्थ "माया-सन्ताम मात्राः के देशि ने महत्त्वत्र । नार-निर्देश का में प्रस्पापा के जानी भीने प्रधानेने के हैं, हुए काला, काल काला है हुए हिं सेबाने ऐसाई ने), महे दर्शपीनी अपन्ना (क्या क्या अपने होड़ है और पहेंचे ही है, परना निर्मार मध्याहण) है। अवहार र जा छहे । कर्रामावद्यार, व है। असे माना रहे पत्ती हैं। इसी प्रश्ने अब सामान करी है है. कि के प्रक्रा, संस्थिति हो होते होते साथ मार्ग मामार्ग लगा है रहे । हो सह विकास पर्यो के थे. वे कामा भी होंसे कीमा है। अंभे के का नहीं है का ते इस के अपूर्ण सामान्य संदेश होते केलेगाने तम यह स्वा उन्हें पर प्राप्त

कि दीवन देशे हैं है सेने अस्तिपतीत्या ये. विविद्धारी वेद्धाने । इन्द्रमार्थकोती, त्रांतिश्च अति । १००० व मुख अवर्षणांका है, क्यानारण क्या

अर्थ-" छोभ-सामान्य छोभ, अतिसंचयजीलता (छोभवडे एक जातनी अपना भणी जातनी वस्तुओनो अति संचय करवाना स्वभावपणुं), क्षिप्टत (होभवडे मनी क्षिप्टता-कलुपता), अति ममत्व (वस्तुपर अत्यंत ममता-मारापणुं), कल्पाक्रनो अपिभोग (भोगववा योग्य अन्नादिक वस्तुनो अपिरभोग एटले ते न भोगववुं अने कृपणताने छीचे खराव अन्नने पण नांखी न देतां खावुं ते), अश्वादिक वस्तुओ नाष्ठ पामे छते अने धान्यादिक वस्तुओनो विनाश थये छते आगळ एटले रोगादिक उत्पष्ण थवा, ते नष्ट विनष्टाकल्प्य नामनो लोभमकार कहेवाय छे ३०८ तथा मूर्ज (सूरता-धन उपर तीवराग), अतिवहुधनलोभता (घणा घन उपर अत्यंत लोभपणुं) तथा सदा-सर्वदा तद्धावभावना (लोभपणाए करीने मनमां तेज भावनुं वारंवार चितवन-करवुं)-ए सर्व लोभना सामान्य अने विशेष भेदो छे. तेओ संसारी (प्राणी)ने महा घोर (अति भयंकर) जरामरणना मवाहरूप महासम्रद्रमां वोळे छे-ड्वांडे छे-माटे तेव दारुण लोभनो त्याग करवा योग्य छे. " ३००.

एएस जो ने वट्टिजा, तेण अपा जहंडिओ नीओ।

मणुंआण माणिणिज्जो, देवीण वि देवेयं हुर्जा ॥ ३१० ॥ अर्थ-"ए क्रोधादिक कपायोने विषे जे (तत्त्वज्ञ) पुरुप नथी वर्ततो-कपायोने नथी करतो, ते पुरुपे पोताना आत्माने यथास्थित (सत्य-कर्भथी भिन्न-शुद्ध स्वरूप याळा) जाणेको छे एम ममजवुं, अने ते पुरुप मनुष्योने माननीय तथा इंद्रादिक देशे ना पण देवत रूप (इंद्रोने पण पूक्य) थाय छे." ३१०

रंग ते कपायोने सर्पादिकनी उपमा आपे छे— नो भागमं भंगमं तीर्याच्यास्तरिक किया

जो भागुरं भुंअंगं, पंयंडदाढाविसं विंधहेड ।

तत्तो चिय तस्संतो, रोसंभुअंगोवमाणिमणं ॥ ३११ ॥ अर्थ-' ते पुरुप नापुर (रोद्र-भयंकर) अने जेनी दाढमां प्रचंड विष रहे छ एस नुनंग (पर्य) नो (लाइटी विषेदेधी) स्पर्ध करेले, तो निवे ते सर्पयकीन (पुरुप नो नंत (पर्या) याय ले. आ रोद रोप (क्रोब) रूपी नुनंगनु अर्धी अर्था नुनंगनु अर्धी अर्था नुनंगनु अर्धी अर्था निवे ते संप्रम (चारिश न्ती नीतिन्तो नाय हरे ले माटे रोद्र मर्पनी त्रेष तेनो त्याग करवी. " २११.

जो आंगलेड भनं, क्यंत्रहालोत्मं वर्णगइंदं।

मी तेले चिय बुक्तदः मांगगइंटेण इध्वयमां ॥ २१२ ॥

- वर् ३११-५-वर्ग मा इङ्जाद्र। मानन्त्रमा । - वर्ग ११५-१ - १६-ते मोवान युद्धांना वरावदेश ११तह। त्रवह नुष्येन-नुषीकः

संस्थाने (अपार्त) पुण महीलने की उपार्तिक (नागरावा) है जि का है हैंसे अबि बर्गेटर एटने ब्रोकेटर ने दान है हैं है है है है है **श्राहित प्रमासिक्य हैं. देश इसके हैं, अदल का इंडिडेंट के प्रमासि हैं।** # हे स्क्रेस्ट्रोर्स सत्ते प्रवाह प्रश्ना की त्यार प्रश्ना के स्वाह स्वर्ण के स्वर्ण के स्वर्ण के स्वर्ण के स्व (१९४) भेरता नेवादित भीता पन्यंत्रे को नेव वाले हेरिन पा अपा है है.

विसर्वर्क, महागदर्गः जो। प्रांचनद्र सामृगायः अर्थायः ।

में। अभिनेण विशेष्ट मावा विनयोद्धाः गरमा त्राः॥

्र क्षेत्र महिल्ल म्हरत्वाद्वार स्वतार देखाल है है है है । सहिल्ल े भूति चर्ड हो है है। है इस अंदा महिल है जो है है है है है है है है है केम्ब्रें भारे हैं, एस रहे तम को को किस्ता है है है है है है ्रेष्ट्रेन्स्य वर्षात् रामहित्र चात्र सहि ग्रुव हिन्ता, सने हिन्द्र २०००

चीरे भेषातर नंतर्गामः विविधनस्याद्धांपर

नी परिमा भी पनितेत, लोमनतामार्गर भीने ते उत्था

क्षेत्र के बसुष्य प्रेस रेगीटी, जीवन कार्यक्ष उसे प्रस्त कार्य करा भितिकार को से पूर्ण यहा पहारक्त हिन्दे भी स्व कर के तुम्हण कर कर कर है के स्व

भूतिमाद्वीसर्वः परं परं जावित्रा कीले ।

रोमेम जेंगी व लिस्सर भी, हमीन वी पाने पुरुष । 東龍 计 难。附着有 20年 军部首任 1985年 一年 1986年 1986年 1986年

大きない かっと からがこかから マネットから こからまる なく まがまな Maria M THE MUSE OF STATE STATES OF STATES O

उपदेशमाळा.

अर्ट्टेट्टाम केळीकिळत्तणं हासिखिई जेमगर्छ । कंदंणं उर्वहसणं, परेस्स न केरंति अंगगारा ॥ ३१६ ॥

अर्थ-" अनगार (यर विनाना-गृहस्थाश्रमरहित-साधुओ) वीना माग (वीना माये) अष्ट्रहाम्य (खडलड हसनु), वी नानी क्रीडामां असवत वननतुं ना ण (बोळवुं), हास्यबंडे बीनाना अंगनी वारंतार स्पर्श करवी (ससकोळीणां-गर्गरी करवी), एक बीना साथे सपकाळे हायत ळीओ देवी, कौतुक करनुं अने उपास मानान्य हाम्य करवुं एटळां बानां करता नथी." ३१६. उति हास्यद्वारं.

इने रनिदार कई छे-

साहुंगं अणेर्द्ध, सर्तरी एलो अणा तबे अर्द्ध।

मुलअपनी अईगहरियों य नेत्थि सुप्ताहुणं ॥ ३१७ ॥

अने ने नार मेने भागा ने की एडडे मने भीता, भारत विमेरे न आगो प्र अर्थ पर अपन को मा की तिमाना अभिने (अपने) आर्शिकियों भी हैं भी देनेत का न जा का तिमान प्रमान करता, हु गहु में इस्तारा एंगा भी जा का को कि का कि मान अपने अस्तार की गुन्मार एंगा भी जा के को का का कि मान मान की मान की मिन करती नहिं अस्

ेरें हर है। अंतर में त. अमंत्रा प्राप्ति पा

ं व्यक्ति ६ लगा मुनां स्थानं ॥ ११७॥

ે માર્યા માર્યા માટે કરે કે માર્યા માટે કરે છે. માર્યાન માર્યા માર્યા માર્યા માર્યા માન્યો માર્યા માર્યા

the second of th

मेगं मतावं अधिहं चं. मनं च वमगुनं नी

इति स्त्रेमावं. ने नाहें वर्गति हें होति ॥ ३१३॥

समे-अधीनामा संदेशीना माण्यां भीत हरता नेश्वर व इस इस्टूड हा ही । के (भी हैं से ती का कार्य का कार्य हैं । क्षितार्), सन्यु (शिक्षको स्थाप विकास १ का कुछ है बोहारहे जासवाकार दिला एरती है. हर स्व १०१८ वर्ष के हैं भारत्वाव ने बोटेवी करत हती ज महत्त्वीका करवार ने ः शामे अधना नवी-सना नकी वे अधन

के बच्चार को देन

मेप मंगोर विवेद्यो, मनविवेद्यो विद्वित्वानी है। प्रमेशनदंसणाणि यः दहास्मातं हिन्ते हिन्ता ६००॥

भवेन स्वास्था (क्षेत्रका र तस्ते इस्ते । प्रति कर्ष के अन्य पासकी, विसंविद्या के केंद्र कार्य केंद्र कार्य शहर के के केंद्र कार्य मार्कि महिल्लामा । जा भारत है भारतमध्योति । संस्था होत्रा प्रति ।

ed omme Mr ef Is

एँयंपि नीम नीऊण, मुज्यियव्यंति गूण जीतंगा। फेडेऊँण नं तीरइ, अझेलिओ कैममंगाओं ॥ ३२२॥

अथ-"नाम (मिल्र) एउछे जिनभाषित ए । ते प्रें म्रेला क्षायाटिकने जाणीने पण निश्चे शु जीवने पूढ यतुं योग्य छे ? अर्थात् गाम्य नभी (त्यारे आषाटे जीव मूढ थतो हुओं ? हुने, जवाव अ ५ हो ५.-) नोपण ीन ते कपाय ने दूर करवा शक्तिमान थतो नथी. केमके कर्षसंपान-भाव हमेंना समुद्राय अतिवळ्यान छे; जेथी ते कमेंने पराधीन थयेलो आ जीव अकार्यनी सन्मृत याय छे, अकार्य करवा तत्पर

र्जंह जेह बहुँस्सुओ सम्मंओ अ, सीसगणसंपरिवुडो अँ।

अविणिच्छिओ अं र्सभए, तंहे तेहे सिद्धंतेपडिणीओ ॥३२३॥ अर्थ-" जेम जेम बहु त (घणुं श्रुत जेणे सांभळ्युं छे एवी अथवा जेणे व श्चननो अभ्यास कर्यों छे एवो) थयो, तथा घणा (अज्ञ नो) लोकोने संमत (इष्ट) थयं वळी शिष्यना समूहवडे (घणा परिवारवडे) परिष्टन थयो, तोपण जो ते समय (सि द्धान्त)मां अतिश्चित (रहस्यना ज्ञानरहित) एटले अनुभवाहित होय, तो तेम तेम तेम सिद्धान्तनो प्रत्यनीक (शत्रु) जाणवो; अर्थात् तत्त्वने जाणनार थोडा श्रुनवाळो होय तोपण ते मोक्षमार्गनो आराधक छे; पण वहुश्चन छनां तत्त्वजाण न होय तो ते मोक्ष मार्गनो आराधक नथी पण विराधक छै, एव जाणबुं. " ३०३.

हवे ऋद्धिगारव विषे कहे छ-

पवराइं वच्छैपायासणीवगरणाइं एंस विभवो ं मे ।

अविय महाजणनेया, अहं ति अहं इडिगोरविओ ॥ ३२० ॥

अर्थ-" आ मवर (मधान) एवां वह्यों, पात्रों, आसनो अने उपकरणी मारो विभव (वैभव) छे. (अपिच-फरीना अथवा तमुचयना अर्थमां छे) महाजन एटछे मधानजनोने विषे नेता (नायक) छुं. महाजननो आगेवान विचारनार ऋद्धिगारवव ळो कहेवाय छे, अथवा अनाप्त (नहीं माप्त थयेली) व वांछा करनार पण ऋदिगारववाळो कहेवाय छे " ३२४.

हवे रसगारव कहे छे-

गाथ। ३५२-मुक्त्रियव्वंपि । गाथा ३२४-विद्ववो । अविअ-अपिच । इद्व। इद्वगाराबः

असे विसे हरे. जेहा पर्व व निन्या, बेरी।

निद्राणि पेसेलाणि है. मेनाइ निवारि । मही ॥ ३ %॥

सर्वे में बस्तारको स्थिति के विश्व के विश्व के विश्व के स्थापन के किया है स्थान विश्वास्थल । इस्ति । विश्व क्रिके मान भूगों विश्व विश्व क्षिति । विश्व व किंग स्व (लुन्से) भारत न्यान से त्यान से निर्देश के प्रति हैं। ्रामा प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के अपने के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान विकास स्थान के प्रमान क्षाप प्रतेष विश्वासा वेसना कारामा एक अल्लेस के सम्बद्ध 疃。1955年

रहे मायागास्य गर्दे छे--

मुन्तुमंद्रं मेरीरं, नगणात्यारणारणंतरमे ।

गांयागास्यगुरु हो. हुन्यस्य स्टब्स्यस्य । इत्यानं ॥ इत्यानं

क्षा (क्षा) तम अस्य (१००३) हिंदी है और १००० है। इसके हैं। क PERSONAL ASSESSMENT OF THE PERSONAL PROPERTY O

् क्षेत्रिक द्वार करें केन

हेल्ट्सपार्गीः पंतरात्ताः अतिहासः

वाणि स्त्रिप्ति व वेद्राप्ति । विद्राप्ति । विद्राप्ति । ELE SECTIONS OF THE PROPERTY O

अर्थ-" गंधने विषे (कर्प्रादिक सुगंधी द्रव्यने विषे), रसने विषे (क्षि विगेरे पिष्ट पदार्थीना आस्वादने विषे) अने सुकीमळ श्रूट्यादिकना स्पर्शने विषे स्निहीं पामेळा सुनीए वीणाना तथा स्त्रीना संगीतना श्रूट्योगां रंजित (रक्त) यतुं न तथा रूप एटळे स्त्री विगेरेना अवस्वनी सुंदरता जोइने रागवुद्धिथी वारंवार सन्मुख जोवुं नहीं, परंतु (धर्मने विषे) उद्यम करवो. '' ३ ८.

निहैयाणि ह्याणि यं, इंदिआणि घाएँह णं पर्यत्तेणं। अहिर्यत्थे निहयाइं, हियेंकज्जे पूर्येणिज्जाइं ॥ ३२९॥

अर्थ-" साधुओने इंद्रियोना विषयभूत पदार्थोमां रागद्वेप करवानो अभाव होव तेमनां इंद्रियो निहत (हणायेछां) छे, अने ते इंद्रियोना आकार कायम होवायी पोतपोताना विषयोने प्रहण करती होवायी जहत के० नहीं हणायेछां छे. एटछे क हणायेछां अने कांड्क नहीं हणायेछां होय छे. एवां इद्रियोनो (णं-वाक्यनी ग्रं माटे छे) हे साधुओ ! तमे वात करो एटछे प्रयत्नव दे वश करो. ते इंद्रियो पोव्योत विषयमां रागदेप करवा रूप अहित अर्थमां व्यावा योग्य छे, अने सिद्धांतादिक कि

हवे पददार करे है.-

जोइकुलकावलसुअतवलाभसरिय अष्टमयमत्तो । एयाँ३ निय वर्षद, असुहाई वहुँ च संसारे ॥ ३२० ॥

नर्व " ने (मनुष्य) नाति ते जा सणादि है, हुळ ते पोतानो वंश, इण ते श मनु मोनाम, तळ ते गरीमनु मागच्य, श्रुत ने शायनु ज्ञान, तम ये छड़ अडमादि यान में इत्याहरू है ता पाण्ये श्री ते जेल्यी न्य हुता ए आह यहारणा भद (नहं हा या मन यह शे दाव ते ते यह हम्से दाय ते निश्च मा मेंगाममें पणीपाद पाणि दायेग्न नद्य होते हे पर्य होते जा नाद्यांची हो है तम्हुतो गर्व हरे ते ते ते वि

देश्वर इत्याप् इंडे पहार्गांत क्वानमामि। बट परमावित व अनेमप्ते । जा लिने ॥ ३३१ ॥

A RESERVED TO CARE A CARREST AND A CARE ASSESSMENT AND ASSESSMENT OF THE ASSESSMENT ASSESSMENT OF THE ASSESSMENT OF THE

e and the second of the first

मेनासणीययगां. नीर्यद्यागाः पायेतानी यः

ं ममें अंगेनं कालं, नन्हाओं नेत् त्र किता हा। १२६० वृग्य है।। महें में के मागम फेलाजी उत्तर नहीं गरे रूपने मान होंगे हैं जो सार्थ किया है भी कि असमहाना का उसे पर है आ है। इसे अह देखारे, का (माम्योगीत विभागतार महिल्ली के प्रतम पर मेरीमारी सिमा कि विशे के कि 12-12 के विकास में बार गरिका क्ष केंद्राची श्रीच क्यांगादिश रिन १० गाँकि हैं स्थाने अन्तर राज्यकी अंदिश एक कि, रात्रे अमेर समारती और जर के बारे काला इत्ते के कि व समाने ले के ने के कात करते. " कर क

भेद्र वि जर्र जयेती. जर्दमेगारेम मुख्ये जोते ।

ं भी में अंजारिनी जेता. तीर्णन स्वत् परिनेष्ट ॥ १३३ ॥ भी स्वितिहरू हिंदे केंद्र पाने जिल्लाहरू के पहले हैं है के है महारेष्ट्रीक कार्यों के अध्योद्देश के से लेख जारेड के से के

भिष्णमुनिक्ति समापूर्व हो सार्वे १ व्यक्ति के कर बहार के बद्दार में से से दें हैं हैं हैं हैं है है है है है है

क्षित्रमंतिलहे. साहि हार्य हो में पेन्सी ।

' रूपतंत्रातींनायको, निन्दतं अंगुलातं ॥ ५००॥

भूगामुनामं, इविवर्णाम् स्वापनं स

अंदिने व्यक्ति। विक्ति वे वेदिने वेदिन

राजेंग जे वर्षेत्, साम्म टा भोगार्वाम्

े विक्रिक्ति विद्यो रहे परे हे जा-रशा जिल्हित · 我就一个人就是我们,不是什么是一种情况不是一个一个一个人,我们们不是一个人的。 看着看

[「]養養生産を取りているないという」というというというというないというというというと

The same of the sa

उपदेशगाळा.

अने कायाना योगनो निरोध करनार, िष्टाः (शांतताथी व्यापाररहित), दांत (इंद्रिः योनुं दपन क'वामां नत्पर) नथा पत्रांत (कपानना छिने जीननार) एवा साधुए सी (मानुष अथव देती) अने शु (तिर्ययो)ए करीने पहित एती वमति (उपानम) ने वर्जवी (१), हो भो । वेय अने रूप विगेरेती कथा वर्जवी (२). स्वीतननु अ (जे स्याने ते वेठी होय ते एथान) वर्जेषु (हीना उठया पछी पण अप्रुक वसत ते स्थाने वेसवुं नहीं) (३), खीआता अंगनुं निरूपण ते निरिक्षण न करवुं (स्नीप

चक्षु, मुख, हृदगादिक अंगे पांगने नागवृद्धियी जोवां नहीं) (८), ३३४. पर्वनत रमरण ६.० चर्नात्त्र ग्रहण कर्या पहेळां गृहस्थाश्रममां करेळी कामक्रीडानुं स्मरण क ('¹), स्त्रीजन । विरहरूप विरापना वचननुं श्रवण रामनो हेनु होवाथी वर्जवुं (ध अति वहु (कंड पृथो भरीने) आहार वर्ज ने (७), अतिवहु प्रकारनो (स्निग्ध, मध् विगेरे) आहार वर्जवो (८), ३३५. तथा विभूपा (अंगना शोभा)ने वर्जवी (९ आ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने विषे ब्रह्मचर्यना रक्षण माटे यन्न करवी. " ३३६.

गुंज्ज्ञोरुनयणकख्खारुअंतरे तैह थंणंतर दंडुं। साहरइ तंओ दि हिं, ने वंधेई दिहिए दिहिं॥ ३३७॥

अर्थ-" साधु पुरुप खीनुं गृह्यस्थान (ब्लीचिन्ह), उरु (वे जंवा), वदन (मुख) कक्षा (काख) तथा उरस (हृदय)ना अंतर (मध्यभाग)ने तथा स्तनना अंतरने जोइने ते स्थानोथकी दृष्टिने संहरे छे-दृष्टिने खेंची छेछे, तेमन स्वीनी दृष्टि साथे पोन् तानी दृष्टिने यांधता नथी-मेळवता नथी. अर्थात् कार्यपसंगे पण नीचुं मुख सीनी सावे वात करे छे. " ३३७.

हमें सानमुं स्माध्याय द्वार करें छे-संज्ञाएण वेसत्यं झाणं जाणंइ यॅ रॉब्बगरम्यं ।

संबाए बहुती, संगे खेंगे जाई बेरोगं ॥ ३३८॥ अथे-"वाचनादिक पांच वकारना साव्याये करीने मशन्त (भृष्य) (धर्मध्यानादिक) याग छे, उने सर्व पामार्थ (बम्बुनारूव)ते नाणेके.

स्वास्थापता वाता मुनिने अणे अणे रितान मान भाग छे; अर्थान् नागदेन हर त् यत्र भी निर्धिय यात्र हे. १ १३८.

माचा देखन-विद्वित । गापा १५८-माणेह ।

उपदेशनायाः अमहित्रियद्योण, जोईनवेमाणिया वं निद्धी य । क्वी लोगालोगो, मंज्यायविष्टम पेवरकी ॥ ३३%॥ क्रों- प्याच्याय (मिद्धान्त)ने जागनार एस मृतिने प्रावं शेष्ट, प्रश्नांक ाम् अत्यो कोरतुं स्वतंत्र, पर सुपोहि अपेतिर इ. रैस्पनि इतः विश्वय अने भोता), ए मई जो तालोहतुं स्वस्य क्रवत है। बोट राह्न स्व म बोड म अविभिन अलोक. नेनुं स्पत्त्व साम्यादने दो होने साले हैं. '' ३४५, निवकाल तवमंजमुङ्जओ, नं वि केंद्र नेह्यावं। नुरंमं मुहंनीलजणं, ने वि" ने अवेड मोहुगण्॥ ३४०॥ भे-ए ते सार् निरंतर तर तथा पाच नावस्ता निरंतर हैर नेप्रको हिने. लेको पण अध्यान अध्यापन का स्तात्माप न सी-साध्यापने कि उपन , शेरे भारत भने मुहतीड (गुनावां डेंबर - पुनिनं डोडी नाड़ हार्नेनी र राजा गर्गा-साणु नरीके गनता नर्ग, द्वारत है इस अने हिस्से प् अप रोध से नेवी ने पत्तेनुं जायास्य उत्ते भीत्य, " हें के सा है स्थानायहरू हि बाह्य दिनगद्दार फरे छे-विश्वजो मांमणे मेलं, विणीओ नंत्रजो भेते । विश्वाओं विश्वमुक्तम, देशों पेमी हशी दी। ॥ १४१॥ स्थे अ विस्ता ए प्राप्तन एटर जिन्नाहित हे कुछानोंने हिंदे हु हुए हैं है। सरोग) ने परे सोधि सी सर देना स्थाने हैं है है है है है किसे भारत मिर्दे करी विजी से देशिय र इस क के होता नहीं. ' नेपी. ने क्यार गुलियों जो. यह जानदि समाय ॥ ३००॥ THE STREET THE MARK STATE STATES AND ASSESSED ASSESSED. ASSESSED ASSESSED. 野家 是主义的原因此必然我们,在上面没有一个人的证明了自己的一个人可以 神歌 ないまとないまし

हिनिनीत (निनय रहित) पुरुष पोताना कार्यनी सिक्किने कदािष पामतो नयी. अकिन नीतनी कार्यसिक्टि यती नथी. " ३४२.

जेह जेह (बॅमइ संरीरं, धुनंजोगा जहं जंहा ने हायंति क्रमें बजी में विजेली, विवित्तिया इंदियेंदमो में ॥ ३ अर्थ-" जेम जेम (जेबी रीते) शरीर सहन करे (बळहीन न या (क्रियाओ) होन न याम (क्रियाओ), ए म्याणे तम करनो तेनी रीते ।

बायो नियुत्र (निस्तारनाळा) कर्मनो अय थाय छे, तथा निनिकताए करीने भागा । नहुः (। नरतारवाळा) क्रमना तम पात छ, तमा । नात । ना उन्तियोतुं दमन पण याय हे " ३४%

जंइ तौ असंकृणिङ्जं, नं तरिस कार्जग ती ईमं कीसे। अणायतं नं क्रगंसि. संजर्भजयणं जेईजोगं ॥ ३४४ ॥

अग्ना को हरान है जिह्न ! अग्रान एनी साधुमनिना तनसाहित किना हराने ने मित्रमान न होता, तो हे जीता। आ आत्माने हमानीन अने ह नीम रही नं न रामाने (यह हो हो जा की मादि हमा नमने) हैम हस्ती नभी उत्ताम हरदानी यिक ने शेव नी की बाहिकतो नय हराशां यहने हर. " ३

मं कि देखने होति, जनगाम हिंदी सेविजा।

नंद पन भागा अ निकडनमी अ, 'ती मंत्रमी 'हंती ॥ १४४॥। त्य के के त्राचा मानवरमा में, ता मगमा क्या मन्त्र भारत के क्षा ्रेड १३८ १९६ १९६ १९६ १९६८ (१९४५ - १९४ १९६८ १९४८) माना वास्त्र हैं। इस्ति हैं the state of the man win the day of the beath the wind of the same

COTH & WHITE STEE THE ARANGE

भें कुणंड जहें तिगिच्छे, अहिंयाने उल जह गांह में लें। बहियासिनसम पुंगी, जेइ 'से जोगां में हीयंति ॥ ३४६॥

pi-' श्रो (मापु) ने रोगोंने मारो रीने नदन इत्याने नवर्ष रोव, क्या को मन करता प्या ते मापुना जोगों (पनिवेखनादिक कियाओं) रीत न वाप क्षिकिमा (गेंगनी पनिक्रिया-भीषत्र) न क्रतीः भणंत् हो भेवननी वेशाने जोचे सीदानी होय-चिपिठ पनी सेव नो चिहित्स हम्बी, ''३४६.

निवं प्रयोगमोहाकराण, चरंगुञ्जुशाण माहुनं। मीरंगविद्यस्थिं, सर्वपयत्तेग कांपन्नं ॥ ३३५॥

अरं- जिला मनवननी (जिनगामननी) शोबा (द्यावसा) द्यालासः ाणे विशे उद्यय करनामा अने संविध एट रे योशनी अनियानावदे विशास कारान्य ध्या मा भा मानुवोतुं मर्थ प्रयान (इतिह) हि वैच इच करतृ, " १६३,

रिगलं विसंद्रपस्वास्म, नागिहियस रायंत्र। का विनगहगत्यं, कीरंति लिगावनेमे वि ॥ ३४८॥

का-परिपद्ध कारणा कालाह जने बान (विद्यासना इतन हो) की क भाग हा। हेन्द्रे पत्र एको विधियानाचेत्रे वर्ष नेव्युक्त हार्थ कर्षिक विश्व भाभ भी हानी होता भी तेने नेपाइका हरते हाँचा है, वहीं वहना है होहिना है भारत क्षेत्रको स्टबा बाट एटवे के बा लोडोने कर हे हैं की कारत म म सम्मापृद्धियो निधानं पन वैशास्त्र हरे छ. एकं रान साहस्य स बाद बाब निवासीने विदे पन बेपाइक्य करें हैं। अर्थान् बोक्टाबाद भाषामाद भान अने कियारी रीन द्या देवारी है रह है हार प्रकार है।

में बसायवारक श्वादि २०५ की मान्याने विकास के हो, रहे किया हा है. **建**

स्तानं पुंचालं, अनेनिनानं निक्षितिमं भेजा गरिनोत्ती. महीमितिमा नस ॥ १८८॥

神歌をからいたできれていまいる相を乗ったさき、女は大きなないはないで、水でもできない。 水でもできない 日本日本 ハヤカザン

अर्थ-"असंयमीओ (शिथिलाचारीओ) सचित जलतुं पान, जात्यादि पुष्पो, आम्नादिकनां फलो, अणेसणीय (आधाकमीदि दोपवालो) आहारादिक,तथ व्यापारादिक श्रावकनां कार्योंने करे छे, संयमने मित्रिल आचरण आचरे छे, तेओ केक यतिवेपनी विडंबना करनाराज छे, परंतु अल्प पण परमार्थना साधक नथी." ३४९

ओसंत्रया अवोही, पर्वयणउच्मावणा ये वोहिंफलं।

असिन्नो वि वरं पिहुँ-पवयणउग्भावणापरमो ॥ ३५०॥ अर्थ-" तेवा उपर कहेला भ्रष्ट चारित्रवालानी अवसन्नता के० पराभव छे, तथा तेमने अवीधि एटले धर्मनी प्राप्तिनो अभाव थाय छे. केमके प्रवचन (शास नी उद्भावना-प्रभावनानी दृद्धि करवाथीज बोधिरूप फल्रनी प्राप्ति थाय छे; प्रवच् हीलना करवाथी वोधिलाम थतो नथी. परंतु पृथु (विस्तारवाली) प्रवचननी उद् वना (शोभा)ने विषे तत्पर रहेतो एवो अवसन्नो एटले श्विथिलाचारी पण श्रेष्ठ जाण अर्थात् व्याख्यान विगेरेथी शासननी प्रभावना करनार शिथिलाचारी पण श्रेष्ठ जाणवो. " ३५०.

गुणैहीणो गुणैरयणायरेख, जी कुणैंइ तुरुमप्पणि। सूर्तविस्सणो अहीलइ, सम्मेत्तं कोमैलं तस्सै ॥ ३५१॥

्र अर्थ-" जे चारित्रादिक गुणे करीने हीन एवा साधु गुगना समुद्र रूप साधु ओनी साथे पोताना आत्माने तुल्य करे छे एटले 'अमे पण साधु छीए' एम माने है

तथा जे सारा तपस्तीओनी हीलना करे छे ते पुरुषनुं (भ्रष्टाचारी साधुनुं) समिक कोमल-असार छे. अर्थात् तेने मिथ्यादृष्टि जाणत्रो. " ३५१.

ें ओसंत्रस्स गिंहिस्स वं, जिंणपवयणतिव्वभावियमइस्स । कीर्रइ जं अणवज्जं, दहसैम्मत्तस्स वृत्थासु ॥ ३५२ ॥

. अर्थ-" जिनेश्वरना प्रवचन (सिद्धान्त धर्म) वहे जेनी मित भावित (रक्त) ध्येखी छे; अर्थान् जे जिनधर्मना रागमां रक्त ययेळा छे, तथा जे दृढ समितितः द्यीनमां निथळ छे, एवा अवसन्न (पासत्थादिक) तुं अथवा गृहस्थीनं क्षेत्र अवस्थाने विषे (क्षेत्र काळादिक जोड़ने) जे वैयाग्रत्थादिक करवामां आवे ते निष्पाप एउळे दृषणरहित छे. " ३५२.

गाथा ३५०-अयमग्रता=पराभयः। गाथा ३५१-कोमले=असारं।

गाया ३५२-गिइन्त। भावियमयस्स ।

र्शमयोमत्रकृमीत्वनीयमंमनजणगहान्हादे ।

नौरग ने मृहिद्या. सर्वपयनेग वंडनंति ॥ ३५३ ॥

अर्थे-" पार्नेस्य (ज्ञान, दर्शन प्रते चारितनी पाने गरेनार-जेने नहीं नेवनार म्माः अवसम् (चारियने विषे शिषिनाचारी), एप्रीड । सार्वः वीत्र- व्यव्हार , तीब (अधितयाडे चणशायी ज्ञाननी शिष्यह), संबद्धक र तथी हैशेल विन्दे सो-रेनी मेनतियी तेरी पान, ने नेवड होशव है। इस बरावड भी पतिथी उत्त्वनी अस्ताणादि सानार) गर व वार्षस्थानेत अर्थन हासकान काणीने) सुविहित मापु से वे पार्थः सहिहता तरे प्राप्त (प्राप्ति) का को है, अपाँच ने भें वारियना विचाद का नार होताओं देखें हैं भेद पत्रशं. ' ३५३. हवे पार्थस्यादिकती उपनी रहे वे-

संवालमेमणाओ. नं एलंबर धाँहिम ज्ञांगं है वे। आहार्रेंद्र अमिरंगं, चिर्गईओं मंतिहिं वेहिं॥ ३५०॥

विश्वना से विवालीय पूरणा-प्राथास्ता सेपीतु रक्षण करण नथः नवित् करीय रोक्पहिन आहार छेना नभी, बाबीबिंद (बीडमा स्थारशाणी अन्तर बाँग के विश्वास मंदी तथा भूग्यातर्गिड यहन क्षेत्रे, देशे ने क्षांस्य हैंसे कि हैंसे हैं (शंका) दूर रहीं की क्लिरे किलीन नाम हरें हैं पता है अर्थन नहीं M 1. 1.148.

म्रेपमाणमोजी, ऑटारेट अभिर हमांतरं।

नेपे मेंडिजीई मुंतर, नेप मिट्टों हिंधे अनेही ॥ ३ १५ ॥

अर्थ (क्षेत्र के प्रतिसंस प्रति स्वीरपती सोहीते स्वीरित स्वीरित स्वीरित स्वीरित स्वीरित स्वीरित स्वीरित स्वीरित me and the second second

在我们更为并一样的我的情况 如是我这个就是我们就我只要我在一样 为上了

E. See Friend Article 1

men and wife a state of take to

कीवो नं कुण्ड लोअं, लज्जेई पंडिमाइ जलंमर्वणेड । सोवाहणो अ हिंडेई, बैबेंड किडिंगे इमकेंडे 11 ३५६ 11 अर्ध-" व ने कीव के० हागर एवो जे लोन हरतो नगी, कामोत्सर्ग करता जे छजा पामे है, शरारना मेलने जे अथना जला जला, जानाता जला करणा पता, जानाता जला करणा पता, जानाता जला करणा जना है हर हरे है, तथा जे खपान (मोडा) सहित चाले हो अने में कार्य विना केंद्रे नोलपट्टो निम हो." ३५६. गामं देसं चं कुलं, मंगार पीउफलग्या हिन्द्रो । धरंसरणेख प्रसन्जइ, निहंरइ य मिक्नेंगो रिक्तो ।। ३४७॥ अर्थ-(वळी ने पामत्यादिक गाम देश मने क्रुळने विमे ममताए क्रमीने विचर हों एछे भा गाम, भा देश, भा कुछ विगेरे मारां हे एमी मनता राखे हे पीठफन-कने विषे शति विद्या एउले वर्षा क्षित्र विवा प्रमा पीठ फलक दिक्रमों उपयोग करे छे-महग करे छे घरो (उपाश्रमादिक) नेवां कराववानो मसंग राखे छे, एटले तेनी विता छे, अने सुत्रभी के देन्याने परिप्रह पासे छा। पसा पास छ, पटल पना पता ।
के मा को के माने के को कि कि हैं हिस (देन्यरिंदेन) हं ० न छै, एम को तो पासे बो उतो विद्वार कर छे-विचरे छे-करे छे, " ३५७. नंहदंततेसरोमे, जमेइ अच्छोलधोअगो ॲजओ। बाहेइ में पिलियंकं, अंइ रेगयमागमन् हुरइ ॥ ३५८॥ अर्थ-" नख, दांत, (मस्त्रमा) केश अने श्ररीरना धणा जळथी हस्तपादादिक भूए छे अने यतनारहित वर्ते छे, दिक वापरेछे तथा अधिक प्रमाणवाळा (प्रमाणथी अधिक संयाराने पायरे छे-एडले छलग्रह्या करे छे. " ३५८. सोवंइ यं संव्वराइं, नीसंडमचेयंणो नैं वांझरई। र्न पर्मज्जेनो पेविसइ, निसिहियावस्सियं ने केरेइ। अर्ध-" वळी काष्ट्रनी जेम निष्ट्त (अत्यंत) नेतनारहित स्थादिक) आखी रात्रि (चारे महर) सुई रहे छे. रात्रिए गणना माथा ३५६ सुत्रणेर्। सोवाहणोति । किल्युत्यमकल्के । णाया ३५८-वद्यात्त । विद्यात्त । माथा ३५८-वद्यात्त । जमेर्-भूषपति । अस्तोक्तत्त्वेन शावनं प्रक्षः वादेई । अच्छुरइ=आस्तरित्। इ । अच्छुरइ=आस्तरात । गामा ३५९-सोयई=स्यपिति । मोसर्ह=निभेटः । यासरई-्रथा

इरको रूपी. गांव रजोदरणादिक वर्षे वसानेत्र कर्म विना उपाधननं विषे वरेण को छै, क्षा वरेणावणे नेपेषिको जर्म निर्मेशन वर्षा आरम्पको स्वादि मानु सायापातीने रूपो वर्षी. १ ४८०.

पांच पंदे ने पंमज्जह, ज्यमांवाए न नोईए इंग्पि। पुरवीदगञगणिमारअवणन्यदनसम् निर्मावर लो॥ ३६०॥

अपे- " हार्तने हतो, गावनी मीमान पंत्र हतो अपना मीकानो पाउने निन करनो नगी, गुननाम गुननगण-नार राग) कृषिने वित र्पानी शद्धि करती को ननी, गुर्क्तकाम, अपकाय, भिकार, अपकाय, पनग्यीकान पने बनकाय ए भीनिकापने विवे निन्देश (परेशा गीरा) रहे हैं: नपीन ने भीनी रिमयना करती हा पादनी नथी, " १६०.

नंत्रं भोते इवेदि, नं पेहीए नं वे केन्द्र नंद्यायं । सद्दर्भ अंतेक्से, लहेंओ नशेंमयननिहो ॥ ३६१॥

भयं ''क्यमें कर पूरी हैंगेश (द्वासिश्चाम) में वन दिले का हानों है, क्वे शवनहित्र कारण दानों करों, गांबर बोर्ट ही छत्र हरे थे क्वामी पे कार करें थे, गांबर गांव है के क्वामी पे कार करें थे, गांबर गांव है के व्हें के केशनाने पुत्र शवना नहीं, नवा एवं के केंगानों कर करवाने-चंदर केंटर दुनेर कारणादी कार रहे थे '' कुदर

भिंत ईवं भेजेंद्र, कालाईवं नंद्रेग अविदिनं।

मिर्ह्य अगुंडवस्तर, असगोर् अहम जनारने ॥ ३६२॥

अर्थन 'श्रेम एत हो कोमयी पार्त हा से ही मालेत. पार त तिही ताप के, जार के हिए हात हो जार के के पहलाहित जार के, माम कर के पार्टिक पहलाहित के पार्टिक पा

रेक्ट्रिय ने हैंबर, पोनलोट ने मेंग्ये कुर्य । निषमक्त्रात्मका, ने में पहासक्त्रीतानी ॥ ३५२ ॥

如此 其中一直写真 自 如理此 中

[·] 新·黄(百万克·乾翰雷特 高级富强者) 计 "我们的 生 种致血量 "我 没办 "

[&]quot;你 就到我说了?

李明、李子子者素殊。李春花高,李春至姓《故品"的"解之""严",故"赠母"其代教。《

अर्थ- "स्थापना कुळेतुं एडले हत, ग्लान विगेरेनी अत्यंत भक्ति करनारा श्रावकता यहोतुं रक्षण करतो नथी. एटले के कारण विना पण तेमने वेर ओहार लेवा जाय छे, वळी अष्टाचारीओ साथे संगित (दोस्ती) करे छे, निरंतर अप्ट्यान (दुष्ट ध्यान) मां तत्वर रहे छे; तथा मेक्षा (हिष्टेशी जोइने वस्तु महण करवी ते) अने ममार्जना (रजोहरणादिक वहे प्रमार्जन करीने-पुंजीने वस्तु भूमिवर मुकवी ते) करवाना स्वभाववाळो होतो नथी. " ३६३.

रीयंइ दंबदवाए, मॅढो परिभंवइ तंहय सर्यंणिए। परंपिस्वायं गिंह्यई, निङ्क्स्मासी विगेहसीलो ॥ ३६४ ॥

अर्थ-" वळी उतावळथी (उपयोग विना) चाछे छे, तथा मुर्ल एमो ते म दिक गुणरत्नोथी अधिक एवा हहोनो पराभव करे छे, एटले तेओनी साथे स्पर्धा छे, परनी परिवाद (अवर्णवाद) प्रहण करे छे-परनी निंहा करे छे; निष्दुर (कंडोर भाषण करे छे; अने राजकथादिक विकथाओं करवाना स्वभाववाळो होय छे-विकथा करे है. " ३६४.

विन्नं मंतं नोगं. ते गिन्छं कुणेइ सुईकमां चै।

अर्ख्वरिनमित्तजीवी, आरंभंपरिगाहे रेंमैइ ॥ ३६५ ॥

अर्थ-" वेबीअधिष्ठित ते विद्या, देवअधिष्ठित ते मंत्र, अहरम करणादिक रोगनी मितिकिया (ओवध मयोग) अने स्तिकर्म (राख विगेरे मंत्रीने म आपवानं कर्षे) करे छे. अक्षर (छेखकोने अक्षरिविद्या आपवी ते) तथा निर्मित (अम जमवजादिकना मकाश्च करनार एनो ते उ (पृथ्विकायाद्विकता उपपद्देन) अने अधिक उपकरणना संचयरूप परियह तेने रमे छे-भासक रहे छै. "

कं उनेण विणा उगोहमण्जाणावेइ दिवंसओ संअइ।

अंज्ञियलामं भुंजइ, इंत्यिनिसिन्जासु अभिरमइ ॥ ३६६॥

अर्थ- कार्थ विना (निर्धिक) यहस्योने रहेवा माटे अवग्रह भूमिनी अनुज्ञा हरे छे-मामे छे, दिनमें शयन हरे छे, भाषिकाना लाभने (साधीए लाभना आपन

मान के बोजीनी निवंशा । अवनी । उस जीहा को के स्थान नी जेना को बुकाल के साने वेने के 11 कर द

अगर पानवंग, यह विवाग्य अगरेती।

मेंबारम उपरोगं, पडिस्मई स्वानवंडिंग्नो ॥ ३६ १॥

वर्ष-' क्यार (म्ह). नवर्ष (म्ह), होत । स्टब्स्ट इस्ट (इस्ट) वर्षण (मार्गिसानी मह) परवर्षाने विशे अन्तर्भ (अन्तर्भ) इस्टे दिस परवन्तर होत् केन्तरके के. संस्तार व्यवक्ति परवर्गने के अन्तर (उस्टी देखा) महित परिवर्ण हो के (अवस्थ प्रति है तर्पन्त, का मुख्य नवास्त्री प्राप्त महित प्रति क्षे के स्टिसे. हा ३६०.

ने केंग्स्पंट जयणं, नेत्वियाणं नह क्रांस्प्रियोगं ।

र्गेंद्र अगुनद्भताने, सपन्द्रगापन हजीनाते ॥ ३३८ ॥ भेन-' मार्गेनो पालनो परना जनते नके, अब शेनद एटने धारदात) मीना विवेदनो परनीत को दे जने पीछाना रहनो एटने साहु बेच्ने ध्या विकेद निवादीनोध्योची घरमान प्राचीन उनुबद पाटको-स्टोट हुन्हें जा साथे, ए ४८४

विजेश्कि अह बहुतं, ईगाल सर्मगं अंग्हार्। भेति रूपम्बा, सं पेरेट अंगपेप्तारं ॥ ३६९ ॥

केला करी बंदीय प्रश्ने पाने कार्य करें हुए हुए राष्ट्रां क्रिक्ट कीत्राकों त्रेंक है, श्राह्म है कार्य बंदिक शान्त्रियों करें है जब बहुक शान्त्र व्यक्ति सुक्ता विकार करीने प्रश्ने हुए क्रिटीन क्राह है, क्रिक्ट दे देवनप्रका के दिवानिय दिवान प्रश्ना प्रश्ना राष्ट्र रूप करें करने पारे का स्थान का स्थानेश के निवानिय की प्रश्ने द्वान करें क्रिक्ट है। प्राप्ति का स्थान है, 'हर्क,

भाग ग्रह पहले, मेर्चन्त्र पहलाम पर्वत्स्तु । । इतेत्र सार्वेबद्दो, स व होत्यु मासरणीय ॥ १३० त

朝 美国西南南路 。 本代本基本(以) 1 元)。 "知此不知 化

华 新凯拉林园家 小篮花艺术。

इच्छावाळो तें (पासत्थादिक) सांवत्सरिक पर्व अहम, चातुर्मासीए छह अने पक्ष (चतुर्दशी)ने दिवसे चतुर्थ (उपवास) तप करतो नथी, तथा चातुर्गास शिवाय शेप काळे क्षेत्रो छतां पण मासकल्पनी मर्यादा प्रमाणे विहार करतो नथी. " ३७०.

नीयं गिंहइ विंडें, एगांगि अत्थंए गिंहत्थकहो।

पावंसुआणि अहिज्जइ, अंहिगारो लोगंगहणंमि ॥ ३७१ ॥

अर्थ-" नित्य एटले अमुक बैरथी आटलो आहार लेवो एम नियमित रीते पिंड (आहार) ग्रहण करे छे, एकाकी (एकलो) रहे छे, पण समुदायमां रहेतो

नयी गृहस्थोनी कथा (पृष्टत्ति) जेने विषे होय एवी वातो करे छै, पापशास्त्रो (ज्योतिप तथा वैदक विगेरे)नो अभ्यास करे छे तथा लोकोने रंजन (वक्ष) करवा माटे लोकोना मनमां अविकार करे छै, एटले तेमनी वातोमां मोटाइपद धारण करो मुख्यता

मेळवे छै, परंतु पोतानी संयमिकयाना अधिकारी थता नयी. " ३७१. परिभवइ उग्गोकारी, सुध्वं मरंगं निगूँहए बीलो।

विहेरइ सायांगुरुओ, संजंमविगलेसु खित्तेसु ॥ ३७२॥

अर्थ-" वाळक (मूर्व) एवा ते पासध्यादि उग्रकारीनो एटले उग्र विह करनार मुनिओनो पराभव करे छै (तेओने उपद्रव करे छै). शुद्ध एवा मोक्षमार्ग भान्छादन करे छ-गोपवे छे. भने साता (मुख) ने विषे गुरुक (लंपट) एवी संयमधी त्रिकल एटले सारा साधुओधी रहित एवा क्षेत्रोने विगे विहार करे छै."३७२

उग्गाइ गाइ हमई, अंमंबुडो मंइ करेइ कंदंपं। गिहिकज्जितिमो विय, ओसेन्ने देई मिल्लेइ वी ॥ ३७३ ॥

अर्थ-'' तमद्रा एटले मुसने पहोळें करीने मोटा शब्दवडे गायन करे है नंत रमें है. रमेवां हं सी एउले कामने उपन करे तेत्री कथाओं करे है. वळी ते युक्त म्योनोना हार्यनी विता (तियार) करे छै, तथा अवसन्न (भ्रष्टाचारी)ने वद्याहिह नारे डे नवमा तेनी पामेची प्रश्य करे छै. " ३७३.

भमंत्रहाओं अहिज्जइ, वरंत्वरं भमंइ परिक्रंहेंतो अं। गर्नगाइ पमाणेण यं, अदिस्ति वेहइ उनमेरणं ॥ ३७४॥

वच्चा ३३१-अन्य । नीत हीत । पायसुवारिक ।

वत्वा ३३२-विमुद्धे । नायवाङ्गा ।

रत्यः ६७३ उम् ६-४४नयाः सय । सह-सदा । असतृतः=प्रसारिनग्रुतः । श्रोमश्रा

अर्थ-" पर्वती प्रधानीने जीवना जिल्ले देख त्या और दर्ग है. इन ने संदर्भातीत होता हाती विश्वांत महिला है। उन्हें देख ही जेनकों है, इस सहस्त ्रात्रको एसे वा हुनोने चीर जने माध्ये केंद्र वर्षण कर र केप्प्यू दिसी हरू भणोंने वसना (बेल्या) होतो है, एवं धरने स्वयं करेंहे हे बच्चा की स्वस्ति और संस्था जैने प्रमाणकों व्यवस्थित काल हो उन्साहे हैं, ''१०००

बोरम बार्रम निश्चियं. कट रहेशास्त्र र मृगीको ।

अंती विदे च अंदियानि, अवेदियाने न पाँउ कि ॥ ३ ४५॥

प्रयंत्रण वाह समुनीतिनी भीव. नाम प्रदेशिकी जीव हो क्या पा प्राह्म वे केंग्र नृतिह प्रम प्रकारमनी जिल्हा नहीं प्रशास महीने नगरात रहींगर ज्येता है मिलि प्रस्ति होत् को दूर तो त्योग है, उन हम बहाना हो में ने होते हो है है क्षे हैंद म होय को समीद र मतीक हैनी कीन प्रीत्य है, देश महिले र हीन नहींन इ.क्षेत्र पूर्वस्त पुरु नर्स नेने पास पार्टक जिल्हा, १८३५,

गीवंत्यं मंत्रिमां, आपरिशं मुंबद क्टंट गुन्तामं ।

गुरंगो व अगोपुन्छा. चे "सिन नि देशे निरंद ने ॥ २०॥ र्व- प्रतिकार्ष (सुर्वास्त सालनार) अत्योकः योक्यार्वनः र्वतः रस्य प्राचले र से धना प्यांचारे ने शाल हाना प्रते हो हो है. विभावी भार है प्रति संदूर्धकों होन्स्यान न, रहर तथा है है । संदूर्ण के अवस्थिती स्थाप्त अत्य अस्ति जिल्लाम् कृति है। यक स्थापन राज्य विकास 海 歌集 化磁气管操作 衛門 海绵 医 人名斯 的复数形式 经 W. J. " . J ...

पुरंकियोगं नृतंद्रः निकामं सम्बद्धाः ।

विभिन्न मुखं नि नामर्थः अधिनीयो गरिएमी दृद्धी मा अला क्षेत्रण र सुक्षेत्र प्रकृतिक क्षत्रक त्यां क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र होते होते हैं स्वर्ष 中部 化有效 心室 在就是 医一种 歌語 是 不不 好不管 一种 医叶 电子对比 事情 新生产 3、新夏等 2、新夏等 2、大夏等 2、黄 4、大夏节 65·艾安克 2、大克 4、艾安克 4

京 松红 基础名 建四代制度 化二烷基

उपदेशमाळा. ं तुं 'एम कही जवाब आपे छे-तुंकारी करे छे: भगवन् ! एवा बहुमान पूर्वक

गुरुभनस्काणगिलाणसेह्यालाउलस्म गच्छस्म ।

नं करेड़ नेयं पुंच्छइ निर्द्धमो लिंगमुवजीवी ॥ १७८॥

अर्थ-" नियमें (धर्मरहित) अने लिंगउपजीवी एटले मात वेप वारण करीनेन् वाना निमित्तांडे न भानीविका करनार एते ते (पार्शन्यादिक) गुरु (भ उनस्यायादि), रचलपाणवाला (अनशनादि-उपवासादि वपस्यागाला), ३ ं रेगी), मेर-शिप्य (नातीसित) अने वाळ (अस्क) मापुगीणी भ (नंग्डा) एका गन्छनुं (समुद्रायनुं) अपेक्षित वैयाउच्यादिक पोते करतो नथी.

्रे भे ठान हरे ? एन मोना नाम सा]भाने पद्मती पण नथी. " ३७८. चंद्रमम द्रवमहिआहारगुपगणंडिलविहिगरिङ्गणं ।

नौराइ नेव जागंइ, अज्जीरद्वाणं नेनं॥ २७१,॥ परं अपने कार्यने, स्वति (कीता मादे अपान्य) मागवानी, आहा

र कि इसके कर कार्य के विभिन्न विभिन्न परिप्राणान प्रति वस्त्र ना सस्ता (४) म्युन्तर के परत्त हत्त एम । स्थे एट्रिकीटर रोजातों) भाजनती नवी, अपन ह रहे हैं है है है है है। है। वापी (सार्वा) भीन उत्तीत स्वीत Property of the state of the st

इस्इल सम्मानमा भववोष नम्बोष ।

. १ १५ १५१ में तो एएकिस भवद्रासार जा। ं रहरा । असर) अनाहर मुग्रानाम स्था । स्था The state of the state of the state of

अर्थ-" समाधिक सेमना औष शतुन किन्युको की कामा एके हैं अहुता को बेहन है बीन्द (नामदानी पानी भरमनी सबक । के का का कि नहीं के बार काने दल्ल पायाने परिचयन को है-यों है हार का का अवस्था को बिक्की एक स्थापित एके के बोटने त्यांनेस पान को सनी एक्ट की ते जाता का का कर्षेत्र अर्थे कुछ मनान मने हैं, " बद्दिक

मेच्छंदगमणडहाणमाञ्चलो मुर्तेद गिरीलं में । पानित्याद्दाणाः हेवित एमंदिया एंग् ॥ ५०६ ॥

अर्थे- 'पार्टी स्पार्टर गमन, रागान प्रते शपना हो। दे । हा किल्ल दिन के सामाने आप्या छाड़े प्रति प्रतिपी भिन्नाने प्रति प्रति कार्ट केल्ल समानि प्रति नहीं, एवं जगारश मार्ट हैं.) प्रतिहें होंगे कहें कील्ल हरे हैं. इन्होंने पूर्व प्रतिक प्रतिभाविदानों सानों (भारती) हो है है ।

स्को कोई सामुखी केंन नहीं है हो होटन जहां नाम है उस हो है—

त्री हड्लंजी जेममधी, रोवेष वे लिटियी प्रस्किती। मर्थमांव जहांभिष्यतं, रुपेट ने निस्ते हाई ते ॥ १०२॥ पेतियं नियंत्वरिक्षण्यानापिक्षितं अवस्ती।

पूर्व हर्नात्वं, मेर्र महेती सांस रहे ॥ ४६ १। कुमन ॥

केला ने सार्व करनारेख जाता है करारेखन के हैं है करा लगा है कर करा है कर

अलसो संदो वंलिसो, आंलंबणतप्यो अंइपमाई। एवं ठिओ वि मन्नई, अलाणं मुहिओ मि ति ॥ ३८५॥

अर्थ-" धर्मिकियामां आलमु, गट (मायाबी), अवलित (अहंकामी), आलं-वनमां तत्पर (कोइ पण मिपे करीने प्रमादनुं सेनन कर्यामां तत्पर) तथा अति प्रमादी (निद्राविकथादिममादवान)-एवो छतो पण 'हं मुस्थित (भव्य-सारो छुं ' एम पोताना आत्माने माने छै. " ३८५. हो मायाबीने पाछळथी पश्चात्ताप करवी पडे छै, ते विषे कपटपक्ष नापसनुं दृष्टान्त-

जो वियं पांडेऊणं, मौयामोसेहिं खाई मुद्धंजणं ।

तिरगी ममज्झवासी, मी सोअंइ कवंडलवगु व्वे ॥ ३८६॥

अर्थ-" वळी जे (मायावी) माथा (कपट) करवामां मृषा (कूट) भाषण वडे करीने-माया मृपावादे करीने मुग्य जनने पाडीने (वश करीने) छेतरे छै, ते पुरुष त्रण गामनी मध्ये (वचे) रहेना (। कपटक्षप नामना तपस्वीनी जेम शीव करे छे. " ३८६, संप्रदायागन ते कथा अहीं कहे छे-

कपटक्षप तपस्वीनी कथा.

उज्जयिनी नगरीमां एक अघोरिशिय नामनो महा धृर्त त्राह्मण रहेतो हती ते महाकपटी, महाधूर्त अने महापापी हतो. तथी राजाए तेने देश वहार काढी मूक्ये एटले ते चर्मकारना (मोचीना) देशमां गयो. त्यां चोर लोकोनी पल्लीमां जइने चोरोने मळी गयो. पछी तेणे चोरोने कर्युं के-''जो तमे लोकोमां मारी प्रशंसा करं तो हुं परित्राजकनो वेप धारण करीने आ त्रण गामनी वचेनी अटबीमां रहुं अ तमने घणुं थन मेळवी आपुं. " ते सांभळीने चोरोए तेनुं कहेवुं कवूल कर्युं. प ते ब्राह्मण तापसनो वेप थारण करीने ते बणे गामनी मध्ये रही कपट्रहत्तिथी मा क्षपण करवा लाग्यो, अने ते चोरो पण क्टन्नियी सर्वत्र कहेवा लाग्या के-' अ आ महात्मा धन्य छे. आ तपस्वी निरंतर मासक्षपण करीने पारणुं करे छे. 'ते सांभळी सर्वे मुख्य जनो तेनी एवी पृष्टति जोइ तेने चंदना-नमस्कार करवा लाग्या, अने भोजनने माटे पोताने घेर निमंत्रण आपी लड़ जवा लाग्या. पछी तेने इच्छा भोजन करायी पोताना घरनी छक्ष्मी वताववा छाग्याः पोताना घरनी सर्व हकीकत

तेने कहेवा लाग्या, अने प्रसंगे प्रसंगे निमित्त विगेरे पूछवा लाग्या. ते कपटी तापस पण लग्नना वळथा लोकोने आगामी स्वरूप कहेवा लाग्यो. पछी ते क्रूटक्षपक रात्रे गाया ३८५ यिलितो।अईपमाई।सुट्टिशंमि=सुस्थिताऽस्मि।गाया ३८६ खाइ=वचयित।सीयई

होते रोमानीने पोने दिएने नोरिना पुरानीना प्रोमी पत्री प्रशेष अवस्थारी मस प्रांति चौरी क्याका लागी. यू कारी रोजी कीरी इस्कृति हो। ब्र क्रमा बीहोने निर्मेन हरी- पहला ने प्रतिदेशना पानी नाथा जाउना जीएन को गरी, भी मानर पारती निर्धा के सेट्रांनी पूर ताली नहीं परि सर्वे श्री क्षी गया, पम प्राचीर प्राथ्य एसे. हेंसे प्रदेश है एक एसे प्र को महार ने बोरने साथी नाती हुई हैना क्षेत्र, साथ कहा हुई है। जो हा भंगाने बोर्गान के सार्व के किये के कि के कि स्टूर्ग के स्टूर्ग के स्टूर्ग के स्टूर्ग के स्टूर्ग के स्टूर्ग के स ्र राष्ट्र नायम के पर वर्षों है है पर घंदे करता प्रार्ट्ड हैंग्ट. '' वर्डों न कर राष्ट्र महिल महिलामी पंजीते पहली केना का को मह कोरीन करता न करण, का बच्च राम्बं क्षेत्रके सरुपी: पन नेवी को को के कारीने मुर्व के का पता है। राज्य चित्राति अनुनार्शो मन्त्री मनवाँ पत्रातात स्थाप नाम शे विन्धान स्थाप स्थापन है। का गांव कुरनायमंत्रों के भारत होते पता नारान है, में, हैं , लेड ज का िक्स उत्पन्न करि, मार्ग आस्त्र के मंदिर करी, हु को प्रकार करी, जॉक हे अधून कार्य प्रत्यामी अभिने गर्द विश्वभाग है है। पाए अस्तर अस्त अ शक्ति हो है के कर्न्द्र निश्चार है औं बंद्याने पूर्व पंच के स्व है, ' कारे देशका जान्यांची को हाराको है स्थान व पर द्वाननी कोतन वका, जा विकेश का विकास करिये हैं। इस दें दें के दें के के के के के के भ्याम है.

प्रदेश क्षण्याम भाषास्था १ प्राप्त १ ५० ४

सं तिवासम् स्था कर्जन मानि पानती, महारो अवस्य और तीन । इनमहिन्दीमा, बहच्यू तानत मेन तीन । १००१

· 大江 1000年 1400年 1500

उपदेशमाळा.

गर्न्छगओ अर्गुओगी, गुँरसेवी अनियवासि याउत्तो । संजीएण पैयाणं, संजमआराहगा भंणिया ॥ ३८८॥

अर्थ-''गच्छनी मध्ये रहेनार, अनुयोगी एटले ज्ञानादिकनुं सेवन कर उद्योगी, गुरुनी सेवा करनार, अनियतवासी एटले मासकल्पादिक विहार करनार मतिक्रमणादिक कियामां आयुक्त-उद्युक्त. ए पांच पदाना संयोगे करीने संयम (चारि ना आराधक कहेळा छै; एटले जेने विषे आ गुणोमांथी वधारे वधारे गुण तेने विशेष विशेष आराधक जाणवो. " ३८८.

निम्मम निरेहंकारा, उर्वउत्ता नाणदंसणचरित्ते।

एगंखिते विं हिया, खेवंति पोर्राणयं कम्मं ॥ ३८९ ॥ अर्थ- निर्मम के० ममता रहित, अहंकार रहित अने विशेष अववीय र ज्ञानने विषे, तत्त्रश्रद्धान रूप द्शीनने विषे, तथा आश्रवना निरोधरूप चारित्रने विषे उप युक्त-उपयोगवाळा-साववान एवा महापुरुषो एक क्षेत्रने विषे रह्या होय, तोपण तेओ

पुराणा (पूर्व भवे संचय करेला) ज्ञानावरणादिक कर्मने खपावे छे-नाश करे छे."३८९। जियकोहमाणमाया, जियलोहपरीसहा ये जे धीरी।

बुढ़ांवासे वि डिया, खेंगीत चिरमंचियं केंग्मं ॥ ३९० ॥ अर्थ- ने भोए को न, मान अने मायानो जय क्यों छे, जेओ लोभसंका

रहित है, अने नेओए शुभा पिपासादिक परीपहोनो जय क्यों है एवा जे पीर (मरायाजा) पुरुषो छे तेओ रुद्धानस्थामां पण एक स्थाने रुवा सता चिरहाळना संचय हरेटा जाना गणाहिक कमेने स्वापे छै—नाश करे छै. सदाचा मुनिजोंने हाम्याने छाने एक स्थाने तमरामां पण जिनेश्वरनी आज्ञा छै. व माचानुं नागते हैं. ११ ३० इ.

पंत्रंमिया निमुता, उज्ज्ञता मंजमे त्वे चंरणे। नानमनं पि' नमंता, मुणिणो औराह्मा भेणिया ॥ ३०.१ ॥

नरे- पांत मांपित नोवी मांपत (युक्त), तथा मुक्तिभोगी मुन (म रगोर्डा चने जनम्बहारमा मंत्रपमे विषे भवता छ गीवनिहायमी स्वा छे इस्ते हिंते, या बहाम्तां तपने विशे तथा वस्य वस्ते यांच प्रश्नास्थ क्रिया

६- राजस्ति ज्ञायना । नाइना । समागम । नागदमा । ३९- मिनहार होत्यकान

भि भारते हम इतियों मों हो पूर्व पूर्व किये कि छ। है है वि है वे मेंब्रेके बारावस प्रहेला के, जारेंक्य के कार्य स्थान प्रान्त प्राप्त के प्राप्त के भारत रह के नहीं, " ३६/

नेता सव्यागुन्ना. सर्वानमेहा वं प्रदर्भ निप ।

अपं वर्ष तुन्यिका, यहाईति व वानिपत्रा । १५३॥

महेल केरी हरिये भागत अधिनवासन ने विके अबने अने ना अस्ति **म्यूनी अपूर्ध है प्रतेष्ट अपूर्ण अपूर्ण पर्व पर्व में हैं प्रताह के हैं । उन्हें के के का अपूर्ण** , अपने होते संस्था परिवास है। अपने सर्वेड अपने अपने अपने की दर्शन निर्मात पन नवा, सम्माद का विनासित स्माहित्य है। जी वर्षान कार्य बाबाधारात्रा प्रतिस्त्री होत साह्य पाय है है त्याहरू है ते हैं है जो स्थाय ्रिकारिक्षमें अभि । ए विभी तुरम हमें छो उन्हें तेन अर्थ से अभि हो ह The state of the same

यमंगि निव गायाः न य देखे आनुंबिनिद्धं भी। पुर गांग्डम हैरितं, प्रमाणनाई मुं जान ॥ १६०॥

अर्थे अर्थे दिने । रह देने दिने न्या देवने दिने आधा देन नहीं, र तेनहे विकार (क्षेत्राने वेत्रक्षेत्र क्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक

न विशेषम्य महारा हतेल श्ला गाउँ वर्ष

निरित्रमी दिले पानी, मेर्ट्सपुनापुरे निर्देश १००४

轉車中 新星 新星者 经经货 一流 "你不 你不 女子女 不远去的家 安康 THE RESERVE WITH THE TOTAL TOTAL TOTAL STREET WHEN THE WAS A STREET OF THE TOTAL THE T

[「]京本」を表現の一般を受け、一般では、1 では 著 しんか と 成ってる こうかなん 1 を と なながな



उपदेशमाळा.

जैंहिष्टियखेत ने जाणइ, अध्याणे जणवएअ जें भिणियं। कीळिंपि निव जाणइ, मुभिंधिद्रभिष्ख जें केंपं॥ ४०२॥

अर्थ-" वळी अगोतार्थ पथाहिय। क्षेत्रने एटले आ क्षेत्र भद्रक छे के अभद्रक छे? ते नाणतो नथी दूर मार्गवाळा जनपरमां (देशमां) विहार कर्षे छते जे पिषि-स्वस्य मिद्धान्तमां कदें छ ते पण नाणतो नथी तथा काळ (काळतुं स्वरूप) पण नाणतो नथ, तेमज मुनिक्ष (मुकाळ) अने दुर्भिक्ष (दुष्काळ)ने विषे जे वस्तु कल्प के अकल्प कदेल छे ते पण अगीताथ नाणतो नथी. " ४०२.

भोवे हद्यगिलाण, निव याणइ गादगादकणं च।

महुअमहुपुरिसवर्खं, वर्खुम्बेरंखं च नेवि जागई॥ ४०३॥

अर्थ-" भावने विषे (भावद्याने विषे) आ हुए (नीरोगी) छै. म टे तेने आ वस्तु देवा योग्य छे, अने आ ग्लान (रोगी) छे, माटे तेने आ वस्तुन देवा योग्य छे, ते नागतो नथी तथा गाडा गाड कर्य एउन्हें गाड (मोटा) कार्यमां अमुक करा। योग्य छे अने अगाड (स्वास्तिक) कार्यमां अमुक्त करा।

योग्य छे अने अगाउ (स्ता गिनिक) कायमां अमुक्तन करना लायक छे, ते पण जारतो नथी तजा मनर्थ अगिरवाकुं अने असपर्थ शरीरवालुं पुरुषतन्तुने पण नाणनी नदी के समय छे ने या असपर्थ छे; तथा तस्तु एक्ले आनार्थादिकता सरूपने उने उत्तरतु एक्षेत्र मानान्य मानुना स्वरूपने पण नाणनो नथी "४०२.

परिमेरमा नर्ज्या, आउद्गि पमान दण कृष्पेसु। नर्ज आर्थ अम्मीओ, पन्छितं नेत जं तेत्य ॥ ४०४ ॥

्रें - ' राज्यसम्मान विविद्या स्थानुं आनामा) नाम महारे होता छे त , के प्रशाह कर्नु के एक पान स्थान (जनशहिद्या) के प्रमृत, एहा पान स्थित - इ.स. १९६६ इ.स. १८ कर्नु के नन एक पान हाम्यन उन्ने हार्नु स्थान



इसं- मंद्री के दिशम असे गाँव ने हों। अधिनामें में पूर्वन अस असेना कोका पूर्वांना) अविचारोंने जल्यका नहीं, इसके अस्त हुए हो गरी हुई उसे अहें। भीखूब (पापनी गुडिमीटन एका) पुरानी एकाँगी है अन्यदिक मुलीकी का) रेंद्र पानती नवीं, जेर के रोप नेट रोत रहे हैं। आहेंद्र उसे नवारी रहे हैं।

अथारेमी किलिमाइ, उह वि कोट अस्ट्रिस नु ती। मुंदाबुद्धीह बहे, बेंहुपं वि 'न मुंदरे होते हैं। हो हो।

भवे- अस विद्यालने नाधनार । बार् । बोरे स्वास्थित अधिकृष्ट न को, शेयन ने कालेज महत्र को छे । या जायह , होश हरिया को है की भू हे तर पत्र सुद्रम पर्नु नथी. ने इब नक्षान्यत्वे हे, बान हे, है होते.

अपिन्छ्यमुयनिद्यम्स, रेज्यसम्बन्नवारम्स । सन्बुद्धनमेण वि केयं, अज्ञायत्वे वह पर्छ ॥ ४१६॥

मंत्री भाग सामित्रा (विस्तानी करण के गा क अंक बहुत श्रीकारिकमा ज्ञानगरित पात जनता करती रहेतीहरू श्रीवस्तार विस्त क्षा माहित सर्व प्रयापेट होते विक्तियाहित है है बहारवहाने देखीन करात्रे विशेष प्रतित पंडते. " वहन

the correct of in-

केर बार्याम वि पहे. तम किसी करत वार्तते । पेंद्रिया क्रिक्टिन्द्र नियः नट लिगाया सुर्वाहनी ॥ २००॥

अकेर नेप बोर कार्य होर पीरवर एंट्रान्ट ते नाएं एक्टर पा पन ना 實際情報 有情等情景 法受害者 有一种人 學生養養養養養 经设定股份 医红斑 经一定债务 经产品证券 医皮肤 医动物 MTG 3 " 725%.

柳野 南美安山东南州大学春日 医红花素 化生物 医山水 路上 医肾上腺

新春·草草州 - 1 横台家村安楼 · 在是 古庄泉 《

古生红李 " 艾都有叫

अर्थ-" ज्ञानाधिक (ज्ञानथी पूर्ण) पुरुपनुं ज्ञान पूजाय छे, केमके ज्ञानयी नरण चारित्र) पवर्ते छै; परंतु जे पुरुषने ज्ञान अने चारित्र ए बेमांथी एक पण नधी ते पुरुषनुं शुं पूजाय ? शुं पूजवा योग्य होय ? कांइ पण पूजवा योग्य न होय. "

नांगं चेरित्तहीणं, लिंगंगगहणं चॅ दंसंणविहीणं।

संर्जमहीणं च तंवं, जी चेरइ निरेत्थयं तस्स ॥ ४२५॥ अर्थ-" जे पुरुष चारित्र (क्रिया) रहित ज्ञाननुं आचरण करे छे, जे पुरुष दर्शन

सम्यक्त्व) रहित लिंग (मुनिवेष)नुं ग्रहण (धारण) करे छे, अने जे पुरुष संयम ् उ जीव निकायनी रक्षा रूप चारित्र) रहित तपनं आचरण करे छे–ते पुरुपोना ए सर्वे मोक्षनां साधनो निरर्थक छै-निष्फळ छै. " ४२५.

जेहा खेरो चंदेणभाखाही, भीरस्स भीगी ने हुं चंदणस्स । एवं खुँ नाणी चैरणेण ्हीणो, नाणस्स भागी ने हुँ सुर्गगईए॥४२६

अर्थ-" जैम चंदनना भारने वहन करनार खर (गयेडो) केवळ भारनोज भागी थाय छे, पण चंदनना सुगंधनो भागी थतो नथी, तेज रीते निश्चे चारित्रे करीने हीन एवी जानी पण केवळ ज्ञाननोज भागी थाय छे, पण मोक्षरूप मुगतिनो एटले ज्ञानना, परिमलनो भागी थतो नथी माटे किया सहित ज्ञान होय तोज ते श्रेष्ठ है "४२६ ।

संपागडपडिसेवी, कंाएसु वर्एसु जो नं उडजैमई। पंत्रयणपाडणपरमो, सम्मत्तं कोमेंलं र्तस्स ॥ ४२७ ॥

अर्थ-" प्रगटपणे (लोक समक्ष) प्रतिकृल (निषिद्ध) आचरणने आचः एवो जे पुरुष छ जीवनिकायना पालनने विषे अने पांच महाव्रतना रक्षणने उद्यम करतो नथी-मनादनुंज सेपन करे छे, तथा जे मपचन (जिनशासन)नुं प (लघुना) करवामां तत्पर छे, तेनुं सम्यवत्व कोमळ एटले असार जाणवुं; अर्थात् पिथ्वान्यत वर्त्तछे एम जाणवुं. " ४०७.

चेरणकरणपरिहीणो, जैइ वि तंबं चंरइ सुंहु अइग्रुरुअं। मी तिरेलं वें किंणंती, कंमिय बुद्धी मुणेयेंच्यो ॥ ४२८ ॥ अर्थ-" चरण एटले महाबना किनुं आचाण अने करण एटले आहार

गावा ४२५-संत्रभविद्यीणं । गाया वर्जनो ४ न उज्जमह । संपागड-संप्रकृष्ट ।

व.वा ४२८-जवह वि । महवे । वहा ।

भिक्षे ब्रोने होन एके कोई पुष्ट कोई बनो में दे पहुंची के को के पार्ट में कर्ष कर्षने (भागेमाएं हर्षने) तेनना परनाओं के अवस्त की राज्य मिली कुषेत्री विशे जालको, प्रते की शता वह शतो पत करते देशकी जालकी, सा मार्गि देव नेवारी ने मूर्ण प्रणा न हते हाले आहे हैं है है है है पार्शित - सबर बार्ग अभीने त्राज्य भीने भीने द्वाराणी आहती हैं है वहले पर देश हैं ने पह सें को को पन पना नाप पूरी की हम हत्वर केंद्रवादकों मुक्ते करन . 🖷 भारते पुरने हे दिव मोदा तेनमा बरणानी वर्गा हुए हाई गुर्दे, देव व्यवस्थ क्रिक्तिनी जोर्र विविकताना प्रकार पूर्व पहरणे बार है. या हेड यान 🕶 प्रस्त नार्नु द्वाराणी पर नत्त्रं नतः " ४०८.

केन्नोवनिकायमस्ययान, परिपालनाइ नेहारमो ।

ते पूर्व नोंद ने मंत्रद, भगा है हो नाव नो वें वें जोगा १०६॥ र्ष-" हुर्नेद्वाप, प्राचीप, विद्याप, विद्याप, विद्याप, विद्याप, विद्याप, । श्रीकार्यनुं भने माणाविष्यविष्यम् । हे वे यहावशेषु वे स्वव द्यान स्थान । अपूर्वांस प्रति स्थान स्थान स्थान है। स्थान स्मार्थं भाग न हो। वो है जिल्हा है " Min विशे में होतावत नहीं. " उन्हें

कंत्रीयनिमापर्यावियनित्रशे। नेत दिश्विशा न विशेष सम्मानानुंदो,नुह भिरोदान स्मानी ॥ १३० ॥

महेल व की लिखा की की में भी एक कि ले की की है जो है। है म नहीं, देवन (बारह देरे ह होहाती) हार हि दूर परेशा पती, देशी बारे इसद्य पुर मंत्रीते वस्ति नके वर्ग

मणाओं केंद्र केंद्र, अमेबी सारम्य विनरी।

मंत्रक्षेत्रं केंद्र क्रियायक वे वस हो।

機管の大連接 (変)者 (法理) 者 、 注意です と できない へき かく (大道) ま ながける

the sea distincted to the

學學是在意思時間 動職者 音 "故"在蒙古地说了一样。

安吉山 电声音心体系接受后线 」 旅游处理 一篇为 2点 。

वध एटले लाहडी निगरेना पडाएने, सांहड (नेडी) िनोगा बंगनने नवा क्रय-इरण एटले सर्वहाना नाजने जने नहार्या उत्तर प्रगत गण बाजानी मेंग हर्सायी पामे छै. " ४३१.

> तंह छंकायमहव्ययमव्यनिवित्ती उगिह्निजग र्जई । एगंमवि विराहंता, अमंबरन्नो हगइ वाहिं॥ ४३२॥

अर्थ-"तेवीज रीते छ जीयनिकाय तथा पांच महात्रा संबंधी सर्थ नि (सर्वविरति) रूप मत्याख्यान (नियमो)ने ग्रहण करीने यति (साधु) एक एण उ निकायनी अथवा एक पण त्रतनी विराधना करतो सनो अमर्त्य राजा (देः राजा-तीर्थंकर) ए आपेली अथवा तेम मे बर्चेलो बोधिने हमें छे-नाज पमाहें अर्थात् जिनाज्ञानो भंग करवाथी :बोधि (सम्यक्त्व)नो नाश याय छै; अने तैं। अनन्त संसारी थाय छै." ४३२.

तो ह्यं बोहीय पंच्छा, क्यां बराहाणुसरिसर्मियमर्मियं। पुंण विभवोअहिपडिओ, भमइ जरामरणहुगांमि ॥ ४३३॥

अर्थ-"त्यार पछी हणी छै वोधि जेणे एवो ते मुनि करेला अपराध (जिन भंगरूप)ने अनुसारे एटले अनुमाने करीने करीने समान आ प्रत्यक्ष एवा अमिन मानरिहत (अति मोटा) फळने वामे छै ते फळ कयुं ? ते कहे छै-एद्धा स्था मरणे करीने अत्यंत दुर्ग एटले गहन एवा भवसागरने विषे पड्या छतो वारंवार अमण करे छै-अनंतकाळ परिश्रमण करवारूप फळने पाने छे." ४२३.

्र जैइयोणेणं चैतं, अंष्ण्यं नाणॅदंसणचरितं। --- तैइया तेस्स पॅरेसु, अंगुह्मा नैत्थि जीवेसु ॥ ४३४ ॥

अर्थ-" ज्यारे आ निर्भागी जीवे आत्माने हितक एक एवा ज्ञान, दर्शन, च त्रनो त्याग कर्यो, त्यारे समज्ञं के ते जीवने बीजा एडले पोता शिवाय बीजा जी विषे अनुकंषा नथी अर्थात् ने पोताना आत्मानो हिनकारक नथी थनो ते बीजा³ हित शी रीते करे ? पोताना आत्मापर द्या होय तोज बीजा जीवोपर दया थई है. (आत्मदया मूलकज परदया है.)" ४३४.

गाया ४३२ निवत्ति हो। गिलिस्मा। रणगो। अमन्वरन्नो=अमर्यराज्ञ नोर्यंकरदेवस् गाथा ४३३ -हयबोहि पन्छा। हयबोही। कृतापराधानुभद्दशामिदममितम्। पुणो वि गाया ४३४ -त्यदाऽनेन त्यक्तं। अप्पणय=आत्मतीनं। परेस्तं।

सापरिकाग अस्मेजयाण विज्ञातसमिनाताः

हुअमंजिमी पेवही, वारो मझ्डेड मुझ्यरं ॥ १२०॥

ि अ जीवनिकायना छप् पृथ्ने एका वर्गे दिन वन कान्य । अस वन वर्गे , स्वत कापाना योगने घोषका (इस) पूर्व की में है हता, का कियान र रहते हेरक स्त्रीहरण निमेर देशनेन प्राप्त दशकार दश हुन्यानी कारी (अनानार) रूप पानो नगह गार वृत्ति गाउँचा उन्नी कार्यो उद सुर्दे गाह अपना सम्बद्ध दतारे पोताना अने होताना आजार आजार प 清亮,并位34。

हिं लिंगित्ररीधारणेण, कर्वनित अधि, अंगे।

ग्या नं होई सबमेव, धार्य वानगडीते ॥ इस ॥ संबंधा क्षेत्र स्थाने प्रके के विद्यासने केंग्ने अने बाद प्रकृत पर्दे ए प विरोधी महिल एकजीत. जामाना नाटीम (जारेक के मण्ड हरण वर्ष मा केंने नवी-वह एकते नवी, नेतिन हैंने हार्चन वह रहते छहना दर अंदे नहीं ग्रेको-संवस्थी संदर पूर्व मार्थ विश्व पूर्व र देशा-एसे अहेडर हार बहुता है हरीने भी नायू जो तह है नह हो है है के देन हैं है स कारो अपरे हैं, ए भा नामानी सत्त्रे हैं, १३१६,

जो मुं समिपित्यम्यामां मुख्यामु गर्थे।

सद्य नवार्गालको, ना जिल्ला सार्वित्राम १५०४॥ अविन्ते सूत्र भूते अविनी विनित्त राजे का विना व नी वर्ग व नी Mr. 2. 1 23 30

रिहोमनी हरियों ने में में के निकार है। गुर्धि ग्रामंत्री, त्रां न देखे हिर्देश ग्रेस व्हार

東京 新年 ちゅうちょ ちゅう ちゅう カイス

अर्थ-" रागद्देपरूपी घणा दोपोवडे संक्रिष्ट (भरेलो) एटले दुष्ट चित्तवालो अने जेनो स्वभाव (अभिपाय) चंचल एटले विषयादिकमां खुन्थ छ एवा पुरुष अत्यंत परीसद्दादिक कप्टने सहन करतो छतो पण मात्र कायाए करीने कांइ पण (थोडो पण) कर्मक्षयादि रूप गुणने करतो नथी-मेळवतो नथा; नवरं के० उलटो ते पोताना आत्माने मलिन करे छे. " ४३८.

ैकेसिंचि वंरं मेरणं, जीवियमंत्रेसिमुर्भयमंत्रेसि । देह्रदेविच्छाए, अहियं केसि चं उभेयं पि । ४३९॥

अर्थ-" दर्दुर देवनी इच्छामां केटलाएकनुं मरणज श्रेष्ट छे, केटलाएक पुरुषोतुं जीववुंज श्रेष्ट छे, केटलाएकनुं जीवित अने मरणवने श्रेष्ट छे, अने केटलाएकनुं जीवित अने मरणवने श्रेष्ट छे, अने केटलाएकनुं जीवित अने मरण वन्ने अहितकारक छे. आ गायानो सविस्तर भावार्थ दर्दुरांक देवनी कथायी जाणवो." ४३९. ते कथा नीचे ममाणे—

दर्दुरांक देवनी कथा.

प्रथम द्रृंरांक देवना पूर्वभवनुं स्वरूप कहे छे—कीशांवी महापुरीमां शतानीक नामे राजा राज्य करतो हतो, ते वखते ते गाममां एक सेडुक नामनी दिरदी ब्राह्मण रहेतो हतो. तेनो स्नी गभवती थइ ज्यारे तेनो प्रस्तिसमय नजीक आज्यो त्यारे तेणे पानाना पितने कधुं के-' मारो प्रस्तिकाळ समीप आज्यो छे, माटे मने घी, गोळ विगेरे लावी आपो.' त्यारे सेडुक वोल्यो के-' मारा पासे एवी कोइ पण जातनी कळा नयी, तेथी द्रज्य विना घी गोळ विगेरे क्यांथी लाखुं ? ते सांभळीने ते बोली के—' जो कांड पण कळा न होय तेषण ज्यम करवाथी फळनी प्राप्ति याय है, क्यं छे हे—

प्राणिनामन्तरस्थायी, न ह्यालस्यसमी रिपुः। न खुद्यमममं मित्रं, यं कृत्वा नात्रसीदति॥

" वाशीजोतो पीताना भन्तःकरणमां रहेला आळस तेवो बीतो कोई शबुवधी, जने उद्यग सनान बीजो कोई पित्र नथी, के जे (उद्यम) करवाथी भाणी कदि पण नींडानो नथी-त्वेड पापनो नथी. "

ना बनाने पोतानी खानुं वाक्य मांचळीने ते सेंद्रके एक फळ छड् राजानी सभामां जड राजाने ते जेट कर्वु, एसी रीते देनेयां ते राजमनामां फळ छड अहते अतानीक राजानी सेसा क्रमा लाग्यों

[•] ४९ इड१-६र्निय ।

क्या कोर कारणवी चेपा नगरीना गना इतियानचे वारीने कोलीसे नव के को पार्ता है पाने वसानी है पाने पत्र ने व हो है है है है है है है है के होंबों पूर पर्धा अनुक्रमें वर्षात्र आहे. ने सबो श्रीश्वास अकत् के इस भा बाब के बादे करें, तेवामां देनों मेहरू प्राचन पुत्र प्रकारियों नेश करें राज स्य रातीर गर्भे हती. नेचे द्वी साहता मेन्य होते होतने प्रश्नाहर रूप पत अति बहु है- है समा ! भावें पूछ समा हो। महते पह पत्र, 'है नो दर्जन क्रमीक राजा मैन्य महिल दिया पार बोक्स ते. इन क्रमी तीराहर्य गर्थ मु रहते देना हाथी पोडा भिन्ने नह नहने इस्तीह सना के प्रत्य नवसे में ार्थः कारी मेर्डान पर्यु पान भारीन केरे हुए हैं के विद्यार के कि हैं । बारे इस्वानुसार पान, मेर्ड वर्ष है - है । कारी है के आ बारे नान कि को मानीय. प्य हती थे, ताने भि तोशसे कीने हुए हैं के हिंदी क्षा क्षानीक राजा पारा पर गुज्यान पाने नीवार स्थान नेवा है। बार है वे मान्यां के विवर्ष हैं - भी संभाव देखें हैं के कि स राष्ट्रे, े पूर दिवासीने रे श्रीष हते हैं— के बालनाय ! ती क्या हा हता का क्या होता, तो इनेडो इन्डा बबाले केंद्रन की यह होन्छ (बहार) र'४ मा रातर्ग होते. इनह निया निर्मित प्रश्न की ना अपने अपने व भा के बताना अविश्वतियामार् करीन १ कि दे हैं दिन विश्वति स्थान है । हो क्या केवीने प्रभागों भीषा है। है है दे नार्थित हैं मा मोनानि के निर्माणीय पण रेन मार्थ, केने गर्भ प्राप्त कर करते गर्भ कार्य-मी होता है। तेने अमादीने शासना आर्थानी है। में प्राप्त करें मा विश्वेषण करका लागता. येथी मेंद्रेस प्रण देशकाली क्षेत्रकों के प्रणासी भित्र के बहु दूर्वा अंद्रिक्ष मोत्री पहुंचे स्थित है उन्हें की तर का स्थान मा भाषा मा स्थाप अधिका नात्रा राष्ट्र शहर करा कर करा है जिल्हा भा भाषा महामा अर्थिता प्राप्त प्राप्त करा है जिल्हा कर THE WELL WITH THE STREET STREE THE RESERVE WERE SET THE RESERVE AND THE RESER पण तैवां तिरस्कारनां वचनो सांपळीने सेडुकने क्रोध चडचोः तेथी तेणे विचार कर्यों के—' आ सर्नेने कोढीया कहं त्यारेज हुं खरो.' एम विचारीने तेणे पोताना पुत्रने वोलावीने कहां के—'' हे पुत्र! सांभळ, हुं दृद्ध थयो छुं, माहं मृत्यु हवे नजीक आव्युं छे, तेथी मारे तीर्थयात्रा करवा जवुं छे. पण आपणा कुळनो एवो आचार छे के जे तीर्थयात्रा करवा जाय ते प्रथम जब तथा घासने मंत्रथी मंत्रीने एक वकरीना पुत्रने (वोकडाने) खबरावे, अने ते वकराने पुष्ट करी तेनुं मांस सर्व कुटुंवने खबरावीने पछी तीर्थयात्रा करवा जाय. माटे हे पुत्र! मने पण एक वकरीनुं वच्चुं लावी आप." ते सांभळीने ते पुत्रे ते पमाणे कर्युः एटले ते वोकडाने सेडुके पोतानी पासे राख्यों। पछी पोताना कुष्ट सर्वची पह विगेरेथी मिश्रित करीने जब तथा घास तेने खाराव्या लाग्यों. तेवी रीते करतां केटलेक काळे ते वोकडो कोढीयो थयों। एटले तेने मानि तेना मांसवडे कुटुवनुं पोपण करीने (सीने जमाडीने) तेमनी रजा लड़ ते तीर्य-यात्रा माटे नीकळ्यों।

मार्गमां जतां सेड्रकने तृपा लागवाथी तेणे सूर्यना ताउथी तपेल, अंदर पडेला धणां पांदडांओथी ढंकायेलुं काथ (उकाळा) जेवं कोइक हृद (खावोचीया)तं जळपान कर्युं. तेथी तुरतज तेने विरेचन थयुं. एटले तेनो सर्व कुएकृमिनो व्याधि वहार नीकळचो. पछी तेणे घणा काळ सुधी ते जळनुं पान कर्या कर्युं. एटले दैवयोगे ते तदन नीरोगी थयो. परंतु अहों कुएरोगवाळा वोकडानु मांस खावाथी तेनु आखं कुड्रव कोढीयुं थयुं. पछी सेड्रक पोताना शरीरनी नीरोगता देखाडवा माटे कौशांवी नगरीमां पाछो आव्यो. लोकोए तेने पृछचुं के—'तारोरोग केवी रीते गयो ?'त्यारे ते वोख्यो के—'देवना प्रभावथी मारो व्याधि नष्ट थयो छे.' पछी वेर आवीने सेड्रके पोताना कुटुंवने व्याधिग्रस्त जोइने कह्युं के—'जेवी तमे मारी अवज्ञा करी हती तेवुंज तमने सर्वेने फळ पळ्युं छे? में केवुं कर्युं ?'ते सांभळीने सर्वए तेनो अत्यंत तिरस्कार कर्यों, अने 'तुं अटीट या' एम कही कुटुंवे अने नगरना लोकोए तेनी निर्भर्त्सना करी तेने नगर वहार काढी मूक्यो. त्यांथी भमतो भमतो ते राजगृही नगरीमां प्रतो-लिए (दरवाजे) आवीने रह्यों.

ते अवसरे श्रीमहानीरस्वामी राजण्ही नगरीना उद्यानमां समवसर्याः ते सांभळीने द्वारपाळोए सेंड्रकने कधुं के-' जो तुं अहीं रहीने चोकी करे तो अमे वीरप्रसने तंदना करी आवीए. 'ते सांभळीने सेंड्रक हा कहीने वोल्यो के-' हुं भूल्यो छुं.' त्यारे द्वार-पाळोए कर्युं के-' अहीं द्वारदेवोनी पासे जे नैवेच आवे ते तु ययेष्ट्रपणे खाजे. परंतु तारे

भाष पार्व काल काल कर नहीं, "ए जाते हरीने हे हो हो हा होते हैं है ें क्रेड की अर्थन द्वा अर्थन का अर्थन हैं।

भारत्वीं को, तेवी ने जनवान का वा तो वहीं नहीं, मूल ए हवा देश वहीं हे दुशहुरस्तामां अहमा धारमीय है छन्। यह है, यह है इस्हाली नरीक

में केंद्र करते नहीं की बड़ा देश महती है से समझ है वास्तानी कोनी काम महे स्वा नहीं है है है तो है है है है भीशाबिर पत्ने साथ नवं वे आरक्षे दिन रहते हैं है है है है विश्व कार्याने देशेन प्रेरी . जिस प्राप्ति के न्हें की कार्याने के निर्माण कार्य वे देशकोत् साधित्याण कार्य । स्था १६ व्या धेनानी पूर्व नव (तेरी) द बहु हु देखे अहत्येह, पहुँह है हुँद के युख अंधार्थ हुन्दे हुद्द है हुई है हुन्दे हुन् हित्वे प्रश्निक स्वाहित्व विद्यालया । इति स्वाहित्व स्वाहित्व स्वाहित्व स्वाहित्व स्वाहित्व स्वाहित्व स्वाहित् स्वाहित्व के प्रक्र बहुमें भी मुहूब्र हा नो हैं है है। इसी, कर्न महिल्ह है कि महिल्ह है है है है 李阳等一个的董一章 FARE ART . C TO TO THE WAY TO THE BENNERAL SERVICE AND THE SERVICE AND THE SERVICE AND WAS ASSETTED AS THE SERVICE AND WAS ASSETTED AS THE SERVICE AND WAS ASSETTED.

The state of the s

有有人不可以一个人不可以

तो तरतज आकाशमां उत्पती गयो. ने जोइ श्रेणिक राजा विस्मय पाम्यो. पछी पाछा फरीने तेमणे भगवंत पासे आवी पूछ्युं के-'हे स्वामी! ते कृष्टी कोण हतो ते कहो.' त्यारे भगवाने सेडुकना भवथी आरंभीने तेनुं सर्व द्वतांत राजाने कही संभळाच्यु. पछी कधुं के 'ते दर्दुरांक देव जे हमणाज उत्पन्न थयो छे तेणे तारी परीक्षा करवा माटे तने कुष्टीनुं रूप वतावाने मारे अंगे दिव्य चंदननो छेप कर्यों छे.' फरीथी श्रेणिक राजाए पूछ्युं के 'हे स्वामी! त्यारे कही के आपने छींक आवी, ते वसते आपने तेणे मरवानुं केम कह्युं ? 'भगवान वोल्या के 'हे श्रेणिक ! मने अहीं छुं त्यां सुधी वेदनीयादिक चार कर्ष वळगेळां छे, अने मृत्यु पाम्या पछी तो मने मुक्तिमुल मळवानुं छे, माटे मने मरवानुं कयुं. वळी तने छींक आवी त्यारे तने जीववानु कयुं. तेनुं कारण ए छे के हालमां तुं जीवतो छे तो राज्यमुख भोगवे छे, पण मृत्यु प नरकमां जवानो छे. माटे तने 'चिरं जीव ' एम कर्युं, तथा अभयकुपार अर्ह धर्मकार्य करतो सतो राज्यसुख भोगवे छे, अने परभवमां पण ते अनुत्तर विम जवानो छे. तेथी तेने 'जीव अथवा मर' एम कखुं; अने काळसी करिक तो जीवतो छतो पण वह हिंसादिक पापनुं आचर्ण करे छे, अने मरण पाम्गा सातमी नरके जवानों छै. माटे तेने 'न जीव अने न मर' एम कर्युं. आ चार भ सर्व जीव परत्वे छागु पडे छे. (एटछे के चार भांगामांथी कोइ पण एक भांगामां फोइ नीय आबी शके छे). आ दर्दुरांफ देवना मननो अभिमाय छे. " ते सांभव श्रेणिक भगवान्ने विनंति करी के "है स्वामी ! आप जेवा मारे माथे गुरू छतां । नरक्षमां जनु केम योग्य कहेनाय ? "भगवान बोल्या के "हे राजा ! तें सन्य पाम्या पहेलां नरकतुं आयुष्य नांबेळुं छे, ते कोइथा पण दूर (पिथ्या) थर्र शके र नथी. परंतु तुं रोद्द न कर. आवती चोवीशीमां तुं पद्मनाभ नामे मुग्त तीर्गकर ' वानो 3 " ए मांभन्नीने राजाए डांगत थई फरीथी मसुने पूछगुं के दि भगतान र्श भा हो। पण प्रवाय नशी के जेथी मारे नस्कर्म नतुं न पडे ? ' त्यारे भग । रोटमा के आ तारी किंगला नामनी दासी भाषपूर्वक साधुने दान आणे, अने वे इट इसा हरिक देनेया योचमी पादा मारेछे ते न मारे तो तारे पण मन्के गा गपंद ने कार देने सुभा जनस्वतं स्वता करी वह तरक वाल्यो. पार्वपां करीयो श्रीणिक राजा म अर्थ कर पूरी म हत्या पाट दर्गह देव एक मानुनुं हा विद्वी ।गा न रहे ही नगड़ राज अने पताची सम्मुख जाड़यों, तैसे मोड अणिहे पुष्टु है े बरें हैं हैं है। इस्त होतार प्रयोग भागता तथा कर कर की है। बने में नो र न र र हर है। इस्तु में पूर्व के बाह्य प्राप्त के छे? आ १४११

कंपानार्षे अस्या कि ननु शहरांचे जालक्षांति समारात्। नात्वे मद्योपदंशात् पिवनिमा नर्गे वस्ता ग्रांच रेट्यात ॥ स्वागियां गरेकी नतु तर विभी येन बार किनीय। नीमनं गुनहेतोः क्तिय इति सर्व चेन वर्षासु है जिस्सा

'सर्' या गारी केम बहु कर ने सेवें) देव हैं हैं है ज्या कार में भागा बारे पेंडर वानी जात है । से दे हैं के रह कार है है वेदार साहे अधि क्षेत्राची देखें साव पेंद्र परे ते. १ र दे हैं १ रेडर १३० संदे हिंदू रे रहा, शहराला साम इस है पूरे स्वर्ण देश है जात है है. देनुभू ताले क्षापुर्वे व्या के मिन्द्र तथा प्रदेश स्था र स्थान के पूर्व प्रदेश रे बोर्स क्या करें हैं। के अंगे रे क्यों में हैं है अभी कर है। यह देखने नह है क्षा है है के समार है समाप्त है है से क्षान के हैं।

भारतं अनेक अनेते भारत के वाल की समाने द्वा १ की, उन राज् 養 对美国 \$P\$ 影響 新生 羅羅 聖禮, 報本 可含美味 等等等 等。等 曹军的军机会, 对称对法军军员 The state of the s 本共産業の大学 着 サウンス からな からな からな から かっちょう आपती बोळी के 'आ दान हुं आपती नथी, पण श्रेणिक राजाना आ चाटवो दान आपे छे.' पछी तेने तजी दइने राजाए काछसीकारिकने बोळाबीने कहुं के 'तुं पाडा मारवांतुं काम मूकी दे ' ते बोल्यों के 'हे राजा! हुं पाणथी पण प्रिय एवी हिंसानो त्याग नहीं कहं. ' ते सांभळीने राजाए तेने एक अंधक्रपमां नांख्यो. त्यां पण तेणे कादवनी माटीना पांचसो पाडा चीत्रीने (बनावीने) तेने मार्या (तेनी हिंसा करी). ते जाणीने राजाए विवार्युं के 'खरेखर जिनेश्वरनुं वचन सत्य छे, ते मिथ्या थायज नहीं.' आथी जोके तेने रोद अयो पनंतु पोते उन तीर्यक्षर शवाता छे, ते हकीकत चालेकी होवाथी मनमां आनंद पावदा छ। व्या

॥ इति दर्दशंकदेवसंयन्थः ॥ ६७ ॥

केसिंचिंय परेलोगो, अन्नेसिं इंस होई इईलोगो ॥

कैंस्स विं दुंन विंे लोगी, दोविं हैंया केंस्सई लोगी ॥ ४४०॥ अर्थ-" केंटलाएक जीवोने परलोक (परभव) सारो होय छे, वीना केंटला-एकने अहींन आ लोक सारो होय छे, कोड पुण्यज्ञाली जीवने वने लोक पण सारा

होय छे, अने कोइ पापकर्म करनारा जीवने वन्ने लोक हत (नष्ट) होय छे." ४४०. (आ हकीकतनो उपनथ उपर जणावेलो छींकनी हकीकत परथी समजी लेवा,) वली विशेष स्पष्ट करे छे—

ंछजीविकायविरओ, कांयिकछेसेहिं सुंडु ग्रॅरएहिं।

र्न हुं तस्सै ईमो लोगो, हेवइ 'स्सेगो' परी 'लोगो ॥ ४४१॥

अर्थ-" छ जीवनिकानुं मर्दन (वथ) करवामां विशेष आसक्त एवा ते तापसा-दिकने अतिशय मोटा एवा पंचामि, मासक्षपण विगेरे कायछेशोए करीने आ लोक (भव) सारो होतो नथी. परंतु तेने एक परलोक तारो थाय छे.केमके तेने अज्ञान-तपथी परभवमां राज्यादिक सुखनी माप्ति थाय छे." ४४१.

नरेयनिरुद्धमईणं, देडियमाईण जीवियं सेयं।

वंहुवायम्मि विदेहे, विसुज्झमाणस्स वैर मरणं ॥ ४४२॥

अर्थ-" नरहने विषे वांथी छे (धारण करी छे) मिन जेओए एउछे नरह-गनिगमन योग्य कार्यना करनामा एवा मंत्री विगेरे राज्यनिता करनारनुं जोतित

गावा ५४०-केनीचि परे छोगो । दता । कन्सिव ।

मावा ४४१-पर्नीयकायमन्ति विशेषेण रतः । स वर्गा परे लोगो। स्स-तस्य पगः=पकः । गावा उदर-भद्दम । जीवित्र। तथ-जेवः । द्वियमाद्देण=मनित्रमुपाणां । बहुवायमि वि=बहुरोगसमृत्यसेषि ।

ो संस्था नेप (मार्च) है, हैको कार्यन अवलो और स्थान वर्ष संक्षति दु विकी मिति प्रार्थित असे अल्लेक्ट स करते हैं , त्यें बार सरक क्षे इस देखी विकेश सामाना विकास सहित हरती । १९०० वर्ष प्रात्ते वर्ष भू सम्म दिव (इन्यामसमि) के. देवन इंग प्रश्निक के प्राप्त करा 18 " YER.

नंतियममुहियाणं, स्टांने जीविने विकास विकास वीक्त वर्वीत गुर्गः गया विकृत सुर्वा वित्र १०० व

·痛听气,有缺陷。 \$P\$ \$P\$ \$P\$ \$P\$ \$P\$ \$P\$ \$P\$ को सेल प्रति होंद्र की स्थाप स्ट्रांक करिए होंचे व स्थाप स्ट्रांक प्रदेश भारतिक स्थापन के प्रदेश के अपने के प्रदेश के अपने के प्रदेश के अपने के प्रदेश के अपने के प्रदेश की अपने विकास के प्रदेश के प्रदेश के प्रदेश के प्रदेश की प्रदेश की अपने के प्रदेश की अपने के प्रदेश की अपने के प्रदेश क प्रकासका प्रसा के पार्टिक सहार्थित महार मेरे हैं है है है है

भीतं क्षां ने शिक्षं सीति पेशक्ति है। नंबन्धिम पंत्रीत संया. वैशे प्रतास भी ति । । । ।

अधिकार क्षत्रसमे प्रान्तात पुरस्केते स्वत्ता हो। प्रान्तीत स्वत्ता हो। 李尔思是 经收收帐款 电对 经产生的条件 一种 医动脉 计通信 经产生 क्षित्र मार्थित साथ अस्ति। संस् रूपा के के राज

भी कोनिय वर्गा, नय केरी की वर्गात

तिमुनिरंसुगरम्, नेप्तिम्स्यै ३५ म् भी व स्टब्स्

मुलसनी कथा.

राजगृह नगरमां महा क्रूर करनार अने अधर्भी कालसीकरीक नामे पश्चम करनार (कसाइ) रहेतो हतो. ते हमेशां पांचसो पाडानो वध करतो हतो, अने तेवडे क्रढुंवर्सु पोपण करतो हतो. तेने सुलस नामे एक पुत्र ययो. ते अभयकुमारना संस-र्गथी श्रावक थयो. केटलेक काळे काळसीकरिकना शरीरमां एवा मोटा रोगो उत्पन्न थया के जेनी वेदनाने ते सहन करी शकतो नहीं. तेथी ते अत्यंत विलाप अने पोकार करतो हतो. तेना स्वजनो अनेक गकाश्ना औषधो करता हता, पण वेदना शांत थती नहोती- एकदः पिताना दुःखयी दुःखी येवेला सुक्रसे अन्यकुषारने ते वात कही, ए-टले अभयकुपारे तेने कु के " हे सुइस! तारो विता महापापी होवाथी नरकमां ज-वानों छे, तेथी सारां भौपधोधी रोने शांति यशे नहीं; भाटे हेनुं तुं मध्यम (इलका मकारतं-किनष्ठ) औषध कर के जेथी तेने कांइक सुख याय." आबी अभयकुमारे आपेळी बुद्धिथी सुलसे घेर आवी पिताना शरीरपर विष्टा विगेरे दुर्गन्धी वस्तुओतुं विछेपन कराच्युं, वोरडी अने वावळ विगेरेना कांटानी शब्या करी तेमां सुवाड्या, कडवां कपायलां ने तीखां औषधो पावा मांडचां, गाय भेंस विगेरेनां मूत्र पायां, कुतरा अने युंड विगेरेनी विष्टानो धूमाडो दीधो, तथा राक्षम अने वेताळ विगेरेना भयंकर रूपो देखडाच्यां. एवी रीते करवाथी तेना शरीरने महा सुख उत्पन्न थयुं, तेमज ते पो-ताना मनमां पण अत्यंत सुख मानवा छाग्यो. पछी ते काळसौकरिक मृत्यु पामीने सातमी नश्कमां नारकीपणे उत्पन्न थयो.

तेनुं भेतकार्य (मरणिक्रया) कर्या पछी सुलसने तेना कुटुंवे कहुं के "तुं पण हवे तारा पितानी जेम हंमेशां पांचसो पाडानो वध करीने कुटुंवनुं पोपण कर, अने आपणा कुटुंवनी रीति ममाणे वर्ती सर्व कुटुंवमा मोटो था." ए प्रमाणे कुटुंवीओतुं वाक्य सांभळीने सुलस वोल्यो के "ए पापकर्म हुं करी करवानो नथी. केमके तेवं पाप करीने हुं नरके जाउं, ते वलते मारो कोइ आधार थवानुं नथी. जिह्वाना स्वादने माटे यइने जे पुरुषो आवी दिसा करे छे तेओ अवश्य दुर्गतिने पामे छे. ज्यारे एक कांटो लागवाथी पण माणीने मोटुं दुःल उत्पन्न थाय छे, त्यारे अनाथ अने अश्वरण एवा पश्चोने शहादिक उडे मारवाथी तेनने दुःल उत्पन्न थतुं हशो तेनुं तो कहें जे शुं! माटे आवा पापकर्म उछे कुटुंवनुं पोपण करवाथी सर्धु, मारे हिंसा करवानुं कांर पण प्रयोजन नथी." ते सांभळी कुटुवर्वा वोल्यो के "तने जे पाप लागशे तेना अमे पण भागीतार थइशुं, माटे तारे कुळकणने त्याग करवा नहीं." इत्यादि कुटुंवनो वहु आग्रह जोइने तेनने पिताना पण

,. 11 ~

रक्षे में स्वी हतां। जातीने नमप्रमार मुक्यने केर करि इंडिएन कर हु रिक् समो के 'हे मुक्रम ! की परंच के केरके में निज है रहा कर रहा और सिंहियां आहर क्यों नहीं, 'इत्यहिंद पने पहले की रहतां के रहता के कि के कि कि की रेमने वेर वर्ता, पत्री मुक्त पन अवस्थित करा नक्षित को स्वी के स्थीन जान अप के

॥ इति मुक्तस्थान्तः । ३० व

मुख्य कुदंडमा दाममाणि, उंब्ह्य धीरवाओ व । पिडेंद्र अंगतिनेता, नडेयया नेति व यम् वि ॥ उट ॥

नेर संगापदेशातामध्ये ज्ञांत्राज्या होते. जेमाश्राप विभिन्नाते, ने स्थि मही न दि होते हैं । जक्ष पश्चिम होते ने प्रतिभित्त होते के का अन्य के का विभाग प्रता

क्रेश सहे छे, छतां ते यतनानेज निश्चे ते मूर्ख माणस करतो नथी; तो ते भूर्खने उप-रना पश्च त्रिना पश्चनां उपकरणो मेळवनारनी जेवो जाणवो: अर्थात् यतनाने माटेज उपकरणो मेळववानी जरुर छे, छतां ते मेळवीने पछी यतनाज जो न करे तो ते उपक-रणो एकटां करवा व्यर्थ छे." ४४७.

अस्हिता भैगवंतो, अहियं व हियं "व ने वि इहं किंचिं। वीरित कोर्स्वित यें, विर्तूण जेणं वर्ला हैत्थे ॥ ४४८ ॥

अर्थ-" अरिहंत (रागद्वेप रहित) भगवान (ज्ञानी) मनुष्योने वळात्कारे हाये पकडीने आ संसारमां कांइ पण (थोडं पण) तेना अहितनुं निवारण करावता नथी. तेमन तेना हितने करावता नथी. अर्थात् जेम राजा माणमने हाथे पकडीने वळात्कारे पोतानी हितकारी आज्ञा मनावे-पळावे छे अने अहितकारी मार्ग छोडावे छे तेम अरिहंत भगवान् करता नथी." ४४८. त्यारे शुं करे छे ते ते कहे छे—

उवएसं पुण तं दितिं, जेणं चरिएंण किंतिनिलयाणं। देवांण विं हुंति ' पेंहूं, किंमंगं पुणे मेंणुअमित्ताणं ॥ २४९॥

अर्थ-" परंतु तेने (मनुष्यने) उपदेश-धर्मीपदेश आपे छे, के जे आचरवाथी (जे धर्मनु आचरण करवायी) कीर्तिना स्थानरूप एवा देवोनो पण ते प्रमु-स्वामी थाय छे; नापछी हे अंग!(हे किष्य!) मनुष्यमात्रनो स्वामी थाय, तेमां तो शुं आवर्ष !"४४९

परेगण्डिक्सं उद्यक्षं, विकिईओ चेवलकुंडलाहरणो । संको इंटोनिएमा, प्रावणवाहणो जाँओ ॥ ४५०॥

अस-" तर ('तान) छे महाण्डल भाळनी माम जनी एता किएड क्ष्म मुहूरने भारण हरनार (अंद्र मुहुरने भारण करनार), बाहुरशा (बाहुतंत्र बेरखा) विगेरे नानरणोती धोमित तथा हणेने निषे नपळ हुंडळना आमरणने धारण करनार एसी छोटेट्ट हिरोपदेशनी एडले हितकारी निमेश्वरता उपदेशकी (उपदेश ममाणे अस्मन हरनामी) रेगनणना पहनत्राको स्थी; एडले कार्निक केटना नपमां हित-सारक निनेत्यको उनदेश नेगीहार हरतानी निणे हद्माणुं माम हसुं." ५५०

स्य गुरुनत्याः जिहि. वंगीयविमाणगयमहम्मादं । बरुनदरेप वगहे. हिओनणमेण लळाहं ॥ ४५१ ॥

[.] २ ४६६ १८६ च । मार्गित । कार्यमंत्र या विकृता वाचा ४५५ कि ४वाह । ५ ५८ ४५--४४१ ठ ५४८५५ च नम्मा विद्यापना । वाचा ४५८-४व वृक्त ४व४४ ।

अं-ध्यो प्राप्ते (स्त्रे) स्त्रोती इ.स्ट (वेरिक्स) क्षेत्रे हा स्त्री सीवमी हतार (प्रतीय नाम) रिमानी का दर्श-नेतु स्थानायु नेजातु वे लेशिवे समीनेत प्रति पीतगामना स्थानने नामान समानि समारित से स्थान है।

मुंखरममं विभुई, जे वंतो भएउन हाई। ति । मोगुनलोगम्म यह, ने जीन दिवासम्बन्धा ४५३॥

बर्थ- " बनुष्यको हता (प्रतिक बर क्षेत्रको) रचना वात व्यवस्थितक व पूर-लेंके (एउंके) कुन्य पति विभूति पान्यों के प्रवाहे कि वर्ग दिको होंगे कर ने इसे प्र ल्या स्वतंतु आगपन स्वाणी) उ तान. " ४००.

कोग ने मुद्रपुरं, चित्राराग्राप्नमधेवभिद्रम्भे । त्रंपद्विं कायत्रं, अद्यिम् मर्ग नं कंदर्जे॥ ४६३॥

स्वेतन हे (बोबर स्वेर) वृत्ति (क्वेन) के प्रकार कर प्रकार दिएं की म् इसे बिनायनम् उपरेष्ठं पानीने । योक्टीने) योष हुन ज्या व न रिर्म रहा मंद्रानीक हतो. यो मंदर १ या ने देवे ने यो न र वेन्यान से र्क्ष एस की क्वारे में या बार्की गईन हो। (१४).

हिपसपंत्री देशिती, कर्मा न देख गर्भ तो कुर गर्नो । अंतिनं नमेलां भे, कर्स ने सिंदनी के म अपन

海 性 化磷酸 医全球性 硫酸铁铁铁矿 斯特 心質素 安德 电电路流流 一种海岸城市 经股票 美数强调集 安阳縣 经货币的 美语类 有心态医发射 经企业 化二甲基甲 电电流 महेर ने के पूर्व पूर्व के नी को मेर्न के हैं के कार्य के के के के कि के के

शे विवानीकार्यकारिको को केर महत्ती में देखें दे पूरती, नाम सिक्ताती जी तर के उन्हें 医精神病 医性性皮肤 海岸海绵 经数据 医皮 化 医皮肤 安 化 医皮肤 化

मान्द्र हेन्द्री सुद्रान्त्रस्ति व्याप्तान्त्रः हे

大学ではなる。 ままないでは、ままなが、ままりはないなない、これないでき、またでは、 大学ではなる。 こうない まだという ないまゆう 、まちなが、ままりにならいなない。これないでき、または 下され ではない、大変なない かっと ないま ないま かっと マットラー

पम निष्ठानादिक करे छे ते पुरुष देवतानी जैम पूज्य थाय छे. तथा लोकना मध्ये ते सिदार्थक (श्वेत समसय)नी जेग मस्तकपर चडे छे. अर्थात जेम सरसवने मनुष्यो पोताना मन्तकपर चडावे छे, तेम लोको तेनी आज्ञाने मस्तकपर वहन करे छै-अंगी-कार करे छे-" ४५०.

मेबो गुँणेहिं गंण्णो, गुणांहिअस्स जंह लीगवीरस्स । 'मंभंतपउडविडवो, संहरसनयणो सययमेई' ॥ ४५६ ॥

अर्थ-" सर्व जीव गुगोवडेन गण (माननीय) याप छे. जेमहे सन्ताहिह मः गोथी अधिक अने चोहनीर केंट लोह मध्ये प्रसिद्ध एमा भोमहानीर स्नामीने वाज छे नुइच्नो तान्त नाग जेनो एवो सहस्त नेववाओ इन्द्र पण निरंतर दिना हर्सा आरे के. नाटे पुनवान रहन पुट्यागानां हेनु छे, एम निद्ध भाष छे." प्रदेश

निगिन्निन तारुड हनडारदारदारुगमईस्स ।

नैम्म निय ने अंदियं, पुंगोति नेरं जेगो नहरू ॥ ४५७ ॥

अर्दे १ क्रिं, कातर-परने देसमुं, ह्इ-म्या ती जुं, ह्याइ-माया हसती । म इन्ह्याद्य पहार क्रिके हुई हो हो ते ती तालण भारत भात (भवती प्रात) क्रिकेट प्रदेश क्रिके हुई हो हा प्राप्त ता ताल तात्र हाम एक त्र हिंदी इक्ट पर र पहुं १६६ ता हुई हो एक शहर हो पण के (द्वान क्रिकेट हो एक हो है।

. इ. १ १८ : इ. १५ इ. १०५४ स्वास्था समा संभा संभा

इ. १ - १ व्या व्यासमा इत्यासमा । १९९१।

्राप्त के प्रति के त्रिक्ष के त्र प्रति के त्रिक्ष के त्र

The second of the second

जन्म हिन्द्र गा.

हेरपुर नगरमां जमानि नामनी एन मेंदा राइद्योगे अस्ति गर्भ एवं. ह कृत्यन्त्र प्राप्ती स्वारे क्षिप्रदर्शेष स्थानीनी दृष्टी वार्वकरण्योः इता बहन्य क्षा राज-, कामनो परन्यों, ने महिनी साथे पोर्टिंग मेने से पुत्र नोत्तर से नाथ प्रतार है भी सारित रहामीने बोद्या गयो. त्या हिना हरीने नवशनना दू रश हेपूरा संबन्धा. ली मेगामनी असर हा सामी पुरने की प्रतिसी करण्याकी गरिक व्यापन हुई क्षित प्रथम कर्तुं, या सन्तर्भ पूर्व सहदर्शनाम एक पार्थ को या गरिए ५ एक दास की सामाने अभाविने पांचनी ग्रह्मारी विश्व कीई बाजा अक्षांप कर है **रह**िक्षंत्रके जन्मा क्यों, जन पह प्राप्तांत देश हमसे जन्में, क्षेत्रक प्र भारती प्रति नार्वति विक स्थार प्रकारी बाहा कर्याः वर्गः नारान्य व वा मधे और नारे स्वयंत्री मझ विनान कर है है है है है है है कर्री, अनुष्ये दिस्सा पर हो है जी सभी जाती का प्रार्थ जानेना प्रकार जाने हैं। 事務 繁殖性缺氧 祝禮 文建,文字是 建筑,是《海军部 原类的 放射谱 明 安果的人 思维 有外代码 क्षा कि सो संस्थित स्था है । साह नाम संस्था होता होता होता है । साह रोहाई है। स मोल्पी क्षेत्रीय अवस्थित देशमा वर्ष च समार्थ कर्षे व १४०७० वर्ष र १५५७० किया है देखें संस्थित कर है, जाने नहीं पन के बाने कर है। अपने पार्ट के 如此時 不能報告 有心理 學 化黄色红花 人名 化生态等于 一十二年 如此本有一种

योडं भांग्यं होय तोपण ते वासण भांग्यं कहेताय छे. जेम वस्तानो थोडो भाग फाट्या छतां पण वस्त्र फाट्यं ए शे वचनच्यवहार थाय छे, ते शेज रीते करातं ए बं कार्य पण कर्यं, एम कहेवाय छे. 'कडेमाणे कडे' ए निश्चय सूत्र छे. जो प्रथम समये कार्यनी उत्पत्ति न मानीए, तो पछी वीजे क्षणे पण कार्य थयुं नहीं कहेवाय, एम त्रीजे चोथे विगेरे क्षणे पण कार्य उत्पन्न थयेछं कहेवाशे नहीं. मात्र एक छेछेज क्षणे कार्यसिद्धि कहेवाशे. तेम मानवाथी प्रथमादिक क्षणोनी च्यर्थता थशे. वळी अंत्य क्षणेज कांइ सर्व कार्यसिद्धि देखाती नथी. माटे 'कडेमाणे कडे' ए भगवाननुं वाक्य युक्तियुक्त अने सत्यज छे. '' इत्यादिक अनेक युक्तिथी वोध कर्या छतां पणजमाछिए पोतानो कदा- ग्रह छोडचो नहीं, त्यारे केटलाक शिष्यो 'आ (जमालि) अयोग्य छे, जिनश्चनतो उत्थापक छे, अने पोताना मतनुं स्थापन करनार निइव छे.' एम जाणी तेने तजीने भगवंतनी पासे गया.

पछी जमालि पण नीरोगी थयो त्यारे विहार करतो करतो चंपानगरीमां भग-वोननी पासे आवी कहेवा लाग्यों के 'हुं तमारा वीजा शिष्योंनी जेम छक्कस्म नयी, पण हुं तो केवळी छुं.' ते सांभळीने श्रीगौतमस्वामीए पूछयुं के 'जो तुं केवळी हो तो कहे के आ लोक शास्त छे के अशास्त ? तथा जीव शास्त छे के अशास्त ?' ते सांभळीने तेना मत्युत्तर आपवाने असमर्थ एवो जमालि मौन धारीनेज रह्यो. त्यारे श्रीगौतमस्वामी वोल्या के 'हे जमालि! तुं केनळीनु नाम धारण करे छे अने उत्तर केम आपी शकतो नथी ? हुं छक्कत्थ छुं तोपण तेनो उत्तर जाणुं छुं ते सांभळ-लोक वे मक्तारनो छे शास्त्रत अने अशास्त्रत. तेमां द्रव्यमी आ लोक शास्त्रत (जित्य) छे, अने पर्याय यक्ती एटले उत्सिप्णी अवसिप्णी विगेरे काळपमाणथी अस्त्रात (अनित्य) छे, तथा जीन पण द्रव्ययो नित्य छे, अने देव, मनुष्य, तिर्यंच तथा नरकगतिरूप पर्या-यथी अनित्य छे." ते सांभळीने तेना उत्तर उपर श्रद्धा नहीं राखतो जमालि विहार करी आन्ती नगरीए गयो.

मुद्दीना साध्मीए पण जमालिनो मत अंगीकार क्यों इतो. ते सुद्दीना पण तेन नगरीमां उंक नामना भगवानना उपासक कुं भारनी बाळामां रहोने लोकोतो पासे नमारिना पतनी बहुपणा करवा लागी. ते सांपळी ढंके विचाये के '' गुओ! कर्मनी देशी विचित्रता है ? जा मुद्दीना भगवाननी पुत्री यहने पण क्रमना वश्यी असत् पद्दा हरे है, तोषण जो जाने हु कोड पण उ । यथी मतियोच पमार्तु तो मने मोद्दे फड़ इहु बाय. '' एन विचारीने तेने एक्टा पोरमीना मध्यमां स्वाध्याय कर्गी मृतंद्रा (एडहिना) मार्थीनी मादीस एक अंगारी नांल्यो, तेनी मादीमां हे जण जिद्र पहलां मिने मुर्जियाय करें है के आपका आहे हैं हों है आहें जा आहे हता है कार्रक्ष वर्ष के बोल्कों है है मार्कि के साम है है, है है सहस्थ सर्वे हेन्द्रे । ब्रह्मा महिन्दु शेष ने इत्यू संस्तर तहीं व्यूक्त बन्दे के उत्तर करो सब प्राया प्रशित को होतानी है, यो हो से कारण है देख गर्ज क्य, "आ समाने देवनी द्विमी मुद्दिकार काराओं देख सन्दर्भ देशों है अभि पूर्व नारीते रहे हैं। जातान है सह सम्बर्ध के आहे के कार्य के कार्य के अप है, 'सुन हात होते वस नवारित होता हाती देखन कराहार हो नहीं.

ध्वी मुख्येना नगराननी पानै जानी विष्याद्गकृत कोर्न साहती शहर हर की बेहरकान पार्चीने मोर्जे गाः जैने तमार्थि के पहले १५६६ ए ८५६ गाउन ४३ े का दिलाने अन्यन कर्ष क्लिक्ट केंग्स किन्सी देह हुई हुई के किन देख े इन पूर्व बेवामारे परिन्यम हारो.

भा अवाचे जमालिय सेम दिनस्पतन् समापन करणारे वर् बेसार स्ट हेन भी, देशेन की पीतों पा ने होंद्र दिनाहांनी विकास है है ते ते हैंदे की कार म् सनोक्ष्मी दूर्वीको साम साम उसी सून संस्थिति होते, होते उसे तहे पर है अरन क्षानिस्ति, ए ना समन् भागी है.

। इसि जमारि संस्था ।

धेर्वस्मापगारमण्डिः नेपवं हिल्ह्यान्याने।। क्रमंत्रवमराज्ञानं, अयंत्रमवं दि जोती ॥ १६०॥

新疆山村 美文語 李文明章 "李节文明","以为了李文明 美军公司,有称"《广东·安·达·克·贝·木代 制体学 解導 化红性溶液 建金字 一 电影

संविधातिमात्रः अनेगांद्रपद्धित्यस्तिति।

甲糖子 电电路 医乳囊炎 数准等 的复数古事物等者 未 指1至四百 】 अर्थ-" पर (अन्य)ना परिवाद (अमिताद-तिहा) के विशाल एडले पर-परिवादमां-पारकी निदा करवामां आसक एवा संसारमां खेला (संसारी) जीवां अनेक प्रकारना कंदर्ष (हास्यादिक करतुं ते) अने शब्दादिह निपयोना मांग एडले सेवनवडे करीने अन्यने अरति उत्पन्न करे तेवा विनोदने करे है. ए। एडले ए प्रमाणे वीजाने परिवाप उत्पन्न करीने पोताना आत्माने मुख उत्पन्न करे है." ४६१.

औरंभणयनिरया, लोईअरिसिणो तहां कुंलिंगी अं। दुईओ चुकों नवरं, 'जीवंति दरिदें जियलोए॥ ४६२॥

अर्थ-" आरंभ (पृथ्वीकायादिकनुं उपमर्दन) अने पाक ते रंधनक्रिया-तेमां निरत (आसक्त) एवा लोकिक ऋषिओ (तापस विगेरे) तथा अदंडी विगेरे कुर्लि गीओ यतिधर्मथी अने श्रावकधर्मथी एम वस धर्मथा भ्रष्ट थड्ने मात्र आ जीवलोक विषे दरिद्र (धर्म रूपी धन रहित) एवा छता जीवे छे. " ४६२.

सैव्वो नै हिंसियव्वो, जहं महिपालो तहाँ उद्यपालो । नै य अर्भयदाणवइणा, जंणोवमाणेण होर्यव्वं ॥ ४६३ ॥

अर्थ-" साधुए सर्व जीव (कोइ पण जीव)नी हिंसा करवी नहीं. जेवो महि पाळ के० राजा तेवोज उदकपाळ के० रंक पण जाणवो. (मुनि राजाने अने रंकं समान गणे छे, एटले एकेने मारता नथी.) अभयदानना व्रतवाळा साधुए सामान जननी उपमानडे थवुं नहीं. एटले के करेलानो प्रतिकार करवो (कोइए आपणने माय होय, तो तेनुं वैर लेवुं) इत्यादिक सामान्य जनना कहेणी छे अने कृति पण होय है तेनी समानता धारण करवी नहीं."

पौविज्जइ इहै वसेणं, जॅणेण तं छगंलओ औंसंतुत्ति । नै य कोई सोणियेंबलिं, केंरेइ वर्ष्यणें देवांणं ॥ ४६४ ॥

अर्थ-" क्षमा करनार पाणी आ संसारमां न्यसन एटले निंदारूप कप्टने पामे छे. केमके लोकमां क्षमावान पाणीने एवं कहेवामां आवे छे के ' आ तो असमर्थ (विचारो) वकरा जैवो छे. ' एवी रीते लोको तेनो उपहास करे छे, वीजाथी पीडा पामतो छतो पण ते क्षमाज करे छे, माटे आ असमर्थ वकरा जेवो छे, एम लोको कहे छे; वली कोई

गाया ४६२ छोईय । कुलिंगीय । जीयलीप । गाया ४६३-उदकपाली-रकः । होइन्त्र । गाया ४६४-छग्गलओ । असत्तोत्ति ।

ति भागम स्थिति परिवास समी नहीं, ऐसे उसेने ए उस्से हैं है देख के पत्र क्षणांकी कीर पर्य नहीं. यो प्यति सहितीये पत्र प्राहे कोने के साथ से के पहल

बहेर स्पेण जीवा, पिनानिज्यार्गतेनपिनिति। इन्तंबर मा निनीशह, नानम्बोनो हो। इन्हें।। इन्हें।।

र्मान्य मेर विव (विव विकास केर व सम्माप्त विकास के रह भोग सिंग है। अहमार तीन श्रीवास है ब्लील एक स्टब्सनी नीत के समें देशे हैं. मार्ट हे बहु सार्थ हों है कहा की हैं है है स कार प्रश्ने देवाई हिन्दित नाहर है है ने हैं है है है है ने हैं है ने ्यामको प्रतिकामस्तितंत्र विशेष प्रकारी है मीन पूर्व । है है है है है है

पंचितियोगनं मार्गुनन्तं आपतिए त्रेने सुंहरं। नोहुनमागम मुलेशा. महत्वात्रेम पत्रह्या ॥ ३८०॥

महिल्ले का समाप्रमां क्लेल्ट्रिका है देवती है के लिए हैं है है है है THE ONLY THE REPORT (THE) COUNTY AND A SECRETARY AND A SECRET

अहमिति विस्ति क्लिन केर्ट्स क्षेत्री, अस्ट स्ट्रिक्ट के उन्ने ते राज्य

新教育者 "新

大海军大型山 重新地 安装车额车 化镁 · 我們就事 歌歌歌笑音,情景中中一次人。

ईकं पि नैत्थि जे सुंडु, सुंचरियं जह ईमं वेळं मंज्झ। 'की नीम दृढेंकारी, मरेणंते मंदेपुत्रस्स ॥ ४६८ ॥

अर्थ-" एक पण तेवुं सुष्ठ (सारूं) सुचरित (सारूं आचरण) नथी, के जे सुचरित मारूं वळ (आधार रूप) यायः माटे मंद पुण्यवाळा एवा मारो मरणने अंते कोण आधार थशे ?" ४६८.

सुलविसअहिविसूईपाणीसत्थिग्गसंभमेहिं च । वहंतरसंकमणं, करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥ ४६९॥

अर्थ-" श्ल (क्विंसमां श्ल आववं ते), विष (ज्ञेरनो प्रयोग), अहि (सर्पतं विष), विस्चिका (अजीर्ण) पाणी (जलमां बृडवं), शल्ल (शल्लनो पहार) अप्रि (अप्रिमां वलवं), तथा संश्रम एटले भय स्नेहादिक वडे एकदम हृद्यनुं रुंघाइ जवं आटला प्रकारे करीने आ जीव एक सुहूर्त मात्र (क्षणवार)मां देहान्तरमां संक्रमण (वीजा देहमां प्रवेश) करे छे. एटले मृत्यु पामी परभवमां जाय छे. अर्थात् प्राणीओतं आयुष्य अति चपल छे. " ४६९.

र्कत्तो चिंता सुचैरियतवस्स गुर्णसृष्टियस्स साँहुस्स । सोगइगमपिडहत्यो, जी अच्छई नियमभिरयभरो ॥ ४७० ॥

अर्थ-" सद्गतिमां जवाने मितहस्त (दक्ष) एउछे समर्थ अने नियम (अभिन्यह) पटे भयों छे धमिकोश (धमेभंडार)नो भार पेणे एवा पे साधु रहे छै (होय छे), ते मुचिन तप एउछे क्षमा महित आचरण कर्यु छे तप पेणे एवा अने चारिमा- दिक गुगने थि। मुस्थित एउछे इह थयेळा साधुने नयांथी चिंता होय? एउछे तेपा मा हुने मणकांठ पण स्यांशी की कर होय? नज होय." ४७००

महिति अ फुर्ड विअडं, मौमाहमयउणपरिमया जीवा। नं य कम्ममागगन्यनणेणं ति अवियरित तहाँ ॥ ४७१ ॥

लचा ४६८-१६१। सङ्घादङहाता। दङ्कारा अववंत्र आचारा।

मावर ४५६-चित्त्वेतः। परिषतः। मर्त्वामा-द्यन्तान्नः। प्रदेनेषः।

तः १८ १५२- हुनाः सुर्वास्यः गुणलोद्देत्रम्नः । नार्यसः प्रस्थाः प्रगरः गुणरः। छन्नीनप्रमानिदन्तः

र वा कुन्नविषद्धः सद्यानाताः गुन्नवर्गमः।

चार्च व्यवस्थाः सर्वेन पर्वेदनी गुहामां रहेलार मागाएन मृद्यना प्रहोता है है है है है है है म्यानी असने वादेव आपे हैं, प्रेंड्नेस इन्स करने हत्या है हैं लें तंत्रकों) ने सामि (सी प्राप्ति हो है ने स्वाप्ते) है स्वीप्ति स्वयंत्र मा बर्ता, प्रदेव प्रमाण हात्रा-रोग मात्रे, वरोन प्रदेश देश है है। स शक्षण स्तामी तथा न शेष है जिसे हामध्य परी देखें हामध्य परी

बंग्यमुर्हाम चंदिराओं. मंनं दंतंगाः केंद्र।

मां मेहनं नि जेपड, चेरेड ने य ने जातिनांपर । ४०४॥ अभेना सत्तव पुरानी चेटेको मामाइल नामनी कार्य स्थान हो। जेन होता भारे को है है जीवना स्टब्स पहले होता है है है है है है है है कियाम केर प्रार्थ नहीं प्रार्थ केरे के किए के किए हैं कि किए केरे स्थाने नहीं, नेही है नाय पास के प्रति सामा के प्रति सामा के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति है इस्ती हते नापनी कियान संस्था ने कींग प्रतिकेत हैं से के के कर है के प्राप्त की है अपनेत प्राप्त निर्देश के प्राप्त की कि THE THE WARTER THE THE STATE

पेलिसिट्डा संपर्धापयां सिशिवडा पान्।।

H

HANDER LANDER COMMISSION 東京 東京市 (東京で発音) (日本書の日本では、またから、東京の本語) 東京 東京市 (東京で発音) (日本書の日本語)、1000年 日本日本語(東京の本語)

新生育 複数構造 在時 有引持 おうかん 一般の一本 新文明 あん 中 · で · かまき は 期最大学 法 《戏》

देश से अबं अवं विशेषका व नाम विशेष

अर्थ-" जे नट होय छे ते वैराग्यनी एनी वातो कहे छे के जैथी नणा लोको निर्वेद (वैराग्य) पामे छे. तेवी रीते मूर्खं माणस स्त्रार्थ भणीने पण (नोलीने-ज्य-देश आपीने पण) पछीथी ते प्रमाणे वर्तता नथी, परंतु माछलां पकडवा माटे जाल छइने जलमां उत्तरे छे. (उत्तर्या जेवुं करे छे.) अर्थात् मूर्खं माणस स्त्रना अध्ययन (अभ्यास)ने विपरीत आचरण करवाथी व्यर्थ करे छे. "४७४.

केह केह कैरेमि कई मांकरेमि, कैह कह कियं बेंहुकयं में । 'जो हियेयसंपसारं, केरेइ सो' अंइ केरेइ हियं ।। ४७५॥

अर्थ-" हुं केवी केवी रीते धर्मानुष्टान करुं ? केवी रीते न करुं ? अने के केवी रीते करेछुं ते धर्मानुष्टान मने वहु करेछुं एटछे घणुं गुणकारी थाय ? आवी री जे पुरुष इदयमां संमसार (आछोचना-विचार) करे छे ते पुरुष अत्यंत आत्मिह करें छे (करी शके छे)." ४७५.

सिंढिलो अणौयरकओं, अवस्सवसकओं तहा कैयावकओ । सर्यंयं पमत्तसीलस्स, संजमो केरिसों होर्जी ॥ ४७६॥

अर्थ-" शिथिल, अनादर वहे (आदर रहित) करेलो, अवशपणायी एटले गुरुर्न परतंत्रताथी करेलो अने कांइक पोतानी स्वतंत्रताथी करेलो, तथा कृतापकृत एटले कांइक (संपूर्ण) करेलो अने कांइक विपरीत करेलो एटले विराधेलो एवो निरंतर पमत्तशील (ममादना आचरणना स्वभाववाळा)नो संयम एटले पमाडीए ग्रहण करेलो तेवा प्रका-रनो संयम केवो होय? अर्थात् सर्वथा तेनो ते संयम (चारित्र) कहेवायज नहीं." ४७६

चंदु वेव कैालपरुखे, परिहाइ पैए पए पमायपरी। तह उग्वरविग्वरिनरंगणो य णी य 'इंच्छियं लहेंइ॥ ४७७॥

् अर्थ-" कृष्ण पक्षमां चंद्रनी जेम एटले जेम कृष्ण पक्षमां चंद्र हिवसे दिवसे हीन याय छे, तेम ममादवान पुरुप पगले पगले हानि पामे ले. जोके ते गृहनो (गृहस्थप-णाना गृहनो) त्याग करीने घरना आश्रयरहित थया छतां अने स्नीरहित थया छतां पण इच्छित एटले स्वर्गादिक वांछित फळने पामतो नथी." ४७७.

गाथा ४७५-कहवा करेमि । हियइ सपसारो । गाया ४७६-अणायारकओ । कहाविकओ । क्यावकओ=ऋतापऋत: । हुज्जा ।

गाथा ४७७-कालपङ्वे=हुण्णपदे । विद्यवर । ण य । उद्गृहविगृहनिरंगनः= ऊन्धितं गृहं येन, गृहाद्विरिहतो विगृहः, निर्मता अंगना यस्य, स्रो रहित इत्यर्थः।

भीओविया निर्देशे. पारदान्द्रत्योमसदराभे ।

अपनयं नणंनी, नगम भी नतेयं निष्ट ॥ १४०॥

सदेला वृष् वार्षेणी विश्ववृष्ण हर हे रागण वे वृष्णी "नव वृष्णीय विष् क्षित्रमने समाहि महिन , सि देश ने स्थान होने के लेक प्रति कर निर्माण माम्बर्धाको होत्तरं रमना से नया पानसीतः सीराधान । एवं राज्याको तो संपूर्ण में व केर्रोडिक के नवीन नियं नीति है जिस्से हिल्ला है । ४०००

न नेटि दिशमा प्रस्थाः मान् तीमा वि नेगानिकाले ।

ने मल्डनागुणा, अर्गाल्या है मिल्लांन म 💸 म

क्षिक्ष राज्यक्षि नहीं अर्थित वर्षे क्षित्र अर्थित अर्थित अर्था है है है केल्ब्राम है. १९ के दिन क्यों किया किया है. · 阿里尔克·阿里克 医皮肤 医皮肤 医皮肤炎 经收款 有可谓一个人,是不是一个人,是不是一个人的人们的人们 मोर है, स्थान कर में की पा देन देखनी है, नहीं देखने के के की की है। क्रांस करते हैं." ४००,

विनिधित कि निष्य के अंग मीजवर्ग जा। भगम् असर्वित्वीः हर्वस्य स्तिवित्व 被接一种 海色 在 不得 医不足 医乳管 化 集成 一下一大 不幸 经不产品的 基本品 THE NEW AND THE FOR A STATE WAS A PROMISE A SEA OF THE SERVICE AND A STATE OF THE SERVICE AND A SER 松水野 京衛 者と記 可食 在京春 前型がから なままれかられる なまからまか かっぱ 年春 专业专家的 经 沙球等 医生物 经有效

The second of th

करवो नहीं एप तुल्रना करी, आ प्रपाणे आर्थमहागिरि विगेरेना दृष्टांते करीने व प्रकारे बताव्युं, तथा घणे प्रकारे समिति, कपायादिकना फलभूत दृष्टांतो देखाडवा व नियंत्रणा देखाडी, तोपण आ जीव जो प्रतिवोध न पामे तो शुं करीए? खरेखर जीवनी चिरकाल भवश्रमण रूप भवितव्यताज छे; नहीं तो ते केम प्रतिवोध न पामे माटे जरुर तेनी एबीज भवितव्यता छे एम जाणवुं. ११ ४८१.

किंमगं तु पुणो जेण, संजमसेढी सिढिळीकया होई।

सी ^{''}तं चिअ पिड वेज्जइ, दुेख्स पेन्छा हु उंज्जमई॥ ४८२॥

अर्थ-" वळी हे शिष्य ! जे पुरुषे संयमश्रेणी (ज्ञानादिक गुणश्रेणी) शिथिल कर रेली छे ते पुरुषे करीने शुं? (ते पुरुष शा कामनो? कांइज नहीं). केमके ते पुरुष निश्चे ते (शिथिलपणा)नेज पामे छे, अने पछी (शिथिल थया पछी) दुःखे करीने उद्यम करी शके छे. एटले शिथिल थया पछी उद्यम करवा अशक्य छे. माटे प्रथम थीज शिथिल थयुं नहीं, ए अहीं तात्पर्य छे. १४८२.

जैइ सेव्वं उैवलद्धं, जइ अपा भाविओ उवसमेणं। कायं वायं चै भैणं, उपहेण जैह ने देई। ॥ ४८३॥

अर्थ-" वळी हे भव्य पाणी ! जो तें पूर्वीक्त सर्व सामग्री प्राप्त करी होय, अने जो उपशमवडे आत्मा भावित (वासित) कर्यों होय, तो तुं काययोग वचनयोग अने मनयोगने जे प्रमाणे उन्मार्गे न जाय तेम कर-तेवी रीते प्रवर्ताव." ४८३

हैत्थे पौए निंख्खब्वे, कांयं चांलिज्जं 'तं पिं कंज्जेण । कुंम्मो वेंवं सेंया 'अंगे, अंगोवंगाइं गोविज्जीं ॥ ४८४ ॥

अर्थ-" हाय तथा पगने संकोचवा एटले कार्य विना हलाववा नहीं, अने जे कायाने एटले काययोगने चलाववो ते पण कार्य करीने एटले कार्य होय तोज चलाववो, कार्य विना चलाववो नहीं; अने काचवानी जेम निरंतर अंगोने विषे भुज, नेत्र विगेरे अंगोपांगने ग्रप्त राखवां एटले तेने पण कार्य विना चलाववां नहीं." ४८४.

अहीं कृर्म (काचवा)नुं दृष्टांत जाणवुं.

क्रमनी कथा.

वाराणसी नामनी महापुरीयां गंगानदीनी पासे एक .सद्गंगा नामनी मोटो द्रह छे. तेनी समीपे मान्छ्या कच्छ नामे एक मोट्टं गहन वन छे. ते वनमां वे दृष्ट शी-

गाथा ४८२-दोर् । चिय । सन्तमर् । गाया ४८३-भाविउ । उवसमेण । उप्प-डिअं तर न देर । देही=प्रवर्त्तय । गाया ४८४ -कल्पिव । च।लिन्त । कम्म व सप अगंमि ।

क्ष रहेना हुआ. ने महा अवंद अने क्षेत्र । जुन - दहे परन र हुआ, हहाई है क्षि है हुई (शास स) प्राप्त की हरूपा, देखते हैं के दूर रोपल व अले हैं है है हेर सह नेपने पारण होटया. दे याने की लाउँ में नार्वे के उन्हें हैं अ भीते मंद्दोतीने रहा, पार्व विषयित आदेने हैं। इने, महारों, नेपहार, **म**् अस्ता मुद्दार की का समा देखने महरदा बार्ट प्राप्ति हर के हरा दक्ष १ के प्राप्ति **म्ह** केसने एके नेम स्थार संस्थानहीं, देश के नेशन संस्था एउट हो के ना इसके पार्कीने नजीरमा नागमी मेनाह रहा, केले को रह राष्ट्र १००० गहर रोज तेवानी नेवी पहार शास्त्री, हे देखा धरी कामान्य जेले, हे से बारह र को ही बाई पत नमा जीन दिनों कर बेटी दशह कार्या, वर्ग करता है। मह महीने हे भीवालेए कि वी हालां पड़ते प्रशास ना संबंध पात ले म्मी समीने सार गया हैने मार्थ नहिल्लों नारीय वेला होता वावर र प्राप्त क्षां, केश्य नेते बांह हारी प्रश्नि महीं, प्रचंत्र, रे. इंग्ल हे जाहा, हार दूर का प्रा त्या पर्यो ने बाध हो नेवल प्रणा है यहा आलीन प्रथम नाम्य शिक्ष है। सर्वे क्षेत्रका आहा मान्याः एका विस्ते प्राप्ते हैं के प्राप्त का निवास के प्राप्त के कि प्राप्त के कि प्राप्त का बाली बहार कारी का है। यह है कारी है की पहेंची है की पहेंची है की उसी है की म रेतला इहेले हवी हुनी परी-

मा रहार प्राप्त कीता एक है साह के रेटरे पह एक एक है राज है राज मा बेन्द्रे इसमेर्ट संस्था नाम के कर कर है साम है से साम है

文章 TE MET ndraftin 12

विक्रिकं विवेधनानं, भीत्रामं भारतीनं ।

ते तम अधिसम्बद्धानी र भीते व अधिस्थान ५०० ।

·養養 數學者以 養養者, 性情報 在下間 看了下午 一面, 在上 中面 为现代下午,有一年,在上午 有了有了 MARKET AND MARKET TO STATE AND THE STATE OF

अणविष्टयं मैणो जैस्म, झायइ वंहुयाई अंटुमट्टाई ।

तिं चिंतिअं चें ने लेहइ, संचिणइं पोवकम्माइं ॥ ४८६॥

अर्थ-" जेनुं अनवस्थित (अति चपळ) गन घणा दुए विचारोने (आडां त्रे-ढांने-आळजाळने) हृद्यमां चितवे छे. ते चितित (मनोवांछित)ने पामतो नथी, पण उल्टां दूरेक समये पापकर्माने एकडां करे छे-हित प्रमाडे छे, माटे मनने स्थिर करीने सर्व अर्थने साधनार एवा संयमने निषे यनना करवी-उग्रम करवी. ४८६.

जैह जैह मर्व्ववलद्भं, जह जह सिचरं तैवीवणे बुंच्छं। तिह तिह कम्मभरगुरु, संजमिनव्वाहिरो जाओ ॥ ४८७॥

अर्थ-" कर्मना भर (समूह) थी गुरु (व्याप्त) थयेला पुरुषे (भारेकर्मी जीवे) जेम जेम सर्व सिद्धान्तनुं ग्रहस्य उपलब्ब (पाप्त) कर्युं, अने जेम जेम चिरकाळ सुधी तपोधन (तप रूपी धनवाळा) साधुओने विषे (साधुममुदायने विषे) निवास कर्यो, तेम तेम ते (गुरुकर्मी) चारित्र थकी वाद्य करायो-भ्रष्ट थयो. '' ४८७.

ते उपर दृष्टान्त कहे छे.—

विज्जपो जैह जह ओसंहाइं पिज्जेइ वांयहरणाइं। र्तह तंह से ैं अंहिययरं, बीएणा ओरिअं ैं पुट्टं ॥ ४८८ ॥

अर्थ- भाप्त (हितकारी) वैद्य जैम जैम वायुने हरण (नाग्न) करनारां मुंड, मरी विगेरे औपघो पाय छे,तेम तेम ते (असाध्य रोगवाळा) नुं उदर (पेट) वायुए करीने अधिकतर पूर्ण (भरायेछं) थाय छे ते दृष्टान्त नमाणे श्रीजिनेश्वर रुपी वैद्य पण ज्ञाना-वरणादिक कर्म रूपी वायुने शांत करनार सिद्धांतरूपी वर्णु औषव पाय छे, तो पण (बहुकर्मी जीवोनो) असाव्य एवा कर्म रूपी वायु उछटो दृद्धि पामे छे." ४८८

देहजउमकैज्जकरं, भिन्नं संखं नं होई पुणंकरणं ॥

ैंछोहं र्च तंवविद्धं, ने ऐंड्र परिकेम्मणं किंचि ॥ ४८९॥

अर्थ-" वळेली जतु (लाख) अकार्यकर छे-कांड पण कामनी नथी. भांगी (फ्टी) गयेला शंखनुंफरी सांधवं धतुं नयी (फरी संधातो नयी). तथा तांवावढे विधाये इं मळेलुं-एकरूप थयेलुं लोहुं कांट पण (जरा पण) परिक्रमण (सांधवा) ना उपायने पा-ळतुं नथी. तेवीन रीते असाध्य कर्षथी जींटायेळी नारेकर्मी जीव वर्मने विषे सांधी-जोडी बकातो नथी." ४८%.

गाथा ४८६-संचिणय । गाया ४८७-मुचिरो । वृच्छउति उपितं । भारगुरू । संय-मान्निगंसत । निव्यादिग्य जाओ ।

गाया ४८८-बाइहरणायं। ऊरिय पोर्टु। गाया ४८९-होइ।

की बांदी अपने, चंत्रास्त्यान विवादार्गः

रंस दोरोगो. न कहाला आवणानम ॥ १०० ॥

अभीना साहित्रके हिंदे अहा है अही हुई। र १९०० वर्ष १००० वर्ष है THE RESIDENCE SETTING THE SETTING THE SETTING SETTING भिक्षा स्थाप स् स्विक्षेत्रीक्षण स्थलको आरम्भ देश होते । अति १

दी विव जिलानेकि जार अगमधा राम् हिं।

विमित्र का निया स्थान स्थानो वाच । स्थान

期間標子 軍養機 保 放客 集 有联节 美代子文献 一年 有一下 美工作者 文明 不证明 水性 कार्य की से संबद्ध नार्ष के प्रति कर हैं।

भोग्नामुंगांत्रासा ४ केले व जिल्ला

मानगा व देशे. देशिक के किल प्रति हैं 李祖建立,董事等等人不管理人的 【獨本章 一一一

THE REPORT OF THE PARTY OF THE

新なる 東京というできない。 まま m であって

यती नथी, तथा तेने परलोक पण (परभवमां देवपणुं के मनुष्यपणुं) माप्त यतो नथी." ४९३ द्रव्यपूजा अने भावपूजामां भावपूजा श्रेष्ठ छे ते वतावे छे.

कंचणमणिसोवाणं, थंभैसहस्सूसिअं सुवन्नतळं।

जी कारिज्ज जिंगहरं, तंओ विं तवसंजमी अहिओ ॥ ४९४ ॥

अर्थ-" कांचन (सुवर्ण) अने चंद्रकांतादिक मणिओना सोपान (पगथीयां)-वाछं, हजारो स्तंभोए करीने उच्छित एटछे विस्तारवाछं अने सुवर्णनी भूमि (तळ) वाछं जिनगृह (जिनमंदिर) जे कोइ पुरुष करावे, तिना करतां पण एटले तेवुं जिन मंदिर कराववा कर्तां पण तप अने संयमनुं पाळन (करवं ए) अधिक छे, अर्थाद भावपूजा अधिक छे. " ४९४.

निव्वीए दुविभख्खे, स्त्रा दीवंतराओ अत्राओ। आणिऊणं ँवीअं, इंह दिन्नं ै कांसवजणस्स ॥ ४९५ ॥

अर्थ-" आ लोकमां निर्वीन एटले वीज पण न मळी शके एवा दुकाळसमयमां राजाए लोकोने माटे वीजा द्वीपमांथी वीज अगावीने (मंगावीने) ते (वीज) कर्षक छोकने एटछे खेडुगोने आप्युं. " ४९५.

के हिंचि सैव्वं खंइयं, पईंत्रमंत्रेहिं संव्वर्मद्धं चें। वुत्तंगयं चं केई, खित्ते विंदुंति संतत्था ॥ ४९६ ॥

अथे-''ते राजाए आपेळा बीजने केटलाएक वधुं खाइ गया, बीजा केटलाए राउनोए ते सर्व बीजने वाबीने उगाउयुं, केटलाएके अर्धु खाधुं ने अर्धु बाब्युं, त फेटबार सेप्रतो वाबोने पछी ज्यारे ते उग्धुं के तरतज एटछे पूरं पाकवा दीवा प छांत त्रास पामीने एउछे पाछळथी राजसेवको आ घान्य छई नदो एवा भयथी धान्य पोताने चेर लंड जवा माटे क्षेत्रमां क्ट्या लाग्या. क्टीने दाणा काढ्या लाग्या. तेन पर राजमे रहीए एन्हेगार गणी पकडेचा अने वर्णु दुःख आप्युं ४९६. इ.स. स. स. गायामां कहेळा दशस्तनी उपनय बतावे छे -

गंगा जिंगवानंदो, निन्वीयं धमाविरहिओ कालो। भिनाई कंम भूमी, कामंगवरगो य चत्तीरि॥ ४९७॥

र २ ४९४-चननदर्मासये-स्त्रप्रसद्ध्वीच्छित्छ ।

[ा]र्यः १९६६ को र । हालगत्तणस्त-द्वये हत्तनस्य । राज्यः १९६२ होत्रः हेर् । प्यत्रः । पद्रन्त-उत्तम् । युत्तगत् उत्तम्भयः । युत्तगते हते

च तर्हर । च १५६१न स्ट्रॉन । स्वीनत्यानसन्था । १, व व्यक्तिसम्बद्धाः । विद्यानाः धानवयम्बाः।

ं से में विनास्त्रेंड (वीर्धेन्स्स्ति सहा अध्यतः प्रदेशीत क्षाप्ते दिसीय-सर्वेद के क्षेत्रक केंग्र र महिल्लों समय । यहारे, देश प्रेक्स में हैं मां, गा अंक (मेरन) को ना प्रमानी अंकी. उत्तर, कर, केप्यांत के कुर्बाल व स्था थार प्रधाना औं होने होता है। ताल है है

अभेनागृहि संबं, पंदर्भ अंधं न देनां समित

मार्हिं घम्मवीओं. उत्ते 'नीओं ने निर्देशि ॥ ४६८॥

को में में प्रस्थित सामार्थ में त्या होता होई होता बहेरीन के के लाए भू के मुक्त का सम्बंद कि विश्व के स्वर्ध के कि हैं के हुन है के म्मू भूते कि विक्ती (क्वांते) कार्य द्वीर कार्य है र त्या की कि

ते ने मन्ने लेखि. पन्ना नेति इत्योगिया।

त्रेमंजमपरिनंता, इंह ने और स्थिनीलना व 😂 🖟

मो राज्या देखी सामाधिक हैं, है ने साहित्यों हैं से से साम है हैं केल केला में हिंदी हैं कि के त्या तेने में को करीने किया है जिस है जिस है है जिस है। म्म क्रमंत्र (क्रमंत्र)मा भारती प्रति हो प्रति हो जिल्ला हो । चित्रांत्रामा मा पार्श्वा ते प्यांत्री स्वेद्यानी के उन स्वाह स्वाह उठ प्राप्त

अंने मनोनियाये. मेंबई स्टिटे से कर है

आनं व अंडोरने, संबंड अवस्त्रुकंग्य । १०० ॥

聽情如今後隔離清禮 集中時期 有所其实有意义的美術 多水子 地名美国达伊尔比亚 聖時 衛衛 其英語。 大樓 "你是我像一个孩子,你不是我们是我们的人们是我们的人们的人们的人们

में ते तोन पानि क्रियान का पान है

मुंता ने निन्ती, गुनामने हे अपन व अपन

manage 主要等 "那本家,在"是"有"我是"在"是一位"的产品作品。

अर्थ- दे भेन्य जीव! जो कदाच तुं सिमिति विगेरे उत्तर गुणना भार (समूह) सिहत मूलगुणना भारने (पंचमहात्राना भारने) घारण करवा (वहन करवा) शक्ति मान न हो तो तारे जन्मभूमि, विहारभूमि अने दीक्षाभूमि ए त्रण भूमिनो त्याग क-रीने सुश्रावकपणुं अंगीकार करवुं ते अति श्रेष्ठ छे; अर्थात् तुं अति श्रेष्ठ एवा सुश्राव-कपणाने अंगीकार कर. " ५०१

अंरिहंतचेइआणं, सुंसाहू पूँयारओ देंढायारो । सुर्सावगो वरंतरं, न सांहुवेसेण चुंअघम्मो ॥ ५०२ ॥

अर्थ-" वळी हे भव्य प्राणी! जो तुं साधुपणुं धारण करवा असमर्थ हो, तो अरिहंतना चैत्य (विंव)नी पूजामां तत्तर अने मुसाधु एटले उत्तम साधुओनी सत्कार सन्मानादिरूप पूजामां आसक्त अने दढाचारवाळो (अणुव्रत पाळवामां कुशळ) एतो सुश्रावक था ते घणुं श्रेष्ठ छे, एटले तेवुं श्रावकपणुं धारण करवुं ते वहु सारुं छे. परंतु साधुवेषे करीने-साधुवेप धारण करीने धर्मथो च्युत- श्रष्ट थवुं ए श्रेष्ठ नयी. केमके आचारश्रप्ट थइने मात्र वेप धारण करवाथी कांइ पण फळ नथी." ५०२.

सैंवं ति भौणिऊणं, विरंई खेंछ जेंस्स सैव्विया नीत्थ । सो सैंवविरइवाई, चुेंकइ देसंं चे सैव्वं च ॥ ५०३ ॥

अर्थ-" सर्व एटले 'सन्वं सावज्जं जोगं पचल्कामि ' हु सर्व सावच योगतुं प्रत्याख्यान (निषेध) कर्रुं एम प्रतिज्ञा करवावडे सर्व सायच योगतुं प्रत्याख्यान करीने पण जेने निश्चे सव (संपूर्ण) पद्कायना पालन रूप विरित्त नथी ते सर्व विरित्तिने कहेनारो (हु सर्विविरित्ति छुं एम प्रलाप करनारो) देशविरितिने (श्रावक धर्मने) अने सर्विविरितिने (साधुधर्मने) वंनेने चूके छे- हारे छे, अर्थात वन्नेथी श्रष्ट थाय छे."५०३.

जी जहवायं ने कुँणइ, मिच्छदिष्ठी तंओ हु की अंत्रो। चुहेईअ मिच्छेत्तं, परस्स 'संकं जणेमीणो॥ ५०४॥

अर्थ-" जे पुरुप यथावाद एटले जेवुं वचन बोले तेवुं कियानुष्टानादिक करतो नथी ते पुरुपथी बीजो कयो पुरुप मिथ्यादृष्टि जाणवो ? एनेज मिथ्यादृष्टि जाणवो तेनाथी बीजो कोइ विशेष मिथ्यादृष्टि नथी केमके ते पुरुप बीजा लोकोने रांका उत्पन्न करावतो सतो मिथ्यात्वने दृष्टि पमाडे है." ५०४.

गाया ५०२ चेईआणं । पुआरओ । सस्तायमा । स्युत्धर्मः । गाया ५०३-माणिउणं । बिर्द्ध । ।व्यिया=सर्विमा-सर्वो । विरद्दवाही । माबा ५०४-वट्टेई मिच्स । जणेमाणे ।

आगोप निंग बेलो. चेलो जोत हिन बेगो है । भ्रोपं ने अदंहती. हम्मेएसा इ.ए. नेपं त ५०% ॥

भवे में सिन्न दिनेपार्थी जाताप हरानेत शर्मित है, ब्रांके सम्पन्नी प्रति क्षी है अपनेतु विकासको क्षा दशहार को स्वेश को राज्य है को प्राप्त है एवं है किया है है आया अने विनादात हाउन राजा कृष जिल्लाका है वार्त करेंग (बाबा)की का केंद्र की दिनायाने प्रणांत हैं पार्थ के उसे प्रणांत कर हैंदर का बा माहार्या का हे हैं अहं अहं है है है के वह है है है है है है है है का नहीं है भार विदेशनान है-सिंग्ड है " रहा

मेंनामें अ अनंती, नश्चीन्तन किराहित्तन । पंतरमाखेंगे, पांताने मंहत्वे देखा। १९६३

12 2

ने होंगी कि स्तित्व ने देश किया कि प्राप्त प्रसिद्धार्थः, महित्यत्यस्य १ १ ० ३ त

横嘴 · 清 震呼· 孝 写新是字写诗 · 正清 不 子子 不正言之之 四字之 歌者 大き 連 、 一般ない ない あり ま ないない ないで でっしい は、まい しょくこう くち まず は 我们的我们 海海 安全 禁止 人名 "一" "一" "一"

大海 女生 神经 建聚基本主义 看上 人工 人名人格尔兰 甘 中 分下的

लीए वि^र जी संसुगी, अंलिअं सहसा न भांसए किंचि। अह दिनिषेओ वि^{रर}अंलियं, भांसइ 'तो 'किंचि दिर्वेखाए॥

अर्थ-" लोकने विषे पण जे सस्तक (पापनीक-पापयी भय पामतो) माणस होय छे ते सहसा (विचार कर्या थिना) कांइ पण असत्य वोलतो नथी; त्यारे जो दीक्षित यईने (दींक्षा लइने) पण ते असत्य वोले, तो दीक्षाए करीने शुं? अर्थात् दीक्षा लेगां शुं फल ? कांइज नहीं '' ५०८.

महेजाअ गुव्वयाइं, छं डेउं ' जे। तेवं चर्छ अझं । सी अन्नाणी मुढा, नावा चुंडो मुणेयव्वो ॥ ५०९॥

अर्थ-" जे पुरुप महात्रतोने अथा। अणुत्रतोने तजीने वीजं तप करे छे, प्टले महात्रत अने अणुत्रत शिवाय वीजां तप करे छे ते अज्ञानीं अने मूर्ख माणस (अज्ञान कप्ट करनार माणस) नाववडे करीने पण एटले हायमां नावा आव्या छतां पण युडेलो जाणवो. जेम कोइ समुद्रमां रहेलो मूर्ख माणस हाथमां आवेली नावने तजीने ते नावना लोढाना खीलाए करीने समुद्र तर्माने इच्छे ते भी रीतनो तेने जाणवो."६०९.

सुबेहुं पासैत्यजणं, नांउणं जी नं होई मज्झेंत्थो । नं य साहेइ सर्कज्जं, कींगं चे केरेइ अपीणं ॥ ५१०॥

अर्थ-'' वह पकारे पासःथानुं चरूप जाणीने पण (पार्श्वत्थ जन संबंधी श्रिथि-छ तने नाणीने पण) जे मध्यत्थ होतो नथी ते पोतानुं मोक्षरूप कार्य साधी अकती नथी, नने पोवाना भात्माने कामडा तुल्य करे छै.'' ५१०.

पिनिंतिंजण निंउणं, जई निंयमभरो नं तीरंए वीदुं। परिनगरेजणेणं, ने वेमिमित्तेण सिंहीरो ॥ ५११ ॥

नवे " निष्मतावी (मुद्दम बृद्धिवी विचार करीने जो निवमनो भार (भूल चने उत्तर एनमे मध्द) प्रश्न हरना (धारण करवा) शक्तिमान न वसाय, तो द्वी रीजाना विचने रेजन (तीति) करनार एवा वेयमांत्र करीने (मार्जाण गारण

माका १२८ मान्ता । जीवज । जीव दिक्षिययजा वि । किया।
भाषा १२९ ३६३ त्यक्ता । ३६४ । जन्नाणी । ५६१ जूदिनाः ।
स्वा ६९७६ (५६)६५ ।
स्वा ६९७५ ।

को सम्बन्धि । यस्त्री दुर्वरिक्षी स्टब्स्यायानी है । देव र पातार महत्वती स्वर्तः काले साथ वेदारास्था सम्बन्धि वर्ति होति हो स्थल उर्द न्हेंग्री स्थल

निकानगरम बोतानुकाल मार्डबनेका है। पेरहारम डे बरने, ह्योंन नेपता बेरावे ॥ ११२ ॥

सुन्धः वह मुक्तां, मुंदर सुनावते हैं। एटर दिते । भौनंत्रकारको, मुंदर में रमार वर्ष । ७८३ ॥

निर्मे के साथ नारिकारों होंदे ते से हैं। यह जान के द्रिकार के दे के स्थान के स्थान

सीद्रशाहीर स्थानं, को स्थानंतं समस्य हेरे करिया व्हीस्थानस्य संस्था हर्षेत्रं सम्बे विस्थानंति स्थानंति

मुक्तानुष्यके, वर्षेत्र के स्वयं क्षित्र के अन्य का अन्य का विकास के अन्य के स्वयं का का विकास के अन्य का विकास

我就要"原本书"就是一样,就由于一个人,都是我们"公子"(1777) 在这种,如何也不知识,我们们就是我们们,我们就就是一个人,你说,你可以说什么。 我们们,我们就是我们们就是我们的,我们

ले- 'मारण योगों (पार मंदिर केतो भा क्षेत्र पत्री तमके साहद का **बा**) श्रीपामी मार्शियम के हैं कि को मार्थ के कि मार्थ के इस मार्थ के हैं के बीओ मीन्यातको माने हैं, प्राप्ते हैं, इस्ते हैं, इस्ते हैं, " क्ष

मेना मिन्छरिष्ठी. 'गिहिनियर्गन्याद्या शिक्षि।

तंह दिनित्र में मुहेन्यत. नेनेएए। दत दिनि ॥ १५०॥ मर्थ- भेष एके सा रोज का वर्त विका वर्तक होतिक १ होत के राज्य करनार है, कृष्टिन पृथ्वे केया वस्ता विके कृष्टिन वागर व्यक्त अध्यक्ति पूर्णे द्वर्थी य शिपने प्रस्त सम्बद्धन्य जीने किन्द्र होई नणहाँ, क्रम गायामां का मौसमाने हुआ हैन व पृथिति गाइन के उत्तर कर्

भार इसमें के पने समापना देते हैं। १९४० -मंत्रारनागर्रमणं, प्रस्मानिति मान्तं वेरि ।

गिरियाणि यं मुकाणि यं, अर्गनती दर्जा जादं ते प्रश्ना

संबंद्धा आ (चीरक एस) जनारि चत्रेष संस्थानसम्बंद प्रेरक्टन वर्ष म कोर्सेड् असंबीशस्त द्रव्यानियारेते प्रस्य कार्ते हे. जी ह एहण अर्थन हुनेहर टी हो क्षेत्रक केली होड पन अधीर्योज पह लगी. १९७० है.

अवंत्रानी जी पुन.न सुगढ़ रहेंगी हैं। उर्होड़केंसे । मीमानियामं, अस्ति अस्मिति नेति है। १५००

The state of the s सामा कारत सामी है की मान पत्र है. " ५०००

ध्वामीस्मदानओगमेनअम्ध्रतं स् मनोषंग नगरापः हेन्द्र त स्वर्गाय हिन्द्र त स्वर्गाय

李·柳花 《宋末·李·陈宋·张宗宪》) " 1945年 1965年 1978年 1978年 1988年 1

柳柳 化多氧化硫酸氢铁过硫 槭 青 电流 医水类 化甘草子芹菜甘草子花芹草 下水水类 多 多 当场 全市 學學 大名字中的 李麗子不得 不明 前一十二次自己的 多年下午 **●小班子城市 ,郑小莉正常**高 (旅程は 名)

अर्थ-" कांतर (मोंडुं अरण्य एटले अटवीमां आवी चडवुं), रोघ (राजानी लडाइ विगेरे पसंगे दुर्गमां रुंपावुं), मद्धाण (विषममार्ग चालवुं) ओम (दुष्काळ) अने गेलच (ग्लानता-रोगोपणुं) इत्यादिक कार्यने (पसंगोने) विषे पण एटले एवा कारण प्राप्त थया छतां पण सर्व आदर (शक्ति) वडें करीने यतना पूर्वक साधुने जे करवा लायक कार्य छे तेज सुसाधु करे छे; अर्थात् प्रवळ कारण प्राप्त थया छतां पण साधुए पोतानी सर्व शक्तिथी पोतानुं जे कर्तव्य छे ते यतना पूर्वक अवश्य कर्त्युं, " ५२३.

आयैरतरसंमाणं, सुदुंकरं माणसंकडे लीए।

संविरंगपिरुखपत्तं, अभिन्नेणं फुंडं काउं ॥ ५२४ ॥

अर्थ-" अहंकारे करोने सांकडा एटले अभिमानथी भरेला एवा आ लोक (संसार) ने दिने अत्यंत आदरे करीने (संविग्न पणा ए कराने) मुसायुओनुं सन्मान करवुं ए अति दुष्कर छे, तेमज अवसन एटले शिथिल आचारवाळाने स्फुट-पगटपणे संविग्ननुं पक्षपाती पणुं क वुं एटले संविश पक्षना अनुरागी थवुं ए दुष्कर छे. " ५२४.

सारणचइआ जे गच्छंनिग्गया पविहरंति पासंत्था।

जिंणवयणवाहिरा वि य, ते अ पर्माणं न केंग्यव्या ॥ ५२५॥

अर्थ-" सारणा के॰ स्मारणा-भूली गयेलानुं स्मरण आपनुं एटले आ काम आपी रिने करनुं एनी नारंबार शिक्षा आपनाथी उद्देग पामेला अने तथी करीने गन्छ वहार नीक्ष्णी गणेला (स्नेन्छाए नर्नवा माटे गन्छ वहार थोला) एवा जे पासत्याओं सोन्छाए निराग हरे छे तेआ जिनाचनयी नाम छे, अर्थात् प्रथम शृह चारित्रनुं पालन हरीने पछी अमारी यरेला छे तेओने प्रमाण रूप गणना नहीं, एटले साधुपणामां गनना नहीं, '' ५२५.

दीभान्म निगुद्धपब्नगम्म, मंत्रिमपण्सवायसम् ।

र्जा जो द्वितंत्र जगणा, मी मी "से निज्जिंस "होइ ॥ ५२६॥

अर्थ-" विवृद्ध नृत्यमा हम्लाम, जने मंत्रियनो पतापात है जैने प्राा हीन्ती (उत्तरमृत्यने होंक विवृद्ध न्य व्यवस्थित) ने ने पताना (वह दोपपाकी व तृतु वर्ष अने जन्म होको कानु वर्ष हम्मू ते ज्यायाना) होया है, ते ते पताना तेने विवृद्ध कर स्वने वया हम्मामी । वाया है, 'प्रवृद्ध कर स्वने व्यवस्था हम्मामी । वाया हम्मामी । व

er at kennest de li 18 miliant i

⁻ र - र - र अरेग रहे से १ लार गयाहमा । सोहरा । ते अपनाम ।

क प्रधा र कर व इंग्लिक वी है है।

मुगद्रपत्तिके, के नाम केर ग्रेटिके होते । पेसेच य गीयाची, भावे रहे समार्थेख ॥ ४३० ॥

अर्थिमां सुप्तकारिके अर्थके प्रार्थ कालाकी प्रकार १ का विदेश जाएका वर्णक 🕊 महीते दावने द्रव्य एक बीको स्वर्धे द्रारपा द्रारा की आह व वृद्ध य नेवर्शय ही दिनिक लेखा । केखार । बरे केंद्र पार्टिक कोई नी लाई वृद्धि देखा पाद्धला बालकी अदेव केंग्राहित लेखन अध्यार । सहदेश क्षेत्रे हैं। क्षांत्र अपने रोक्ट द्वा करे रहे वाक मंद्रे बादे दश्या द्वेश रहे हैं, " 'तर ह

आमुक्रनोमिनो चित्रः तस वैत्य विजंस हिन्द्रा ।

ेसीमपन्यवदा, की दिशे सार्मवस्य १ ५५० ।

संबंधना सिक्षे प्रेंग्यादेवी सर्वे प्रवाह पुरुष है के त्यार प्राप्त हरा, एक जिले देश है बाहाबर इंडाबर प्रार्थ क्या का बोहदार होते. ने संबोहद ४०४ व्या र सहस्त मार्विकालीको मार हुन हे के अन्तर ए जी रहे था। भी जन रोह अन्य के अन्तर है। का राव

हिं बुननाम अनेन, हिं ने रोनाम रेगाना-स्थ मोहरूसपेनिकार, हिंदिसमान्य । १०३३

अर्थुन क्षा सुरक्षेत्र । अर्थके हि पुरस्ति हर्षा दे हरू न वह देशन है बहान है बहा पर है हुइड पर्रोहे अब हा द रो देखा गहु चुका दे गाउर ५ ५०% प्राप्त गहुर, प्रवास कर क कर्मित्रे राज्ञानी के बरकाम देशों ने दक्षा रह के रे प्राप्त राज्ञान पुनर्ने राज्य श्री की राज्य THE THE STATE OF A STA

The profession of the state of the s

大清監察 医 海鱼 一种似乎 人名巴西 在 年 日 安 河野 一种中毒

*

अर्थ-"पांच महात्रतादिक चरण अने पिंडविशुद्धचादिक करणने विषे आळसुत्रमां अविनयवढे वहुळ एटले घणा अविनयवाळा एवा पुरुषोने आ उपदेशमाळा प्रकरण निरंतर अयोग्य छे, अर्थात् तेओने आ उपदेश आपवा योग्य नथी. केमके सो हजार (लाख)ना मूल्यवाळो मणि कुत्सित भाषावाळा कागडाने (कागडानी कोटे) वांघवा कायक नथी." ५३०.

नाऊण कैरयलगयामलं वे सैन्भावओ पहं संब्वं।

धँममंमि नाम सीईज्जइ ति कम्माइं गैरूआइं ॥ ५३१ ॥

अर्थ-" करतलमां रहेला आमलक (आमलाना) फलनी जेम अथवा अमल कै० निर्मल क के० पाणीनी जेम सद्भावथी (सत्य द्विद्यी) सर्व (ज्ञानादि रूप) मोक्षमार्ग जाणीने पण आ जीव धर्मने विषे (नाम संभावनाने अर्थे छे) प्रमादी थाय छे तेमां ते पाणीना गुरुकमीन कारण छे अर्थात् ते जिव भारे कर्मी होवाथी-ज्ञानावरणी यादि कर्मनी बहुलता होवाथी ते जाणतो सतो पण धर्म करतो नथी." ५३१.

धर्मत्थकाममुख्षेषु, जस्स भावो जिहिं जिहिं समझ। वेरंगोगंतरसं, नि ईमं सेव्वं सुहावेइ॥ ५३२॥

अर्थ-"धर्म, अर्थ, काम अने मोत ए चार पुरुपार्थीने विषे जे प्राणीनो भाव (अभिमाय) जे जे (भिन्न भिन्न) पदार्थीने विषे रमे छे (वर्ते छे); एटछे प्राणी-ओनो अभिमाय भिन्न भिन्न पदार्थीमां होय छे, माटे जेने विषे वैराग्यनोज एकांत रस रहेको (भरेलो) छे एवं (वैराग्य रसमय) आ उपदेशमाला प्रकरण सर्व माणीओने मुखकर नथी (मुख उत्पन्न करतुं नथी); किंतु वैराग्यवाला पुरुपोनेज आ प्रकरण मुख उपजावे छे. " ५३२.

सैजमतवालमाणं, वेरेगाकहा न होइ केन्नसहा । सिविगापिख्सियाणं, हुँज्ज व केसि चि नाणीणं ॥ ५३३॥

अर्थ-" सत्तर प्रकारना संयम तथा तपस्याने विषे आक्रमु (प्रमादी) एवा पुरुषोने वैराग्यकथा कर्णने मुखकारी थती नथी, प्रमादीने वैराग्यकी वार्ता रुचता नथी; परंदु संवित्र पतवाळा (मोक्षनी अभिळापावाळा)ने अथवा केटलाएक ज्ञानीने जवैराग्य कथा कर्णने सुर्यकारी थाय छे, सर्वने मुखकारी थती नथी." ५३३.

नाया ५३१-सोइन्जइ=विवीदति-प्रप्रादी भवति । गाया ५३२ मेल्लेस् । वरानोगतरसं । सद्वावेद्दे । नाया ५३३-दुरनवि । केसिस । नाणेलं । में से मिनों ने मिने मिनों मिनों में में में में में में मिनों मिनों में से मिनों में मिनों मिनों मिनों मिनों में मिनों में मिनों मिनों में मिनों मिनों में मिनों मिनों

स्था । प्रश्न स्वत्यक्षा नास्त्र देश स्वत्य प्रत्य स्था स्था स्था । प्रश्न स्था प्रश्न स्था । प्रश्न स्था प्रश्न स्था । प्रिक स्था । प्रश्न स्था । प्र्य स्था । प्रश्न स्था । प्रश्न स्था । प्र्य स्था । प्र्य स्था

इति आहिता अर्थेना न व्यवस्था प्रदर्श प्रति व । याद्य १००० है । व्यवस्था । तम प्रवादिता समूह के याने तेर पर १ वर्गन प्रति व । याद्य विकास प्रदर्श न नहीं देनता । यह वेनि प्रदेश कर कार्य के प्रवाद कर प्रति व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । व्यवस्था के स्ति प्रदेश कर व व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । याद्य प्रति व । व

A STATE OF THE STA

डे एवाए एटले धर्मदासगणिए आ उपदेशमाळा प्रकरण पोताना अने परना (भव्य जीवोना) हितने माटे रच्युं छे, " ५३७.

जिंणवयणकृष्परुख्लो, अणेगसुत्तत्थसा लिविच्छिन्नो । तैवनियमकुसुमगुच्छो, सुग्गइफलवंत्रणो जियइ ॥ ५३८॥

अर्थ-" अनेक मूत्रार्थ रूपी शाखाओवडे विस्तार पामेलो, तप अने निषमरूप पुष्पोना गुच्छवाळो तया देव मनुष्यरूप सद्गति रूपी फळनी निष्पत्तिवाळो (सद्ग- तिने वंधावनारो) आ जिनवचन (द्वादशांगी) रूप कल्परक्ष (मनवांछित फल आप- नार) जय पामे छे-सवोंत्कृष्टपणे वर्ते छे." ५३८.

जुर्गा संसाहुवेरिगआण, पैरलोगपत्थिआणं चै। संविग्गपख्लीआणं, दायंव्वा बहुसुआणं च॥ ५३९॥

अर्थ-" मुसाधुओने, बैराग्यवाळा श्रावकोने अने परलोक्तना साधनमां मस्यित यपेला-चालेका (उद्यनवाळा) एवा संवित्र पश्चीओने योग्य एवी आ उपदेशपाठा बहुभुत (पंडितो)ने आपवा योग्य छे. एटले आ उपदेशपाठा पंडितोनेन आनंद नाप-नारी छे, पण मूर्विने आनंद आपनारी नथी." ५३९.

इंय धम्मेदासगणिणा, जिंगवयगुनएसफज्जवालाए । मॉल वंग विविहं कुमुमा, कहीआप मुनोसारगहस ॥ ५४० ॥

मधे-" ना प्रनाणे श्रीकदाष्मणिए (श्रीक्षीत्रासमिन नाष्ट्रा भानां प्राक्ति । जिन्दानना अव्यापे प्राक्ति । जिन्दानना अपदेशना हारोनी प्राक्ति (पर्परा)ए हरीने पुरुष्माञ्जनी नेष्टिक रहारना अपदेशना नत्तरोहती पुरुषको आ अपदेशनाञ्च सारा विश्वाना । प्रदेशना कर्मा पारे हरीछे-हरी छे." ५४०.

सें (हमें) हुँ इहमें, क्रिशण हमें मुनंगळहमें) में । हों: हहेंगम्म पेंग्निए, तंड म निकाण हलदाई ॥ ५४४ ॥

करण कर है। के शहरता है। इन्होंने (अपाकता करनारन) एस सर्वे करण कर है। के शहरता और हरनारों, सन्तरिक पुगर्शी देश कर ग्राहे,

भूक कर्ण के राज्य के राज्य के किया के स्वर्ण के स् भूक कर्ण के स्वर्ण के कारण करमही प्रति का लोशवर्ष क्या है कार्य के का त्रावार है है कि से की माम क्रिक्टी की स्थापन के ने भी कार्य की कारणों के का प्रभाव के देखे की कीस कि कि कि माम प्रति की स्थापन की प्रति के कि माने के का कारणों का कर की महत्त्र की की भारत करमार्थ भी देखें की नाम का का साम है है के कर की

इस्ये सम्बद्धाः स्थानम्बद्धाः स्थानम्बद्धाः । साराणं संस्थानं, पंतपताः स्थानमञ्जूषाः । १८० ॥

अर्थेन्ति संस्थित अर्थेन अर्थेन स्थान स्थान स्थान स्थान है। इस्तेन के अर्थेन स्थान स्थान

भीरत कारताही, जिल्लासम्बद्ध हेन । नेत्र स्था मान्य, अर्थेन हेन दल होते । उत्तर

अहरी भी राहि सुबेह र यह ने एका है। यह साम साहित का कि यह जान करहे पूर्वर साहिती की सीर्वेल्ड प्रोटे की स्थापन केर प्रकार ना कि एक प्रकार के कि यह का अहर साहिती की के कि से यह र साहित्य र साहित्य के साहित्य के लिए बच्चा कर देखा के का लिए अस्त

विश्वसम्बर्धाः संक्षेत्रप्रदेशस्य स्थापः विश्वसम्बर्धस्य स्वर्धस्य स्थापः स्थापः

部 投票 从布里人能 法数 木 水黄 李 喜 清 木 如一声2 《郑春)显音五世字(迎日 2 (本《唐本 英)(Lung)) (19 (An))



॥ अथ श्री इांखेश्वर पार्श्वनाथ जिनजिनुं स्तवन ॥

महाबीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥

नित्य समरु साहेब सयगां, नाम सुणतां सीतल वयणां, गुण गातां उलसे नय णारे शंखेश्वर साहित साचो; वीजानो आश्वरो काचोरे शंखे ।। १॥ ए आंकणि॥ द्रव्यथि देव दानव पूजे। गुण संचितसो पण लीजे। अरिहापरपर्यव छाजे। मुद्राप-बासन राजेरे ॥ शंखे० वी० २ ॥ संवेग तजी घरवासो। पशु पासना गणवर थाशी। तव मुक्तिपुरीमां जाशो । गुण लोकमां वयणे गवाशोरे ॥ शंखे०वी० ३ ॥ एव दामोदर जिनवाणी। अपाढा श्रावक जांणी। जिनवंदी निजघर आवे। मधु पासनी प्रतिमा भरावेरे ॥ शंखे॰ वी॰ ४ ॥ त्रणकाल ते धूप उखेवे । उपकारी श्री जिनसेवे । पछी तेह वैमानिक थावे । ते मतिमापण तिहां छावेरे शंखे० वी० ५ ॥ घमा काछ पूजी बहूमाने । वली सुरज चंद्र विमाने । नाग लोकनां कष्ट निरायी । ज्यारे पार्श्व प्रभुजी पथायरि ॥ शंखे० वी॰ ६ ॥ यदुसेन रह्यो रणधेरी । जीत्या निवजाये वैरी । जरा-सेनें जरा तब म्हेली । हरि वल विना सबले फेलीरे ॥ शंखे॰ बी० ७॥ नेमीश्वर चोकी विशाली। अहम करे वनमाली। तूठी पद्मावती वाली। आपे प्रतिमा झाक झमालीरे। शंखे॰ बी॰ ८॥ प्रभू पासनी मितिमा पूजी। वलवंत जरातव धूजी। छंटकावन्ह्वण जळ जोती। जादवनी जरा जाय रोतीरे।। शंखे॰ बी॰ ९।। शखपू-रीने सहूने जगावे। शखेश्वर गाम वसावे। मंदिरमां प्रभु पथरावे। शंखेश्वर नाम धरावेरे ॥ शंखे वी० १० ॥ रहे जे जिनराज हजूरे । शेवक मनवं छित पूरे । ए भेटण मधुनीने काजे । शेठ मोताभाईने राजेरे ॥ शंखे वी० ११ ॥ नाना माणक केरा नंद । शंघरी मेपचंद वीरचंद । राजनगरथी संग चलावे । गामोगामना संग भिला वेरे ॥ शंखे॰ वीना १२ ॥ अहार अठोत्तर वर्षे । फागण वदि तेरशी दिवसे । जिन वंदीने आणंद पाये। श्रुभनोर वचन रस गावेरे शंखे० बी० १३॥ इति श्री दांखेश्वर पार्श्वनाथ स्त्रान संपूर्ण ॥

Succession for the second of the second seco

क्षक्षक में हुन देन देन अद्देश अद्देश किंद देन बनाइन लोक में हो है, यह तहना देखी कोर्ट प्राप्त देखाकार . रहेपचे ५ देनेंदे ६००० ५ १ प्रेटेंट प्राप्त वर्षक वर्षि 建铁色 明明 大学 克斯马斯堡 化水流流 不成為 人名意比 人名德里尔 人名德格尔 東國大學 化氨基甲基 医水素 建金 中華 一地區 医二次素素 经工作 电影大大 建水 磁接磁接缝 性毒子的人名 经营收 经产品发行证据 美美国的美国 等多种类 化铁矿铁 计卷码体 经销售 一一一人名 水车 "这一一个一一一个一一个一个一个一个一个一个一个 · "我们就是我的我们,我也没有一个我的我们的一个女子,我们的一个女子。" The state of the s विक्तिक देश के किल्ये के बोर्क हमें देनी कि कर्र कर्ता कर है के कर कर कर के किल्क कर 四类素 青 在为妻子主意地不安慰 死亡 中部的一条工 安全 人 人 工工品 一 小江 经 经工程分类等 整盤工廠 有线性 铁铁铁 机二氯聚物 电管 医乳头切开 化电压炉 经海货 医二次基底征虫 李山素 建一直流流速 电光性 "你不管,我们你不会说我一定你的一起,我们就一起一起一起, 素格型室養生の存留者 住民後の大変とかってきる いないない かべまない かりまみなだ 聖者 香質 チェイン マイマイン カー・マー ウェージ でき Male アレス 12 でき アルー までき 大龙龙龙 医大耳 医经验 人名 人名 医大龙色 化二烷基烷 化硫化二烷 不知识的 花 職物的獨立之一

जाहेर खबर.

अमारी पासेथी जैनधर्मनां दरेक जातना उपयोगी पुस्तको मलशे.

3	पंच प्रतिक्रमण गुजराती नव स्मरण तथा व	तीयवि च	वारादि चारे म	करण	रे
	अर्थ साये आदृत्ति आदृगी		•••		8-6-0
२	देवसीराइ अर्थ सहित		••••	••••	0-6-0
ş	जीवविचारादि चार म. अर्थ साथे.	••••	••••	••••	0-4-0
૪	सामायक सूत्र अर्थ साथे	•••	••••		0-3-0
4	छुटक वोलो सीद्धांतना शास्त्री मोटा टाइपमां		•••		0-4-0
ξ	नवाणुं प्रकारनी पूजा भाषांतर साथे.		•••	•••	0-6-0
Ø	विविध पूजासंग्रह भाग १-२-३-४ दरैक	आचा	र्योनी पूजाओ	तथा	
	श्रांतिनाथना मोटा कछश सहित	• • •			₹ - 0-0
	देववंदनमाळा गुजराती	•••	•••		5-8-0
९	स्तोत्र संग्रह तथा जैन वार्षिक पर्वी.		•••	• • •	२-०-०
१०	नीन ग्रतक टीका सहित् संस्कृत ग्रंथ.	• • •	• • •		0-33-0
33	नीत्य स्परणीय शेत्रुंना प्रकरण	• • •	•••	•••	0-7-0
१२	रत्नाकर पचीसी	• • •	•••	•••	०-२-६
	देवसीराइ मूल मोटा अक्षर शासी टाइप	• • •	•••		0-4-0
5.3	देवसीगड् गुजराती मूल मोटा टाइपमां	• • •		• • •	0-4-0
	दंदर महरण (४१) द्वारवालुं वाधी.	• • •	•••		0-4-0
15	ं दीस की रूप भाषांतर सहित गुजराती.		* * *	• • •	v-q-0

ने मीवाय दरेक जानमां जनधर्मनां पुस्तको नेमज छापत्रा छपात्रः बाता सामले उप जमारी पांमेची मलता.

मजरानु उहाणु —

गाम्तर-उमेदवंद गगनंद.

डे. पांतरापोळ-तमदावारः

